॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

सर्वौषधिनामगुणानां

मदनपालनिघण्टुः ।

पण्डित–रविदत्तविरचितभाषाटीकासमेतः ।

स च

श्रीकृष्णदासात्मज–गङ्गाविष्णुना

स्वकीये " लक्ष्मीवेंकटेश्वर " मुद्रणालये

संमुद्र्य प्रकाशितः ।

शके १८३१, संवत् १९६६.

कल्याण–मुंबई.

सन १८६७ मितस्य २५ तमराजनियमानुसारेणास्य सर्वेऽधिकाराः

प्रकाशकेन स्वाधीनाः स्थापिताः सन्ति ।

भूमिका.

आयुर्वेदविद्याके अमित लाभ और उत्कर्षताके ज्ञाता भिषग्वर इस बातको भली भांति जानते हैं कि वैद्यविद्याकौशल्य संपादनके लिये द्रव्यसमुदायके रूप रस और विपाकादिके रहस्यका परिज्ञान कितना आवश्यक है। केवल यही नहीं किंतु पूर्ण ब्रह्मकी परम कृपा एवं अपने पुण्यप्रतापसे प्राप्त इस अमूल्य मनुष्य शरीरके आधारभूत अन्नजलादिक समस्त द्रव्योंके गुण दोष एवं विधि निषेधका विवरण जानना सर्वसाधारणकोभी अनुपम लाभदायक और असीम आनन्दका देनेवाला है। परन्तु इसके लिये एक ऐसा ग्रन्थ अपेक्षित था कि, जिसमें सम्पूर्ण द्रव्योंके गुणागुणका विचार पूर्ण रीतिसे किया गया हो और जो प्रामाणिकभी हो। अतः इस अभावका अभाव करके वैद्यविद्याके प्रभावकी वृद्धिके लिये हमने इस निघंटुका आविर्भाव किया है जिसके आश्रयसे एतद्देशीय बंधुगण साधारण और असाधारण सम्पूर्ण द्रव्योंके नाम लक्षणादिकको जानकर उचित आहार विहारका सेवन करते कराते हुए, अमूल्य रत्नरूप आरोग्यता एवं यशको प्राप्त कर सकें।

जिस प्रकार निदानके ग्रन्थोंमें माधव और चिकित्सादिमें सुश्रुत वाग्भटादिक परम माननीय, उत्कृष्ट एवं अत्यन्त उपयोगी हैं इसी प्रकार यह मदनपालनिघण्टु अति प्राचीन और निघण्टुओंमें सबसे श्रेष्ठ है इसके श्रेष्ठत्वमें यही प्रमाण बस है कि इसका आशय और छाया लेकर वर्त्तमानमें अनेक निघण्टु निर्माण किये गये हैं। परन्तु इस ग्रन्थके साथ मिलान करनेपर स्पष्ट रीतिसे प्रगट हो जायगा कि शब्दोंका संग्रह और उनके लक्षणादिकका विवरण जैसा इसमें है वैसा अन्य किसीमें नहीं।

देववाणीके सुधारसका पान करनेवाले विद्वज्जन इस ग्रन्थके संस्कृत संस्करणसे अपने अभीष्टको प्राप्त होते थे किन्तु भिषग्विद्याके प्रेमी; केवल भाषा जाननेवाले महाशय उसके आस्वादसे वञ्चित रहते थे इस कारण सबही उत्तम मध्यमादिक श्रेणीवाले तथा संस्कृत और भाषा-रसरसिक जनोंके हितकी कामना करके हमने बेरीनिवासी **श्रीयुत पंडित रविदत्तजीसे** इसकी सुन्दर सरल भाषाटीका बनवाकर तथा **पुष्करराजनिवासी श्री० पंडित रामप्रतापजीसे** उसका भली प्रकार संशोधन करवाकर अति उत्तमताके साथ मुद्रित कर प्रकाशित किया

है । दृढ आशा है कि गुणग्राहक दूरदर्शी और परिश्रमज्ञ सज्जन जन अपने स्वाभाविक उदार भावसे इस ग्रन्थको सादर आश्रय देकर हमारे उत्साहकी वृद्धि करेंगे इसमें संदेह नहीं ।

दृष्टिदोषादिकसे रहे हुए न्यूनाधिककी सूचना प्रेमभावसे जो सज्जन हमको करेंगे उनका परम उपकार माना जावेगा । किमधिकं विज्ञेषु ?

विद्या-प्रचार-उद्योगरत पुरुषभूषणोंका कृपाकांक्षी,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना,

कल्याण-मुंबई.

श्रीः ।

अथ मदनपालनिघण्टुकी विषयानुक्रमणिका ।

विषयः.	पृष्ठांकः.	विषयः.	पृष्ठांकः.
अथ अभयादिवर्गः ॥ १ ॥		२९ जीवंती के .... नामगुण	१६
१ मंगलाचरण	१	३० मुलहटी के .... ,,	,,
२ प्रतिज्ञावाक्य	२	३१ माषपर्णी और मूंगपर्णी के ,,	,,
३ हरडे के ....नामगुण	४	३२ जीवनीय के .... ,,	१६
४ आंवला के .... ,,	५	३३ अरंड और लाल अरंडके ,,	,,
५ बहेडा के .... ,,	६	३४ काष्ठ शारिवा और कृष्ण-	
६ त्रिफला के .... ,,	,,	शारिवा के .... ,,	१७
७ भूमि आंवला के .... ,,	७	३५ जवासा और धमासा के ,,	,,
८ पानी आंवला के .... ,,	,,	३६ मुंडी के.... .... ,,	१८
९ बांसा के .... ,,	,,	३७ महामुंडी और भूमिकदंबके ,,	,,
१० गिलोय के .... ,,	,,	३८ ऊंगा के.... .... ,,	,,
११ बेलगिरी के .... ,,	८	३९ लाल ऊंगा के .... ,,	१९
१२ अरनी के .... ,,	९	४० कपाला के .... ,,	,,
१३ पाटला के .... ,,	,,	४१ जमालगोटा के.... .... ,,	,,
१४ कंभारी के .... ,,	,,	४२ जमालगोटा की जड़के.... ,,	,,
१५ श्योनापाठाके .... ,,	१०	४३ सफेद निशोत के .... ,,	२०
१६ बृहत्पंचमूल के .... ,,	,,	४४ काली निशोत के .... ,,	,,
१७ गोखरू के .... ,,	११	४५ दोनों तरह के इन्द्रायण के ,,	२१
१८ शरवन के .... ,,	,,	४६ अमलताश के .... ,,	,,
१९ पीठवन के .... ,,	,,	४७ नील के .... ,,	२२
२० बडी कटेली के .... ,,	१२	४८ कुटकी के .... ,,	,,
२१ कटेली के .... ,,	,,	४९ अंकोल के .... ,,	२३
२२ लघु पंचमूल के.... .... ,,	,,	५० थोहर के .... ,,	,,
२३ दशमूल के .... ,,	१३	५१ नींब के.... .... ,,	२४
२४ ऋद्धि वृद्धि के.... .... ,,	,,	५२ बकायन के .... ,,	,,
२५ काकोली के और क्षीर-		५३ चिरायता के .... ,,	२५
काकोली के .... ,,	,,	५४ कूडा के.... .... ,,	,,
२६ मेदा और महामेदा के ,,	१४	५५ इंद्रजव के .... ,,	,,
२७ जीवक और ऋषभ के.... ,,	,,	५६ मैनफल के .... ,,	२६
२८ अष्टवर्ग के .... ,,	,,	५७ कंकुष्ठ के .... ,,	,,

विषयः.		पृष्ठांकः.
५८ चोष के	नामगुण	२६
५९ सातला के	,,	२७
६० असिमिलोग के	,,	,,
६१ कचनार के	,,	,,
६२ संभालु के	,,	२८
६३ मेंढाशिंगी के	,,	,,
६४ दोनों सांठियों के	,,	२९
६५ रास्ना के	,,	,,
६६ असगन्ध के	,,	३०
६७ प्रसारणी के	,,	,,
६८ शतावरी के	,,	,,
६९ महाशतावरी के ...	,,	३१
७० खैरैहटी के	,,	,,
७१ सहदेई के	,,	,,
७२ वल्लिका के	,,	३२
७३ गंगेरन के	,,	,,
७४ खैरैहटी आदि चारों के	,,	,,
७५ मालकांगनी के....	,,	,,
७६ तेजबल के	,,	३३
७७ देवदारु के	,,	,,
७८ सरल के....	,,	,,
७९ पोहकरमूल के....	,,	,,
८० कूट के	,,	३४
८१ काकडाशिंगी के	,,	,,
८२ कायफल के	,,	,,
८३ रोहिष तृण के	,,	३५
८४ भारंगी के	,,	,,
८५ पाषाणभेद के	,,	,,
८६ मोथा के	,,	३६
८७ धव के	,,	,,
८८ माई के	,,	,,
८९ विदारीकंद के....	,,	३७
९० वाराहीकंद के....	,,	,,
९१ पाठा के....	,,	,,
९२ मुरहरी के	,,	३८

विषयः.		पृष्ठांकः.
९३ मंजीठ के	नामगुण	३८
९४ हलदी के	,,	३९
९५ दारुहलदी के	,,	,,
९६ पुवाड के	,,	,,
९७ बावची के	,,	४०
९८ भांगरा के	,,	,,
९९ पित्तपापडा के	,,	४१
१०० त्रायमाण के	,,	,,
१०१ जाल के	,,	४२
१०२ अतसि के	,,	,,
१०३ मकोय के	,,	,,
१०४ काकजंघा के	,,	४३
१०५ लोध के	,,	,,
१०६ भिदारों के	,,	,,
१०७ देवदाली अर्थात् ताडके शिर के	,,	४४
१०८ हंसपादी के	,,	,,
१०९ सोमवल्ली के	,,	,,
११० आकाशवेल के	,,	४५
१११ नाकुली के	,,	,,
११२ वटपत्री के	,,	,,
११३ लज्जावंती के....	,,	,,
११४ मुशली के	,,	४६
११५ कौंच के	,,	,,
११६ जीयापोता के	,,	,,
११७ वांझककोडी के	,,	४७
११८ विष्णुक्रान्ता के	,,	,,
११९ शंखपुष्पी के....	,,	,,
१२० दूधी के	,,	,,
१२१ अर्कपुष्पी के....	,,	४८
१२२ भिलावा के	,,	,,
१२३ चरपोटन के	,,	,,
१२४ द्रोणपुष्पी अर्थात् गोमा के	,,	,,
१२५ ब्राह्मी और ब्राह्ममण्डूकी के	,,	४९

विषयः.	पृष्ठांकः.	विषयः	पृष्ठांकः
१२६ सौंचली ब्रह्मसौंचली के नामगुण	४९	१६० दूब के .... नामगुण	५८
१२७ मत्स्याक्षी के .... ,,	,,	१६१ गण्डदूब के .... ,,	,,
१२८ जलपीपल के .... ,,	५०	१६२ कास के .... ,,	,,
१२९ गोभी के .... ,,	,,	१६३ डाभ के .... ,,	५९
१३० नागदौन के .... ,,	,,	१६४ मुंज के .... ,,	,,
१३१ चिरमठी के .... ,,	,,	१६५ नरसल के .... ,,	,,
१३२ बेलि के .... ,,	५१	१६६ बांस के .... ,,	,,
१३३ बन्दा के .... ,,	,,	१६७ अजवाइन के .... ,,	६०
१३४ पिंडार के .... ,,	,,	१६८ पोस्तके .... ,,	,,
१३५ नकछींकनी के .... ,,	,,	१६९ अफीम के .... ,,	,,
१३६ रोहेरु के .... ,,	५२	१७० छिलहिंठ के .... ,,	,,
१३७ मोचरस के .... ,,	,,	इति अभयादिवर्गः ॥ १ ॥	
१३८ अजगंधा के .... ,,	,,		
१३९ पियावासा के .... ,,	,,	**अथ शुण्ठ्यादिवर्गः ॥ २ ॥**	
१४० हरमल के .... ,,	५३	१ सोंठ के .... नामगुण	६१
१४१ तालमखाना के .... ,,	,,	२ अदरक के .... ,,	,,
१४२ कपास के .... ,,	,,	३ मिरच के .... ,,	६२
१४३ आरामशीतला के .... ,,	५४	४ पीपल के .... ,,	,,
१४४ करौंदा के .... ,,	,,	५ त्र्यूषण और चतुरूषण के ,,	६३
१४५ वामी के .... ,,	,,	६ पीपलामूल के .... ,,	,,
१४६ शरपुंखा के .... ,,	,,	७ चव्य के .... ,,	,,
१४७ बलामोटा के .... ,,	,,	८ गजपीपल के .... ,,	६४
१४८ सुदर्शना के .... ,,	५५	९ चीता के .... ,,	,,
१४९ मोरशिखा के .... ,,	,,	१० पंचकोल और षडूषण के ,,	,,
१५० लक्ष्मणा के .... ,,	,,	११ सौंफ के .... ,,	६५
१५१ मांसरोहिणी के .... ,,	,,	१२ सोया के .... ,,	,,
१५२ हडासिंहारी के .... ,,	,,	१३ मेथी रानीमेथी के .... ,,	,,
१५३ दोनों आक के .... ,,	५६	१४ अजमोद के .... ,,	६६
१५४ कनेर के .... ,,	,,	१५ सपेद जीरा काला जीरा और कलौंजी के .... ,,	,,
१५५ धतूरेके .... ,,	,,	१६ अजवान के .... ,,	६७
१५६ कलहारी के .... ,,	,,	१७ चौहार के .... ,,	,,
१५७ कुवारपट्ठा के .... ,,	५७	१८ अजगंधा रानी तुलसी के ,,	,,
१५८ भांग के .... ,,	,,	१९ बच के .... ,,	,,
१५९ कांचनी के .... ,,	५८		

विषयः.		पृष्ठांकः	विषयः.		पृष्ठांकः.
२० हाहूवेर के	.... नामगुण	६८	१४ कंकोल के	.... नामगुण	७७
२१ वायविडंग के	.... ,,	,,	१५ छोटी इलायची के	.... ,,	,,
२२ धनिया के	.... ,,	,,	१६ बडी इलायची के	.... ,,	,,
२३ हिंगुपत्री के....	.... ,,	६९	१७ दालचीनी के	.... ,,	७८
२४ हींग के	.... ,,	,,	१८ तेजपात के....	.... ,,	,,
२५ वंशलोचन के	.... ,,	७०	१९ नागकेसर के	.... ,,	,,
२६ सेंधानमक के	.... ,,	,,	२० त्रिजात और चतुर्जात के	,,	७९
२७ काला नमक के	.... ,,	,,	२१ तालीसपत्र के	.... ,,	,,
२८ नयारी नमक के	.... ,,	,,	२२ सरल के	.... ,,	,,
२९ सांभरनमक के	.... ,,	७१	२३ श्रीवास के	.... ,,	,,
३० रेहनमक के....	.... ,,	,,	२४ नेत्रवाला के	.... ,,	,,
३१ रोमनमक के	.... ,,	,,	२५ बालछड के....	.... ,,	८०
३२ खारीनमक के	.... ,,	,,	२६ खस के	.... ,,	,,
३३ काचनमक के	.... ,,	७२	२७ रेणुका के	.... ,,	,,
३४ जवाखार और साजी के	,,	,,	२८ मँहदी के	.... ,,	,,
३५ सुहागा के	.... ,,	,,	२९ पारिपेल के	.... ,,	८१
३६ थोहरखार के	.... ,,	,,	३० छलिरा के	.... ,,	,,
३७ सब खारों के	.... ,,	७३	३१ खसभेद के	.... ,,	,,
इति शुण्ठ्यादिवर्गः समाप्तः ॥ २ ॥			३२ कुंदुरुगूंद के....	.... ,,	,,
			३३ गूगुल के	.... ,,	,,
अथ कर्पूरप्रभृतिसुगन्धिद्रव्यवर्गः ॥ ३ ॥			३४ राल के	.... ,,	८२
१ कपूर के	.... नामगुण	७३	३५ थुनेरा के	.... ,,	,,
२ कस्तूरी के	.... ,,	७४	३६ चौरक के	.... ,,	८३
३ मार्जारी कस्तूरी के	.... ,,	,,	३७ मुरा के	.... ,,	,,
४ चन्दन के	.... ,,	,,	३८ कचूर के	.... ,,	,,
५ लाल चन्दन के	.... ,,	७५	३९ कचूरभेद के	.... ,,	,,
६ मलयागिरी चन्दन के....	,,	,,	४० स्पृक्का के	.... ,,	,,
७ कृष्ण अगर के	.... ,,	,,	४१ ठिवना के	.... ,,	८४
८ केसर के	.... ,,	,,	४२ नलिका के	.... ,,	,,
९ लोबान के	.... ,,	७६	४३ पद्मक के	.... ,,	,,
१० एलवा के	.... ,,	,,	४४ प्रपुंडरीक के	.... ,,	,,
११ जायफल के....	.... ,,	,,	४५ तगर के	.... ,,	,,
१२ जावित्री के....	.... ,,	७७	४६ गोरोचना के	.... ,,	८५
१३ लौंग के	.... ,,	,,	४७ दोनों नखों के	.... ,,	,,
			४८ पतंग के	.... ,,	,,

विषयः.	पृष्ठांकः.	विषयः.	पृष्ठांकः.
४९ लाख के .... नामगुण	८६	८३ दौना के .... नामगुण	९३
५० पापडी के .... ,,	,,	८४ काली मल्लिका के .... ,,	९४
५१ पद्मिनी और कुमोदिनी के ,,	,,	इति कर्पूरादितृतीयवर्गः समाप्तः ॥ ३ ॥	
५२ पद्मचारिणी के .... ,,	८७	अथ सुवर्णवर्गः ॥ ४ ॥	
५३ सुफेदकमल के .... ,,	,,	१ सोना के .... नामगुण	९४
५४ लाल कमल के .... ,,	,,	२ चांदी के .... ,,	९५
५५ नील कमल के .... ,,	,,	३ तांबा के .... ,,	,,
५६ कमल आदि के .... ,,	,,	४ कांसी के .... ,,	९६
५७ कल्हार के .... ,,	८८	५ पीतल के .... ,,	,,
५८ कमलकेशर के .... ,,	,,	६ रांग के .... ,,	,,
५९ कमलबीज के .... ,,	,,	७ जसद् के .... ,,	,,
६० कमलकी डंडी के .... ,,	,,	८ सीसा के .... ,,	,,
६१ चमेली के .... ,,	८९	९ लोहा के .... ,,	९७
६२ मालती के .... ,,	,,	१० पारा के .... ,,	,,
६३ जुई के .... ,,	,,	११ अभ्रक अर्थात् भोडर के ,,	९८
६४ गुलाब सेवती के .... ,,	,,	१२ गंधक के .... ,,	,,
६५ केतकी और स्वर्णकेतकी के ,,	९०	१३ सोनामक्खी के .... ,,	,,
६६ वासन्ती के.... .... ,,	,,	१४ मनःशिला के .... ,,	९९
६७ नैपाली के .... ,,	,,	१५ हरताल के .... ,,	,,
६८ माधवी के .... ,,	,,	१६ गेरू के .... ,,	,,
६९ चंपा के .... ,,	९१	१७ नीलाथोथा के .... ,,	,,
७० केसर के .... ,,	,,	१८ हीराकसीस के .... ,,	१००
७१ मौलसिरी के .... ,,	,,	१९ सिंगरफ के.... .... ,,	,,
७२ बगहला के.... .... ,,	,,	२० सिंदूर के .... ,,	,,
७३ कुन्द के .... ,,	,,	२१ सुरमा के .... ,,	१०१
७४ मुचुकुन्द के .... ,,	९२	२२ रसौत के .... ,,	,,
७५ वेला के .... ,,	,,	२३ पुष्पांजन के .... ,,	,,
७६ तिलक के .... ,,	,,	२४ शिलाजीत के .... ,,	,,
७७ पतिपाडी के .... ,,	,,	२५ बोल के .... ,,	१०२
७८ दुपहरिया के .... ,,	,,	२६ फिटकडी के .... ,,	,,
७९ जासवन्द के .... ,,	,,	२७ समुद्रझाग के .... ,,	,,
८० सिन्दूरी के.... .... ,,	९३	२८ मूंगा के .... ,,	१०३
८१ तुलसी के .... ,,	,,	२९ मोती के .... ,,	,,
८२ मरुवा के .... ,,	,,	३० लाल के .... ,,	,,

विषयः.		पृष्ठांकः.
३१ सूर्यकान्तमणि के	....नामगुण	१०३
३२ चन्द्रकान्तमणि के	.... ,,	,,
३३ पन्ना के	.... ,,	,,
३४ हीरा के	.... ,,	,,
३५ लसणिया के	.... ,,	१०४
३६ मरकतमणि के	.... ,,	,,
३७ मोती सीपके	.... ,,	,,
३८ मोती कान्ति के	.... ,,	,,
३९ मूंगा आदि के	.... ,,	,,
४० शंख के	.... ,,	,,
४१ छोटा शंख और कवडी के	,,	१०५
४२ खडिया के	.... ,,	,,
४३ कीचड और वालू के	.... ,,	,,
४४ चुंबकपत्थर के	.... ,,	,,
४५ कांच के	.... ,,	१०६

इति सुवर्णादिचतुर्थवर्गः समाप्तः ॥ ४ ॥

अथ वटादिवर्गः ॥ ५ ॥

१ वड के	....नामगुण	१०६
२ पीपल के	.... ,,	,,
३ पारसपीपल के	.... ,,	१०७
४ गूलर के	.... ,,	,,
५ कटुम्बर के	.... ,,	,,
६ पिलखन के	.... ,,	,,
७ नंदीवृक्ष के	.... ,,	,,
८ कदम्ब के	.... ,,	१०८
९ कौह के	.... ,,	,,
१० शिरस के	.... ,,	१०९
११ आर्तगल के	.... ,,	,,
१२ वेतस के	.... ,,	,,
१३ जलवेत के	.... ,,	,,
१४ इज्जल के	.... ,,	,,
१५ वेतस आदि के	.... ,,	,,
१६ लहेशवा के	.... ,,	११०
१७ पीलू के	.... ,,	,,
१८ शाकवनु के	....नामगुण	११०
१९ शाल के	.... ,,	१११
२० तमाल के	.... ,,	,,
२१ खैर के	.... ,,	,,
२२ गंधित खैर के	.... ,,	,,
२३ बबूल के	.... ,,	११२
२४ विजयसार के	.... ,,	,,
२५ तिनसु के	.... ,,	,,
२६ भोजपत्र के	.... ,,	,,
२७ ढाक के	.... ,,	११३
२८ धव के	.... ,,	,,
२९ धामणि के	.... ,,	,,
३० सोजा के	.... ,,	,,
३१ शाकोट के	.... ,,	११४
३२ वरना के	.... ,,	,,
३३ जीगण के	.... ,,	,,
३४ सालक के	.... ,,	,,
३५ हिंगोट के	.... ,,	११५
३६ कटहा के	.... ,,	,,
३७ मोषा के	.... ,,	,,
३८ पहाडी नींब के	.... ,,	११६
३९ शंभल के	.... ,,	,,
४० तुनि के	.... ,,	,,
४१ सातला के	.... ,,	,,
४२ हरिद्रु के	.... ,,	११७
४३ करंज के	.... ,,	,,
४४ करंजी के	.... ,,	,,
४५ तिरगिच्छी के	.... ,,	,,
४६ जांठी के	.... ,,	११८
४७ झिंझिणी के	.... ,,	,,
४८ रीठा के	.... ,,	,,
४९ शीसम के	.... ,,	,,
५० अगस्त के	.... ,,	११९

इति वटादिपञ्चमवर्गः समाप्तः ॥ ५ ॥

विषयः.		पृष्ठांकः.
अथ फलादिवर्गः ॥ ६ ॥		
१ दाख के	....नामगुण	११९
२ पके आम्र के	.... ,,	१२०
३ जामुन के	.... ,,	१२१
४ नारियल के	.... ,,	,,
५छुहारा और खजूर के	.... ,,	१२२
६ सुलेमानी के	.... ,,	१२३
७ केला के	.... ,,	,,
८ अनार के	.... ,,	,,
९ निर्मली के	.... ,,	१२४
१० बडवेरी के	.... ,,	,,
११ खिरनी के	.... ,,	१२५
१२ चिरोंजी के	.... ,,	,,
१३ फालसा के	.... ,,	१२६
१४ तेंदु के	.... ,,	,,
१५ कांकई के	.... ,,	,,
१६ आडू के	.... ,,	१२७
१७ महुवा के	.... ,,	,,
१८ कटहल के	.... ,,	,,
१९ बढहल के	.... ,,	१२८
२० ताड के	.... ,,	,,
२१ खर्बूजा के	.... ,,	,,
२२ सेव के	.... ,,	१२९
२३ अमृतफल के	.... ,,	,,
२४ बादाम के	.... ,,	१३०
२५ पिस्ता के	.... ,,	,,
२६ इलायची के	.... ,,	,,
२७ आलू के	.... ,,	,,
२८ अंजीर के	.... ,,	१३१
२९ अखरोट के....	.... ,,	,,
३० पालेवत के	.... ,,	,,
३१ सहतूत के	.... ,,	,,
३२ गंगेरुवा के	.... ,,	१३२
३३ तुंवर के	.... ,,	,,
३४ बिजौरा के....	....नामगुण	१३२
३५ मधुककडी के	.... ,,	१३३
३६ नारंगी के	.... ,,	,,
३७ जंभीरी के	.... ,,	,,
३८ अम्लवेतस के	.... ,,	१३४
३९ साराम्ल के....	.... ,,	,,
४० नींबू के	.... ,,	,,
४१ कमरख के	.... ,,	,,
४२ इमली के	.... ,,	१३५
४३ तिंतडीक के	.... ,,	,,
४४ करौंदा के	.... ,,	,,
४५ कैथ के	.... ,,	,,
४६ कैथपत्री के	.... ,,	१३६
४७ अंबाडा के....	.... ,,	,,
४८ राजाआम के	.... ,,	,,
४९ पंचाम्ल के	.... ,,	,,
५० कोशाम्र के....	.... ,,	१३७
५१ सुपारी के	.... ,,	,,
५२ नागरपान के	.... ,,	१३८
५३ चूना और कत्था के	,,	,,
५४ लवली के	.... ,,	१३९
इति फलादिषष्ठवर्गः समाप्तः ॥ ६ ॥		
अथ शाकवर्गः ॥ ७ ॥		
१ पेठा के	....नामगुण	१४०
२ लघुपेठा के....	.... ,,	,,
३ ककडी के	.... ,,	१४१
४ तरबूज के	.... ,,	,,
५ मीठी तूम्बी के	.... ,,	,,
६ कडवी तूम्बी के	.... ,,	,,
७ खीरा के	.... ,,	१४२
८ चिपट के	.... ,,	,,
९ वालुक के	.... ,,	,,
१० सेव के	.... ,,	,,
११ तोरी के	.... ,,	१४३

विषयः.	पृष्ठांकः.	विषयः.	पृष्ठांकः.
१२ घीयातोरई के ....नामगुण	१४३	४६ सहींजना के .... नामगुण	१५२
१३ बडी तोरई के .... ,,	,,	४७ ल्हसन के .... ,,	१५३
१४ बैंगन के	,,	४८ पियाज के .... ,,	,,
१५ सफेद बैंगन के .... ,,	१४४	४९ गाजर के .... ,,	१५४
१६ कंदूरी के .... ,,	,,	५० जिमीकन्द के .... ,,	,,
१७ करेला के .... ,,	,,	५१ हडसंहारी के .... ,,	,,
१८ ककोडा के .... ,,	,,	५२ वाराहीकंद के .... ,,	१५५
१९ बांझ ककोडी के .... ,,	१४५	५३ मुसली के .... ,,	,,
२० करेरुवा के .... ,,	,,	५४ कंचुक के .... ,,	,,
२१ डिंडिस (ढेडस, टिंडे) के ,,	,,	५५ भूच्छत्र के .... ,,	,,
२२ सुआरा सेम के .... ,,	,,	५६ स्थूलकंद और मानकंद के ,,	१५६
२३ सेम के .... ,,	,,	५७ कसेरु और सिंगाडा के ,,	,,
२४ बथुवा के .... ,,	१४६	५८ पिंडालू, मध्वालू, शंखालू, काष्ठालू, हस्तालू के .... ,,	,,
२५ जीवंती के .... ,,	,,	५९ केलूट के	१५७
२६ चिल्ली के .... ,,	,,	इति शाकवर्गः सप्तमः समाप्तः ॥ ७ ॥	
२७ काल शाक के .... ,,	,,	**अथ पानीयनामविशेषवर्गः ॥ ८ ॥**	
२८ चौलाई के .... ,,	,,	१ पानी के ....नामगुण	१५८
२९ फोग के .... ,,	,,	२ दूध के .... ,,	१६६
३० मरसा के .... ,,	१४७	३ गाय के दूध के .... ,,	,,
३१ परवल के .... ,,	,,	४ बकरी के दूध के .... ,,	१६७
३२ चिचेंडा के .... ,,	१४८	५ भेड के दूध के.... .... ,,	,,
३३ पालक के .... ,,	,,	६ भैंस के दूध के .... ,,	,,
३४ पोई के .... ,,	,,	७ नारी के दूध के .... ,,	,,
३५ लोनियां (कुटीर) के.... ,,	१४९	८ हथिनी के दूध के .... ,,	,,
३६ फली के .... ,,	,,	९ ऊंटनी के दूध के .... ,,	१६८
३७ इमली के .... ,,	,,	१० घोडी के दूध के .... ,,	,,
३८ नोनिया के .... ,,	१५०	११ दही के .... ,,	१७०
३९ तुरई और नलवा शाख के. ,,	,,	१२ तक्रवर्ग के .... ,,	१७४
४० सरसों के शाक के .... ,,	,,	१३ नौनी घृत के .... ,,	१७६
४१ चना शाक के.... .... ,,	१५१	१४ घृत के .... ,,	,,
४२ सुवा शाक के .... ,,	,,	१५ तेल के .... ,,	१७८
४३ कसौंदी (गाजर) के ,,	,,	१६ अरंड के .... ,,	१७९
४४ मूली के .... ,,	,,	१७ कडु तेल के.... .... ,,	,,
४५ करीर के .... ,,	१५२		

विषयः.			पृष्ठांकः.
१८ नींब तेल के	....नामगुण		१८०
१९ अलसी के तेल के	....	,,	,,
२० सरसों के तेल के	....	,,	,,
२१ कुसुंभा के तेल के	....	,,	,,
२२ मालकांगणी के तेल के	....	,,	,,
२३ अखरोट आदिके तेल के		,,	,,
२४ सीसम आदि के तेल के		,,	१८१
२५ भिलावा के तेल के	....	,,	,,
२६ पालाश आदि के तेल के		,,	,,
२७ पेठा आदि के तेल के	....	,,	,,
२८ पाठा के तेल के	....	,,	,,
२९ शंखाहोली के तेल के	....	,,	१८२
३० आम के तेल के	....	,,	,,
३१ स्थावर स्नेह के	....	,,	,,
३२ मेद, मज्जा आदि के	....	,,	,,
३३ मदिरा के	....	....	,, १८३
३४ गाय हस्ती आदि के मूत्र के			,, १९०
३५ घोडे के मूत्र के	....	,,	,,
३६ बकरी के मूत्र के	....	,,	,,
३७ भेड के मूत्र के	....	,,	१९१
३८ गधे के मूत्र के	....	,,	,,
३९ ऊंट के मूत्र के	....	,,	,,
४० मनुष्य के मूत्र के	....	,,	,,

इति पानीयनामविशेषवर्गोऽष्टमः ॥ ८ ॥

अथ इक्षुकादिवर्गः ॥ ९ ॥

१ ईख के भेद के	,,	....नामगुण	१९१
२ ईखरस के	....	.... ,,	१९३
३ राब खांड गुड आदि के		,,	,,
४ मिसिरी के	....	.... ,,	,,
५ खांड के	....	.... ,,	१९४
६ मधुशर्करा के		.... ,,	,,
७ यवास शर्करा के		.... ,,	,,
८ चीनी खांड के		.... ,,	,,
९ फाणित के	....	....नामगुण	१९४
१० मधूक के	....	.... ,,	,,
११ गुड के	....	.... ,,	,,
१२ शहद के	....	.... ,,	१९५
१३ मोम के	....	.... ,,	१९७

इति इक्षुकादिवर्गो नवमः समाप्तः ॥ ९ ॥

अथ धान्यवर्गः ॥ १० ॥

१ शालि चांवल आदि के नामगुण			१९७
२ गेहूं के	....	.... ,,	२००
३ जव के	....	.... ,,	२०१
४ शिंबी के	....	.... ,,	,,
५ मूंग के	....	.... ,,	२०२
६ उडद के	....	.... ,,	,,
७ राना उडद के		.... ,,	२०३
८ मसूर के	....	.... ,,	,,
९ मोठ के	....	.... ,,	,,
१० मटर के	....	.... ,,	,,
११ चौंला गुवार के		.... ,,	,,
१२ चना के	....	.... ,,	२०४
१३ मसूरभेद के		.... ,,	,,
१४ कुलथी के	....	.... ,,	,,
१५ तिल के	....	.... ,,	२०५
१६ अरहर के	....	.... ,,	,,
१७ अलसी के	....	.... ,,	२०६
१८ कुसुंभा के	....	.... ,,	,,
१९ सरसों के	....	.... ,,	,,
२० राई के	....	.... ,,	,,
२१ शण के	....	.... ,,	२०७
२२ तृण धान्य के		.... ,,	,,
२३ नीवार के	....	.... ,,	२०८
२४ यावनाल (ज्वार) के		,,	,,
२५ गवेधुका के	....	.... ,,	,,

इति धान्यवर्गो दशमः समाप्तः ॥ १० ॥

विषयः.	पृष्ठांकः.	विषयः.	पृष्ठांकः.
अथ धान्यनामान्नवर्गः ॥ ११ ॥		३४ घृत से पकाये भक्ष्य के नामगुण	२१९
१ भोजन के ....नामगुण	२०९	३५ तेल में पकाये भक्ष्य के ,,	,,
२ भात के .... ,,	,,	३६ दूध में किये भक्ष्य के .... ,,	,,
३ ओदन के .... ,,	२१०	३७ घेवर के .... ,,	,,
४ यवागू, पेया और मण्ड के ,,	,,	३८ मूंगसंयाव के .... ,,	२२०
५ यवागू के .... ,,	२११	३९ खजला के .... ,,	२२१
६ विलेपी के .... ,,	,,	४० मालपुआ के.... .... ,,	,,
७ पेया के .... ,,	,,	४१ दहीमालपुआ के .... ,,	,,
८ मंड के .... ,,	,,	४२ विस्यन्द के .... ,,	,,
९ याव्यमंड और लाजमंड के ,,	,,	४३ लपसी के .... ,,	२२२
१० अष्टगुण मंड के .... ,,	२१२	४४ फेनी के .... ,,	,,
११ यूषका लक्षण .... ,,	,,	४५ लड्डू के .... ,,	२२३
१२ अनार व आंवला के यूष के ,,	,,	४६ बडा के .... ,,	,,
१३ मूंग आंवले के यूष के ,,	२१३	४७ काजी के बडा के .... ,,	,,
१४ कुलथी यूष के .... ,,	,,	४८ जवों की कांजी के बडा के ,,	२२४
१५ सूप्यमूलक यूंष के .... ,,	,,	४९ सुहाली के .... ,,	,,
१६ चनायूष के .... ,,	,,	५० जलेबी के .... ,,	,,
१७ मोठयूष के .... ,,	,,	५१ कुल्माष के.... .... ,,	२२५
१८ कृतयूष अकृतयूष के .... ,,	,,	५२ सत्तू के .... ,,	,,
१९ सामान्ययूष के .... ,,	२१४	५३ मंथ के .... ,,	,,
२० सूप्य अर्थात् दाल के .... ,,	,,	५४ जवों के सत्तू के .... ,,	,,
२१ खिचडी के.... .... ,,	,,	५५ जवों की खीला के .... ,,	२२६
२२ क्षिप्रा के .... ,,	२१५	५६ धानी के .... ,,	,,
२३ खीर के .... ,,	,,	५७ मुरमुरों के .... ,,	,,
२४ राजखांडव आदि के .... ,,	,,	५८ होला के .... ,,	२२७
२५ खंडाम्र और खंडामलक के ,,	,,	५९ लंबी के .... ,,	,,
२६ रसाला के .... ,,	२१६	६० पक्व मांस के .... ,,	,,
२७ पानक अर्थात् पना के.... ,,	,,	६१ तलित और शूल्यमांस के ,,	,,
२८ सादक के .... ,,	२१७	६२ तलित मांस के .... ,,	,,
२९ मांडापोली के .... ,,	,,	६३ अंगारपर प्रतप्तमांस के.... ,,	२२८
३० शालि भक्ष्य के .... ,,	२१८	६४ पिष्टमांस के .... ,,	,,
३१ गेहूं के भक्ष्य के .... ,,	,,	६५ भर्जितमांस के .... ,,	२२९
३२ उडद के भक्ष्य के .... ,,	,,	६६ तंदुपक्व मांस के .... ,,	,,
३३ गुड से युक्त किये हुए भक्ष्य के	२१९	६७ तैलपक्व मांस के .... ,,	,,

विषयः.	पृष्ठांकः.
६८ घृतसे पकाये मांस के नामगुण	२२९
६९ तक्र आदिमें पकाये गये मांसके	,,
७० अच्छी तरह सिजाये मांस के	,,
७१ वेसवार के .... ,,	२३०
७२ सौरभमांस के .... ,,	,,
७३ सौरवमांस के .... ,,	,,
७४ स्थानिष्क के .... ,,	,,
७५ मांसरस के .... ,,	,,
७६ अनारयुत मांसरस के .... ,,	२३१
७७ सौरवा आदि के .... ,,	,,
७८ क्वथित के .... ,,	,,
७९ पापड के .... ,,	२३२
८० खल के .... ,,	,,
८१ फल के .... ,,	,,
इति धान्यनामान्नवर्गः एकादशः ॥ ११ ॥	

अथ मांसवर्गः ॥ १२ ॥

१ हाथी के ....नामगुण	२३३
२ घोडा के .... ,,	,,
३ खच्चर के .... ,,	,,
४ ऊंट के .... ,,	२३४
५ गधे के .... ,,	,,
६ भैंसा के .... ,,	,,
७ रीछ के .... ,,	२३५
८ गैंडा के .... ,,	,,
९ सिंह और शार्दूल के .... ,,	,,
१० वघेरा के .... ,,	,,
११ चीता के .... ,,	,,
१२ भेडिया के .... ,,	,,
१३ कुत्ता के .... ,,	२३६
१४ सूकर के .... ,,	,,
१५ बकरी और बकरा के .... ,,	,,
१६ भेड और मेंढा के .... ,,	२३७
१७ हिरण आदि के .... ,,	,,
१८ गोकर्ण और शाबर के नामगुण	२३७
१९ रोझ के .... ,,	२३८
२० कस्तूरी और मुंडनीमृग के ,,	,,
२१ चीतल और छिक्कार के ,,	,,
२२ रुरुमृग के .... ,,	२३९
२३ शशा (खरगोश) के.... ,,	,,
२४ महामृग के .... ,,	,,
२५ शेह के .... ,,	,,
२६ बिलाव और नौला के .... ,,	,,
२७ बानर के .... ,,	२४०
२८ गीदड के .... ,,	,,
२९ मूषा के .... ,,	२४१
३० पक्षी के .... ,,	,,
३१ तीतर के .... ,,	,,
३२ बतक के .... ,,	,,
३३ लावा (बटेर) के .... ,,	,,
३४ चिडा के .... ,,	२४२
३५ गांजीण पक्षी के .... ,,	,,
३६ परेवा और कबूतर के .... ,,	,,
३७ मोर के .... ,,	२४३
३८ मुरगा के .... ,,	,,
३९ तोता और मैना के .... ,,	,,
४० कोयल के .... ,,	२४४
४१ काक और भास के .... ,,	,,
४२ गीध के .... ,,	,,
४३ हंस के .... ,,	२४५
४४ हंसके मांस के .... ,,	,,
४५ सारस और चकवा के .... ,,	,,
४६ बगुला के .... ,,	,,
४७ आडि के .... ,,	,,
४८ सारस आदि के मांस के ,,	२४६
४९ करेट के .... ,,	,,
५० अंजन के .... ,,	,,
५१ पपैया के .... ,,	,,

विषयः.	पृष्ठांकः.	विषयः.	पृष्ठांकः.
५२ भरद्वाज के .... नामगुण	२४६	६९ नहीं खाने योग्य मांस के नामगुण	२५२
५३ शिकरा और चील के .... ,,	,,	इति मांसवर्गो द्वादशः समाप्तः ॥ १२ ॥	
५४ उल्लू के .... ,,	२४७		
५५ चकोर के .... ,,	,,	अथ मिश्रवर्गः ॥ १३ ॥	
५६ कुंज आदि के .... ,,	,,	१ पीना आदि के ....नामगुण	२५३
५७ मछली के .... ,,	,,	२ स्नान आदि के .... ,,	,,
५८ क्षुद्रमत्स्य और मत्स्यांड के ,,	२४९	३ पगडी बांधने के .... ,,	२६०
५९ शिशुमार मछली के .... ,,	,,	४ छत्री लगाने के .... ,,	,,
६० कछुआ के .... ,,	२५०	५ लट्ठी धारन करने के .... ,,	,,
६१ मींडक के .... ,,	,,	६ शय्या, आतप, पवन आदि के ,,	,,
६२ ककेरा के .... ,,	,,	७ षड्रस के .... ,,	,,
६३ सांप के .... ,,	,,	८ रेचक के .... ,,	,,
६४ डिंडिभ सांप के .... ,,	२५१	९ रक्त निकालने के .... ,,	,,
६५ सापों के मांस के .... ,,	,,	१० वर्षा आदि ऋतु के .... ,,	२६६
६६ गोह और गोहरा के .... ,,	,,	११ कवि का वृत्त .... ,,	२६९
६७ तत्काल हत हुए मांस के ,,	,,	इति मिश्रवर्गस्त्रयोदशः समाप्तः ॥ १३ ॥	
६८ स्वयंमृत मांस के .... ,,	२५२		

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना,

कल्याण—मुंबई.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

पांडितरविदत्तविरचितभाषाटीकासमेतः

मदनपालनिघण्टुः ।

बीजं श्रुतीनां सुधनं मुनीनां जीवं जडानां महदादिकानाम् ।
आग्नेयमस्त्रं भवपातकानां किञ्चिन्महः श्यामलमाश्रयामि ॥ १ ॥

श्रीमद्गुरून्नमस्कृत्य रविदत्तेन धीमता ।
सुमदनविनोदस्य भाषाटीका विरच्यते ॥

अर्थ–मदनपाल राजा मंगलके अर्थ प्रथम श्लोक रचकर परमेश्वरकी स्तुति करता है । वेदोंको बीजरूप, मुनियोंका सुंदर धन, महत् आदि जडोंका जीवनरूप और संसारके पापोंका आग्नेय अस्त्र ऐसे कछुक श्यामल तेज अर्थात् विष्णुके तेजका आश्रित होता हूं ॥ १ ॥

लुब्धा कपोलमधुवारिमधुव्रताली कुम्भस्थलीमधुविभूषणलो-
हिताङ्गी । माणिक्यमौलिरिव राजति यस्य मौलौ विघ्नं स
धूनयतु विघ्नपतिः सदा नः ॥ २ ॥

अर्थ–कपालपरके मदके पानीपर लुभाई हुई और शिरके मदरूप भूषणसे लाल अंगोंवाली ऐसी भौरोंकी पंक्ति उत्तम माणिक्यकी तरह जिसके मुकुटपर प्रकाशित है वह गणेशजी सब कालमें हमारे विघ्नको दूर करे ॥ २ ॥

यो ध्वान्तसन्ततिगभीरपयोधिमध्यान्निष्कासयत्यशरणं भुवनं
निमज्जत् । दत्त्वा जगत्त्रयहितः स्वकरावलम्बं वाञ्छां स वो
दिनकरः सफलीकरोतु ॥ ३ ॥

अर्थ–अब ग्रंथाकर मंगलके अर्थ श्रीसूर्यनारायणकी स्तुति करता है । जो अंधेरोंको विस्ताररूपी गंभीर समुद्रके मध्यसे शरणरहित और डूबते हुए संसारको अपना हाथ गहाके निकालता है और तीन प्रकारके जगत्में हित करता है ऐसा यह सूर्यनारायण तुम्हारी इच्छाको सफल करे ॥ ३ ॥

मिथ्याशनादिकृतदोषचयेन कोपान्नद्यम्बुवर्द्धित उपद्रवनक्र-

भीमे । रोगाम्बुधौ भवजनस्य निमज्जतो यः पोतः प्रयच्छतु
शुभानि स काशिराजः ॥ ४ ॥

अर्थ–मिथ्या भोजन आदिसे उत्पन्न किये दोषके संचयकरके कोपसे नदियोंके पानीसे बढा हुआ और उपद्रवरूप मच्छोंसे भयानक ऐसे रोगरूपी समुद्रमें डूबते हुए संसारके मनुष्योंका जो जहाजरूप है वह काशिराज अर्थात् धन्वंतरिका अवतार शुभ देवे ॥ ४ ॥

केचित्सन्ति निघण्टवोऽतिलघवः केचिन्महान्तः परे
केचिद्दुर्गमनामकाः कतिपये भावाः स्वभावोच्छ्रिताः ।
तस्मान्नातिलघुर्न चातिविपुलः ख्यातादिनामा सतां
प्रीत्यै द्रव्यगुणान्वितोऽयमधुना ग्रन्थो मया बध्यते ॥ ५ ॥

अर्थ–कितनेक निघंटु अत्यंत छोटे हैं और कितनेक निघंटु अत्यंत बडे हैं कितनेक नहीं जाने जा सकें ऐसे नामोंवाले हैं और कितनेक निघंटु स्वभावसे बढे हुए हैं इसवास्ते न अत्यंत छोटा और न अत्यंत बडा और जाने जा सके नाम जिसमें ऐसा द्रव्य और गुणसे अन्वित यह निघंटु ग्रंथ सत्पुरुषोंकी प्रीतिके अर्थ मैं रचता हूं ॥ ५ ॥

सर्वं कायेन संसाध्यं तस्यायुः स्थितिकारणम् ।
आयुर्वेदोपदेशस्तु कस्य न स्यात् फलावहः ॥ ६ ॥

अर्थ– संपूर्ण पदार्थ शरीरकरके संसाधित होते हैं उस शरीरकी स्थितिका कारण आयु है इस करके आयुर्वेदका उपदेश किसको फलदायक नहीं है अर्थात् सभीको फलदायक है ॥ ६ ॥

तत्रापि पूर्वं ज्ञातव्या द्रव्यनामगुणागुणाः ।
अतस्त एव वक्ष्यन्ते तज्ज्ञाने हि क्रियाक्रमः ॥ ७ ॥

अर्थ–उसमेंही प्रथम द्रव्यके गुण और दोष जानने योग्य हैं इस कारण वेही कहेंगे उनके जाननेमेंही क्रियाक्रम है ॥ ७ ॥

हरीतकीप्रशंसा तद्भेदाश्च ।

हरस्य भवने जाता हरिता च स्वभावतः ।
हरयेत्सर्वरोगांश्च तेन प्रोक्ता हरीतकी ॥ ८ ॥

अर्थ–महादेवके स्थानमें उपजी स्वभावसे हरित रंगवाली और सब रोगोंको हरती है इस कारणसे हरीतकी कही जाती है ॥ ८ ॥

जीवन्ती पूतना पश्चादमृता विजयाभया ।
रोहिणी चेतकी सप्तभेदभिन्ना हरीतकी ॥ ९ ॥

अर्थ–जीवंती, पूतना, अमृता, विजया, अभया, रोहिणी, चेतकी इन सात भेदोंसे भिन्न हुई हरीतकी है ॥ ९ ॥

जीवन्ती जीवनोद्योगात् पावनात् पूतना मता ।
सुधावदमृता ज्ञेया विजया विजयप्रदा ॥ १० ॥

अर्थ–जीवनका उद्योग करनेसे जीवंती है, पवित्र करनेसे पूतना है, अमृतके समान अमृता जाननी चाहिये, विजया विजयको देती है ॥ १० ॥

नृणामभयदा यस्मादभया तत् प्रकीर्तिता ।
रोहिणी तु गुणारोहाच्चेतनाच्चेतकी मता ॥ ११ ॥

अर्थ–मनुष्योंको अभय देती है इसवास्ते अभया कही है, गुणोंको उपजानेसे रोहिणी है और चेतनसे चेतकी कही है ॥ ११ ॥

जीवन्ती स्वर्णवर्णाभा पूतनास्थिमती मता ।
अमृता त्रिदला प्रोक्ता विजया तुम्बरूपिणी ॥ १२ ॥

अर्थ–सोनेके वर्णके समान कांतिवाली जीवंती होती है, गुठलियोंवालीको पूतना मानी है, तीन दलोंवालीको अमृता कही है और तूंबेके समान रूपवाली विजया होती है ॥ १२ ॥

पञ्चाङ्गी त्वभया ज्ञेयामृता वृत्ता तु रोहिणी ।
त्र्यङ्गी तु चेतकी ज्ञेया कर्म तासामथोच्यते ॥ १३ ॥

अर्थ–पांच अंगोंवाली अभया होती है, गोल हो वह रोहिणी मानी गई है और तीन अंगोंवाली चेतकी होती है । अब उनका कर्म कहते हैं ॥ १३ ॥

सर्वरोगेषु जीवन्ती प्रलेपे पूतना हिता ।
शुद्ध्यर्थममृता प्रोक्ता विजया सर्वरोगहृत् ॥ १४ ॥

अर्थ–सब रोगोंमें जीवंती हित है, लेपमें पूतना हित है, जुलाबके वास्ते अमृता कही है और विजया सब रोगोंको हरती है ॥ १४ ॥

अक्षिरोगेऽभया शस्ता रोहिणी व्रणरोहिणी ।
चेतकी चूर्णयोगे स्यात् सप्तधैव प्रकीर्त्तिता ॥ १५ ॥

अर्थ–आंखोंके रोगमें अभया श्रेष्ठ है, रोहिणी घावको पूरती है और चूर्णके योगमें चेतकी हित होती है, ऐसे सात प्रकारकी हरडे कही है ॥ १५ ॥

नवा स्निग्धा घना वृत्ता गुर्वी क्षिप्ता च याम्भसि ।
निमज्जेत्सा प्रशस्ता स्याद्रोगघ्नीति गुणप्रदा ॥ १६ ॥

अर्थ–नवीन, चिकनी, करडी, गोल और भारी हो तथा पानीमें गिराई हुई जो डूब जावे वह हरडै उत्तम होती है, रोगको नाशती और गुणोंको देती है ॥ १६ ॥

शोणा च्छिन्ना गुडनिभा किंचिदल्पा कषायिणी ।
स्थूलत्वक् सरसा स्वल्पबीजा गुर्वी हरीतकी ॥ १७ ॥

अर्थ–लाल कमलके समान कांतिवाली, तोडनेमें गुडके समान कांतिवाली, कछुक छोटी, कषैले स्वादवाली, मोटी छालवाली, रससहित, अल्प बीजोंवाली और भारी ऐसी हरडै उत्तम होती है ॥ १७ ॥

चर्विता वर्द्धयत्यग्निं पेषिता मलशोधिनी ।
स्विन्ना संग्राहिणी प्रोक्ता भ्रष्टा पथ्यान्नद्रोहनुत् ॥ १८ ॥

अर्थ–चाबी हुई हरडै अग्निको बढाती है, पीसकर खाई हुई हरडै मलको शोधती है, सिजाई हुई हरडै कब्ज करती है और भूनी हुई हरडै अन्नके दोषको नाशती है ॥ १८ ॥

ग्रीष्मे तुल्यगुडां सुसैन्धवयुतां मेघावनद्धेऽम्बरे
तुल्यां शर्करया शरद्यमलया शुण्ठ्या तुषारागमे ।
पिप्पल्या शिशिरे वसन्तसमये क्षौद्रेण संयोजिता
राजन् प्राप्य हरीतकीमिव रुजो नश्यन्ति ते शत्रवः ॥ १९ ॥

अर्थ–ग्रीष्म अर्थात् ज्येष्ठ आषाढमें बराबर भाग गुडके संग, श्रावण और भादवामें सेंधानमकके संग, आश्विन और कार्तिकमें सुंदर खांडके संग, मंगशिर और पौषमें सुंदर सोंठके संग, माघ और फाल्गुनमें पीपलके संग, चैत्र और वैशाखमें शहदके संग ऐसे हरडैको प्राप्त हो रोग नष्ट होते हैं । तैसेही हे राजन् ! तेरे शत्रुभी नष्ट हों ॥ १९ ॥

हरीतकीनामगुणाः ।

शिवा हरीतकी पथ्या चेतकी विजया जया ।
प्रपथ्या प्रमथामोघा कायस्था प्राणदामृता ॥ २० ॥

अर्थ–शिवा, हरीतकी, पथ्या, चेतकी, विजया, जया, प्रपथ्या, प्रमथा, अमोघा, कायस्था, प्राणदा, अमृता ॥ २० ॥

जीवनीया हेमवती पूतना वृतनाभया ।
वयस्था नन्दिनी ज्ञेया श्रेयसी रोहिणी तथा ॥ २१ ॥

अर्थ-जीवनीया, हेमवती, पूतना, वृतना, अभया, वयस्था, नंदिनी, श्रेयसी और रोहिणी ये इक्कीस नाम हरडके हैं ॥ २१ ॥

हरीतकी पञ्चरसा लवणा तुवरोत्कटा ।
रूक्षोष्णा दीपनी मेध्या स्वादुपाका रसायनी ॥ २२ ॥

अर्थ-हरडैमें मीठा, कषैला, खट्टा, कडुवा और तेज ऐसे पांच रस हैं, नमकके स्वादवाली नहीं है और बहुत कषैली है, यह रूखी है, गर्म है, अग्निको जगाती है और शुद्धिको करती है, पचनमें स्वाद है, रसायनी अर्थात् बुढापेको दूर करती है ॥ २२ ॥

सदा बुद्धिप्रदा वृष्या चक्षुष्या बृंहणी लघुः ।
श्वासकासप्रमेहार्शःकुष्ठशोफोदरान् कृमीन् ॥ २३ ॥

अर्थ-सर है, बुद्धिको देती है, आयुको बढाती है, नेत्रोंको हित है, बलको बढाती है, हलकी है और श्वास (दमा), खांसी, प्रमेह, बवासीर, कुष्ठ, शोजा, उदररोग, कृमिरोग ॥ २३ ॥

वैस्वर्य्यग्रहणीदोषविबन्धविषमज्वरान् ।
गुल्माध्मानव्रणच्छर्दिहिक्काकण्डूहृद्दामयान् ॥ २४ ॥

अर्थ-स्वरका बिगडना, ग्रहणी दोष, विबंध, विषमज्वर, गुल्म, आध्मान, घाव, छर्दि, हिचकी, खाज, हृद्रोग ॥ २४ ॥

कामलां शूलमानाहं प्लीहानं चापकर्षति । मधुराम्लतया वातं
कषायस्वादुभावतः । पित्तं हन्ति कफं हन्ति कटुकेन हरीतकी२५

अर्थ-कामला, शूल, अफरा, तिल्लीरोग इनको दूर करती है, मीठेपन और खट्टेपनसे वातको हरती है, कषैलापन और स्वादुपनसे पित्तको हरती है, तेज रस करके कफको हरती है ॥ २५ ॥

आमलकनामगुणाः ।

धात्रीफलामृतफलामलकं श्रीफलं शिवम् ।
तद्धात्रीफलं वृष्यं विशेषाद्रक्तपित्तजित् ॥ २६ ॥

अर्थ-धात्रीफल, अमृतफल, आमलक, श्रीफल, शिव ये पांच नाम आंवलेके हैं । आंवलेका फल आयुको बढाता है और विशेषकरके रक्तपित्तको जीतता है ॥ २६ ॥

अम्लत्वात्पवनं हन्ति पित्तं माधुर्य्यशैत्यतः ।
कफं रूक्षकषायत्वात् तस्मात् किमधिकं फलम् ॥ २७ ॥

अर्थ-खट्टेपनसे वातको नाशता है, मधुरता और शीतलतासे पित्तको नाशता है, रूखेपनसे तथा कषैलेपनसे कफको नाशता है तो उससे अधिक फल क्या है अर्थात् कोईभी नहीं ॥ २७ ॥

बिभीतकनामगुणाः ।

बिभीतकः कर्षफलो भूतावासः कलिद्रुमः ।
वासन्तोऽक्षो वृद्धजातः संवर्त्तास्तिलपुष्पकः ॥ २८ ॥

अर्थ-बिभीतक, कर्षफल, भूतावास, कलिद्रुम, वासन्त, अक्ष, वृद्धजात, संवर्त, तिलपुष्पक ये नव नाम बहेडेके हैं ॥ २८ ॥

बिभीतकः स्वादुपाकः कषायः कफपित्तनुत् ।
उष्णवीर्यो हिमस्पर्शो भेदनः कासनाशनः ॥ २९ ॥

अर्थ-बहेडा पाकमें स्वादिष्ठ है, कषैला है, कफ और पित्तको नाशता है, गर्म-पराक्रमवाला है, स्पर्शमें शीतल है, भेदन है और खांसीको नाशता है ॥ २९ ॥

रूक्षो नेत्रहितः केश्यो मज्जातोयदकारकः ॥ ३० ॥

अर्थ-रूखा है, नेत्रोंको हित है, बालोंको बढाता है और इसकी गिरी नशा करती है ॥ ३० ॥

त्रिफलानामगुणाः ।

हरीतक्यास्त्रयो भागा शिवा द्वादशभागिका ।
षड् भागाः स्युर्बिभीतस्य त्रिफलेयं प्रकीर्त्तिता ॥ ३१ ॥

अर्थ-हरडे ३ भाग, आंवला १२ भाग, बहेडा ६ भाग यह त्रिफला कही है ॥ ३१ ॥

पित्तं माधुर्य्यशैत्यं तु कफं रूक्षकषायनुत् ।
त्रिफलैतत्त्रयेण स्याद्वरा श्रेष्ठा फलोत्तमा ॥ ३२ ॥

अर्थ-पित्त, मधुरता, शैत्य, कफ, रूखापन, कषैलापन इनको हरता है। त्रिफला, वरा, श्रेष्ठा, फलोत्तमा ये चार नाम त्रिफलाके हैं ॥ ३२ ॥

त्रिफला कुष्ठमेहार्शःकफपित्तविनाशिनी ।
चक्षुष्या रोपणी हृद्या वयसः स्थापिनी परा ॥ ३३ ॥

अर्थ-त्रिफला कुष्ठ, प्रमेह, बवासीर, पित्त इनको नाशती है, नेत्रोंमें हित है, घावपर अंकुर लाती है, सुंदर है और अवस्थाको विशेषकर स्थापित करती है ॥३३॥

भूधात्रीनामगुणाः ।

भूधात्री बहुपत्री स्यादमृतामलका शिवा ।
भूधात्री वातकृत्तिक्ता कषाया मधुरा हिमा ।
पिपासाकासपित्तास्रकृमिपाण्डुक्षतापहा ॥ ३४ ॥

अर्थ–भूधात्री, बहुपत्री, अमृता, आमलका, शिवा ये पांच नाम भूमिआंवलाके हैं । भूमिआंवला वातको करता है, कडुवा, कषैला, मीठा और शीतल है, तृषा, खांसी, रक्तपित्त, कृमि, पाण्डु और क्षतरोग इनको नाशता है ॥ ३४ ॥

प्राचीनामलकीनामगुणाः ।

प्राचीनामलकी प्राची नागरं रक्तकं मतम् ।
तत्पक्वं पित्तकफकृत् उष्णं गुरु समीरजित् ॥ ३५ ॥

अर्थ–प्राचीना, आमलकी, प्राची, नागर, रक्तक ये पांच नाम पानीआंवलाके हैं । इसका पका हुआ फल पित्त और कफको करता है, गर्म है और भारी है और वातको जीतता है ॥ ३५ ॥

अटरूषकनामगुणाः ।

अरूषकेणाववासा वृषा सिंहमुखी भिषक् ।
सिंहपर्णी वृषो वासा सिंहकोत्पाटरूषकः ॥ ३६ ॥

अर्थ–अरूषक, इणाववासा, वृषा, सिंहमुखी, भिषक्, सिंहपर्णी, वृष, वासा, सिंहक, उत्पाटरूषक ये दश नाम वासाके हैं ॥ ३६ ॥

वासको वातकृत्सर्य्यः कफपित्तास्रनाशनः ।
श्वासकासज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः ॥ ३७ ॥

अर्थ–वासा वातको करती है, सर है, कफ और रक्तपित्तको नाशती है । यह श्वास (दमा), कास (खांसी), ज्वर, छर्दि (उलटी), मेह, कोढ और क्षयको दूर करती है ॥ ३७ ॥

गुडूचीनामगुणाः ।

गुडूची कुण्डली छिन्ना वयस्थामृतवल्लरी ।
छिन्नोद्भवा छिन्नरुहामृता ज्वरविनाशिनी ॥ ३८ ॥

अर्थ–गुडूची, कुण्डली, छिन्ना, वयस्था, अमृतवल्लरी, छिन्नोद्भवा, छिन्नरुहा, अमृता, ज्वरविनाशिनी ॥ ३८ ॥

वत्सादनी चन्द्रहासा जीवन्ती चक्रलक्षणा ।
गुडूची कटुका लघ्वी स्वादुपाका रसायनी ॥ ३९ ॥

अर्थ-वत्सादनी, चन्द्रहासा, जीवन्ती, चक्रलक्षणा ये तेरह नाम गिलोयके हैं । गिलोय तीक्ष्ण, हलकी, पाकमें स्वादिष्ठ और रसायन है ॥ ३९ ॥

संग्राहिणी कषायोष्णा बल्या तिक्ताग्निदीपिनी ।
कामलाकुष्ठवातास्रज्वरपित्तकृमीन् जयेत् ॥ ४० ॥

अर्थ-मलको बांधती है, कषैली है, गर्म है, बलको बढाती है, कडुवी है, अग्निको जगाती है और कामला, कुष्ठ, वातरक्त, ज्वर, पित्त और कृमिरोग इनको जीतती है ॥ ४० ॥

घृतेन वातं सगुडा विबन्धं पित्तं सिताढ्या मधुना कफं च ।
वातास्रमुग्रं रुबुतैलमिश्रा शुण्ठ्यामवातं शमयेद्गुडूची ॥ ४१ ॥

अर्थ-घृतके संग वातको, गुडके संग विबंधको, मिश्रीके संग पित्तको, शहदके संग कफको, अरंडीके तेलके संग भयंकर वातरक्तको और सोंठके संग आमवातको गिलोय शांत करती हैं ॥ ४१ ॥

बिल्वनामगुणाः ।

बिल्वः शलाटुः शैलूषो मालूरश्च सदाफलः ।
लक्ष्मीफलो गन्धगर्भः शाण्डिल्यः कण्टकी मतः ॥ ४२ ॥

अर्थ-बिल्व, शलाटु, शलूष, मालूर, सदाफल, लक्ष्मीफल, गन्धगर्भ, शांडिल्य, कटंकी ये नव नाम बेलगिरीके हैं ॥ ४२ ॥

बिल्वं ग्राहि कषायोष्णं कटु दीपनपाचनम् ।
हृद्यं बालं लघु स्निग्धं तिक्तं वातकफापहम् ॥ ४३ ॥

अर्थ-बेलगिरी मलको बांधती है, कषैली और गर्म है, तेज, दीपन और पाचन है, सुंदर है । कच्ची बेलगिरी हलकी, चिकनी, कडवी और वात तथा कफको नाशकारी है ॥ ४३ ॥

वृष्यं गुरु त्रिदोषं स्याद्दुर्जरं पूतिमारुतम् ।
विदाहि विष्टम्भकरं मधुरं वह्निमान्द्यकृत् ॥ ४४ ॥

अर्थ-आयुको बढाती है, भारी और तीन दोषोंको उपजानेवाली है, देरमें जरनेवाली और दुर्गंधि वातवाली है, विशेषकर दाह और विष्टंभ करती है । यह मीठी है और अग्निको मंद करती है ॥ ४४ ॥

ग्रहणीकफवातामशूलघ्नी बिल्वपेषिका ॥ ४५ ॥

अर्थ-कोमल बेलगिरी ग्रहणी, कफ, वात, आम और शूलको नाशती है ॥ ४५ ॥

अरणिनामगुणाः ।

अग्निमन्थो मथः केतुररणिर्वैजयन्तिका ।
अग्निमन्थः श्वयथुहृद्वीर्य्योष्णः कफवातनुत् ॥ ४६ ॥

अर्थ-अग्निमन्थ, मथ, केतु, अरणि, वैजयंतिका ये पांच नाम अरनीके हैं। अरनी शोजाको हरती है, वीर्यमें गर्म है और कफवातको नाशती है ॥ ४६ ॥

पाटलानामगुणाः ।

पाटला कामदूतिः स्यात् कुम्भिका कालवृन्तिका ।
स्वल्पमेधा मधोर्दूती ताम्रपुष्पाम्बुवासिनी ॥ ४७ ॥

अर्थ-पाटला, कामदूति, कुम्भिका, कालवृंतिका, स्वल्पमेधा, मधोर्दूती, ताम्रपुष्पा, अंबुवासिनी ॥ ४७ ॥

अन्या फलेरुहा श्वेता कुम्भिका कृष्णपाटला ।
पाटलारुचिशोथार्शःश्वासतृट्छर्दिनाशिनी ॥ ४८ ॥

अर्थ-और फलेरुहा, श्वेता, कुम्भिका, कृष्णपाटला ये बारह नाम कृष्णपाटलाके हैं । पाटला अरुचि, शोजा, बवासीर, श्वास, तृषा और छर्दि इनको नाशती है ॥ ४८ ॥

अत्युष्णं तुवरं स्वादु तत्पुष्पं कफरक्तनुत् ।
पित्तातिसारदाहघ्नं फलं हिक्कास्रपित्तनुत् ॥ ४९ ॥

अर्थ-यह अत्यंत गर्म है, कषैली और स्वादिष्ठ है, उसका फूल कफ और रक्तको नाशता है, पित्त, अतिसार, दाह इनको नाशता है और उसका फल हिचकी और रक्तापित्तको नाशता है ॥ ४९ ॥

काश्मरीनामगुणाः ।

काश्मरी सर्वतोभद्रा श्रीपर्णी कृष्णवृन्तिका ।
कश्मारी कश्मरी हीरा काश्मर्य्या भद्रपर्णिका ॥ ५० ॥

अर्थ-काश्मरी, सर्वतोभद्रा, श्रीपर्णी, कृष्णवृंतिका, कश्मारी, कश्मरी, हीरा, काश्मर्या, भद्रपर्णिका ये नव नाम कंभारीके हैं ॥ ५० ॥

काश्मरी स्वरशूलघ्नी वीर्य्योष्णा मधुरा गुरुः ।
तत्पुष्पं वातलं ग्राहि पित्तासृक्प्रदरापहम् ॥ ५१ ॥

अर्थ–कंभारी ज्वर और शूलको नाशती है, वीर्यमें गरम है, मीठी और भारी है । कंभारीका फूल वातको उपजाता है, मलको बांधता है, रक्तपित्तको और प्रदरको नाशता है ॥ ५१ ॥

फलं रसायनं केश्यं बृंहणं शुक्रलं गुरु ।
वातपित्तक्षयतृष्णारक्तशूलविबन्धनुत् ॥ ५२ ॥

अर्थ–कंभारीका फल रसायन है, बालोंको बढाता है, शरीरको पुष्ट करता है, वीर्यको बढाता है, भारी है और वात, पित्त, क्षय, तृषा, रक्तशूल तथा वांझपन इनका नाश करता है ॥ ५२ ॥

श्योनाकनामगुणाः ।

श्योनाकः पृथुशिम्बिः स्यात् शुकनाशः कुटन्नटः ॥ ५३ ॥

अर्थ–श्योनाक, पृथुशिम्बि, शुकनाश, कुटन्नट ॥ ५३ ॥

भूतवृक्षश्च कट्वङ्गः टुण्टुकः शल्लकारलु ।
मयूरजङ्घो भल्लूकः प्रियजीवः कटम्भरः ॥ ५४ ॥

अर्थ–भूतवृक्ष, कट्वंग, टुण्टुक, शल्लक, अरलु, मयूरजंघ, भल्लूक, प्रियजीव, कटम्भर ये तेरह नाम श्योनापाठाके हैं ॥ ५४ ॥

श्योनाको दीपनः पाके कटुस्तुवरको हिमः ।
ग्राही तिक्तोऽनिलश्लेष्मपित्तकासविनाशनः ॥ ५५ ॥

अर्थ–श्योनापाठा दीपन है, पाकमें चर्परा है, कषैला और शीतल है, मलको बांधता है, कडुवा है और वात, कफ, पित्त तथा खांसीको नाशता है ॥ ५५ ॥

टुण्टुकस्य फलं बालं रूक्षं वातकफापहम् ।
हृद्यं कषायमधुरं लघु रोचनदीपनम् ॥ ५६ ॥

अर्थ–श्योनापाठाका कोमल फल रूखा है, वात कफको नाशता है, सुंदर है, कषैला, मीठा और हलका है, रोचन और दीपन है ॥ ५६ ॥

बृहत्पञ्चमूलनामगुणाः ।

बिल्वादिभिः पञ्चभिरेभिरेतत्स्यात्पञ्चमूलं महदग्निकारि ।
लघूष्णतिक्तं रसतः कषायं मेदःकफश्वाससमीरहारि ॥ ५७ ॥

अर्थ–बेलगिरी, अरनी, पाटला, कंभारी और श्योनाक इन पांचोंकरके बृहत्पञ्चमूल होता है । यह अग्निको करता है तथा हलका, गर्म, कडुवा और कषैला है, मेद, कफ, श्वास और वात इनको हरता है ॥ ५७ ॥

गोक्षुरनामगुणाः ।

त्रिकण्टकः कण्टफलो गोक्षुरः स्वादुकण्टकः ।
गोकण्टको भक्ष्यटंकस्त्रिकण्टो व्यालदंष्ट्रकः ॥ ५८ ॥

अर्थ-त्रिकण्टक, कण्टफल, गोक्षुर, स्वादुकण्टक, गोकण्टक, भक्ष्यटंक, त्रिकण्ट, व्यालदंष्ट्रक ॥ ५८ ॥

श्वदंष्ट्रा स्थूलशृंगाटः षडङ्गः क्षुरकस्त्रिकः ।
गोक्षुरः शीतलः स्वादुर्बलकृद्बस्तिशोधनः ॥ ५९ ॥

अर्थ-श्वदंष्ट्रा, स्थूलशृंगाट, षडंग, क्षुरक, त्रिक ये तेरह नाम गोखरूके हैं । गोखरू शीतल और स्वादिष्ठ है, बलको करता है तथा बस्तिको शोधता है ॥५९॥

प्रमेहश्वासकासास्रकृच्छ्रहृद्रोगवातजित् ॥ ६० ॥

अर्थ-और प्रमेह, श्वास, खांसी, रक्तपित्त, हृद्रोग और वात इनको जीतता है॥६०॥

शालपर्णीनामगुणाः ।

शालपर्णी ध्रुवा सौम्या त्रिपर्णी पीतनी स्थिरा ।
विदारिगन्धातिगुहा दीर्घमूलांशुमत्यपि ॥ ६१ ॥

अर्थ-शालपर्णी, ध्रुवा, सौम्या, त्रिपर्णी, पीतनी, स्थिरा, विदारिगन्धा, अतिगुहा, दीर्घमूला, अंशुमती ये दश नाम शरवनके हैं ॥ ६१ ॥

शालपर्णी गुरुश्छर्दिज्वरश्वासातिसारनुत् ।
शोषदोषत्रयहरा बृंहत्युष्णा रसायनी ॥ ६२ ॥

अर्थ-शरवन भारी है और छर्दि, ज्वर, श्वास, अतिसार, शोष और तीनों दोष इन्होंको हरती है, बहुत गर्म और रसायन है ॥ ६२ ॥

पृष्ठपर्णीनामगुणाः ।

पृष्ठपर्णी क्रोष्टुपुच्छा धावनी कलशारुहा ।
शृगालवृत्ताहितिला पृथक्पर्णी च पार्णिका ॥ ६३ ॥

अर्थ-पृष्ठपर्णी, क्रोष्टुपुच्छा, धावनी, कलशारुहा, शृगालवृत्ता, अहितिला, पृथक्पर्णी, पार्णिका ये आठ नाम पिठवनके हैं ॥ ६३ ॥

पृष्ठपर्णी लघुर्वृष्या मधुरोष्णा विनाशयेत् ।
रक्तातिसारदाहतृड्दोषत्रयवमिज्वरान् ॥ ६४ ॥

अर्थ-पिठवन हलकी है, आयुको बढाती है, मीठी तथा गर्म है और रक्तातिसार, दाह, तृषा, तीनों दोष, छार्द, ज्वर इनका नाश करती है ॥ ६४ ॥

स्थूलभण्टाकीनामगुणाः ।

बृहती स्थूलभण्टाकी विषदा च मदोत्कटा ।
वृन्ताकी महती सिंही कण्टकी राष्ट्रकाकुली ॥ ६५ ॥

अर्थ–बृहती, स्थूलभंटाकी, विषदा, मदोत्कटा, वृन्ताकी, महती, सिंही, कंटकी, राष्ट्रकाकुली ये नव नाम बृहतीके हैं ॥ ६५ ॥

बृहती ग्राहिणी हृद्या पाचनी कफवातजित् ।
उष्णा कुष्ठज्वरश्वासशूलकासाग्निमान्द्यजित् ॥ ६६ ॥

अर्थ–बडी कटेली मलको बांधती है, सुंदर और पाचनी है, कफ वातको जीतती है; गर्म है, कुष्ठ, ज्वर, श्वास, शूल, खांसी, मंदाग्नि इनको जीतती है ॥ ६६ ॥

श्वेतकण्टकारीनामगुणाः ।

कण्टारिका कण्टिकिनि कण्टकारी निदग्धिका ।
दुःस्पर्शा धावनी क्षुद्रा स्याद् व्याघ्री दुःप्रदर्शिनी ॥ ६७ ॥

अर्थ–कण्टारिका, कण्टिकिनी, कण्टकारी, निदग्धिका, दुःस्पर्शा, धावनी, क्षुद्रा, व्याघ्री, दुःप्रदर्शिनी ॥ ६७ ॥

शिता क्षुद्रा चन्द्रहासा लक्ष्मणा स्वेददूतिका ।
कण्टकारी सरा तिक्ता कटुका दीपनी लघुः ॥ ६८ ॥

अर्थ–शिता, क्षुद्रा, चन्द्रहासा, लक्ष्मणा, स्वेददूतिका ये चौदह नाम कटेली और सफेद कटेलीके हैं । कटेली सर, कडुवी, चर्चरी, दीपनी और हलकी है ॥ ६८ ॥

रूक्षोष्णा पाचनी कासश्वासज्वरकफानिलान् ॥ ६९ ॥

अर्थ–यह रूखी, गर्म और पाचनी तथा खांसी, श्वास, ज्वर, कफ, वात ॥६९॥

निहन्ति पीनसं पार्श्वपीडाकृच्छ्रहृदामयान् ।
तद्वत् प्रोक्ता शिता क्षुद्रा विशेषात् गर्भकारिणी ॥ ७० ॥

अर्थ–पीनस, पसलीके शूल, मूत्रकृच्छ्र और हृद्रोग इनको नाशती है, सफेद कटेलीके येही गुण हैं परंतु विशेषकरके गर्भको करती है ॥ ७० ॥

लघुपञ्चमूलनामगुणाः ।

ह्रस्वाख्यं पञ्चमूलं स्यात् पञ्चभिर्गोक्षुरादिभिः ।
बल्यं पित्तानिलहरं नात्युष्णं स्वादु बृंहणम् ॥ ७१ ॥

अर्थ–गोखरू, शरवन, पिठवन, दोनों कटेली इन पांचोंकरके लघुपंचमूल

कहाता है । यह बलको करता है, पित्तवातको हरता है, अत्यंत गर्म नहीं है, स्वादु है और वीर्यको बढाता है ॥ ७१ ॥

दशमूलनामगुणाः ।

एताभ्यां पञ्चमूलाभ्यां दशमूलमुदाहृतम् ।
दोषत्रयश्वासकासशिरःपीडापतन्त्रकान् ॥ ७२ ॥

अर्थ–इन दोनों पञ्चमूलोंको मिलानेसे दशमूल कहाता है । यह त्रिदोष, श्वास, खांसी, शिरकी पीडा, अपतंत्रक वात ॥ ७२ ॥

तन्द्रास्वेदज्वरानाहारुचिपार्श्वरुजो जयेत् ॥ ७३ ॥

अर्थ–तन्द्रा, पसीना, ज्वर, अफरा, अरुचि और पसलीशूल इनको जीतता है॥७३॥

ऋद्धिवृद्धिनामगुणाः ।

ऋद्धिः सुखंयुगं लक्ष्मीः सिद्धिः सर्वजनप्रिया ।
ऋषिसृष्टा रथाङ्गं स्यान्माङ्गल्यं श्रावणी वसुः ॥ ७४ ॥

अर्थ–ऋद्धि, सुखंयुग, लक्ष्मी, सिद्धि, सर्वजनप्रिया, ऋषिसृष्टा, रथाङ्ग, मांगल्य, श्रावणी, वसु ॥ ७४ ॥

योग्यं युग्या तुष्टिराशिवृद्धिरप्येतदाह्वया ।
ऋद्धिर्बल्या त्रिदोषघ्नी शुक्रला मधुरा गुरुः ॥ ७५ ॥

अर्थ–योग्य, तुष्टिराशि ये तेरह नाम ऋद्धिके और वृद्धिके हैं । ऋद्धि बलको करती है, त्रिदोषको नाशती है, वीर्यको बढाती है तथा मीठी और भारी है ॥ ७५ ॥

वृद्धिर्गर्भप्रदा शीता वृष्या कासक्षयास्रनुत् ॥ ७६ ॥

अर्थ–वृद्धिको देती है, शीतल है, आयुको बढाती है और खांसी, क्षय, रक्त इनका नाश करती है ॥ ७६ ॥

काकोलीक्षीरकाकोलीनामगुणाः ।

काकोली मधुरा वीरा कायस्था क्षीरशुक्लिका ।
ध्वाङ्क्षोली वायसोली स्यात् स्वादुमांसी पयस्विनी ॥ ७७ ॥

अर्थ–काकोली, मधुरा, वीरा, कायस्था, क्षीरशुक्लिका, ध्वांक्षोली, वायसोली, स्वादुमांसी, पयस्विनी ये नव नाम काकोलीके हैं ॥ ७७ ॥

द्वितीया क्षीरकाकोली सुराह्वा क्षीरिणी मता ।
पीवरो सदृशस्कन्धः सक्षीरः ससुगन्धकः ।

क्षीरकाकोलिका ख्यातः पित्तदोषज्वरापहः ॥ ७८ ॥

अर्थ-क्षीरकाकोली, सुराह्वा, क्षीरिणी, पीवर, सदृशस्कंध, सक्षीर, ससुगंधक, क्षीरकाकोलिका ये आठ नाम क्षीरकाकोलीके हैं । यह पित्तदोष और ज्वरको नाशती है ॥ ७८ ॥

काकोलीयुगलं शीतं शुक्रलं मधुरं गुरु ।
जयेत्समीरदाहास्रपित्तशोषतृषाज्वरान् ॥ ७९ ॥

अर्थ-दोनों काकोली शीतल हैं, वीर्यको देती हैं, मीठी और भारी हैं तथा वात, दाह, रक्तपित्त, शोष, तृषा, ज्वर इनका नाश करती है ॥ ७९ ॥

मेदामहामेदानामगुणाः ।

मेदा ज्ञेया शालपर्णी वृष्या मेदोभवा धरा ।
महामेदा वसुच्छिद्रा त्रिदन्ता दैवतामणिः ॥ ८० ॥

अर्थ-मेदा, ज्ञेया, शालपर्णी, वृष्या, मेदोभवा, धरा ये छः नाम मेदाके हैं । महामेदा, वसुच्छिद्रा, त्रिदन्ता, दैवतामणि ये चार नाम महामेदाके हैं ॥ ८० ॥

मेदायुगं गुरु स्वादु वृष्यस्तन्यकफापहम् ।
बृंहणं शीतलं रक्तं पित्तक्षयसमीरनुत् ॥ ८१ ॥

अर्थ-दोनों मेदा भारी हैं, स्वादु हैं, आयुको बढाती हैं, चूंचीके रोग और कफको नाशती हैं, वीर्यको बढाती हैं, शीतल है और रक्तपित्त, क्षय, वात इनका नाश करती हैं ॥ ८१ ॥

जीवकर्षभकनामगुणाः ।

जीवको मधुरः शृङ्गी ह्रस्वाङ्गः कूर्चशीर्षकः ।
ऋषभो वीर इन्द्राक्षो विषाणी दुर्द्धरो वृषः ॥ ८२ ॥

अर्थ-जीवक, मधुर, शृङ्गी, ह्रस्वाङ्ग, कूर्चशीर्षक ये पांच नाम जीवकके हैं । ऋषभ, वीर, इन्द्राक्ष, विषाणी, दुर्धर, वृष ये छः नाम ऋषभके हैं ॥ ८२ ॥

जीवकर्षभकौ बल्यौ शीतौ शुक्रकफप्रदौ ।
हरतः पित्तदाहास्रकासवातक्षयामयान् ॥ ८३ ॥

अर्थ-ये दोनों बलको करती हैं, शीतल हैं, वीर्यको और कफको देती हैं और पित्त, दाह, रक्त, खांसी, वात, क्षय, आम इनको नाशती हैं ॥ ८३ ॥

अष्टवर्गनामगुणाः ।

अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैरेतैः शीतोऽतिशुक्रलः ।

बृंहणः पित्तदाहास्रशोषघ्नः स्तन्यगर्भकृत् ॥ ८४ ॥

अर्थ–ऋद्धि आदि आठ औषधीकरके अष्टवर्ग होता है । यह शीतल और अत्यन्त वीर्यद है, आयुको बढाता है तथा पित्त, दाह, रक्त, शोष इनको नाशता है, दूधको और गर्भको करता है ॥ ८४ ॥

जीवन्तीनामगुणाः ।

जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया यशस्करी ।
शाकश्रेष्ठा जीवभद्रा माङ्गल्या जीववर्द्धनी ॥ ८५ ॥

अर्थ–जीवंती, जीवनी, जीवा, जीवनीया, यशस्करी, शाकश्रेष्ठा, जीवभद्रा, मांगल्या, जीववर्द्धनी ये नव नाम जीवंतीके हैं ॥ ८५ ॥

जीवन्ती शीतला स्वादुः स्निग्धा दोषत्रयापहा ।
रसायनी बलकरी चक्षुष्या ग्राहिणी लघुः ॥ ८६ ॥

अर्थ–जीवंती शीतल है, स्वादु, चिकनी, त्रिदोषका नाश करनेवाली, रसायनी और बल बढानेवाली है । यह नेत्रोंको हित है, मलको बांधती है और हलकी है८६

मधुयष्टीनामगुणाः ।

मधुयष्टी क्लीतनकं यष्टीमधु मधूलिका ।
यष्ट्याह्वं मधुकं यष्टिमधूकं जलजा मधुः ।
मधुयष्टी गुरुः शीता बल्या तृट्च्छर्दिपित्तजित् ॥ ८७ ॥

अर्थ–मधुयष्टी, क्लीतनक, यष्टीमधु, मधूलिका, यष्ट्याह्व, मधुक, यष्टिमधूक, जलजा, मधु ये नव नाम मुलहटीके हैं । मुलहटी भारी, शीतल, बलको बढानेवाली और तृषा, छर्दि, पित्त इनको नाश करती है ॥ ८७ ॥

माषपर्णीमुद्गपर्णीनामगुणाः ।

माषपर्णी कृष्णवृन्ता काम्बोजी हयपुच्छिका ।
मांसमाषा सिंहमुखी स्वादुमाषा महासहा ॥ ८८ ॥

अर्थ–माषपर्णी, कृष्णवृंता, काम्बोजी, हयपुच्छिका, मांसमाषा, सिंहमुखी, स्वादुमाषा, महासहा ये आठ नाम माषपर्णीके हैं ॥ ८८ ॥

मुद्गपर्णी क्षुद्रसहा सूर्यपर्णी कुरङ्गिणी ।
वनजा रिङ्गिणी शिम्बी सिंही मार्जारगन्धिका ॥ ८९ ॥

अर्थ–मुद्गपर्णी, क्षुद्रसहा, सूर्यपर्णी, कुरङ्गिणी, वनजा, रीङ्गिणी, शिंबि, सिंही, मार्जारगंधिका ये नव नाम मूंगपर्णीके हैं ॥ ८९ ॥

माषपर्णी हिमा तिक्ता रूक्षा शुक्रबलासकृत् ।
मधुरा ग्राहिणी शोषवातपित्तज्वरास्रनुत् ।
तद्वद्भवेन्मुद्गपर्णी तृड्दोषार्शोहरा लघुः ॥ ९० ॥

अर्थ–माषपर्णी शीतल, कडवी, रूखी, वीर्यको और कफको करती है, मीठी है, मलको बांधती है और शोष, वात, पित्त, पित्तज्वर, रक्त इनको दूर करती है । इन्हीं गुणोंवाली मूंगपर्णी है । तृषादोष और बवासीरको हरती है और हलकी है ॥ ९० ॥

जीवनीयनामगुणाः ।

जीवन्ती सूर्यपर्णीयुक् काकोल्यौ जीवकर्षभौ ।
मेदोयष्टीति मधुरो जीवनीयगणो गुरुः ॥ ९१ ॥

अर्थ–जीवंती, सूर्यपर्णी, मूंगपर्णी, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, मुलहटी यह जीवनीय गण है । मीठा है, भारी है ॥ ९१ ॥

शुक्रकृद् बृंहणः शीतः स्तन्यगर्भकफप्रदः ।
रक्तपित्ततृषाशोषज्वरदाहक्षतापहः ॥ ९२ ॥

अर्थ–वीर्यको करता है, पुष्ट करता है, शीतल है, दूध, गर्भ, कफ इनको देता है और रक्तपित्त, तृषा, शोष, ज्वर, दाह, क्षत इनको नाशता है ॥ ९२ ॥

एरण्डरक्तैरण्डनामगुणाः ।

एरण्डो दीर्घदण्डः स्यात्तरुणो वर्द्धमानकः ।
चित्रः पञ्चाङ्गुलो व्याघ्रपुच्छो गन्धर्वहस्तकः ॥ ९३ ॥

अर्थ–एरण्ड, दीर्घदण्ड, तरुण, वर्द्धमानक, चित्र, पञ्चांगुल, व्याघ्रपुच्छ, गंधर्वहस्तक ये आठ नाम अरंडके हैं ॥ ९३ ॥

रक्तैरण्डो हस्तिकर्णो व्याघ्रो व्याघ्रतरो लघुः ।
उत्तानपत्र उरुबूकावैरी च चुञ्चुला ॥ ९४ ॥

अर्थ–रक्तैरण्ड, हस्तिकर्ण, व्याघ्र, व्याघ्रतर, लघु, उत्तानपत्र, उरुबु, वातावैरी और चुञ्चुला ये नव नाम लाल एरण्डके हैं ॥ ९४ ॥

एरण्डयुग्मं मधुरमुष्णं गुरु विनाशयेत् ।
शूलशोफकटीबस्तिशिरःपीडोदरज्वरान् ॥ ९५ ॥

अर्थ–दोनों एरंड मीठे हैं, गर्म हैं, भारी हैं और शूल, शोजा, कटिपीडा, उदररोग, ज्वर ॥ ९५ ॥

ब्रध्नश्वासकफानाहकासकुष्ठाममारुतान् ।
तत्फलं भेदनं स्वादु क्षारमुष्णं समीरजित् ॥ ९६ ॥

अर्थ–ब्रध्न, श्वास, कफ, अफरा, खांसी, कुष्ठ, आमवात इनको नाशते हैं, उनका फल भेदन है, स्वादु है, खारा है, गर्म है और वातको जीतता है ॥ ९६ ॥

काष्ठसारिवाकृष्णसारिवानामगुणाः ।

शारिवा शारदास्फोता गोपकन्या प्रतानिका ।
गोपांगना गोपवल्ली लताह्वा काष्ठशारिवा ॥ ९७ ॥

अर्थ–शारिवा, शारदा, आस्फोता, गोपकन्या, प्रतानिका, गोपाङ्गना, गोपवल्ली, लताह्वा, काष्ठशारिवा ये नव नाम काष्ठशारिवाके हैं ॥ ९७ ॥

शारिवान्या कृष्णमूली भद्रचन्दनशारिवा ।
भद्रा चन्दनगोपा च चन्दना कृष्णवल्ल्यपि ॥ ९८ ॥

अर्थ–शारिवान्या, कृष्णमूली, भद्रचन्दनशारिवा, भद्रा, चन्दनगोपा, चन्दना, कृष्णवल्ली ये सात नाम कृष्णशारिवाके हैं ॥ ९८ ॥

सारिवायुगलं स्वादु स्निग्धं शुक्रकरं गुरु ।
अग्निमान्द्यारुचिश्वासवमिकासतृषापहम् ।
दोषत्रयास्रप्रदरज्वरातीसारनाशनम् ॥ ९९ ॥

अर्थ–दोनों शारिवा स्वादु हैं, चिकनी हैं, वीर्यको करती हैं, भारी हैं और मंदाग्नि, अरुचि, श्वास, छर्दि, खांसी, विष, त्रिदोष, रक्त, पैरा, ज्वर, अतिसार इनको नाशती हैं ॥ ९९ ॥

यवासधन्वयासनामगुणाः ।

यासो मरुद्भवोऽनन्तो दीर्घमूलो यवासकः ।
बालपत्रः समुद्रान्तो दूरमूलोऽतिकण्टकः ॥ १०० ॥

अर्थ–यास, मरुद्भव, अनन्त, दीर्घमूल, यवासक, बालपत्र, समुद्रान्त, दूरमूल, अतिकण्टक ॥ १०० ॥

धन्वयासस्ताम्रमूली दुःस्पर्शा स्याद् दुरालभा ।
यासकः कच्छुरा ताम्रमूली धन्वयवासकः ॥ १ ॥

अर्थ–धन्वयास, ताम्रमूली, दुःस्पर्शा, दुरालभा ये तेरह नाम जवासाके हैं । यासक, कच्छुरा, ताम्रमूली, धन्वयवासक ये चार नाम धमासाके हैं ॥ १ ॥

यासः स्वादुरसस्तिक्तो हिमः पित्तहरो लघुः ।
हन्ति रक्तकफभ्रान्तींस्तद्वद्धन्वयवासकः ॥ २ ॥

अर्थ-जवासा स्वादु और रसवाला है, कडुवा है, शीतल है, पित्तको हरता है, हलका है और रक्त, कफ, भ्रम इनको हरता है और धमासामेंभी येही गुण हैं ॥ २ ॥

मुण्डीनामगुणाः ।

मुण्डी भिक्षुः परिव्राजी पावनी स्यात् तपोधना ।
श्रावणी श्रीमती मुण्डी तिक्ता श्रावणशीर्षका ॥ ३ ॥

अर्थ-मुण्डी, भिक्षु, परिव्राजी, पावनी, तपोधना, श्रावणी, श्रीमती, मुण्डी, तिक्ता, श्रावणशीर्षका ये दश नाम मुण्डीके हैं ॥ ३ ॥

मुण्डी तिक्ता कटुः पाके वीर्याणां मधुरा लघुः ।
मेध्या गण्डापचीकृच्छ्रकृमियोन्यर्तिपाण्डुजित् ॥ ४ ॥

अर्थ-मुण्डी कडुवी है, पाकमें चर्परी है, वीर्यवालोंको मधुर है, हलकी है, बुद्धिको बढाती है और गलगण्ड, अपची, मूत्रकृच्छ्र, कृमि, योनिरोग, पाण्डु इनको जीतती है ॥ ४ ॥

महामुण्डीभूमिकदम्बनामगुणाः ।

महामुण्डी लोभनीया छिन्नग्रन्थिनिका स्मृता ।
भूतवृक्षः कुलहलो लम्बुशालूः कदम्बकः ।
कदम्बपुष्पमुण्डीवत् गुणैर्भूमिकदम्बकः ॥ ५ ॥

अर्थ-महामुंडी, लोभनीया, छिन्नग्रंथिनिका ये तीन नाम महामुंडीके हैं । भूतवृक्ष, कुलहल, लम्बुशालू, कदम्बक ये चार नाम भूमिकदंबके हैं । गुणोंकरके भूमिकदंब, कदंबका फूल और मुंडी सब समान हैं ॥ ५ ॥

अपामार्गनामगुणाः ।

अपामार्गस्तु शिखरी किणही खरमञ्जरी ।
अधःशल्यः शौखिरिकः प्रत्यक्पुष्पी मयूरका ॥ ६ ॥

अर्थ-अपामार्ग, शिखरी, किणही, खरमंजरी अधःशल्य, शौखरिक, प्रत्यक्पुष्पी, मयूरका ये आठ नाम ऊंगाके हैं ॥ ६ ॥

अपामार्गः सरस्तीक्ष्णो दीपनः कफवातजित् ।
निहन्ति दद्रुसिध्मार्शःकण्डुशूलोदरारुचीः ॥ ७ ॥

अर्थ-ऊंगा सर है, तेज है, दीपन है, कफ वातको जीतता है और दाद, सींप, बवासीर, खाज, शूल, उदररोग, अरुचि इनका नाश करता है ॥ ७ ॥

रक्तापामार्गनामगुणाः ।

अन्यो रक्तो वृन्तफलो वशिरः कपिपिप्पली ।
अपामार्गोऽरुणो वातविष्टम्भी कफनाशनः ।
ऊनं पूर्वगुणै रूक्षस्तत्पत्रं रक्तपित्तनुत् ॥ ८ ॥

अर्थ-अन्यरक्त, वृंतफल, वशिर, कपिपिप्पली ये चार नाम लाल ऊंगाके हैं। लाल ऊंगा वात और विष्टंभको करता है और कफको नाशता है। ऊंगाके गुणोंसे इसमें कम गुण हैं। यह रूखा है, लाल ऊंगाका पत्ता रक्तपित्तको नाशता है ॥ ८ ॥

काम्पिल्यनामगुणाः ।

काम्पिल्यो रेचनो रक्तचूर्णको व्रणशोधनः ।
लोहितो रक्तशमनो रेची रञ्जनको मतः ॥ ९ ॥

अर्थ-काम्पिल्य, रेचन, रक्तचूर्णक, व्रणशोधन, लोहित, रक्तशमन, रेची, रञ्जनक ये आठ नाम कपालाके हैं ॥ ९ ॥

काम्पिल्या कफपित्तास्रकृमिगुल्मोदरव्रणान् ।
हन्ति रेची कटूष्णं च तच्छाकं ग्राहि शीतलम् ॥ ११० ॥

अर्थ-कपाला कफ, रक्तपित्त, कृमि, गुल्म, उदररोग, घाव इन्होंको नाशता है, जुलाब लगाता है, चर्परा है, गर्म है, कपालाका शाक मलको बांधता है और शीतल है ॥ ११० ॥

दन्तीनामगुणाः ।

दन्ती गुणप्रिया नागदन्ती शीघ्रानुकूलकः ।
उपचित्रानुकुम्भी स्याद्विशल्योदुम्बरच्छदा ॥ ११ ॥

अर्थ-दन्ती, गुणप्रिया, नागदंती, शीघ्रानुकूलक, उपचित्रा, अनुकुम्भी, विशल्या, उदुम्बरच्छदा ॥ ११ ॥

आखुपर्णी वृषैरण्डाः द्रवन्ती सर्वरी मता ।
मूषकाह्वा सुतश्रेणी प्रत्यक्श्रेणी च फञ्जिका ॥ १२ ॥

अर्थ-आखुपर्णी, वृषैरंडा, द्रवन्ती, सर्वरी, मूषकाह्वा, सुतश्रेणी, प्रत्यक्श्रेणी और फंजिका ये सोलह नाम दोनों तरहके जमालगोटेकी जडके हैं ॥ १२ ॥

दन्तीद्वयं सरं पाकरसयोः कटु दीपनम् ।

तीक्ष्णोष्णं हन्ति पित्तासृक्कफशोफोदरान् कृमीन् ॥ १३ ॥

अर्थ–दोनों जमालगोटोंकी जड सर, है, पाकमें और रसमें चर्परी है, दीपन है, तेज है, गर्म है और पित्त, रक्त, कफ, शोजा, उदररोग, कृमि इनको नाशती है ॥ १३ ॥

जयपालनामगुणाः ।

जयपालो दन्तिबीजं ख्यातं तत् तित्तिरीफलम् ।
जयपालो गुरुः स्निग्धो रेची पित्तकफापहः ॥ १४ ॥

अर्थ–जयपाल, दन्तिबीज, तित्तिरीफल ये तीन नाम जमालगोटेके हैं। जमालगोटा भारी है, चिकना है, जुलाब लगाता है, पित्तको और कफको नाशता है ॥ १४ ॥

श्वेतत्रिवृन्नामगुणाः ।

तिवृत् कुम्भोऽरुणा त्र्यस्रभण्डी कूटरवाहिनी ।
सर्वानुभूतिस्त्रिवृता त्रिपुटा सरला सिता ॥ १५ ॥

अर्थ–त्रिवृत्, कुम्भ, अरुण, अस्रभंडी, कूटरवाहिनी, सर्वानुभूति, त्रिवृता, त्रिपुटा, सरला, सिता ये दश नाम सफेद निशोतके हैं ॥ १५ ॥

त्रिवृत्तिक्ता सरा रूक्षा स्वादुरुष्णा समीरकृत् ।
कटुः पाके ज्वरश्लेष्मपित्तशोफोदरापहा ॥ १६ ॥

अर्थ–सफेद निशोत कडुवी है, सर है, रूखी है, स्वादु है, गर्म है, वातको जीतती है, पाकमें चर्परी है और ज्वर, कफ, पित्त, शोजा, उदररोग इनको जीतती है ॥ १६ ॥

कृष्णात्रिवृन्नामगुणाः ।

त्रिवृत्काला कालमेषी कालपर्ण्यर्द्धचन्द्रिका ।
सुखेनास्यान्मालविका मसूरा विदलान्विता ॥ १७ ॥

अर्थ–त्रिवृत्काला, कालमेषी, कालपर्णी, अर्धचंद्रिका, सुखेना, मालविका, मसूरा, विदला ये आठ नाम काली निशोतके हैं ॥ १७ ॥

त्रिवृत्काला हीनगुणा तस्यास्तीव्रविरेचिनी ।
मूर्च्छादाहमदभ्रान्तिवान्तिकर्षणकारिणी ॥ १८ ॥

अर्थ–काली निशोत सफेद निशोतसे कमगुणोंवाली है परंतु जुलाब तेज लगाती है और मूर्च्छा, दाह, मद, भ्रम, छर्दि इनको दूर करती है ॥ १८ ॥

इंद्रवारुणीवृन्दावनद्वयनामगुणाः ।

इन्द्रवारुण्यथेन्द्राह्वं वृषभाक्षी गवादिनी ।
ऐन्द्रवारुः क्षुद्रफला विशालैन्द्री वृषादिनी ॥ १९ ॥

अर्थ–इन्द्रवारुणी, इन्द्राह्व, वृषभाक्षी, गवादिनी, ऐंद्रवारु, क्षुद्रफला, विशाला, ऐंद्री, वृषादिनी ये नव नाम एक प्रकारकी इंद्रायनके हैं ॥ १९ ॥

अन्येन्द्रवारुणी चित्रफला चित्रमहाफला ।
आत्मरक्षा नागदन्ती त्रपुषी गजचिर्भटी ॥ १२० ॥

अर्थ–अन्येंद्रवारुणी, चित्रफला, चित्रमहाफला, आत्मरक्षा, नागदन्ती, त्रपुषी, गजचिर्भटी ॥ १२० ॥

श्वेतपुष्पी मृगाक्षी च तथा पक्षसुरा मता ।
मरुद्भवा कृमिगुहा चित्रदेवी च कीर्तिता ॥ २१ ॥

अर्थ–श्वेतपुष्पी, मृगाक्षी, पक्षसुरा, मरुद्भवा, कृमिगुहा, चित्रदेवी ये तेरह नाम दूसरी इंद्रायनके हैं ॥ २१ ॥

ऐन्द्रवारुद्वयं तिक्तं कटु पाके सरं लघु ।
वीर्योष्णं कामलापित्तकफप्लीहोदरापहम् ॥ २२ ॥

अर्थ–दोनों इंद्रायन कडुवी हैं, पाकमें चर्परी हैं, सर हैं, हलकी हैं, वीर्यमें गर्म हैं और कामला, पित्त, कफ, तिल्लीरोग इन्होंको नाशती हैं ॥ २२ ॥

आरग्वधनामगुणाः ।

आरग्वधो राजवृक्षः शम्याकः कृतमालकः ।
व्याधिघातः कर्णिकारः प्रग्रहश्चतुरङ्गुलः ॥ २३ ॥

अर्थ–आरग्वध, राजवृक्ष, शम्याक, कृतमालक, व्याधिघात, कर्णिकार, प्रग्रह, चतुरंगुल ॥ २३ ॥

आरोग्यशिम्बी स्वर्णाटः कर्णो दीर्घफलो मतः ।
कुण्डली हिमपुष्पा च कलिख्यातो नृपद्रुमः ॥ २४ ॥

अर्थ–आरोग्यशिंबी, स्वर्णाट, कर्ण, दीर्घफल, कुण्डली, हिमपुष्पा, कलिख्यात, नृपद्रुम ॥ २४ ॥

स्वर्णशेफालिका श्यावा कुष्ठसूदननाम तत् ।
स्वर्णस्थालपा पित्तला च सुवर्णद्रुम ईरितः ॥ २५ ॥

अर्थ–स्वर्णशेफालिका, श्यावा, कुष्ठसूदन, स्वर्णस्थाल्पा, पित्तला, सुवर्णद्रुम ये बाईस नाम अमलतासके हैं ॥ २५ ॥

आरग्वधो गुरुः स्वादुः शीतलो मृदुरेचनः ।
ज्वरहृद्रोगपित्तास्रवातोदावर्त्तशूलजित् ॥ २६ ॥

अर्थ–अमलतास भारी है, स्वादु है, शीतल है, कोमल जुलाब है और ज्वर, हृद्रोग, रक्तपित्त, वात, उदावर्त, शूल इन्होंको जीतता है ॥ २६ ॥

तत्पुष्पं वातलं ग्राहि तिक्तं पित्तकफापहम् ।
तन्मज्जा मधुरः पाके तिक्तः पित्तसमीरजित् ॥ २७ ॥

अर्थ–अमलतासका फूल वातको करता है, मलको बांधता है, कडुवा है, पित्त और कफको नाशता है, अमलतासकी गिरी पाकमें मीठी है, कडुवी है और वातको जीतती है ॥ २७ ॥

नीलिनीनामगुणाः ।

नीलिनी नीलिका ग्राम्या श्रीफला भारवाहिनी ।
रञ्जनी कलिका मेला तूणी रूक्षा विशोधिनी ॥ २८ ॥

अर्थ–नीलिनी, नीलिका, ग्राम्या, श्रीफला, भारवाहिनी, रंजनी, कलिका, मेला, तूणी, रूक्षा, विशोधिनी ये ग्यारह नाम नीलके हैं ॥ २८ ॥

नीलिनी रेचनी तिक्ता केश्या मोहभ्रमापहा ।
उष्णा हन्त्युदरप्लीहवातपित्तकफानिलान् ॥ २९ ॥

अर्थ–नील जुलाब लगाती है, कडुवी है, बालोंको बढाती है, मोह और भ्रमको नाशंती है, गर्म है और उदररोग, तिल्ली, वातपित्त, कफ, वात इन्होंको नाशती है ॥ २९ ॥

कटुकीनामगुणाः ।

कटुकी रोहिणी तिक्ता चक्राङ्गी कटुरोहिणी ।
मत्स्यपित्ता पाण्डुरुहा कृष्णभेदा द्विजाङ्गिका ॥ १३० ॥

अर्थ–कटुकी, रोहिणी, तिक्ता, चक्रांगी, कटुरोहिणी, मत्स्यपित्ता, पाण्डुरुहा, कृष्णभेदा, द्विजाङ्गिका ॥ १३० ॥

अशोका रोहिणी मत्स्या सकुला सकुलादिनी ।

कटुकी कटु पाके च तिक्ता रूक्षा सरा लघुः।
हिमा हन्ति कृमिश्वासदाहपित्तकफज्वरान् ॥ ३१ ॥

अर्थ–अशोका, रोहिणी, मत्स्या, सकुला, सकुलादिनी ये चौदह नाम कुटकीके हैं। कुटकी पाकमें चर्परी है, कडुवी है, रूखी है, सर है, हलकी है, शीतल है और कृमि, श्वास, दाह, पित्त, कफ, ज्वर इन्होंको नाशती है ॥ ३१ ॥

अंकोल्लकनामगुणाः।

अङ्कोल्लकस्ताम्रफलः पीतसारो निरोचकः।
गुप्तस्नेहो विरेची स्याद् भूषितो दीर्घकीलकः ॥ ३२ ॥

अर्थ–अंकोल्लक, ताम्रफल, पीतसार, निरोचक, गुप्तस्नेह, विरेची, भूषित, दीर्घकीलक ये आठ नाम अंकोलके हैं ॥ ३२ ॥

अङ्कोल्लकः कटुस्निग्धतीक्ष्णोष्णस्तुवरो लघुः।
रेचनः कृमिशूलामशोफश्लेष्मविषापहः ॥ ३३ ॥

अर्थ–अंकोल चर्परा है, चिकना है, गर्म है, तेज है, कषैला है, हलका है, दस्त लगाता है और कृमि, शूल, आम, शोजा, कफ, विष इन्होंको नाशता है ॥ ३३ ॥

तत्फलं शीतलं स्वादु श्लेष्मलं बृंहणं गुरु।
बल्यं विरेचनं वातपित्तदाहक्षयास्रजित् ॥ ३४ ॥

अर्थ–अंकोलका फल शीतल है, स्वादु है, कफको करता है, पुष्टिको करता है, बलमें हित है, जुलाब लगाता है और वात, पित्त, दाह, क्षय, रक्त इन्होंको जीतता है ॥ ३४ ॥

सेहुण्डनामगुणाः।

सेहुण्डो वज्रतुण्डस्तु गाण्डीरो वज्रकण्टकः।
स्नुही समश्च दुग्धोऽसिपत्रो वज्री महातरुः ॥ ३५ ॥

अर्थ–सेहुंड, वज्रतुण्ड, गांडीर, वज्रकंटक, स्नुही, सम, दुग्ध, असिपत्र, वज्री, महातरु ये दश नाम थूहरके हैं ॥ ३५ ॥

सेहुण्डो रेचनस्तीक्ष्णो दीपनो कटुको गुरुः।
शूलामाष्ठीलिकाध्मानगुल्मशोफोदरानिलान्।
हन्ति दूषीविषप्लीहकुष्ठोन्मादाश्मपाण्डुताः ॥ ३६ ॥

अर्थ–थूहर जुलाब लगाता है, तेज है, दीपन है, चर्परा है, भारी है और शूल,

आम, आष्ठीलिका, आध्मान, गुल्म, शोजा, उदररोग, वात, दूषीविष, तिल्लीरोग, कुष्ठ, उन्माद, पथरी, पांडुरोग इन्होंको नाशता है ॥ ३६ ॥

निम्बनामगुणाः ।

निम्बो नियमनो नेतारिष्टः स्यात्पारिभद्रकः ।
सुतिक्तः सर्वतोभद्रः पिचुमन्दः प्रभद्रकः ॥ ३७ ॥

अर्थ–निंब, नियमन, नेता, अरिष्ट, पारिभद्रक, सुतिक्त, सर्वतोभद्र, पिचुमन्द, प्रभद्रक ॥ ३७ ॥

कुष्ठहा देवदत्तश्च रविसन्निभसूर्यकौ ।
निम्बः शीतो लघुग्राही कटुपाकोऽग्निवातकृत् ॥ ३८ ॥

अर्थ–कुष्ठहा, देवदत्त, रविसन्निभ, सूर्यक ये तेरह नाम नींबके हैं । नींब शीतल है, हलका है, मलको बांधता है, पाकमें चर्परा है, अग्नि और वातको करता है॥३८॥

व्रणपित्तकफच्छर्दिकुष्ठत्वल्लासमेहनुत् ।
निम्बपत्रं स्मृतं नेत्र्यं कृमिपित्तविषप्रणुत् ॥ ३९ ॥

अर्थ–घाव, पित्त, कफ, छर्दि, कुष्ठ, थुकथुकी, प्रमेह इन्होंको नाशता है । नींबका पत्ता नेत्रोंको हित करता है, कृमि, पित्त, विषको नाशता है ॥ ३९ ॥

तत्फलं भेदनं स्निग्धमुष्णं कुष्ठहरं लघु ।
अपक्वं पाचयेन्निम्बः पक्वं च परिशोषयेत् ॥ १४० ॥

अर्थ–नींबका फल भेदन है, चिकना है, गर्म है, कुष्ठको हरता है, हलका है, नींब आमको पकाता है और पके हुएको शोषता है ॥ १४० ॥

महानिम्बनामगुणाः ।

महानिम्बो निम्बकरः कामुको विषमुष्टिकः ।
रम्यको गिरिकोऽद्रेकः क्षारः स्यात् केशमुष्टिकः ४१ ॥

अर्थ–महानिम्ब, निंबकार, कामुक, विषमुष्टिक, रम्यक, गिरिक, अद्रेक, क्षार, केशमुष्टिक ये नव नाम बकायनके हैं ॥ ४१ ॥

महानिम्बो हिमो रूक्षस्तिक्तो ग्राही कषायकः ।
कफपित्तकृमिच्छर्दिकुष्ठत्वल्लासरक्तजित् ॥ ४२ ॥

अर्थ–बकायन शीतल है, रूखा है, कडुवा है, मलको बांधता है, कषैला है और कफ, पित्त, कृमि, छर्दि, कुष्ठ, थुकथुकी, रक्त इन्होंको जीतता है ॥ ४२ ॥

किराततिक्तनामगुणाः ।

किराततिक्तः कैरातो भूनिम्बो रामसेनकः ।
किरातकोऽन्यो नैपालो नाडितिक्तो ज्वरान्तकः ॥ ४३ ॥

अर्थ-किराततिक्त, कैरात, भूनिम्ब, रामसेनक, किरातक, नैपाल, नाडितिक्त, ज्वरांतक ॥ ४३ ॥

कण्डुतिक्तोऽर्द्धतिक्तः स्यान्निद्रारिः सन्निपातहा ।
किरातो वातलो रूक्षः शीतलस्तिक्तको लघुः ।
सन्निपातज्वरश्वासकासपित्तास्रदाहनुत् ॥ ४४ ॥

अर्थ-कण्डुतिक्त, अर्द्धतिक्त, निद्रारि, सन्निपातहा ये बारह नाम चिरायताके हैं । चिरायता वातको करता है, रूखा है, शीतल है, कडुवा है, हलका है और सन्निपात, , श्वास, खांसी, रक्तपित्त, दाह इन्होंको दूर करता है ॥ ४४ ॥

कुटजनामगुणाः ।

कुटजो मल्लिकापुष्पः कलिङ्गो गिरिमल्लिका ।
वत्सकः कूटजः कोटिवृक्षकः शक्रभूरुहः ॥ ४५ ॥

अर्थ-कुटज, मल्लिकापुष्प, कलिङ्ग, गिरिमल्लिका, वत्सक, कूटज, कोटिवृक्षक, शक्रभूरुह ये आठ नाम कूडाके हैं ॥ ४५ ॥

कुटजः कटुको रूक्षो दीपनस्तुवरो लघुः ।
अर्शोऽतिसारपित्तास्रकफतृष्णामकुष्ठनुत् ।
तत्पुष्पं वातलं शीतं तिक्तपित्तातिसारजित् ॥ ४६ ॥

अर्थ-कूडा चर्परा है, रूखा है, अग्निको जगाता है, कषैला है, हलका है और बवासीर, अतिसार, रक्तपित्त, कफ, तृषा, आम, कुष्ठ इन्होंका जीतता है ॥ ४६ ॥

इन्द्रयवनामगुणाः ।

ऐन्द्रयवस्तस्य फलं कालिङ्गः कौटजो मतः ।
शक्राह्वः पुरुहूतश्च प्रोक्तो भद्रयवस्तथा ॥ ४७ ॥

अर्थ-ऐंद्रयव, ऐंद्रफल, कालिंग, कौटज, शक्राह्व, पुरुहूत, भद्रयव ये सात नाम इन्द्रजवके हैं ॥ ४७ ॥

ऐन्द्रयवस्त्रिदोषघ्नः संग्राही शीतलः कटुः ।
ज्वरातिसाररक्तार्शःकृमिवीसर्पकुष्ठनुत् ॥ ४८ ॥

अर्थ–इन्द्रजव त्रिदोषको नाशता है, मलको बांधता है, शीतल है, चर्परा है और ज्वर, अतिसार, रक्त, बवासीर, कृमि, विसर्प, कुष्ठ इन्होंको जीतता है ॥ ४८ ॥

मदननामगुणाः ।

मदनश्छर्दनः पिण्डीराह्वः पिण्डान्तकं फलम् ।
करहाटश्च तगरः शल्यको विषपुष्पकः ॥ ४९ ॥

अर्थ–मदन, छर्दन, पिण्डीराह्व, पिंडांतक, फल, करहाट, तगर, शल्यक, विषपुष्पक ये नव नाम मैनफलके हैं ॥ ४९ ॥

मदनो वमनस्तिक्तो वीर्योष्णो लेखनो लघुः ।
रूक्षः कुष्ठकफानाहशोफगुल्मव्रणापहः ॥ १५० ॥

अर्थ–मैनफल छर्दि लाता है, कडुवा है, वीर्यमें गर्म है, लेखन है, हलका है, रूखा है और कुष्ठ, कफ, अफरा, शोजा, गुल्म, घाव इन्होंको नाशता है ॥ १५० ॥

कंकुष्ठनामगुणाः ।

कङ्कुष्ठं कङ्काककुष्ठं रेचनं रङ्गनामकम् ।
शोधनं पुलहं हासं वराङ्गं कुञ्जवालुकम् ॥ ५१ ॥

अर्थ–कंकुष्ठ, कंकाककुष्ठ, रेचन, रङ्गनामक, शोधन, पुलह, हास, वरांग, कुञ्जवालुक ये नव नाम कंकुष्ठके हैं ॥ ५१ ॥

कङ्कुष्ठं रेचनं तिक्तं कटूष्णं वर्णकारकम् ।
कृमिशोफोदराध्मानगुल्मानाहकफापहम् ॥ ५२ ॥

अर्थ–कंकुष्ठ दस्त लगता है, कडुवा है, चर्परा है, गर्म है, वर्णको करता है और कृमि, शोजा, उदररोग, आध्मान, गुल्म, अफरा, कफ इन्होंको नाशता है ॥ ५२ ॥

चोषनामगुणाः ।

हेमाह्वा कनकक्षीरी हेमपुष्पी हिमावती ।
क्षीरिणी काञ्चनक्षीरी कटुपर्णी विकर्षणी ॥ ५३ ॥

अर्थ–हेमाह्वा, कनकक्षीरी, हेमपुष्पी, हिमावती, क्षीरिणी, काञ्चनक्षीरी, कटुपर्णी, विकर्षणी ॥ ५३ ॥

तिक्तदुग्धा हैमवती पीतदुग्धा हिमाद्रिका ।
हेमाह्वा रेचनी तिक्ता मन्दाग्न्युत्क्लेदकारिणी ।
कृमिकण्डुकफानाहविषकुष्ठविनाशिनी ॥ ५४ ॥

अर्थ–तिक्तदुग्धा, हैमवती, पीतदुग्धा, हिमाद्रिका ये बारह नाम चोषके हैं ।

घोष दस्त लगाती है, कडुवी है, मंदाग्नि और ग्लानिको करती है और कृमि, खाज, कफ, अफरा, विष, कुष्ठ इन्होंको नाशती है ॥ ५४ ॥

सातलानामगुणाः ।

सातला विरला सारी सत्फला बहुफेनका ।
चर्मसाह्वा चर्मकासा फेना दीप्ता च नालिका ॥ ५५ ॥

अर्थ–सातला, विरला, सारी, सत्फला, बहुफेनका, चर्मसाह्वा, चर्मकासा, फेना, दीप्ता और नालिका ये दश नाम सातलाके हैं ॥ ५५ ॥

सातला कटुका पाके वातलः शीतलो लघुः ।
तिक्ता शोथकफानाहपित्तोदावर्त्तरक्तजित् ॥ ५६ ॥

अर्थ–सातला पाकमें चर्परी है, वातको करती है, शीतल है, हलकी है, कडुवी है और शोजा, कफ, अफरा, पित्त, उदावर्त, रक्त इन्होंको जीतती है ॥ ५६ ॥

अश्मन्तकनामगुणाः ।

अश्मन्तो मालुकापात्रो युग्मपत्रोऽम्लपत्रकः ।
श्लक्ष्णत्वगश्वयोनिः स्यात् कुशली पापनाशनः ॥ ५७ ॥

अर्थ–अश्मन्त, मालुकापात्र, युग्मपत्र, अम्लपत्रक, श्लक्ष्णत्वक्, अश्वयोनि, कुशली, पापनाशन ये आठ नाम असिमिलोगके हैं ॥ ५७ ॥

अश्मन्तस्तुवरो ग्राही शीतोष्णः कफवातजित् ।
निहन्ति गण्डमालास्रगलगण्डगलामयान् ।
तत्फलं लेखनं ग्राहि गुरुश्लेष्मानिलापहम् ॥ ५८ ॥

अर्थ–असिमिलोग कषैला है, मलको बांधता है, शीतल है, गर्म है, कफवातको जीतता है और गण्डमाला, रक्त, गलगण्ड, गलरोग इन्होंको नाशता है । असिमिलोगका फल लेखन है, मलको बांधता है, भारी है, कफवातको जीतता है ॥ ५८ ॥

काञ्चनारगुणाः ।

काञ्चनारः काञ्चनकः पाकारी रक्तपुष्पकः ।
कोविदारोऽस्य भेदः स्यात् कुद्दालः कुहली कुली ॥ ५९ ॥

अर्थ–काञ्चनार, काञ्चनक, पाकारी, रक्तपुष्पक ये चार नाम कचनारके हैं । इसीका भेद कोविदार होता है । कुद्दाल, कुहली, कुली ॥ ५९ ॥

आस्फोतो दालकः स्वल्पकेसरश्चमरी मता ।

काञ्चनारो हिमो ग्राही तुवरः श्लेष्मपित्तनुत् ॥ १६० ॥

अर्थ–आस्फोत, दालक, स्वल्पकेसर, चमरी ये सात नाम कोविदारके हैं। कचनार शीतल है, मलको बांधता है, कषैला है, कफपित्तको जीतता है ॥ १६० ॥

कृमिकुष्ठगुदभ्रंशगण्डमालाव्रणापहः ।
कोविदारोऽपि तद्वत् स्यात् पुष्पं शीतं तयोर्लघु ।
रूक्षं संग्राहि पित्तास्रप्रदरक्षतकासनुत् ॥ ६१ ॥

अर्थ–कृमि, कुष्ठ, कांच निकसना, गंडमाला, घाव इन्होंको नाशता है। कोविदारमेंभी येही गुण हैं । दोनोंका फूल शीतल है, हलका है, रूखा है, मलको बांधता है और पित्तरक्त, पैरा, क्षत और खांसी इन्होंको दूर करता है॥६१॥

निर्गुण्डीद्वयनामगुणाः ।

निर्गुण्डी श्वेतकुसुमः सिन्दुकः सिन्दुवारकः ।
भूतकेश्यपरो नीलसिन्दुकः पुष्पनीलकः ॥ ६२ ॥

अर्थ–निर्गुंडी, श्वेतकुसुम, सिन्दुक, सिन्दुवार ये चार नाम संभालुके हैं और भूतकेशी, नीलासिंदुक, पुष्पनीलक ॥ ६२ ॥

शेफालिका शीतभीरुर्वनकोऽनिलमञ्जरी ।
निर्गुण्डी स्मृतिदा तिक्ता कषाया कटुका लघुः ॥ ६३ ॥

अर्थ–शेफालिका, शीतभीरु, वनक, अनिलमञ्जरी ये सात नाम दूसरे संभालूके हैं । संभालू स्मृतिको देता है, कडुवा है, चर्परा है, कषैला है, हलका है ॥ ६३ ॥

केश्या नेत्रहिता हन्ति शूलशोथाममारुतान् ।
कृमिकुष्ठारुचिः श्लेष्मव्रणा नीलापि तद्विधा ॥ ६४ ॥

अर्थ–यह बालोंको बढाता है, नेत्रोंको हित करता है और शूल, शोजा, आमवात, कृमि, कुष्ठ, अरुचि, कफ, घाव इन्होंको नाशता है और नीले संभालूकेभी येही गुण हैं ॥ ६४ ॥

मेषशृङ्गीनामगुणाः ।

मेषशृङ्गी मेषवल्ली सप्तदंष्ट्रजशृङ्गिका ।
अन्या तु दक्षिणावर्त्ता वृश्चिकाली विषाणिका ॥ ६५ ॥

अर्थ–मेषशृङ्गी, मेषवल्ली, सप्तदंष्ट्रा, अजशृंगिका और दूसरीके दक्षिणावर्ता, वृश्चिकाली, विषाणिका ये नाम हैं ॥ ६५ ॥

मेषशृङ्गी रसे तिक्ता वातला कासनाशिनी ।
रूक्षा पाके कटुः पित्तव्रणश्लेष्माक्षिशूलनुत् ॥ ६६ ॥

अर्थ–मेढाशिंगी रसमें कडुवी है, वातको करती है, खांसीको नाशती है, पाकमें रूखी है, चर्परी है और पित्त, घाव, कफ, नेत्रशूल इन्होंको दूर करती है ॥ ६६ ॥

पुनर्नवाद्वयनामगुणाः ।

पुनर्नवा श्वेतमूला पृथ्वीको दीर्घपत्रकः ।
विषाददीर्घो वर्षाभूः पुनर्भूर्मण्डलच्छदा ॥ ६७ ॥

अर्थ–पुनर्नवा, श्वेतमूला, पृथ्वीक, दीर्घपत्रक, विषाददीर्घ, वर्षाभू, पुनर्भू, मण्डलच्छदा ये आठ नाम सांठीके हैं ॥ ६७ ॥

पुनर्नवा सरा तिक्ता रूक्षोष्णा मधुरा कटुः ।
पुनर्नवारुणा तिक्ता रक्तपुष्पा कटिल्लका ॥ ६८ ॥

अर्थ–सांठी सर है, कडुवी है, रूखी है, गर्म है, मीठी और चर्परी है, पुनर्नवा, अरुणा, तिक्ता, रक्तपुष्पा, कटिल्लका ॥ ६८ ॥

क्रूरकः क्षुद्रवर्षाभूर्वर्षाकेतुः शिवाटिका ।
शोफानिलव्रणश्लेष्महरा रुच्या रसायनी ॥ ६९ ॥

अर्थ–क्रूरक, क्षुद्रवर्षाभू, वर्षाकेतु, शिवाटिका ये नव नाम लाल सांठीके हैं । यह शोजा, वात, घाव, कफ इन्होंको हरती है, रुचिको उपजाती है, रसायन है॥ ६९ ॥

पुनर्नवा वरा तिक्ता कटुपाका हिमा लघुः ।
वातला ग्राहिणी श्लेष्मरक्तपित्तविनाशिनी ॥ १७० ॥

अर्थ–उत्तम सांठी कडुवी है, पाकमें चर्परी है, शीतल है, हलकी है, वातको करती है, मलको बांधती है और कफ, रक्तपित्त इन्होंको नाशती है ॥ १७० ॥

रास्नानामगुणाः ।

रास्ना रम्या युक्तरसा रसना गन्धनाकुली ।
सुगन्धमूलातिरसा श्रेयसी सुवरा सरा ॥ ७१ ॥

अर्थ–रास्ना, रम्या, युक्तरसा, रसना, गन्धनाकुली, सुगन्धमूला, अतिरसा, श्रेयसी, सुवरा, सरा ये दश नाम रास्नाके हैं ॥ ७१ ॥

रास्नामपाचनी तिक्ता गुरूष्णा श्लेष्मवातजित् ।
शोफश्वाससमीरास्रवातशूलोदरापहा ॥ ७२ ॥

अर्थ–रास्ना अर्थात् रायसन आमको पकाती है, कडुवी, भारी, गर्म है और कफ, वातको जीतती है । यह शोजा, श्वास, वातरक्त, वातशूल और उदररोग इन्होंको नाशती है ॥ ७२ ॥

अश्वगन्धानामगुणाः ।

अश्वगन्धा तुरङ्गाह्वा गोकर्णश्चावरोहकः ।
वराहकर्णी वरदा बल्या वाजीकरी वृषा ॥ ७३ ॥

अर्थ–अश्वगन्धा, तुरंगाह्वा, गोकर्ण, अवरोहक, वराहकर्णी, वरदा, बल्या, वाजीकरी, वृषा ये नव नाम असगन्धके हैं ॥ ७३ ॥

अश्वगन्धानिलश्लेष्मशोफश्वित्रक्षयापहा ।
बल्या रसायनी तिक्ता कषायोष्णाऽतिशुक्रला ॥ ७४ ॥

अर्थ–असगंध वात, कफ, शोजा, श्वित्रकुष्ठ और क्षय इन्होंको नाशती है, बल करती है, रसायनी है, कडुवी, कषैली, गर्म और अत्यंत वीर्यको उपजाती है ॥७४॥

प्रसारणीनामगुणाः ।

प्रसारणी राजबला चारुपर्णी प्रतानिका ।
शरणी सारणी भद्रपर्णी सुप्रसरा सरा ॥ ७५ ॥

अर्थ–प्रसारणी, राजबला, चारुपर्णी, प्रतानिका, शरणी, सारणी, भद्रपर्णी, सुप्रसरा, सरा ये नव नाम प्रसारणीके हैं ॥ ७५ ॥

प्रसारणी गुरुर्वृष्या सन्धानबलकृत् सरा ।
वीर्योष्णा वातनुत् तिक्ता वातरक्तकफापहा ॥ ७६ ॥

अर्थ–प्रसारणी अर्थात् खींप विशेष भारी है, आयुको बढाती है, टूटेको जोडती है, बलको करती है, सर है, वीर्यमें गर्म है, वातको दूर करती है, कडुवी है, वातरक्त और कफको नाशती है ॥ ७६ ॥

शतावरीनामगुणाः ।

शतावरी द्वीपिशत्रुर्द्विपका धरकण्टका ।
नारायणी शतपदी शतपाद् बहुपत्रिका ॥ ७७ ॥

अर्थ–शतावरी, द्वीपिशत्रु, द्विपका, धरकण्टका, नारायणी, शतपदी, शतपात्, बहुपत्रिका ये आठ नाम शतावरके हैं ॥ ७७ ॥

शतावरी गुरुः शीता स्वादुः स्निग्धा रसायनी ।
शुक्रस्तन्यकरा बल्या वातपित्तास्रशोफजित् ॥ ७८ ॥

अर्थ-शतावरी भारी है, शीतल है, स्वादु है, चिकनी है, रसायनी अर्थात् बुढापेको दूर करती है, वीर्य और दूधको करती है, बलको उपजाती है और वातपित्त, रक्त, शोजा इन्होंको जीतती है ॥ ७८ ॥

शतावरीमहाशतावरीनामगुणाः ।

शतावर्यूर्ध्वकण्ठान्या पीवरी धीवरी वरी ।
अभीरुर्बहुपत्रा च महापुरुषदन्तिका ॥ ७९ ॥

अर्थ-शतावरी, ऊर्ध्वकंठा, पीवरी, धीवरी, वरी, अभीरु, बहुपत्रा, महापुरुषदन्तिका ॥ ७९ ॥

सहस्रवीर्या केशी स्यात् तुङ्गिनी सूक्ष्मपत्रिका ।
महाशतावरी मेध्या हृद्या वृष्या रसायनी ॥ १८० ॥

अर्थ-सहस्रवीर्या, केशी, तुङ्गिनी, सूक्ष्मपत्रिका ये बारह नाम शतावरीके हैं । महाशतावरी बुद्धिको देती है, सुंदर है, आयुको बढाती है, रसायन अर्थात् बुढापेको दूर करती है ॥ १८० ॥

शीतवीर्या निहन्त्याशोंग्रहणीनयनामयान् ।
तदङ्कुरस्त्रिदोषघ्नो लघुरर्शःक्षयापहः ॥ ८१ ॥

अर्थ-वीर्यमें शीतल है और बवासीर ग्रहणी, नेत्ररोग इन्होंको नाशती है । महाशतावरीका अंकुर त्रिदोषको नाशता है, हलका है, बवासीर और क्षयको हरता है ॥ ८१ ॥

बलानामगुणाः ।

बला वट्यालकः शीतपाकी वाट्योदराह्वया ।
भद्रौदनी समङ्गा स्यात् समांसा खरयष्टिका ॥ ८२ ॥

अर्थ-बला, वट्यालक, शीतपाकी, वाट्योदराह्वया, भद्रौदनी, समंगा, समांसा, खरयष्टिका ये आठ नाम खैरेहठीके हैं ॥ ८२ ॥

सहदेवीनामगुणाः ।

महाबला वीरपुष्पी सहदेवी बृहद्बला ।
वाट्यायनी देवसहा वाट्या स्यात् पीतपुष्पिका ॥ ८३ ॥

अर्थ-महाबला, वीरपुष्पी, सहदेवी, बृहद्बला, वाट्यायनी, देवसहा, वाट्या, पीतपुष्पिका ये आठ नाम सहदेईके हैं ॥ ८३ ॥

पिटारिणीनामगुणाः ।

बलाकातिबला भारवाजी स्याद् वृक्षगन्धिनी ॥ ८४ ॥

अर्थ–बलाका, अतिबला, भारवाजी, वृक्षगन्धिनी ये चार नाम बलिकाके हैं ८४

गङ्गेरुकीनामगुणाः ।

गङ्गेरुकी नागबला विश्वदेवा गवेधुका ॥ ८५ ॥

अर्थ–गंगेरुकी, नागबला, विश्वदेवा, गवेधुका ये चार नाम गंगेरनके हैं ॥८५॥

बलाचतुष्टयनामगुणाः ।

बलाचतुष्टयं शीतं मधुरं बलकान्तिकृत् ।
स्निग्धं ग्राहि समीरास्रपित्तास्रक्षतनाशनम् ॥ ८६ ॥

अर्थ–खरैंहटी आदि चारों शीतल हैं, मीठी हैं, बल और कांतिको करती हैं, चिकनी हैं, मलको बांधती हैं और वात, अम्लपित्त, रक्त, क्षत इन्होंको नाशती हैं ८६

आसां बृहद्बला कृच्छ्रं हन्ति वातानुलोमनी ।
गुर्वी नागबला वृष्या विशेषाद्रक्तपित्तजित् ॥ ८७ ॥

अर्थ–इन्होंमें सहदेई मूत्रकृच्छ्रको नाशती है, वातको अनुलोमित करती है, गंगेरन भारी है, वीर्यको उपजाती है, विशेषकरके रक्तपित्तको जीतती है ॥ ८७ ॥

बल्या रसायनी पुंस्त्ववर्धिनी बृंहणी तथा ।
तस्याः फलं हिमस्वादु स्तम्भनं गुरु लेखनम् ।
विबन्धाध्मानजननं रक्तपित्तविवर्द्धनम् ॥ ८८ ॥

अर्थ–बलको करती है, रसायन है, पुरुषपनेको बढाती है और आयुको बढाती है । गंगेरनका फल शीतल, स्वादु, स्तंभन, भारी और लेखन है । यह बंधाध्मानको उपजाता है, रक्त पित्तको बढाता है ॥ ८८ ॥

ज्योतिष्मतीनामगुणाः ।

ज्योतिष्मती वह्निरुचिः कङ्गुणी कटुभी तथा ।
ज्योतिष्मती कटुस्तिक्ता सरा कफसमीरजित् ।
अत्युष्णा वामनी तीक्ष्णा वह्निबुद्धिस्मृतिप्रदा ॥ ८९ ॥

अर्थ–ज्योतिष्मती, वह्निरुचि, कंगुणी, कटुभी ये चार नाम मालकांगनीके हैं । मालकांगनी चर्परी, कडुवी और सर है, कफ और वातको जीतती है, अत्यंत गर्म है, छर्दि उपजाती है, तेज है और अग्नि, बुद्धि, स्मृति इन्होंको देती है ॥ ८९ ॥

तेजवतीनामगुणाः ।

तेजस्विनी तेजवती तेजिन्या लघुवल्कला ।
महौजसी पारिजाता शीता तिक्कातितेजिनी ॥ १९० ॥

अर्थ-तेजस्विनी, तेजवती, तेजिन्या, लघुवल्कला, महौजसी, पारिजाता, शीता, तिक्का, अतितेजिनी ये नव नाम तेजबलके हैं ॥ १९० ॥

तेजस्विनी कफश्वासकासशूलामवातजित् ।
पाचन्युष्णा कटुस्तिक्ता रुचिवह्निप्रदीपनी ॥ ९१ ॥

अर्थ-तेजबल कफ, श्वास, खांसी, शूल, आमवात इन्होंको जीतती और पकाती है, गर्म है, चर्परी है, कडुवी है, रुचि और अग्निको जगाती है ॥ ९१ ॥

देवदारुनामगुणाः ।

देवदारु सुराह्वं स्याद्भद्रदारुः सुरद्रुमः ।
भद्रकाष्ठं स्नेहवृक्षः कृमिलं शक्रदारु च ॥ ९२ ॥

अर्थ-देवदारु, सुराह्व, भद्रदारु, सुरद्रुम, भद्रकाष्ठ, स्नेहवृक्ष, कृमिल, शक्रदारु ये आठ नाम देवदारुके हैं ॥ ९२ ॥

देवदारु कटु स्निग्धं तिक्तोष्णं लघु नाशयेत् ।
आध्मानज्वरशोथामहिक्काकण्डूकफानिलान् ॥ ९३ ॥

अर्थ-देवदारु चर्परा, चिकना, कडुवा, गर्म और हलका है तथा आध्मान, ज्वर, शोजा, आम, हिचकी, खाज, कफ, वात इन्होंको नाशता है ॥ ९३ ॥

सरलनामगुणाः ।

सरलो नन्दनो व्रीडा नमेरुर्द्विकवृक्षकः ।
पीतदारुः पीतवृक्षो महादीर्घः कलिद्रुमः ॥ ९४ ॥

अर्थ-सरल, नन्दन, व्रीडा, नमेरु, द्विकवृक्षक, पीतदारु, पीतवृक्ष, महादीर्घ, कलिद्रुम ये नव नाम सरलके हैं ॥ ९४ ॥

सरलः कटुकः पाकरसयोर्मधुरो लघुः ।
उष्णः स्निग्धः समीराक्षिकण्ठकर्णामयापहः ॥ ९५ ॥

अर्थ-सरल चर्परा है, पाक और रसमें मीठा है, हलका है, गर्म है, चिकना है और वात, नेत्ररोग, कंठरोग, कर्णरोग इन्होंको नाशता है ॥ ९५ ॥

पुष्करमूलनामगुणाः ।

पौष्कराह्वं पद्मपत्रं पौष्करं पुष्कराह्वकम् ।

काश्मीरं पुष्करजटा मूलवीरं सुगन्धिकम् ॥ ९६ ॥

अर्थ–पौष्कराह्व, पद्मपत्र, पौष्कर, पुष्कराह्वक, काश्मीर, पुष्करजटा, मूलवीर, सुगंधिक ये आठ नाम पुहकरमूलके हैं ॥ ९६ ॥

पौष्करं कटुकं तिक्तमुष्णवातकफज्वरान् ।
हन्ति शोफारुचिश्वासान् विशेषात् पार्श्वशूलजित् ॥ ९७ ॥

अर्थ–पोहकरमूल चर्परा और कडुवा है, उष्णवात, कफ, ज्वर, शोजा, अरुचि, श्वास, विशेषकर पसलीशूल इन्होंको जीतता है ॥ ९७ ॥

कुष्ठनामगुणाः ।

कुष्ठं रोगाह्वयं दिव्यं कौबेरं पारिभद्रकम् ।
पारिहार्यं पारिभाव्यमुत्पलं पारिभद्रकम् ॥ ९८ ॥

अर्थ–कुष्ठ, रोगाह्वय, दिव्य, कौबेर, पारिभद्रक, पारिहार्य, पारिभाव्य, उत्पल, पारिभद्रक ये नव नाम कूटके हैं ॥ ९८ ॥

कुष्ठमुष्णं कटु स्वादु तिक्तं शुक्रप्रदं लघु ।
हन्ति वातास्रवीसर्पकुष्ठकासमरुत्कफान् ॥ ९९ ॥

अर्थ–कूठ गर्म है, चर्परा है, स्वादु है, कडुवा है, वीर्यको देता है, हलका है और वातरक्त, विसर्प, कुष्ठ, खांसी, वात, कफ इन्होंको नाशता है ॥ ९९ ॥

कर्कटशृङ्गीनामगुणाः ।

शृङ्गी कुलीरशृङ्गी स्याद्वक्रा कर्कटशृङ्गिका ।
कर्कटाक्षा महाघोषा शृङ्गनाम्नी नताङ्ग्यपि ॥ २०० ॥

अर्थ–शृंगी, कुलीरशृंगी, वक्रा, कर्कटशृंगिका, कर्कटाक्षा, महाघोषा, शृंगनाम्नी, नतांगी ये आठ नाम काकडाशिंगीके हैं ॥ २०० ॥

शृंगी कषायतिक्तोष्णा हन्ति हिक्कावमिज्वरान् ।
वृष्या वमिकफश्वासक्षयकासोर्ध्वमारुतान् ॥ १ ॥

अर्थ–तथा काकडाशिंगी कषैली, कडुवी और गर्म है, हिचकी, छर्दि, ज्वर, कफ, श्वास, क्षय, खांसी, ऊर्ध्ववात इन्होंको नाशती है, वीर्यको बढाती है ॥ १ ॥

कट्फलनामगुणाः ।

कट्फलं कुमुदा कुम्भी श्रीपर्णी लोमपादपः ।
सोमवल्को महाकुम्भी भद्रा भद्रवती शिवा ॥ २ ॥

अर्थ–कट्फल, कुमुदा, कुंभी, श्रीपर्णी, लोमपादप, सोमवल्क, महाकुंभी, भद्रा, भद्रवती, शिवा ये दश नाम कायफलके हैं ॥ २ ॥

कट्फलं तुवरं तिक्तं कटुवातकफज्वरान् ।
हन्ति श्वासप्रमेहार्शःकासकण्ठामयारुचीः ॥ ३ ॥

अर्थ–कायफल कषैला, कडुवा और चर्परा है तथा वात, कफज्वर, श्वास, प्रमेह, बवासीर, खांसी, कंठरोग, अरुचि इन्होंको नाशता है ॥ ३ ॥

रोहिषनामगुणाः ।

रोहिषं कत्तृणं भूतिर्भूतिकं सरलं तृणम् ।
श्यामलं युग्मकं पौरं व्यापकं देवगन्धकम् ॥ ४ ॥

अर्थ–रोहिष, कत्तृण, भूति, भूतिक, सरल, तृण, श्यामल, युग्मक, पौर, व्यापक, देवगंधक ये ग्यारह नाम रोहिषतृणके हैं ॥ ४ ॥

रोहिषं कटुकं पाके तिक्तोष्णं तुवरं जयेत् ।
हन्ति मारुतपित्तास्रक्षणाच्छ्वासकफज्वरान् ॥ ५ ॥

अर्थ–रोहिषतृण पाकमें चर्परा है, कडुवा है, गर्म है, कषैला है और वात, पित्त, रक्त झिरना, श्वास, कफज्वर इन्होंको नाशता है ॥ ५ ॥

भार्ङ्गीनामगुणाः ।

भार्ङ्गी भृगुभवा पद्मा कासघ्नी गन्धपर्वणी ।
खरशाकं शुक्रमाता भञ्जी ब्राह्मणयष्टिका ॥ ६ ॥

अर्थ–भार्ङ्गी, भृगुभवा, पद्मा, कासघ्नी, गंधपर्वणी, खरशाक, शुक्रमाता, भञ्जी, ब्राह्मणयष्टिका ये नौ नाम भारंगीके हैं ॥ ६ ॥

भार्ङ्गी रूक्षी कटुस्तिक्ता रुच्योष्णा पाचनी जयेत् ।
शोथकासकफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ॥ ७ ॥

अर्थ–भारंगी रूखी, चर्परी और कडुवी है, रुचिको उपजाती है, गर्म है, पकाती है और शोजा, खांसी, कफ, श्वास, पीनस, ज्वर, वात इन्होंको जीतती है ॥ ७ ॥

पाषाणभेदनामगुणाः ।

पाषाणभेदः पाषाणोऽश्मरीभेदोऽश्मभेदकः ।
शिलाभेदो दृषद्भेदो नागभिन्नांगभेदनः ॥ ८ ॥

अर्थ–पाषाणभेद, पाषाण, अश्मरीभेद, अश्मभेदक, शिलाभेद, दृषद्भेद, नागभिन्न, अंगभेद ये आठ नाम पाषाणभेदके हैं ॥ ८ ॥

पाषाणभेदस्तुवरः शीतलो बस्तिशोधनः ।
सरस्तिक्तः प्रमेहार्शःकृच्छ्राश्मरिरुजो जयेत् ॥ ९ ॥

अर्थ–पाषाणभेद कषैला है, शीतल है, बस्तिको शोधता है, सर है, कडुवा है और प्रमेह, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, पथरी इन्होंको जीतता है ॥ ९ ॥

मुस्तनामगुणाः ।

मुस्तं वारिधरो मुस्तो मेघाख्यः कुरुविन्दकः ॥ २१० ॥

अर्थ–मुस्त, वारिधर, मुस्ताह्व, मेघाख्य, कुरुविन्दक ॥ २१० ॥

वराहोऽब्दो घनो भद्रमुस्तं राजकसेरुकः ।
पिण्डमुस्तं विषध्वंसी नागरोऽन्यः प्रकीर्तितः ॥ ११ ॥

अर्थ–वराह,अब्द, घन, भद्रमुस्त, राजकसेरुक, पिंडमुस्त, विषध्वंसी, नागर ये तेरह नाम नागरमोथाके हैं ॥ ११ ॥

मुस्तं कटु हिमग्राहि तिक्तं दीपनपाचनम् ।
कषायं कृमिपित्तासृक्कफतृष्णाज्वरापहम् ॥ १२ ॥

अर्थ–नागरमोथा चर्परा है, शीतल है, मलको बांधता है, कडुवा है, दीपन है, पाचन है, कषैला है और कृमि, रक्तपित्त, कफ, तृषा, ज्वर इन्होंको नाशता है॥१२॥

धातकीनामगुणाः ।

धातकी कुञ्जरा सिन्धुपुष्पी प्रमदिनी मदा ।
पार्वतीया ताम्रपुष्पी सुभिक्षा मेघवासिनी ॥ १३ ॥

अर्थ–धातकी, कुञ्जरा, सिंधुपुष्पी, प्रमदिनी, मदा, पार्वतीया, ताम्रपुष्पी, सुभिक्षा, मेघवासिनी ये नव नाम धवके हैं ॥ १३ ॥

धातुकी कटुका शीता मन्दोष्णा तुवरा लघुः ।
तृष्णातीसारपित्तास्रविषकृमिविसर्पजित् ॥ १४॥

अर्थ–धवई (धौ, धाय) चर्परी है, शीतल है, अल्प गर्म है, कषैली है, हलकी है, तृषा, अतिसार, रक्तपित्त, विष, कृमि, विसर्प इन्होंको जीतती है ॥ १४ ॥

माचिकानामगुणाः ।

माचिका बालिकाम्बष्ठा शठी दन्तशठाम्बिका ।
अम्बष्ठकी सूचिमुखी कषाया साकण्ठमुखी ॥ १५ ॥

अर्थ–माचिका, बालिका, अम्बष्ठा, शठी, दंतशठा, अम्बिका, अम्बष्ठकी, सूचिमुखी, कषाया, साकंठमुखी ये दश नाम माचिकाके हैं ॥ १५ ॥

माचिकोष्णा रसे पाके कषाया शीतला लघुः ।
पक्वातीसारपित्तास्रकफकण्ठामयापहा ॥ १६ ॥

अर्थ–मांई गर्म है, रसमें और पाकमें कषैली है, शीतल है, हलकी है और पका हुआ अतिसार, रक्तपित्त, कफ, कंठरोग इन्होंको नाशती है ॥ १६ ॥

विदारिकाकन्दद्वयनामगुणाः ।

विदारिका वृक्षवल्ली वृक्षकन्दा विदालिका ।
शृंगालिका कन्दवल्ली स्वादुकन्दा फलाशका ॥ १७ ॥

अर्थ–विदारिका, वृक्षवल्ली, वृक्षकन्दा, विदालिका, शृंगालिका, कन्दवल्ली, स्वादुकन्दा, फलाशका ये आठ नाम विदारीकन्दके हैं ॥ १७ ॥

अन्या शुक्ला क्षारशुक्ला क्षारवल्ली पयस्विनी ।
इक्षुवल्ली महाश्वेता क्षीरकन्देक्षुगन्धिका ॥ १८ ॥

अर्थ–शुक्ला, क्षारशुक्ला, क्षारवल्ली, पयस्विनी, इक्षुवल्ली, महाश्वेता, क्षीरकन्दा, इक्षुगन्धिका ये आठ नाम दूसरे विदारीकन्दके हैं ॥ १८ ॥

विदारी मधुरा स्निग्धा बृंहणी स्तन्यशुक्रदा ।
गुरुपित्तास्रपवनदाहान् हन्ति रसायनी ॥ १९ ॥

अर्थ–विदारीकन्द मीठा है, चिकना है, पुष्टि करता है, दूध और वीर्यको देता है, भारी है, रक्तपित्त, वात, दाह इन्होंको नाशता है और रसायन है ॥ १९ ॥

वाराहीकन्दनामगुणाः ।

वाराही माधवी गृष्टिः शीकरी वनमालिका ।
तस्याः कन्दः किटिः क्रोडनाम्ना संवरकन्दकः ॥ २२० ॥

अर्थ–वाराही, माधवी, गृष्टि, शीकरी, वनमालिका, वाराहीकंद, किटि, क्रोडनामा, संवरकन्दक ये नव नाम वाराहीकंदके हैं ॥ २२० ॥

वाराही मधुरा कन्दे कटुस्तिक्तातिशुक्रला ।
बल्या शुक्रकरा वातकफमेहकृमीन् जयेत् ॥२१ ॥

अर्थ–वाराहीकन्द मीठा है, चर्परा है, कडुवा है, बहुत वीर्यको उपजाता है, बल और पुष्टिको करता है तथा वात, कफ, प्रमेह, कृमि इन्होंको जीतता है ॥ २१ ॥

पाठानामगुणाः ।

पाठाम्बष्ठा बृहत्तिक्ता प्राचीनाम्बष्ठका सरा ।

वरा तिक्ता पापवेली श्रेयसी वृद्धकर्णिका ॥ २२ ॥

अर्थ–पाठा, अम्बष्ठा, बृहत्तिक्ता, प्राचीना, अम्बष्ठका, सरा, वरा, तिक्ता, पापवेली श्रेयसी, वृद्धिकर्णिका ये ग्यारह नाम पाठाके हैं ॥ २२ ॥

पाठोष्णा कटुका तीक्ष्णा वातश्लेष्महरा लघुः ।
हन्ति शूलज्वरच्छर्दिकुष्ठातीसारहृद्रुजः ।
दाहकण्डूविषश्वासकृमिगुल्मगरव्रणान् ॥ २३ ॥

अर्थ–पाठा गर्म है, चर्परी है, तेज है, वातकफको हरती है, हलकी है और शूल, ज्वर, छर्दि, कुष्ठ, अतीसार, हृद्रोग, दाह, खाज, विष, श्वास, कृमि, गुल्म, कृत्रिमविष, घाव इन्होंको नाशती है ॥ २३ ॥

मुरहरानामगुणाः ।

मूर्वा देवी मधुरसा देवश्रेणी मधुस्रवा ।
स्निग्धपर्णी पृथक्पर्णी मोरटी पीलुपर्णिका ॥ २४ ॥

अर्थ–मूर्वा, देवी, मधुरसा, देवश्रेणी, मधुस्रवा, स्निग्धपर्णी, पृथक्पर्णी, मोरटी, पीलुपर्णिका ये नव नाम मुरहरीके हैं । मुरहरी सर है, भारी है, मीठी है, तेज है और पित्तरक्त, प्रमेह, त्रिदोष, तृषा, हृद्रोग, खाज, कुष्ठ, ज्वर, पित्त, वात इन्होंको जीतती है । पुष्ट है, कफको करती है, दिलको ताकत देती है, मलको बांधती है और गोलेको नाशती है ॥ २४ ॥

मंजिष्ठानामगुणाः ।

मञ्जिष्ठा विजया रक्ता रक्तांगी कालमेषिका ।
रक्तयष्टी ताम्रवल्ली समंगा वस्त्रभूषणा ॥ २५ ॥

अर्थ–मंजिष्ठा, विजया, रक्ता, रक्तांगी, कालमेषिका, रक्तयष्टी, ताम्रवल्ली, समङ्गा, वस्त्रभूषणा ॥ २५ ॥

मञ्जुला विकशा भंगी छाम्रिका ज्वरनाशिनी ।
मञ्जिष्ठा मधुरा तिक्ता कषाया स्वर्णवर्णकृत् ॥ २६ ॥

अर्थ–मंजुला, विकशा, भंगी, छाम्रिका, ज्वरनाशिनी ये चौदह नाम मजीठके हैं । मजीठ मीठी है, कडुवी है, कषैली है, सोनेसरीखे रंगको करती है ॥ २६ ॥

गुरुरुष्णा विषश्लेष्मशोफयोन्यक्षिशूलनुत् ।
रक्तातीसारकुष्ठास्रवीसर्पव्रणमेहजित् ।
तच्छाकं दीपनं स्वादु स्निग्धं पित्तानिलापहम् ॥ २७ ॥

अर्थ–भारी है, गर्म है, विष, कफ, शोजा, योनिशूल, नेत्रशूल, रक्तातिसार, कुष्ठ, रक्त, विसर्प, घाव, प्रमेह इन्होंको जीतती है । मजीठका शाक दीपन है, स्वादु है, चिकना है, पित्त और वातको जीतता है ॥ २७ ॥

हरिद्रानामगुणाः ।

हरिद्रा रजनी गौरी रञ्जिनी वरवर्णिनी ।
पिण्डा पीता वर्णवती निशा वर्णा विलासिनी ॥ २८ ॥

अर्थ–हरिद्रा, रजनी, गौरी, रंजिनी, वरवर्णिनी, पिंडा, पीता, वर्णवती, निशा, वर्णा, विलासिनी ये ग्यारह नाम हलदीके हैं ॥ २८ ॥

हरिद्रा कटुका तिक्ता रूक्षोष्णा श्लेष्मपित्तनुत् ।
पर्ण्या त्वग्दाहमेहास्रशोफपाण्डुव्रणापहा ॥ २९ ॥

अर्थ–हलदी चर्परी, कडुवी, रूखी और गर्म है, कफ पित्तको दूर करती है, रंगको निखारती है, त्वचारोग, दाह, प्रमेह, रक्त, शोजा, पांडु, घाव इन्होंको नाशती है ॥ २९ ॥

दारुहरिद्रानामगुणाः ।

दार्वी दारुहरिद्राऽन्या पीतदारु च पञ्चधा ।
कटङ्कटेरी पित्तघ्नः स्वर्णवर्णा कटङ्कटी ।
दार्वी तद्वद्विशेषात्तु नेत्रकर्णास्यरोगनुत् ॥ ३० ॥

अर्थ–दार्वी, दारुहरिद्रा, पीतदारु, पञ्चधा, कटंकटेरी, पित्तघ्न, स्वर्णवर्णा, कटंकटी ये आठ नाम दारुहलदीके हैं । दारुहलदीमें सब गुण हलदीके हैं, परंतु विशेषकर नेत्ररोग, कर्णरोग, मुखरोग इन्होंको हरती है ॥ ३० ॥

प्रपुन्नाटनामगुणाः ।

प्रपुन्नाटस्त्वेडगजश्चक्रमर्दः प्रपुन्नटः ।
दद्रुघ्नो मर्दको मेघकुसुमः कुष्ठकृन्तनः ॥ ३१ ॥

अर्थ–प्रपुन्नाट, एडगज, चक्रमर्द, प्रपुन्नट, दद्रुघ्न, मर्दक, मेघकुसुम, कुष्ठकृंतन ये आठ नाम पुवाडके हैं ॥ ३१ ॥

प्रपुन्नाटो लघुः स्वादू रूक्षः पित्तानिलापहः ।
हृद्यो हिमकफश्वासकुष्ठदद्रुकृमीन् जयेत् ॥ ३२ ॥

अर्थ–पुवाड हलका है, स्वादु है, रूखा है, पित्त-वातको नाशता है, सुन्दर है, गर्म है, कफ, श्वास, कुष्ठ, दद्रु, विष, वात इन्होंको जीतता है ॥ ३२ ॥

हन्त्युष्णं तत्फलं कुष्ठकण्डूदद्रुविषानिलान् ।
वातरक्तापहं तस्याः शाकं कफकरं लघु ॥ ३३ ॥

अर्थ–पुवाडका फल गर्म है, कुष्ठ, खाज, दाद, वात इन्होंको जीतता है । पुवाडका शाक वातरक्तको हरता है, कफको करता है, हलका है ॥ ३३ ॥

बाकुचीनामगुणाः ।

बाकुची चन्द्रिका सोमवल्ली पूतिफला वरा ।
सोमराजी कृष्णफला वल्गुजा कालमेषिका ।
चन्द्रलेखा तथा सोमः कुष्ठघ्नी सा मता परा ॥ ३४ ॥

अर्थ–बाकुची, चन्द्रिका, सोमवल्ली, पूतिफला, वरा, सोमराजी, कृष्णराजी, कृष्णफला, वल्गुजा, कालमेषिका, चन्द्रलेखा, सोम, कुष्ठघ्नी ये तेरह नाम बावचीके हैं ॥ ३४ ॥

बाकुची मधुरा तिक्ता कटुपाका रसायनी ।
विष्टम्भिनी हिमा रुच्या सरा हृद्याऽस्रपित्तनुत् ॥ ३५ ॥

अर्थ–बावची मीठी है, कडुवी है, पाकमें चर्परी है, रसायन है, विष्टंभ करती है, शीतल है, रुचिको उपजाती है, सर है, सुन्दर है, रक्तपित्तको दूर करती है ॥ ३५ ॥

रूक्षा हन्ति कफश्वासकुष्ठमेहज्वरकृमीन् ।
तत्फलं पित्तकृच्छ्रेण कुष्ठवातकफापहम् ॥ ३६ ॥

अर्थ–रूखी है, कफ, श्वास, कुष्ठ, प्रमेह, ज्वर, कृमि इन्होंको नाशती है । बावचीका फल पित्त, मूत्रकृच्छ्र, कुष्ठ, वात, कफ इन्होंको नाशता है ॥ ३६ ॥

भृङ्गराजनामगुणाः ।

भृङ्गराजो भेकराजो मार्कवः केशरञ्जकः ।
अङ्गारको भृङ्गिराजो भृङ्गाह्वः सूर्यवल्लभः ॥ ३७ ॥

अर्थ–भृङ्गराज, भेकराज, मार्कव, केशरञ्जक, अंगारक, भृंगिराज, भृंगाह्व, सूर्यवल्लभ ये आठ नाम भांगराके हैं ॥ ३७ ॥

भृङ्गराजः कटुस्तिक्तो रूक्षोष्णः कफवातकृत् ।
दन्त्यो रसायनस्त्वच्यः कुष्ठनेत्रशिरोऽर्त्तिजित् ॥ ३८ ॥

अर्थ–भांगरा चर्परा, कडुवा, रूखा और गर्म है, कफ-वातको करता है, बलको करता है, रसायन है, रुचिको उपजाता है, कुष्ठ, नेत्ररोग, शिरोरोग इन्होंको जीतता है ॥ ३८ ॥

पर्पटनामगुणाः।

पर्पटः कवचो रेणुः पित्तहा वरकण्टकः।
वरातिक्तः पर्पटकः पृथ्विकश्चर्मकण्टकः॥ ३९॥

अर्थ–पर्पट, कवच, रेणु, पित्तहा, वरकण्टक, वरातिक्त, पर्पटक, पृथ्विक, चर्मकण्टक ये नव नाम पित्तपापडाके हैं॥ ३९॥

पर्पटो हन्ति पित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान्।
संग्राही शीतलस्तिक्तो दाहनुद्वातलो लघुः॥ २४०॥

अर्थ–पित्तपापडा पित्तरक्त, भ्रम, तृषा, कफज्वर इन्होंको नाशता है, मलको बांधता है, शीतल है, कडुवा है, दाहको दूर करता है, वातको उपजाता है और हलका है॥ २४०॥

रक्तपुष्पोऽतिसारस्य वारको ज्वरनाशनः।
पर्पटः पित्तहृद्दाहज्वरजित् श्लेष्मशोषणः।
तिक्तशीतौ ज्वरहरौ लघू भूनिम्बपर्पटौ॥ ४१॥

अर्थ–लाल फूलोंवाला पित्तपापडा अतिसारको दूर करता है, ज्वरको नाशता है। पित्तपापडा पित्त, हृद्रोग, दाह, ज्वर इनको जीतता है, कफको सोखता है। चिरायता और पित्तपापडा कडुवा है, शीतल है, ज्वरको हरता है, हलका है॥ ४१॥

त्रायमाणानामगुणाः।

शणपुष्पी माल्यपुष्पी धावनी शणघण्टिका।
बृहत्पुष्पी स्वल्पघण्टा घण्टाशब्दा तु पुष्पिका॥ ४२॥

अर्थ–शणपुष्पी, माल्यपुष्पी, धावनी, शणघंटिका, बृहत्पुष्पी, स्वल्पघंटा, घंटाशब्दा, पुष्पिका ये आठ नाम त्रायमाणाके हैं॥ ४२॥

शणपुष्पी कटुः पित्तश्लेष्मजिच्छर्दिकारिणी।
त्रायमाणा सुहृत्त्राणा त्रायन्ती गिरिसानुजा॥ ४३॥

अर्थ–त्रायमाण अर्थात् बनफसाभेद चर्परा है, पित्त-कफको जीतता है, छर्दिको करता है। त्रायमाणा, सुहृत्त्राणा, त्रायंती, गिरिसानुजा॥ ४३॥

बलभद्रा कृतत्राणा वार्षकं त्रायमाणिका।
त्रायमाणा सरा पित्तज्वरश्लेष्मास्रशूलजित्॥ ४४॥

अर्थ–बलभद्रा, कृतत्राणा, वार्षक, त्रायमाणिका ये आठ नाम और हैं। त्रायमाण सर है, पित्तज्वर, कफ, रक्तशूल इन्होंको जीतती है॥ ४४॥

महाजालनिकानामगुणाः ।

महाजालनिका चर्मरङ्गः स्यात् तिलपुष्पिका ।
आवर्त्तकी बिन्दुकिनी विभाण्डी रक्तपुष्पिका ॥ ४५ ॥

अर्थ–महाजालनिका, चर्मरंग, तिलपुष्पिका, आवर्तकी, बिन्दुकिनी, विभाण्डी, रक्तपुष्पिका ये सात नाम जालके हैं ॥ ४५ ॥

महाजालनिका तिक्ता रेचनी कफपित्तजित् ।
हन्ति दाहोदरानाहशोफकुष्ठकृमिज्वरान् ॥ ४६ ॥

अर्थ–जाल कडुवी है, जुलाब लगाती है, कफ-पित्तको जीतती है, दाह, उदर-रोग, अफरा, शोजा, कुष्ठ, कृमि, ज्वर इन्होंको नाशती है ॥ ४६ ॥

अतिविषानामगुणाः ।

अतिविषा शुक्लकन्दा विषा प्रतिविषापरा ।
श्यामकन्दा शिता शृङ्गी भंगुरोपविषाणिका ।
विषोष्णा पाचनी तिक्ता श्लेष्मापित्तातिसारजित् ॥ ४७ ॥

अर्थ–अतिविषा, शुक्लकन्दा, विषा, प्रतिविषा, श्यामकन्दा, शिता, शृंगी, भंगुरा, उषविषाणिका ये नव नाम अतीसके हैं । अतीस गर्म है, पाचन है, कडुवी है, कफ, पित्त, अतिसार इन्होंको जीतती है ॥ ४७ ॥

श्यामकन्दा चोपविषा सा विज्ञेया चतुर्विधा ।
रक्ता श्वेता भृशं कृष्णा पीतवर्णा तथैव च ॥ ४८ ॥

अर्थ–श्यामकंदा और उपविषा चार प्रकारकी है । लाल, श्वेत, अत्यन्त काली, पीली ॥ ४८ ॥

यथापूर्ववद्विज्ञेया बल्या श्रेष्ठा गुणोत्तमा ।
सर्वदोषहराऽग्र्यत्वाल्लेपाच्छ्वयथुनाशिनी ।
श्लेष्मजान् विंशतिं रोगान् सद्यो हन्याद्रसायनी ॥ ४९ ॥

अर्थ–इन्होंको पूर्व पूर्व क्रमसे बलदायक श्रेष्ठ और उत्तम गुणोंवाली जाननी । जैसे पीलीसे काली, कालीसे श्वेत, श्वेतसे लाल उत्तम होती है । उत्तमपनेसे सब दोषोंको हरती है, लेपसे शोजाको नाशती है, कफके २० रोगोंको शीघ्र नाशती है, रसायन है ॥ ४९ ॥

काकमाचीनामगुणाः ।

काकमाची ध्वाङ्क्षमाची कामची जघनी फला ।

रसायनवरा सर्वतिक्ता स्यात् काकिनी कटुः ॥ २५० ॥

अर्थ–काकमाची, ध्वांक्षमाची, कामची, जघनी, फला, रसायनवरा, सर्वतिक्ता, काकिनी, कटु ये नव नाम मकोयके हैं ॥ २५० ॥

काकमाची त्रिदोषघ्नी स्निग्धोष्णा स्वरशुक्रदा ।
हृद्या रसायनी शोफकुष्ठार्शोज्वरमेहजित् ॥ ५१ ॥

अर्थ–मकोय त्रिदोषको नाशती है, चिकनी है, गर्म है, स्वर और वीर्यको देती है, हृदयमें सुख देती है, रसायन है, शोजा, कुष्ठ, बवासीर, ज्वर, प्रमेह इन्होंको जीतती है ॥ ५१ ॥

काकजङ्घानामगुणाः ।

काकजङ्घा नदीकान्ता काकतिक्ता सुलोमजा ।
पारावतपदी काका मदान्या छर्दिकारिणी ।
काकजङ्घा हिमा हन्ति रक्तपित्तकफज्वरान् ॥ ५२ ॥

अर्थ–काकजंघा, नदीकान्ता, काकतिक्ता, सुलोमजा, पारावतपदी, काका, मदा, छर्दिकारिणी ये आठ नाम काकजंघाके हैं । काकजंघा शीतल है, रक्तपित्त और कफज्वर इन्होंको नाशती है ॥ ५२ ॥

लोध्रद्वयनामगुणाः ।

लोध्रस्तिरीटः कानीनस्तिलकः सन्ततोद्भवः ।
अन्यो घनत्वात् सरकः श्वेतलोध्रोऽक्षिभेषजम् ॥ ५३ ॥

अर्थ–लोध्र, तिरीट, कानीन, तिलक, सन्ततोद्भव ये पांच नाम लोधके हैं । दूसरीके करडापनसे सरक, श्वेतलोध्र, अक्षिभेषज ये तीन नाम हैं ॥ ५३ ॥

रोध्रो विरेचकः शीतश्चक्षुष्यः कफपित्तनुत् ।
कषायो रक्तशोफासृग्ज्वरातीसारनाशनः ।
तत्पुष्पं मधुरं ग्राहि सतिक्तं श्लेष्मपित्तजित् ॥ ५४ ॥

अर्थ–लोध जुलाब लगाती है, शीतल है, नेत्रोंको हित है, कफपित्तको दूर करती है, कषैली है, रक्त, शोजा, रक्तज्वर, अतिसार इन्होंको नाशती है । लोधका फूल मीठा है, मलको बांधता है, कडुवा है, कफ-पित्तको जीतता है ॥ ५४ ॥

वृद्धदारुद्वयनामगुणाः ।

वृद्धदारुर्महाश्यामा लाङ्गली जीर्णवल्कलः ।

अन्या कोटरपुष्पी स्यादावेगी छागलान्यपि ॥ ५५ ॥

अर्थ–वृद्धदारु, महाश्यामा, लांगली, जीर्णवल्कल ये चार नाम भिदारोंके हैं, और कोटरपुष्पी, आवेगी, छागलानी ये तीन दूसरे भिदारेके नाम हैं ॥ ५५ ॥

वृद्धदारुः कषायोष्णः सरस्तिक्तो रसायनः ।
वृष्यो वातामवातास्रशोफमेहकफाञ्जयेत् ॥ ५६ ॥

अर्थ–भिदारा कषैला है, गर्म है, सर है, कडुवा है, रसायन है, वीर्यको करता है, वात, आमवात, रक्त, शोजा, प्रमेह, कफ इन्होंको जीतता है ॥ ५६ ॥

देवदालीनामगुणाः ।

देवदाली वृत्तकोशी देवताडो गरागरी ।
जीमूतस्तारका वेणी जालिन्याऽयुर्विषापहा ॥ ५७ ॥

अर्थ–देवदाली, वृत्तकोशी, देवताड, गरागरी, जीमूत, तारका, वेणी, जालिनी, आयु, विषापहा ये दस नाम देवदालीके हैं ॥ ५७ ॥

देवदाली रसे तिक्ता कफार्शःशोफपाण्डुताः ।
नाशयेद्वामनी तीक्ष्णा क्षयहिक्काकृमिज्वरान् ।
देवदाली च कटुका प्रमेहकामलापहा ॥ ५८ ॥

अर्थ–देवदाली रसमें कडुवी है, छर्दिको करती है,तेज है, कफ, बवासीर, शोजा, पांडुरोग, क्षय, हिचकी, कृमि, ज्वर इन्होंको नाशती है, देवदाली चर्परी है, प्रमेह और कामलाको नाशती है ॥ ५८ ॥

हंसपादीनामगुणाः ।

हंसपादी हंसपदी रक्तपादी त्रिपादिका ।
प्रह्लादिनी कीटमारी कीटमाता मधुस्रवा ॥ ५९ ॥

अर्थ–हंसपादी, हंसपदी रक्तपादी, त्रिपादिका, प्रह्लादिनी, कीटमारी, कीटमाता, मधुस्रवा ये आठ नाम हंसपादीके हैं ॥ ५९ ॥

हंसपादी गुरुः शीता हन्ति रक्तविषव्रणान् ।
विसर्पदाहातीसारलूतभूतांश्च रोपणी ॥ २६० ॥

अर्थ–हंसपादी भारी है, शीतल है, रक्त, विष, घाव, विसर्प, दाह, अतीसार, लूत, भूत इन्होंको नाशती है ॥ २६० ॥

सोमवल्लीनामगुणाः ।

सोमवल्ली यज्ञनेता सोमक्षीरी द्विजप्रिया ।

सोमवल्ली त्रिदोषघ्नी कटुस्तिक्ता रसायनी ॥ ६१ ॥

अर्थ–सोमवल्ली, यज्ञनेता, सोमक्षीरी, द्विजप्रिया ये चार नाम सोमवल्लीके हैं । सोमवल्ली अर्थात् चांदवेल त्रिदोषको नाशती है, चर्परी है, कडुवी है, रसायन है ॥६१॥

आकाशवल्लीनामगुणाः ।

आकाशवल्ली तु बुधैः कथिताऽमरवल्लरी ।
खवल्ली ग्राहिणी तिक्ता पिच्छिलाख्यामयापहा ॥ ६२ ॥

अर्थ–आकाशवल्ली, अमरवल्लरी ये दो नाम आकाशवेलके हैं । आकाशवेल मलको बांधती है, कडुवी है, पिच्छिलरोगको नाशती है ॥ ६२ ॥

नाकुलीनामगुणाः ।

नाकुली समहा सर्पगन्धिनी गन्धनाकुली ।
नकुलेष्टा महासर्पनेत्रा रोचकपत्रिका ॥ ६३ ॥

अर्थ–नाकुली, समहा, सर्पगंधिनी, गंधनाकुली, नकुलेष्टा, महासर्पनेत्रा, रोचकपत्रिका ये सात नाम नाकुलीके हैं ॥ ६३ ॥

नाकुली तुवरा तिक्ता कटुकोष्णा विनाशयेत् ।
विषलूतावृश्चिकाखुसर्पाणां च कृमिव्रणान् ॥ ६४ ॥

अर्थ–नाकुली कषैली, कडुवी, चर्परी और गर्म है । मकडी, बीछू, सर्प, कृमि इन्होंके विषोंको नाशती है ॥ ६४ ॥

वटपत्रीनामगुणाः ।

वटपत्री मोहिनी स्याद्दीपनी रेचनी मता ।
वटपत्री योनिगदान् कषायोष्णा विनाशयेत् ।
तत्फलं स्तम्भनं शीतं वातलं कफपित्तजित् ॥ ६५ ॥

अर्थ–वटपत्री, मोहिनी, दीपनी, रेचनी ये चार नाम वटपत्रीके हैं । वटपत्री कषैली और गर्म है तथा योनिरोगोंको नाशती है । वटपत्रीका फल स्तंभन है, शीतल है, वातको उपजाता है, कफ-पित्तको जीतता है ॥ ६५ ॥

लज्जालुनामगुणाः ।

लज्जालुर्मोहिनी स्पृक्का खदिरी गन्धकारिणी ।
नमस्कारी शमी पत्री समङ्गा रक्तपादिका ॥ ६६ ॥

अर्थ–लज्जालु, मोहिनी, स्पृक्का, खदिरी, गंधकारिणी, नमस्कारी, शमी, पत्री, समंगा, रक्तपादिका ये दश नाम लज्जालुके हैं ॥ ६६ ॥

लज्जालुः शीतला तिक्ता कषाया श्लेष्मपित्तजित् ।
रक्तपित्तमतीसारं योनिरोगान् विनाशयेत् ॥ ६७ ॥

अर्थ–लज्जावंती शीतल है, कडुवी है, कषैली है, कफपित्तको जीतती है और रक्तपित्त, अतिसार, योनिरोग इन्होंको नाशती है ॥ ६७ ॥

मुषलीनामगुणाः ।

मुषली खलिनी तालपत्री काञ्चनपुष्पिका ।
महावृक्षा वृक्षकन्दः खर्जूरी तालमूलिका ॥ ६८ ॥

अर्थ–मुशली, खलिनी, तालपत्री, कांचनपुष्पिका, महावृक्षा, वृक्षकंद, खर्जूरी, तालमूलिका ये आठ नाम मुसलीके हैं ॥ ६८ ॥

मुषली मधुरा वृष्या वीर्योष्णा बृंहणी गुरुः ।
तिक्ता रसायनी हन्ति गुदजाननिलं तथा ॥ ६९ ॥

अर्थ–मुसली मीठी है, वीर्यको उपजाती है, पराक्रममें गरम है, धातुको पुष्ट करती है, भारी है, कडुवी है, रसायन है और गुदाके रोगोंको तथा वातको नाशती है ॥ ६९ ॥

कपिकच्छूनामगुणाः ।

कपिकच्छूः स्वयंगुप्ता कण्डूला दुरवग्रहा ।
चण्डात्मगुप्ता लांगूली मर्कटी स्यात् प्रहर्षणी ॥ २७० ॥

अर्थ–कपिकच्छू, स्वयंगुप्ता, कंडूला, दुरवग्रहा, चण्डा, आत्मगुप्ता, लांगूली, मर्कटी, प्रहर्षणी ये नव नाम कौंचके हैं ॥ २७० ॥

कपिकच्छूः परं वृष्या मधुरा बृंहणी गुरुः ।
तद्बीजं वातशमनं वाजीकरणमुत्तमम् ॥ ७१ ॥

अर्थ–कौंच बहुत वीर्यको करती है, मीठी है, धातुको पुष्ट करती और भारी है । कौंचका बीज वातको शान्त करता है और उत्तम वाजीकरण अर्थात् भोगमें स्त्रीको सुख देता है ॥ ७१ ॥

पुत्रजीवनामगुणाः ।

पुत्रजीवो गर्भकरो यष्टीपुत्रोऽर्थसाधनः ।
पुत्रजीवो गुरुर्वृष्यो गर्भदः श्लेष्मवातजित् ॥ ७२ ॥

अर्थ–पुत्रजीव, गर्भकर, यष्टीपुत्र, अर्थसाधन ये चार नाम जीयापोताके हैं । जीयापोता भारी है, वीर्यको उपजाती है, गर्भको देती है, कफवातको जीतती है॥७२॥

वन्ध्यानामगुणाः ।

वन्ध्या कर्कोटकी देवी कुमारी विषनाशिनी ।
मनोज्ञा नागदमनी वन्ध्या योगीश्वरी मता ॥ ७३ ॥

अर्थ–वंध्या, कर्कोटकी, देवी, कुमारी, विषनाशिनी, मनोज्ञा, नागदमनी, वंध्या, योगीश्वरी ये नव नाम बांझ ककोडीके हैं ॥ ७३ ॥

वन्ध्या कर्कोटकी लघ्वी कफनुद् व्रणशोधनी ।
सर्पदंष्ट्रहरा तीक्ष्णा वीसर्पविषनाशिनी ॥ ७४ ॥

अर्थ–बांझ ककोडी हलकी है, कफको दूर करती है, घावको शोधती है, सांपके डसे हुएको आरोग्य करती है, तेज है, विसर्प और विषको नाशती है ॥ ७४ ॥

विष्णुक्रांतानामगुणाः ।

विष्णुक्रान्ता नीलपुष्पी जया वश्यापराजिता ।
विष्णुक्रान्ता कटुर्मेध्या कृमिव्रणकफाञ्जयेत् ॥ ७५ ॥

अर्थ–विष्णुक्रांता, नीलपुष्पी, जया, वश्या, अपराजिता ये पांच नाम विष्णुक्रांताके हैं । विष्णुक्रांता चर्परी है, बुद्धिको बढाती है, कृमि, घाव, कफ इन्होंको जीतती है ॥ ७५ ॥

शङ्खपुष्पीनामगुणाः ।

शङ्खपुष्पी शङ्खनाम्नी किरीटी कम्बुमालिनी ।
शङ्खपुष्पी स्मृतिहिता मेध्या वर्णविलासिनी ॥ ७६ ॥

अर्थ–शंखपुष्पी, शंखनाम्नी, किरीटी, कंबुमालिनी, हुली, स्मृतिहिता, मेध्या, वर्णविलासिनी ये आठ नाम शंखपुष्पीके हैं ॥ ७६ ॥

शङ्खपुष्पी सरा मेध्या मता चेतोविकारिणी ।
रसायनी कषायोष्णा स्मृतिदा मोहनाशिनी ॥ ७७ ॥

अर्थ–शंखपुष्पी सर है, बुद्धिको बढाती है, चित्तको सुख देती है, रसायन, कषैली और गर्म है, स्मृतिको देती है और मोहको नाशती है ॥ ७७ ॥

दुग्धिकानामगुणाः ।

दुग्धिका मधुपर्णी स्यात् क्षीरिणी स्वादुपुष्पिका ।
दुग्धिकोष्णगुरू रूक्षा वातला गर्भकारिणी ।
स्वादुर्विषघ्नी वृष्या कफकुष्ठकृमीन् जयेत् ॥ ७८ ॥

अर्थ–दुग्धिका, मधुपर्णी, क्षीरिणी, स्वादुपुष्पिका ये चार नाम दूधीके हैं। दूधी गर्म, भारी और रूखी है, वातको उपजाती है, गर्भको करती है, स्वादु है, विष्टंभ करती है, वीर्यको हरती है। कफ, कुष्ठ, कृमि इन्होंको जीतती है ॥ ७८ ॥

अर्कपुष्पीनामगुणाः ।

अर्कपुष्पी क्रूरकन्दा जलकामाभिरण्डिका ।
अर्कपुष्पी कृमिश्लेष्ममेहपित्तविकारजित् ॥ ७९ ॥

अर्थ–अर्कपुष्पी, क्रूरकंदा, जलकामा, अभिरंडिका ये चार नाम अर्कपुष्पीके हैं। अर्कपुष्पी कृमि, कफ, प्रमेह, पित्तविकार इन्होंको नाशती है ॥ ७९ ॥

भल्लातकनामगुणाः ।

भल्लातको नभोवल्ली वीरवृक्षोऽग्निवक्त्रकः ।
अरुष्करस्तथा रूक्षस्तपनोऽग्निमुखी धनुः ॥ २८० ॥

अर्थ–भल्लातक, नभोवल्ली, वीरवृक्ष, अग्निवक्त्रक, आरुष्कर, रूक्ष, तपन, अग्निमुखी, धनु ये नव नाम भिलावेके हैं ॥ २८० ॥

भल्लातकः कषायोष्णः शुक्रलो मधुरो लघुः ।
वातश्लेष्मोदरानाहकुष्ठार्शोग्रहणीगदान् ।
हन्ति गुल्मज्वरश्वित्रवह्निमान्द्यकृमिज्वरान् ॥ ८१ ॥

अर्थ–भिलावा कषैला है, गर्म है, वीर्यको उपजाता है, मीठा है, हलका है, वात कफ, उदररोग, अफरा, कुष्ठ, बवासीर, ग्रहणीरोग, गुल्म, ज्वर, श्वित्रकुष्ठ, मंदाग्नि, कृमि, ज्वर इन्होंको नाशता है ॥ ८१ ॥

चरपोटानामगुणाः ।

चरपोटा दीर्घपत्री कुन्तली तिक्तका मता ।
चरपोटा हिमा रूक्षा भेदिनी श्वासकासजित् ॥ ८२ ॥

अर्थ–चरपोटा, दीर्घपत्री, कुन्तली, तिक्तका ये चार नाम चिरपोटनके हैं। चिरपोटन शीतल है, रूखी है, भेदन है, श्वास और खांसीको जीतती है ॥ ८२ ॥

द्रोणपुष्पीनामगुणाः ।

द्रोणपुष्पी श्वसनकः पालिन्दी कुम्भयोनिका ।
छत्राणी छत्रको द्रोणा कौडिन्यो वृक्षसारकः ॥ ८३ ॥

अर्थ–द्रोणपुष्पी, श्वसनक, पालिंदी, कुंभयोनिका, छत्राणी, छत्रक, द्रोणा, कौडिन्य, वृक्षसारक ये नव नाम द्रोणपुष्पीके हैं ॥ ८३ ॥

द्रोणपुष्पी गुरू रूक्षा स्वादूष्णा वातपित्तनुत् ।
भेदनी कामलाशोफकफकृमिहरा कटुः ॥ ८४ ॥

अर्थ-द्रोणपुष्पी भारी है, रूखी है, स्वादु है, गर्म है, वातपित्तको दूर करती है, भेदन है । कामला, शोजा, कफ, कृमि इन्होंको हरती है, चर्परी है ॥ ८४ ॥

ब्राह्मीब्राह्मण्डूकीनामगुणाः ।

ब्राह्मी सरस्वती सोमा सत्याह्वा ब्रह्मचारिणी ।
मण्डूकपर्णी माण्डूकी त्वष्ट्री दिव्या महौषधिः ॥ ८५ ॥

अर्थ-ब्राह्मी, सरस्वती, सोमा, सत्याह्वा, ब्रह्मचारिणी ये पांच नाम ब्राह्मीके हैं और मण्डूकपर्णी, माण्डूकी, त्वष्ट्री, दिव्या, महौषधि ॥ ८५ ॥

कपोतविट्का मुनिका लावण्या सोमवल्लरी ।
ब्राह्मी हिमा सरा स्वादुर्लघुर्मेध्या रसायनी ॥ ८६ ॥

अर्थ-कपोतविट्का, मुनिका, लावण्या, सोमवल्लरी ये नव नाम ब्राह्मण्डुकीके हैं । ब्राह्मी शीतल है, सर है, स्वादु है, हलकी है, बुद्धिको देती है, रसायन है ॥ ८६ ॥

स्वर्या स्मृतिप्रदा कुष्ठपाण्डुमेहास्रकासजित् ।
विषशोफज्वरहरा तद्वन्मण्डूकपत्रिणी ॥ ८७ ॥

अर्थ-स्वरको देती है, स्मृतिको देती है, कुष्ठ, पांडु, प्रमेह, रक्त, खांसी इन्होंको जीतती है. विष, शोजा, ज्वर इन्होंको हरती है येही सब गुण मण्डूकीमें हैं ॥८७॥

सुवर्चलाब्रह्मसुवर्चलानामगुणाः ।

सुवर्चलाऽर्ककान्ता स्यात् सूर्यभक्ता सुखोद्भवा ।
सूर्यावर्त्ता रविप्रीता त्वन्या ब्रह्मसुवर्चला ॥ ८८ ॥

अर्थ-सुवर्चला, अर्ककांता, सूर्यभक्ता, सुखोद्भवा, सूर्यावर्ता, रविप्रीता और दूसरी ब्रह्मसुवर्चला ये सात नाम सौंचली ब्रह्मसौंचलीके हैं ॥ ८८ ॥

सुवर्चला गुरुः शीता मूत्रला कफवातजित् ।
अन्योष्णा कुष्ठमेहाश्मकृच्छ्रज्वरहरा लघुः ॥ ८९ ॥

अर्थ-सौंचली भारी है, शीतल है, मूत्रको उपजाती है, वात-कफको जीतती है । ब्रह्मसौंचली गर्म है, कुष्ठ, प्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर इन्होंको हरती है और हलकी है ॥ ८९ ॥

मत्स्याक्षीनामगुणाः ।

मत्स्याक्षी बालिका मत्स्यगन्धी मत्स्यादनी तथा ।

मत्स्याक्षी ग्राहिणी शीता कुष्ठपित्तकफास्रनुत् ॥ २९० ॥

अर्थ–मत्स्याक्षी, बालिका, मत्स्यगन्धी, मत्स्यादनी ये चार नाम मत्स्याक्षीके हैं । मत्स्याक्षी मलको बांधती है, शीतल है, कुष्ठ, पित्त, कफ, रक्त इन्होंको जीतती है ॥ २९० ॥

जलपिप्पलीनामगुणाः ।

तोयपिप्पल्यम्बुवल्ली पलूरः कञ्चटस्तथा ।
जलपिप्पलिका हृद्या चक्षुष्या शुक्रला लघुः ।
संग्राहिणी हिमा रूक्षा रक्तदाहव्रणापहा ॥ ९१ ॥

अर्थ–तोयपिप्पली, अंबुवल्ली, पलूर, कंचट ये चार नाम जलपीपलके हैं । जलपीपल हृदयमें सुख देती है, नेत्रोंमें हित करती है, वीर्यको उपजाती है, हलकी है, मलको बांधती है, शीतल है, रूखी है, रक्त, दाह, घाव इन्होंको नाशती है ॥ ९१ ॥

गोजिह्वानामगुणाः ।

गोजिह्वा गोजिका गोभी दार्विका स्वरपार्णिनी ।
गोजिह्वा वातला शीता ग्राहिणी कफपित्तनुत् ।
हृद्या प्रमेहकासास्रव्रणज्वरहरा लघुः ॥ ९२ ॥

अर्थ–गोजिह्वा, गोजिका, गोभी, दार्विका, स्वरपार्णिनी ये पांच नाम गोभीके हैं । गोभी वातको करती है, शीतल है, मलको बांधती है, कफ-पित्तको दूर करती है, हृदयमें गुण करती है, प्रमेह, खांसी, रक्त, घाव, ज्वर इन्होंको हरती है और हलकी है ॥ ९२ ॥

नागदमनीनामगुणाः ।

नागाह्वा दमनी नागगन्धा भुजगपार्णिनी ।
स्यान्नागदमनी वर्ण्या लूतासर्पविषापहा ॥ ९३ ॥

अर्थ–नागाह्वा, दमनी, नागगन्धा, भुजगपार्णिनी ये चार नाम नागदौनके हैं । नागदौनी वर्णको निखारती है, मकडी और सर्पके विषको हरती है ॥ ९३ ॥

गुञ्जानामगुणाः ।

गुञ्जा शिखण्डिका ताम्रा रक्तिका काकनासिका ।
श्वेतान्या चक्रिका चूडा दुर्मुखा काकपीलुका ॥ ९४ ॥

अर्थ–गुञ्जा, शिखंडिका, ताम्रा, रक्तिका, काकनासिका ये पांच नाम लाल चिरमिटीके हैं । श्वेता, चक्रिका, चूडा, दुर्मुखा, काकपीलुका ये पांच नाम सुपेद चिरमिटीके हैं ॥ ९४ ॥

गुञ्जा केश्या बलकरा त्वच्या पित्तकफापहा ।
नेत्रामयहरा वृष्या हन्ति कण्डूग्रहव्रणान् ।
कृमीन् प्रलुप्तकुष्ठानि तच्छ्वेतापि च शस्यते ॥ ९५ ॥

अर्थ–चिरमिटी बालोंको बढाती है, बलको करती है, त्वचामें सुख देती है, पित्तकफको हरती है, नेत्रके रोगको हरती है, वीर्यको देती है, खाज, ग्रहदोष, घाव, कृमि, बालोंका उडना, कुष्ठ इन्होंको दूर करती है । श्वेत चिरमिटीमेंभी येही गुण हैं ॥ ९५ ॥

वेल्लन्तरनामगुणाः ।

वेल्लन्तरो दीर्घपत्रो वीरद्रुर्बहुवारकः ।
वेल्लन्तरोऽश्मनुद् ग्राही कफकृच्छ्रनिलार्त्तिजित् ॥ ९६ ॥

अर्थ–वेल्लंतर, दीर्घपत्र, वीरद्रु, बहुवारक ये चार नाम बेलिके हैं । बेलि पथरीको दूर करती है, मलको बांधती है, कफ, मूत्रकृच्छ्र, वातरोग इन्होंको नाशती है ॥ ९६ ॥

वन्दानामगुणाः ।

वन्दाकः स्याद्वृक्षरुहा शेखरी कामवृक्षकः ।
वृक्षादनी कामतरुः कामिन्यापदरोहिणी ।
वन्दाकः कण्ठवातास्रशोफव्रणविषापहः ॥ ९७ ॥

अर्थ–वंदाक, वृक्षरुहा, शेखरी, कामवृक्ष, वृक्षादनी, कामतरु, कामिनी, आपदरोहिणी ये आठ नाम वंदाके हैं । वंदा कंठरोग, वातरक्त, शोजा, घाव, विष इन्होंको नाशती है ॥ ९७ ॥

पिण्डारनामगुणाः ।

पिण्डारः करहाटः स्यात् तीक्ष्णकालः कुरङ्गकः ।
पिण्डारो मधुरः शीतः शोथपित्तकफापहः ॥ ९८ ॥

अर्थ–पिंडार, करहाट, तीक्ष्णकाल, कुरंगक ये चार नाम पिंडारके हैं । पिंडार मीठा और शीतल है । शोजा, पित्त, कफ इन्होंको नाशता है ॥ ९८ ॥

छिक्किकानामगुणाः ।

छिक्किका क्षवकः क्रूरो नासा संवेदना पटुः ।
छिक्किका पित्तला कुष्ठकृमिवातकफापहा ॥ ९९ ॥

अर्थ–छिक्किका, क्षवक, क्रूर, नासा, संवेदना, पटु ये छः नाम नकछींकनीके हैं । नकछींकनी पित्तको उपजाती है और कुष्ठ, कृमि, वात, कफ इन्होंको नाशतीहै॥९९॥

रोहितनामगुणाः ।

रोहितो दाडिमीपुष्पो रोहीतः कूटशाल्मलिः ।
प्लीहारी रोहिणी रोही रक्तघ्नः पारिजातकः ।
रोहीतकः सरो गुल्मयकृत्प्लीहोदरापहः ॥ ३०० ॥

अर्थ–रोहित, दाडिमीपुष्प, रोहिताह्व, कूटशाल्मलि, प्लीहारी, रोहिणी, रोही, रक्तघ्न, पारिजातक ये नव नाम रोहेरुके हैं । रोहेरु सर है, गुल्म, यकृत्, प्लीहोदर, इन्होंको हरता है ॥ ३०० ॥

मोचरसनामगुणाः ।

मोचकः स्यान्मोचरसः शाल्मलीवेष्टकः स्मृतः ।
मोचनिर्यासकः पिच्छा मोचास्रावी च वेष्टकः ॥ १ ॥

अर्थ–मोचक, मोचरस, शाल्मलीवेष्टक, मोचनिर्यासक, पिच्छा, मोचास्रावी, वेष्टक ये सात नाम मोचरसके हैं ॥ १ ॥

मोचकः शीतलो ग्राही गुरुर्वृष्योऽतिसारजित् ।
प्रवाहकासपित्तास्रकफदाहनिबर्हणः ॥ २ ॥

अर्थ–मोचरस शीतल है, मलको बांधता है, भारी है, धातुको पुष्ट करता है, अतिसारको जीतता है और प्रवाहिका, खांसी, रक्तपित्त, कफ, दाह इन्होंको दूर करता है ॥ २ ॥

अजगन्धानामगुणाः ।

अजगन्धा वस्तुगन्धा कवरी पूतवर्वरः ।
अजगन्धा लघू रुच्या हृद्या तु कफवातनुत् ॥ ३ ॥

अर्थ–अजगंधा, वस्तुगंधा, कवरी, पूतवर्वर ये चार नाम अजगंधाके हैं । अजगंधा हलकी है, रुचि उपजाती है, हृदयमें हित है और कफ-वातको जीतती है॥३॥

सौरेयकनामगुणाः ।

सौरेयकः सहचरः सौरेयः किङ्करातकः ।
दासीसहचरः किण्टी शैर्षको मृदुकण्टकः ॥ ४ ॥

अर्थ–सौरेयक, सहचर, सौरेय, किंकरातक, दासीसहचर, किंटी, शैर्षक, मृदुकंटक ये आठ नाम पियावासाके हैं ॥ ४ ॥

रक्तपुष्पः कुरुबकः पीतो ज्ञेयः कुरण्टकः ।
नील आत्तगलः प्रोक्तो बाणा गोदनपाक्यपि ॥ ५ ॥

अर्थ–रक्तपुष्प, कुरुबक ये दो नाम पीत कुरंटके हैं । आर्तगल, बाणा, गोदनपाकी ये तीन नाम नील कुरंटाके हैं ॥ ५ ॥

सौरेयः कुष्ठवातास्रकफकण्डूविषापहः ।
तिक्तोष्णो मधुरः केश्यः सुस्निग्धः केशरञ्जनः ॥ ६ ॥

अर्थ–पियावासा और सब प्रकारका कुरंटा कुष्ठ, वातरक्त, कफ, खाज, विष इन्होंको नाशता है । यह कडुवा है, गर्म है, मीठा है, बालोंको उपजाता है, सुंदर चिकना है, बालोंको रंगाता है ॥ ६ ॥

श्वेतस्यन्दानामगुणाः ।

श्वेतस्यन्दा श्वेतपुष्पा कटिभिर्गिरिकर्णिका ।
सितापराजिता श्वेता विषघ्नी मेहनाशिनी ॥ ७ ॥

अर्थ–श्वेतस्यंदा, श्वेतपुष्पा, कटिभि, गिरिकर्णिका, सिता, अपराजिता, श्वेता, विषघ्नी, मेहनाशिनी ये नव नाम हरमलके हैं ॥ ७ ॥

नीलस्यन्दा व्यक्तगन्धा नीलपुष्पा गवादिनी ।
श्वेतस्यन्दाद्वयं शीतं ग्रहघ्नं दृष्टिकुण्ठकृत् ।
कुष्ठशूलत्रिदोषामशोफव्रणविषापहम् ॥ ८ ॥

अर्थ–नीलस्यंदा, व्यक्तगंधा, नीलपुष्पा, गवादिनी ये चार नाम श्वेतस्यंदाके हैं । ये दोनों हरमल शीतल हैं, ग्रहदोषको नाशती हैं, दृष्टिको कुंठित करती हैं, कुष्ठ, शूल, त्रिदोष, आम, शोजा, घाव, विष इन्होंको नाशती हैं ॥ ८ ॥

इक्षुरनामगुणाः ।

इक्षुरः क्षुरमेधाण्डः कोकिलाक्षः क्षुरः स्मृतः ।
तैलकण्डस्तिक्षरिक्षुर्बालिका चेक्षुगन्धिका ।
इक्षुरः शीतलो वृष्यो गुरुर्वातकफास्रजित् ॥ ९ ॥

अर्थ–इक्षुर, क्षुरमेधाण्ड, कोकिलाक्ष, क्षुर, तैलकंड, तिक्षरिक्षु, बालिका, इक्षुगंधिका ये आठ नाम तालमखानेके हैं । तालमखाना शीतल है, धातुको उपजाता है, भारी है, वात-कफ-रक्तको जीतता है ॥ ९ ॥

कार्पासनामगुणाः ।

कार्पासः पटशूलश्छादवनी वादरः पिचुः ।
कार्पासको लघुः कोष्णो मधुरो वातनाशनः ।
तद्बीजं स्तन्यदं वृष्यं स्निग्धं कफकरं गुरु ॥ ३१० ॥

अर्थ-कार्पास, पटशूल, छादवनी, वादर, पिचु ये पांच नाम कपासके हैं। कपास हलका है, कफुक गर्म है, मीठा है, वातको नाशता है। कपासका बीज अर्थात् विनोला दूधको देता है, धातुको पुष्ट करता है, चिकना है, कफको करता है, भारी है ॥ ३१० ॥

आरामशीतलानामगुणाः ।

आरामशीतला देवी गन्धा कुक्कुरमर्दनः ।
आरामशीतला सीता कटुः पित्तकफास्रजित् ॥ ११ ॥

अर्थ-आरामशीतला, देवी, गंधा, कुक्कुरमर्दन ये चार नाम आरामशीतलाके हैं। आरामशीतला शीतल और चर्परी है, पित्त, कफ, रक्त इन्होंको जीतती है ॥ ११ ॥

कुक्कुरद्रुनामगुणाः ।

कुक्कुरद्रुस्ताम्रचूडः सूक्ष्मपत्रो मृदुच्छदः ।
कुक्कुरद्रुः कटुस्तिक्तो ज्वररक्तकफापहः ॥ १२ ॥

अर्थ-कुक्कुरद्रु, ताम्रचूड, सूक्ष्मपत्र, मृदुच्छद ये चार नाम करोंदाके हैं। करोंदा चर्परा और कडुवा है, ज्वर, रक्त, कफ इन्होंको नाशता है ॥ १२ ॥

वामीनामगुणाः ।

वामी शङ्खधरा वारिब्राह्मी च हिलमोचिका ।
वामी शोफहरा कुष्ठपित्तश्लेष्मानिलापहा ॥ १३ ॥

अर्थ-वामी, शंखधरा, वारिब्राह्मी, हिलमोचिका ये चार वामके हैं। वामी शोजाको हरती है, कुष्ठ, पित्त, कफ, वात इन्होंको दूर करती है ॥ १३ ॥

शरपुङ्खानामगुणाः ।

शरपुङ्खा कालशाकं प्लीहारी कालका मता ।
शरपुङ्खा यकृत्प्लीहदुष्टव्रणविषापहा ।
तिक्ता कषाया कासास्रश्वासज्वरहरा लघुः ॥ १४ ॥

अर्थ-शरपुंखा, कालशाक, प्लीहारी, कालका ये चार नाम शरपुंखाके हैं। शरपुंखा यकृत्, तिल्लीरोग, दुष्टघाव, विष इन्होंको नाशती है, कषैली और कडुवी है, खांसी, रक्त, श्वास, ज्वर इन्होंको हरती है तथा हलकी है ॥ १४ ॥

बलामोटानामगुणाः ।

बलामोटा जया सूक्ष्मपत्रा ज्ञेयापराजिता ।
बलामोटा विषश्लेष्मकृच्छ्रनुद्विजयप्रदा ॥ १५ ॥

अर्थ–बलामोटा, जया, सूक्ष्मपत्रा, अपराजिता ये चार नाम बलामोटाके हैं । बलामोटा विष, कफ, कृच्छ्र इन्होंको दूर करती है और विजयको देती है ॥ १५ ॥

सुदर्शनानामगुणाः ।

सुदर्शना सोमवल्ली चक्राङ्का मधुपर्णिका ।
सुदर्शना स्वादुरुष्णा कफशोफास्रवातजित् ॥ १६ ॥

अर्थ–सुदर्शना, सोमवल्ली, चक्रांका, मधुपर्णिका ये चार नाम सुदर्शनाके हैं । सुदर्शना स्वादु और गर्म है, कफ, शोजा, रक्तवात इन्होंको जीतती है ॥ १६ ॥

मयूरशिखानामगुणाः ।

मयूराह्वा शिखा ज्ञेया साहस्री मधुकच्छदा ।
मयूराह्वा शिखा लघ्वी पित्तश्लेष्मातिसारजित् ॥ १७ ॥

अर्थ–मयूराह्वा, शिखा, साहस्री, मधुकच्छदा ये चार नाम मोरशिखाके हैं । मोरशिखा हलकी है, पित्त, कफ, अतिसार इन्होंको जीतती है ॥ १७ ॥

लक्ष्मणानामगुणाः ।

लक्ष्मणा पुत्रदा रक्ता बिन्दुपत्रा च नागिनी ।
गोक्षीरसदृशं पुष्पं रोमवल्लिसमन्वितम् ॥ १८ ॥

अर्थ–लक्ष्मणा, पुत्रदा, रक्ता, बिंदुपत्रा, नागिनी ये पांच नाम लक्ष्मणाके हैं । गौके दूधके समान फूल हो, रोम और वेलसे युत हो ॥ १८ ॥

रक्तबिन्दुसमं पुष्पं लक्ष्मणाकारमुच्यते ।
लक्ष्मणा गर्भदा शीता सरा वृष्या त्रिदोषनुत् ॥ १९ ॥

अर्थ–लाल बूंदके समान फूल हो, यह लक्ष्मणाका आकार कहा है, लक्ष्मणा गर्भ देती है, शीतल है, सर है, धातुको पुष्ट करती है, त्रिदोषको दूर करती है ॥ १९ ॥

मांसरोहिणीनामगुणाः ।

मांसरोहिण्यतिरुहा वृत्ता चर्मकसा कसा ।
स्यान्मांसरोहिणी वृष्या सरा दोषत्रयापहा ॥ ३२० ॥

अर्थ–मांसरोहिणी, अतिरुहा, वृत्ता, चर्मकसा, कसा ये पांच नाम रोहिणीके हैं । मांसरोहिणी धातुको बढाती है, सर है, त्रिदोषको हरती है ॥ ३२० ॥

अस्थिसंहारकनामगुणाः ।

अस्थिसंहारको वज्रवल्लरी क्रोष्टुघण्टिका ।
वज्राङ्गी ग्रन्थिमान् वज्रप्रोक्ता स्यादस्थिशृङ्खला ।

अस्थिसंहारकः शीतो वृष्यो वातहरोऽस्थियुक् ॥ २१ ॥

अर्थ–अस्थिसंहारक, वज्रवल्ली, क्रोष्टु, घंटिका, वज्राङ्गी, ग्रंथिमान्, वज्रप्रोक्ता, अस्थिशृंखला ये आठ नाम हडसंहारीके हैं। हडसंहारी शीतल है, धातुको पुष्ट करती है, वातको हरती और हड्डीको जोडती है ॥ २१ ॥

अर्कनामगुणाः ।

अर्कः सूर्याह्वयः क्षीरी सदापुष्पो विकीरणः ।
मन्दारो वसुकोऽलर्को राजाह्वो दीर्घपत्रकः ॥ २२ ॥

अर्थ–अर्क, सूर्याह्वय, क्षीरी, सदापुष्प, विकीरण, मंदार, वसुक, अलर्क, राजाह्व, दीर्घपत्रक ये दश नाम आकके हैं ॥ २२ ॥

अर्कद्वयं शङ्खवातकुष्ठकण्डूविषव्रणान् ।
निहन्ति प्लीहगुल्मार्शोयकृत्श्लेष्मोदरकृमीन् ॥ २३ ॥

अर्थ–दोनों आक शंखवात, कुष्ठ, खाज, विष, घाव, तिल्लीरोग, गुल्म, बवासीर, यकृत्, कफ, उदररोग, कृमि इन्होंको नाशते हैं ॥ २३ ॥

करवीरनामगुणाः ।

करवीरोऽश्वहा श्वेतपुष्पा स्याच्छतपुष्पकः ।
रक्तपुष्पो परश्चण्डो लगुडः करवीरकः ॥ २४ ॥

अर्थ–करवीर, अश्वहा, श्वेतपुष्पा, शतपुष्पक ये चार नाम सुपेद कनेरके हैं। रक्तपुष्प, चंड, लगुड, करवीरक ये चार नाम लाल कनेरके हैं ॥ २४ ॥

करवीरद्वयं नेत्रशोफकण्डूव्रणापहम् ।
लघूष्णं कृमिकण्डूघ्नं भक्षितं विषवन्मतम् ॥ २५ ॥

अर्थ–दोनों कनेर नेत्ररोग, शोजा, खाज, घाव, इन्होंको नाशते हैं, हलके हैं, गर्म हैं, कृमि और खाजको हरते हैं, खानेमें विषके समान माने हैं ॥ २५ ॥

धत्तूरनामगुणाः ।

धत्तूरः कितवो धूर्तो देवता मदनः शठः ।
उन्मत्तो मातुलस्तूरी तरकः कनकाह्वयः ॥ २६ ॥

अर्थ–धत्तूर, कितव, धूर्त, देवता, मदन, शठ, उन्मत्त, मातुल, तूरी, तरक, कनकाह्वय ये ग्यारह नाम धत्तूराके हैं ॥ २६ ॥

धत्तूरो मदवर्णाग्निवान्तिकुष्ठरुक्नुत् ।
उष्णो गुरुर्व्रणश्लेष्मकण्डूकृमिविषापहः ॥ २७ ॥

अर्थ–धत्तूरा, मद, वर्ण, अग्नि, छर्दि, हस्तिकुष्ठ इन्होंको दूर करता है, गर्म है, भारी है, घाव, कफ, खाज, कृमि विष इन्होंको नाशता है ॥ २७ ॥

कलिकारीनामगुणाः ।

कलिकारी वह्निमुखी लाङ्गली गर्भपातिनी ।
विशल्या हलिनी शीरी प्रभाता शुक्लपुष्पिका ॥ २८ ॥

अर्थ–कलिकारी, वह्निमुखि, लांगली, गर्भपातिनी, विशल्या, हलिनी, शीरी, प्रभाता, शुक्लपुष्पिका ॥ २८ ॥

विद्युदुल्काऽग्निजिह्वा च कथिता पुष्पसी भरा ।
वह्निशिखाग्निका ज्ञेया नलरन्ध्री च सा स्मृता ॥ २९ ॥

अर्थ–विद्युत्, उल्का, अग्निजिह्वा, पुष्पसी, भरा, वह्निशिखा, अग्निका, नलरंध्री ये सत्रह नाम कलहारीके हैं ॥ २९ ॥

कलिकारी सरा कुष्ठशोफार्शोव्रणशूलजित् ।
तीक्ष्णोष्णा कृमिनुल्लघ्वी पित्तला गर्भपातिनी ॥ ३० ॥

अर्थ–कलहारी सर है, कुष्ठ, शोजा, बवासीर, घाव, शूल इन्होंको नाशती है, तेज और गर्म है, कृमिको दूर करती है, हलकी है, पित्तको उपजाती है, गर्भको गिराती है ॥ ३० ॥

कुमारीनामगुणाः ।

कुमारी मण्डला माता गृहकन्यातिपिच्छला ।
रसायनी कटिकिनी सवरान्या वनोद्भवा ॥ ३१ ॥

अर्थ–कुमारी, मंडला, माता, गृहकन्या, अतिपिच्छला, रसायनी, कटिकिनी, सवरा और वनोद्भवा ये नव नाम कुँवारपठाके हैं ॥ ३१ ॥

कुमारी भेदनी शीता यकृत्प्लीहकफज्वरान् ।
निहन्ति ग्रन्थिविस्फोटपित्तरक्तत्वगामयान् ॥ ३२ ॥

अर्थ–कुवारपठा भेदन और शीतल है, यकृत्, प्लीहरोग, कफ, ज्वर इन्होंको नाशता है और ग्रंथि, विस्फोट, रक्तपित्त, त्वचारोग इन्होंको दूर करता है ॥ ३२ ॥

भङ्गानामगुणाः ।

भङ्गाङ्गजा मातुलानी मोहिनी विजया जया ।
भङ्गा कफहरा तिक्ता ग्राहिनी दीपनी लघुः ।

तीक्ष्णोष्णपित्तलानाहमदकृच्चाग्निवर्द्धिनी ॥ ३३ ॥

अर्थ–भंगा, अंगजा, मातुलानी, विजया, जया ये छः नाम भांगके हैं । भांग कफको हरती है,कडुवी है, मलको बांधती है, अग्निको जगाती है, हलकी है, तेज है, गर्म है, पित्तको उपजाती है, अफरा और मदको करती है, अग्निको बढातीहै॥३३॥

काञ्चनीनामगुणाः ।

काञ्चनी शोणफलिनी काकायुः काकवल्लरी ।
लाञ्चनी स्तन्यदा मूर्द्धव्यथादोषत्रयापहा ॥ ३४ ॥

अर्थ–कांचनी, शोणफलिनी, काकायु, काकवल्लरी ये चार नाम कांचनीके हैं । कांचनी दूध देती है, शिरकी पीडा, त्रिदोष इन्होंको नाशती है ॥ ३४ ॥

दूर्वानामगुणाः ।

दूर्वा शस्या शीतकरी गोलोमी शतपर्विका ।
अन्या श्वेता श्वेतदण्डा भार्गवी दुर्मता रुहा ।
दूर्वा हिमा विसर्पास्रतृट्पित्तकफदाहजित् ॥ ३५ ॥

अर्थ–दूर्वा, शस्या, शीतकरी, गोलोमी, शतपर्विका ये पांच नाम दूबके हैं । श्वेता, श्वेतदंडा, भार्गवी, दुर्मता, रुहा ये पांच नाम श्वेत दूबके हैं । दूब शीतल है, विसर्प, रक्त, तृषा, पित्त, कफ, दाह इन्होंको जीतती है ॥ ३५ ॥

गण्डदूर्वानामगुणाः ।

गण्डदूर्वा मत्स्यगन्धा मत्स्याक्षी शकुलादनी ।
गण्डदूर्वा हिमा लोहद्राविणी ग्राहिणी लघुः ।
दाहतृष्णाबलासास्रकुष्ठपित्तज्वरापहा ॥ ३६ ॥

अर्थ–गंडदूर्वा, मत्स्यगंधा, मत्स्याक्षी, शकुलादनी ये चार नाम गंडदूबके हैं । गंण्डदूब शीतल है, लोहको तावती है, मलको बांधती है, हलकी है, दाह, तृषा, कफ, रक्त, कुष्ठ, पित्तज्वर इन्होंको दूर करती है ॥ ३६ ॥

काशनामगुणाः ।

काशः सुकाण्डः काशेक्षुर्ऋषीकः श्वेतवासरः ।
इक्ष्वारिकेक्षुकाशश्च स चैवेक्षुरसः स्मृतः ।
कासकृच्छ्राश्मदाहास्रपित्तक्षयकरो हिमः ॥ ३७ ॥

अर्थ–काश, सुकांड, काशेक्षु, ऋषीक, श्वेतवासर, इक्ष्वारिका, इक्षुकाश, इक्षुरस

ये आठ नाम कासके हैं । कास मूत्रकृच्छ्र, दाह, रक्तपित्त, क्षय इन्होंको नष्ट करता है और शीतल है ॥ ३७ ॥

कुशनामगुणाः ।

दर्भो बर्हिः कुशस्तीक्ष्णः सूच्यग्रो यज्ञभूषणः ।
दर्भः कृच्छ्राश्मतृट्पित्तबस्तिनुत् कफरक्तजित् ॥ ३८ ॥

अर्थ–दर्भ, बर्हि, कुश, तीक्ष्ण, सूच्यग्र, यज्ञभूषण ये छः नाम डाभके हैं । डाभ मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, पित्त, बस्तिरोग इन्होंको दूर करती है और कफ-रक्तको जीतती है ॥ ३८ ॥

मुञ्जनामगुणाः ।

मुञ्जः क्षुरा स्थूलदर्भो बाणाह्वो ब्रह्ममेषलः ।
मुञ्जोऽनुष्णो विसर्पास्रमूत्रबस्त्यक्षिरोगजित् ॥ ३९ ॥

अर्थ–मुञ्ज, क्षुरा, स्थूल, बाणाह्व, ब्रह्ममेषल ये पांच नाम मूंजके हैं । मूंज गर्म नहीं है, विसर्प, रक्त, मूत्ररोग, बस्तिरोग, अक्षिरोग इन्होंको नाशती है ॥ ३९ ॥

नलनामगुणाः ।

नलो रन्ध्री पुष्पमृत्युर्दमनोऽनन्तकः पिटः ।
नलो मूत्रार्तिदाहास्रकफपित्तविसर्पजित् ॥ ४० ॥

अर्थ–नल, रंध्री, पुष्पमृत्यु, दमन, अनंतक, पिट ये छः नाम नरसलके हैं । नरसल मूत्ररोग, दाह, रक्त, कफ, पित्त, विसर्प इन्होंको जीतता है ॥ ४० ॥

वंशनामगुणाः ।

वंशो वेणुः कीचकः स्यात्कर्मारस्त्वचिसारकः ।
वंशः सरो हिमः पित्तकफदाहास्रशोफजित् ॥ ४१ ॥

अर्थ–वंश, वेणु, कीचक, कर्मार, त्वचिसारक ये पांच नाम बांसके हैं । बांस सर और शीतल है, पित्त, कफ, दाह, रक्त, शोजा इन्होंको जीतता है ॥ ४१ ॥

तत्करीरो गुरुर्भेदी श्लेष्मलो वातपित्तजित् ।
तथा च भेदकोऽत्युष्णः कफघ्नो वातपित्तजित् ॥ ४२ ॥

अर्थ–बांसका अंकुर भारी है, भेदी है, कफको उपजाता है, और वात-पित्तको जीतता है । बांसकी जड भेदक है, अत्यन्त गर्म है, कफको नाशती है और वात-पित्तको जीतती है ॥ ४२ ॥

जवानीनामगुणाः ।

जवानी जवनी तीव्रा तुरुष्का मदकारिणी ।
जवानी जीवनी रूक्षा ग्राहिणी मादिनी गुरुः ॥ ४३ ॥

अर्थ–जवानी, जवनी, तीव्रा, तुरुष्का, मदकारिणी ये पांच नाम अजवायनके हैं । अजमान जीवन है, रूखी है, मलको बांधती है, मद करती और भारी है ॥४३॥

खसतिलनामगुणाः ।

तिलभेदाः खसतिलः शुभ्रपुष्पो लसत्फलः ।
वृष्यो बल्यः खशतिलः श्लेष्मलो वातजिद्गुरुः ।
वल्कलस्तत्फलोद्भूतो रूक्षो ग्राही विशेषतः ॥ ४४ ॥

अर्थ–तिलभेद, खसतिल, शुभ्रपुष्प, लसत्फल ये चार नाम पोस्तके हैं । पोस्त वल करता है, धातुको बढाता है, कफ करता है, वातको जीतता है और भारी है । पोस्तका छिलका रूखा है, विशेषकर मलको बांधता है ॥ ४४ ॥

अहिफेननामगुणाः ।

आफूकं तद्रसोद्भूतमहिफेनं सफेनकम् ।
आफूकं शोषणं ग्राहि श्लेष्मघ्नं वातपित्तलम् ॥ ४५ ॥

अर्थ–आफूक, तद्रसोद्भूत, अहिफेन, सफेनक ये चार नाम अफीमके हैं । अफीम शोषक है, मलको रोकता है, कफको नाशता है, वात पित्तको करता है ॥ ४५ ॥

छिलिहिण्ठनामगुणाः ।

छिलिहिण्ठो महामूलः पातालो गरुडाह्वयः ।
छिलिहिण्ठः परं वृष्यः श्लेष्मलः पवनापहः ॥ ४६ ॥

अर्थ–छिलिहिण्ठ, महामूल, पाताल, गरुडाह्वय ये चार नाम छिलिहिंठके हैं । छिलिहिण्ठ उत्तम पुष्टिकर्ता है, कफ और वातको नाशता है ॥ ४६ ॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्लस्तेन श्रीमदनृपेण निर्मितेऽत्र । ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्णो वर्गोऽयं ललितपदाङ्कितोऽभयादिः ॥ ३४७ ॥

अर्थ–राजाओंमें मुख्य प्रधान जो कटारमल्ल उस मदनराजाकरके रचे हुए इस मदनविनोद नामक ग्रथमें ललितपदोंसे अंकित हुआ अभयादि वर्ग पूर्ण हुआ ॥ ३४७ ॥

इति प्रथमो वर्गः ।

ॐ तद्रविराजितमन्यमनन्तं श्रीरुचिपरं परमक्षरमेकम् ।
श्रीमदनक्षितिनाथः सदा ते विष्णुपदं विपदं विनिहन्तु ॥ १ ॥

अर्थ–उस सूर्यकरके प्रकाशित है पद जिसका, अंतसे रहित, लक्ष्मीजीकी रुचिको उपजानेवाला, उत्तम अक्षररूप और एक ऐसा विष्णुपद हे मदनराजा ! तेरी विपद्को नष्ट करो ॥ १ ॥

शुण्ठीनामगुणाः ।

शुण्ठी विश्वौषधं विश्वं कटुभद्रं कटूत्कटम् ।
महौषधं शृङ्गवेरं नागरं विश्वभेषजम् ॥ २ ॥
शुण्ठी रुच्यामवातघ्नी पाचनी कटुका लघुः ।
स्निग्धोष्णा कटुका पाके कफवातविबन्धनुत् ॥ ३ ॥

अर्थ–शुंठी, विश्वौषध, विश्व, कटुभद्र, कटूत्कट, महौषध, शृंगवेर, नागर, विश्वभेषज ये नव नाम शुंठीके हैं । सोंठ रुचिको उपजाती है, आमवातको नाशती है, पाचन है, चर्परी है, हलकी है, चिकनी है, गर्म है, पाकमें चर्परी है । यह कफ, वात, विबन्ध इन्होंको दूर करती है ॥ २ ॥ ३ ॥

वृष्या स्वर्या वमिश्वासकासशूलहृदामयान् ।
हन्ति श्लीपदशोफार्शआनाहोदरमारुतान् ॥ ४ ॥

अर्थ–पुष्ट करती है, स्वरको बढाती है, छर्दि, श्वास, खांसी, शूल, हृद्रोग, श्लीपद, शोजा, बवासीर, अफरा, उदररोग, वातरोग इन्होंको नाशती है ॥ ४ ॥

आर्द्रकनामगुणाः ।

कटूष्णं दीपनं वृष्यं रुच्यमार्द्रकनागरम् ।
श्वासकासवमीहिक्कावातश्लेष्मविबन्धनुत् ॥ ५ ॥

अर्थ–अदरक चर्परा है, गर्म है, अग्निको जगाता है, धातुको पुष्ट करता है, रुचिको उपजाता है और श्वास, खांसी, छर्दि, हिचकी, वात, कफ, बंधको नाशता है ॥५॥

पाचनं रोचनं वृष्यं कटूष्णं वह्निदीपनम् ।
वातप्रकोपशमनं पाचनं शोथहृत्परम् ॥ ६ ॥

अर्थ–पकाया अदरक रोचन है, वीर्यको देता है, चर्परा है, गर्म है, अग्निको दीपन करता है, वातके कोपको शांत करता है, पकाता है और शोजाको हरता है ॥ ६ ॥

भोजनादौ सदा पथ्यं जिह्वाकण्ठविशोधनम् ।
अव्यक्तरसवीर्यत्वात् तत्परं तु कफापहम् ॥ ७ ॥

अर्थ-भोजनकी आदिमें सदा पथ्य है, जीभको और कंठको शोधता है, अव्यक्तरस वीर्यवाला होनेसे कफको नाशता है ॥ ७ ॥

काञ्जिकार्द्रं सलवणं दीपनं पाचनं परम् ।
वातप्रकोपशमनं हर्षणं लवणार्द्रकम् ॥ ८ ॥

अर्थ-कांजी और नमकसहित अदरक अग्निको जगाता है, पाचन है, नमकसहित अदरक वातके कोपको शांत करता है, आनंद देता है ॥ ८ ॥

अन्यदपि-आर्द्रकं शृङ्गवेरं तन्महौषधमुदाहृतम् ।
आर्द्रकं नागरगुणं भेदनं दीपनं गुरु ॥ ९ ॥

अर्थ-आर्द्रक, शृंगवेर, महौषध ये तीन नाम अदरकके हैं। अदरकमें सोंठके सब गुण हैं। भेदन है, दीपन है और भारी है ॥ ९ ॥

मरीचनामगुणाः ।

मरीचं वल्लिजं तीक्ष्णं मलिनं श्यामभूषणम् ।
मरीचं कटुकं तीक्ष्णं दीपनं कफवातनुत् ।
उष्णं पित्तकरं रूक्षं श्वासशूलकृमीञ्जयेत् ॥ १० ॥

अर्थ-मरीच, वल्लिज, तीक्ष्ण, मलिन, श्यामभूषण ये पांच नाम मिरचके हैं। मिरच चर्परी है, तेज है, दीपन है, कफ-वातको दूर करती है, गर्म है, पित्तको करती है, रूखी है और श्वास, शूल, कृमि इन्होंको जीतती है ॥ १० ॥

तदार्द्रं मधुरं पाके नात्युष्णं कटुकं गुरु ।
किञ्चित्तीक्ष्णगुणं श्लेष्मप्रसेकी स्यादपित्तलम् ॥ ११ ॥

अर्थ-गीली मिरच पाकमें मीठी है, अत्यंत गर्म नहीं है, चर्परी है, भारी है, कछुक तेज गुणावली है, कफको निकासती है, पित्तको नहीं करती है ॥ ११ ॥

पिप्पलीनामगुणाः ।

पिप्पली चपला कृष्णा मागधी मगधा कणा ।
विश्वोपकुल्या वैदेही शौण्डी स्यात्तीक्ष्णतण्डुला ॥ १२ ॥

अर्थ-पिप्पली, चपला, कृष्णा, मागधी, मगधा, कणा, विश्वा, उपकुल्या, वैदेही शौंडी, तीक्ष्णतंडुला ये ग्यारह नाम पीपलके हैं ॥ १२ ॥

पिप्पली दीपनी वृष्या स्वादुः पाके रसायनी ।
अत्युष्णा कटुका स्निग्धा कफवातहरा लघुः ॥ १३ ॥

अर्थ–पीपल अग्निको जगाती है, वीर्यको बढाती है, पाकमें स्वादु है, बुढापेको दूर करती है, अत्यन्त गर्म है, चर्परी है, चिकनी है, कफ-वातको हरती है और हलकी है ॥ १३ ॥

पित्तला रेचनी हन्ति श्वासकासोदरज्वरान् ।
कुष्ठप्रमेहगुल्मार्शःप्लीहशूलाममारुतान् ।
आर्द्रा कफप्रदा स्निग्धा शीतला मधुरा गुरुः ॥ १४ ॥

अर्थ–यह पित्तको उपजाती है, दस्त लगाती है, श्वास, खांसी, उदररोग, ज्वर, कुष्ठ, प्रमेह, गुल्म, बवासीर, तिल्लीरोग, शूल, आमवात इन्होंको दूर करती है । गीली पीपल कफको देती है, चिकनी है, मीठी है, भारी है ॥ १४ ॥

त्र्यूषणचतुरूषणनामगुणाः ।

विश्वोपकुल्यामरिचैः त्र्यूषणं कटुकं कटु ।
व्योषं कटुत्रयं तत् स्यात् सग्रन्थि चतुरूषणम् ॥ १५ ॥

अर्थ–सोंठ, पीपल, मिरच इन्होंको त्र्यूषण, कटुक, कटु, व्योष, कटुत्रय ये पांच नाम त्र्यूषणके और पीपलामूल मिलानेसे चतुरूषण होता है ॥ १५ ॥

त्र्यूषणं दीपनं हन्ति श्वासकासत्वगामयान् ।
गुल्ममेहकफस्थौल्यमेदःश्लीपदपीनसान् ॥ १६ ॥

अर्थ–त्र्यूषण अग्निको जगाता है, खांसी, श्वास, त्वचारोग, गुल्म, प्रमेह, कफ, बुढापा, श्लीपद, पीनस इन्होंको दूर करता है ॥ १६ ॥

पिप्पलीमूलनामगुणाः ।

कणामूलं कटु ग्रन्थिः पिप्पलीमूलमूषणम् ।
षड्ग्रन्थो ग्रन्थिकं मूलं मागधं चटिकाशिरः ॥ १७॥

अर्थ–कणामूल, कटु, ग्रन्थि, पिप्पलीमूल, ऊषण, षड्ग्रंथ, ग्रन्थिक, मूल, मागध, चटिकाशिर ये दश नाम पीपलामूलके हैं ॥ १७ ॥

दीपनं पिप्पलीमूलं कटूष्णं पाचनं लघु ।
रूक्षं पित्तकरं भेदि कफवातोदरापहम् ॥ १८ ॥

अर्थ–पीपलामूल अग्निको जगाता है, चर्परा है, गर्म है, पाचक है, हलका है, रूखा है, पित्तको करता है, भेदी है, कफ, वात, उदररोग इन्होंको नाशता है॥१८॥

चव्यनामगुणाः ।

चव्यं चवणमुच्छिष्टं चविका कोलवल्लिका ।

पिप्पलीमूलवत्तस्या विशेषाद् गुदजापहम् ।
चव्यपुष्पं गरश्वासकासक्षयविनाशनम् ॥ १९ ॥

अर्थ–चव्य, चवण, उच्छिष्ट, चविका, कोलवल्लिका ये पांच नाम चव्यके हैं। इसमें पीपलामूलके समान गुण हैं । विशेषकरके गुदाके रोगको नाशता है। चव्यके फूल कृत्रिम विष, श्वास, खांसी, क्षय इन्होंको नाशता है ॥ १९ ॥

गजपिप्पलीनामगुणाः ।

तत्फलं श्रेयसी हस्तिमागधा गजपिप्पली ।
गजकृष्णा कटुर्वातश्लेष्मनुद्वह्निवर्द्धिनी ।
उष्णा निहन्त्यतीसारं श्वासकण्ठामयकृमीन् ॥ २० ॥

अर्थ–तत्फल, श्रेयसी, हस्तिमागधा, गजपिप्पली, गजकृष्णा ये पांच नाम गजपीपलके हैं । गजपीपल चर्परी है, वातकफको नाशती है, अग्निको जगाती है, गर्म है और अतिसार, श्वास, कंठरोग, कृमि इन्होंको नाशती है ॥ २० ॥

चित्रकनामगुणाः ।

चित्रको हुतभुग् व्यालो दारुणो दहनोऽरुणः ।
अग्निमाली हविःपाची वह्निनामा विशेषतः ॥ २१ ॥

अर्थ–चित्रक, हुतभुक्, व्याल, दारुण, दहन, अरुण, अग्निमाली, हविःपाची, विशेषसे वह्निनामा ॥ २१ ॥

चित्रकः कटुकः पाके वह्निकृत्पाचनो लघुः ।
रूक्षोष्णो ग्रहणीकुष्ठशोफार्शःकृमिकासजित् ।
श्लेष्मानिलहरो ग्राही तच्छाकं श्लेष्मवातनुत् ॥ २२ ॥

अर्थ–चीता पाकमें चर्परा है, अग्निको करता है, पाचन है, हलका है, रूखा है, गर्म है और ग्रहणी, कुष्ठ, शोजा, बवासीर, कृमि, खांसी इन्होंको नाशता है, कफ-वातको हरता है और मलको बांधता है । चीतेका शाक कफ-वातको दूर करता है ॥ २२ ॥

पञ्चकोलषडूषणनामगुणाः ।

पिप्पली मगधामूलचव्यनागरचित्रकैः ।
पञ्चकोलं कफानाहगुल्मशूलारुचीर्जयेत् ।
मरिचेभयुतं तत्तू षडूषणमुदाहृतम् ॥ २३ ॥

अर्थ–पीपल, पीपलामूल, चव्य, सोंठ, चीता यह पंचकोल कफ, अफरा, गुल्म, शूल, अरुचि इन्होंको जीतता है । मिरच, सोंठ, चव्य, चीता, पीपलामूल, पीपल यह षडूषण कहाता है ॥ २३ ॥

शतपुष्पानामगुणाः ।

शतपुष्पा शतव्योषा शताह्वा कारवी मिशिः ।
अवाक्पुष्पी त्वचिच्छत्रा शेतिका मागधी परा ॥ २४ ॥

अर्थ–शतपुष्पा, शतव्योषा, शताह्वा, कारवी, मिशि, अवाक्पुष्पी, त्वचिच्छत्रा ये सात नाम एक प्रकारकी सौंफके हैं । दूसरीके शेतिका, मागधी ये दो नाम हैं ॥ २४ ॥

शतपुष्पा लघुस्तीक्ष्णा पित्तकृद्दीपनी कटुः ।
उष्णा ज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगजित् ।
शेतिका तद्गुणा प्रोक्ता विशेषाद् योनिशूलहृत् ॥ २५ ॥

अर्थ–सौंफ हलकी है, तेज है, पित्तको करती है, अग्निको जगाती है, चर्परी है, गर्म है तथा ज्वर, वात, कफ, घाव, शूल, नेत्ररोग इन्होंको जीतती है । शेतिकामेंभी येही गुण हैं । विशेषकर योनिशूलको हरती है ॥ २५ ॥

मिश्रेयानामगुणाः ।

मिश्रेया मिशिशालीनौ शाली शीतशिवा मता ।
मिश्रेया दीपनी हृद्या बद्धविट्कृमिशुक्रनुत् ।
रूक्षोष्णा तत्फलं कासवमिश्लेष्मानिलान् जयेत् ॥ २६ ॥

अर्थ–मिश्रेया, मिशि, शालीन, शाली, शीतशिवा ये पांच नाम सोयाके हैं । सोया अग्निको जगाता है, सुन्दर है, बंधा, कृमि, वीर्यरोग इन्होंको दूर करता है । यह रूखा और गर्म है । सोयाका फल खांसी, छर्दि, कफ, वात इन्होंको जीतता है ॥ २६ ॥

वनमेथीनामगुणाः ।

मेथिका वस्तिका शेलुरोहित्यौ वनमेथिका ।
अहित्योऽल्पगुणस्तस्माद्राजिनां स तु पूजितः ॥ २७ ॥

अर्थ–मेथिका, वस्तिका, शेलु, रोहिती, वनमेथिका ये पांच नाम मेथी और रानीमेथीके हैं । मेथी अग्निको जगाती है, दिलको ताकत देती है, विष्ठाके कृमिको दूर करती है । यह शूल, वीर्यरोग, गोला, वायुशूल इन्होंको नाशती है और

कफको दूर करती है । रानीमेथीमें इससे कम गुण हैं, परंतु घोडोंको गुण देती है ॥ २७ ॥

अजमोदानामगुणाः ।

अजमोदाऽत्युग्रगन्धा मोदा हस्तिमयूरकः ।
खराह्वा कारवी वल्ली वस्तमोदा च मर्कटः ॥ २८ ॥

अर्थ–अजमोदा, अत्युग्रगंधा, मोदा, हस्तिमयूरक, खराह्वा, कारवी, वल्ली, वस्तमोदा, मर्कट ये नव नाम अजमोदके हैं ॥ २८ ॥

अजमोदा कटुस्तीक्ष्णा दीपनी कफवातनुत् ।
उष्णा विदाहिनी हृद्या वृष्या बद्धमला लघुः ।
नेत्रामयकृमिच्छर्दिसिध्मबस्तिरुजो जयेत् ॥ २९ ॥

अर्थ–अजमोद चर्परा है, तीक्ष्ण है, अग्निको जगाता है, कफवातको दूर करता है, गर्म है, दाह करता है, सुन्दर है, पुष्टि करता है, मलको बांधता है, हलका है और नेत्ररोग, कृमि, छर्दि, सींप, बस्तिरोग इनको जीतता है ॥ २९ ॥

श्वेतजीरकालजीरकुञ्चिनामगुणाः ।

जीरकं दीर्घकं शुक्लमजाजी कणजीरकम् ।
जीरकं जरणं कृष्णं वर्षाकालसुगन्धिकम् ॥ ३० ॥

अर्थ–जीरक, दीर्घक, शुक्ल, अजाजी, कणजीरक ये पांच नाम सुपेद जीरेके हैं । जीरक, जरण, कृष्ण, वर्षाकालसुगंधिक ये चार नाम काले जीरेके हैं ॥ ३० ॥

कालिका बाष्पिका कुञ्चिः कारवी चोपकुञ्चिका ।
पृथ्वीका सुषवी पृथ्वी स्थूलजाज्युपकालिका ॥ ३१ ॥

अर्थ–कालिका, बाष्पिका, कुंचि, कारवी, उपकुंचिका, पृथ्वीका, सुषवी, पृथ्वी, स्थूलजाती, उपकालिका ये दश नाम कलौंजीके हैं ॥ ३१ ॥

जीरकत्रितयं रूक्षं कटूष्णं दीपनं लघु ।
संग्राहि पित्तलं मेध्यं गर्भाशयविशुद्धिकृत् ।
चक्षुष्यं पवनाध्मानगुल्मच्छर्दिबलासजित् ॥ ३२ ॥

अर्थ–तीनों जीरे रूखे हैं, चर्परे हैं, गर्म हैं, अग्निको जगाते हैं, मलको बांधते हैं, पित्तको करते हैं, बुद्धिको बढाते हैं, गर्भाशयको शोधते हैं, नेत्रोंमें सुख देते हैं और वात, आध्मान, गुल्म, छर्दि, कफ इन्होंको जीतते हैं ॥ ३२ ॥

जवानीनामगुणाः ।

जवानी दीप्यको दीप्यो दीपनीया जवानिका ।
जवसाहोग्रगन्धा स्याज्जवाह्वा भूकदम्बकः ॥ ३३ ॥

अर्थ–जवानी, दीप्यक, दीप्य, दीपनीया, जवानिका, जवसाहा, उग्रगंधा, जवाह्वा भूकदंबक ये नव नाम अजवायनके हैं ॥ ३३ ॥

जवानी पाचनी रुच्या तीक्ष्णोष्णा कटुका लघुः ।
वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मशूलकृमीन् जयेत् ॥ ३४ ॥

अर्थ–अजवायन पाचन है, रुचिको उपजाती है, तेज है, गर्म है, चर्परी है, हलकी है और वात, कफ, उदररोग, अफरा, गुल्म, शूल, कृमि इन्होंको नाशती है ॥ ३४ ॥

चौहारनामगुणाः ।

जवानीया जवानी स्याच्चौहारो जन्तुनाशनः ।
चौहारस्तद्गुणः प्रोक्तो विशेषात् कृमिनाशनः ॥ ३५ ॥

अर्थ–जवानीया, जवानी, चौहार, जन्तुनाशन ये चार नाम चौहारके हैं । चौहार अजवायनमें अजवायनके गुण हैं । विशेषकरके कृमियोंको नाशती है ॥ ३५ ॥

अजगन्धानामगुणाः ।

अजगन्धा पूतिकीटा वर्वरी पूतिवर्वरः ।
कारवी खरपुष्पा च तुङ्गी पूतिमयूरकः ॥ ३६ ॥

अर्थ–अजगंधा, पूतिकीटा, वर्वरी, पूतिवर्वर, कारवी, खरपुष्पा, तुंगी, पूतिमयूरक ये आठ नाम रानीतुलसीके हैं ॥ ३६ ॥

अजगन्धा कटुस्तीक्ष्णा रूक्षा हृद्याऽग्निवर्द्धिनी ।
दृष्टिमान्द्यप्रदा लघ्वी शुक्रवातकफापहा ॥ ३७ ॥

अर्थ–वनतुलसी चर्परी है, तेज है, रूखी है, सुन्दर है, अग्निको बढाती है, दृष्टिको मंद करती है हलकी है, और वीर्य, वात, कफ इन्होंको नाशती है ॥ ३७ ॥

वचानामगुणाः ।

वचोग्रगन्धा गोलोमी षड्ग्रन्था जटिला मता ।
जटिला शतपर्वान्या लोमशा हेमवत्यपि ॥ ३८ ॥

अर्थ–वचा, उग्रगंधा, गोलोमी, षड्ग्रन्था, जटिला ये पांच नाम वचके हैं । जटिला, शतपर्वा, लोमशा, हेमवती ये चार नाम दूसरी वचके हैं ॥ ३८ ॥

वचोष्णा कटुका तिक्ता वामनी स्वरवह्निकृत् ।
अपस्मारकफोन्मादभूतशूलानिलान् जयेत् ॥ ३९ ॥

अर्थ–वच गर्म है, चर्परी है, कडुवी है, छर्दि लाती है, स्वर और अग्निको करती है । यह मृगीरोग, कफ, उन्माद, भूतदोष, शूल, वात इन्होंको जीतती है ॥ ३९ ॥

हपुषानामगुणाः ।

हपुषा वपुषा विश्वा विगन्धा विश्वगन्धिका ।
हपुषा दीपनी तिक्ता कटूष्णा तुवरा गुरुः ॥ ४० ॥

अर्थ–हपुषा, वपुषा, विश्वा, विगंधा, विश्वगंधिका ये पांच नाम हाऊबेरके हैं । हाऊबेर अग्निको जगाता है, कडुवा है, चर्परा है, गर्म है, कषैला और भारी है ॥४०॥

पित्तोदरसमीराशौंग्रहणीशोफगुल्मजित् ॥ ४१ ॥

अर्थ–पित्त, उदररोग, वात, बवासीर, ग्रहणी, शोजा, गुल्म इन्होंको नाशता है ॥ ४१ ॥

विडङ्गनामगुणाः ।

विडङ्गं जन्तुहननं कृमिघ्नं क्षुद्रतण्डुला ।
भूतघ्नी तण्डुला घोषा कराला मृगगामिनी ॥ ४२ ॥

अर्थ–विडंग, जंतुहनन, कृमिघ्न, क्षुद्रतंडुला, भूतघ्नी, तंडुला घोषा, कराला, मृगगामिनी ये नव नाम वायविडंगके हैं ॥ ४२ ॥

विडङ्गं कटु तिक्तोष्णं रूक्षं वह्निकरं लघु ।
गुल्माध्मानोदरश्लेष्मकृमिवातविबन्धनुत् ॥ ४३ ॥

अर्थ–वायविडंग चर्परी है, कडुवी है, गर्म है, रूखी है, अग्निको करती है, हलकी है, गुल्म, आध्मान, उदररोग, कफ, कृमि, वात, बंधा इन्होंको हरती है ॥४३॥

धान्याकनामगुणाः ।

धान्याकं धान्यकं धान्यं धानेयं च वितुन्नकम् ।
कुस्तुम्बुरु तदार्द्रं तु धानीधानेयकालुकाः ॥ ४४ ॥

अर्थ–धान्याक, धान्यक, धान्य, धानेय, वितुन्नक, कुस्तुंबुरु ये छः नाम धनियांके हैं । धानी, धानेय, कालुका ये तीन नाम गीले धनियाके हैं ॥ ४४ ॥

धान्यकं तुवरं स्निग्धमवृष्यं मूत्रलं लघु ।
हृद्यं रूक्षं बद्धविट्कं स्वादु पाके त्रिदोषनुत् ॥ ४५ ॥

अर्थ–धनिया कषैला है, चिकना है, वीर्यको नहीं बढाता है, मूत्रको उपजाता है, हलका है, सुंदर है, रूखा है, विष्ठाको बांधता है, पाकमें स्वादु और त्रिदोषको दूर करता है ॥ ४५ ॥

पाचनं श्वासकासास्रतृष्णामार्शःकृमीन् जयेत् ।
आर्द्रिका तद्गुणा स्वादुर्विशेषात्पित्तनाशिनी ॥ ४६ ॥

अर्थ–यह पाचन है और श्वास, खांसी, रक्त, तृषा, आम, बवासीर, कृमि इन्होंको जीतता है । गीले धनियामेंभी येही गुण हैं, परंतु विशेषकरके पित्तको नाशता है ॥ ४६ ॥

हिंगुपत्रीनामगुणाः ।

हिङ्गुपत्री पृथुस्तन्वी पृथ्वीका चारुपत्रिका ।
बाष्पिका कारवी तन्द्री बिल्विका दीर्घिका तथा ॥ ४७ ॥

अर्थ–हिंगुपत्री, पृथु, तन्वी, पृथ्वीका, चारुपत्रिका, बाष्पिका, कारवी, तन्द्री, बिल्विका, दीर्घिका ये नव नाम हिंगुपत्रीके हैं ॥ ४७ ॥

हिङ्गुपत्री परा वेणुपत्री हिङ्गुशिवाटिका ।
जन्तुका रामठी नाडी पिण्डा हिङ्गुफला मता ॥ ४८ ॥

अर्थ–हिंगुपत्री, वेणुपत्री, हिंगुशिवाटिका, जंतुका, रामठी, नाडी, पिंडा, हिंगुफला ये आठ नाम दूसरी हिंगुपत्रीके हैं ॥ ४८ ॥

हिङ्गुपत्रीद्वयं हृद्यं तीक्ष्णोष्णं पाचनं कटु ।
हृद्बस्तिरुग्विबन्धार्शःश्लेष्मगुल्मानिलापहम् ॥ ४९ ॥

अर्थ–दोनों हिंगुपत्री सुंदर हैं, तेज हैं, गर्म हैं, पाचन हैं, चर्परी हैं और हृद्रोग, बस्तिरोग, बंधा, बवासीर, कफ, गुल्म, वात इन्होंको नाशती हैं ॥ ४९ ॥

हिंगुनामगुणाः ।

हिङ्गु बाह्लीकमत्युग्रं रामठं भूतनाशनम् ।
अगूढगन्धा जरणं जन्तुघ्नं सूपभूषणम् ॥ ५० ॥

अर्थ–हिंगु, बाह्लीक, अत्युग्र, रामठ, भूतनाशन, अगूढगंधा, जरण, जंतुघ्न, सूपभूषण ये नव नाम हींगके हैं ॥ ५० ॥

हिंगूष्णं पाचनं रुच्यं तीक्ष्णोष्णं कफवातनुत् ।
शूलगुल्मोदरानाहकृमिजित्पित्तवर्द्धनम् ॥ ५१ ॥

अर्थ–हींग गर्म है, पाचन है, रुचिको उपजाती है, तेज है, कफ-वातको दूर

करती है, शूल, गुल्म, उदररोग, अफरा, कृमि इन्होंको जीतती है, पित्तको बढाती है ॥ ५१ ॥

वंशलोचननामगुणाः ।

वंशजा वैणवी क्षीरी त्वक्क्षीरी वंशरोचना ।
तुगाक्षीरी तुगा वंशी वंशक्षीरी शुभा सिता ॥ ५२ ॥

अर्थ–वंशजा, वैणवी, क्षीरी, त्वक्क्षीरी, वंशरोचना, तुगाक्षीरी, तुगा, वंशी, वंशक्षीरी, शुभा, सिता ये ग्यारह नाम वंशलोचनके हैं ॥ ५२ ॥

वंशजा बृंहणी वृष्या शीतला मधुरा जयेत् ।
तृष्णाक्षयज्वरश्वासकासपित्तास्रकामलान् ॥ ५३ ॥

अर्थ–वंशलोचन पुष्टि करता है, वीर्यको बढाता है, शीतल है, मीठा है, तृषा, क्षय, ज्वर, श्वास, खांसी, रक्तपित्त, कामला इन्होंको जीतता है ॥ ५३ ॥

सैन्धवनामगुणाः ।

सैन्धवं सिन्धुजं शुद्धं पाणिमन्थं पटूत्तमम् ।
सैन्धवं मधुरं हृद्यं दीपनं शीतलं लघु ।
चक्षुष्यं पाचनं स्निग्धं वृष्यं दोषत्रयापहम् ॥ ५४ ॥

अर्थ–सैंधव, सिंधुज, शुद्ध, पाणिमन्थ, पटूत्तम ये पांच नाम सेंधेनमकके हैं । सेंधानमक मीठा है, सुंदर है, अग्निको उपजाता है, शीतल है, हलका है, नेत्रोंमें गुण करता है, पाचन है, चिकना है, धातुको पुष्ट करता है और त्रिदोषको नाशता है ॥ ५४ ॥

सौवर्चलनामगुणाः ।

सौवर्चलं सुगन्धाख्यं रुच्यकं हृद्यगन्धकम् ।
सौवर्चलं वह्निकरं कटूष्णं विशदं लघु ।
उद्गारशुद्धिदं सूक्ष्मं विबंधानाहशूलजित् ॥ ५५ ॥

अर्थ–सौवर्चल, सुगंधाख्य, रुच्यक, हृद्यगंधक ये चार नाम काले नमकके हैं । काला नमक अग्नि करता है, चर्परा है, गर्म है, सुंदर है, हलका है, डकारोंको शुद्ध करता है, महीन है और बंधा, अफरा, शूल इन्होंको जीतता है ॥ ५५ ॥

बिडनामगुणाः ।

बिडं कृत्रिमकं पाक्यं धूर्तं द्राविडमासुरम् ।
बिडं लघूष्णं विष्टम्भि शूलहृद्रोरवारुचीः ।

हन्त्यानाहकफौ शूलमधोवातानुलोमनम् ॥ ५६ ॥

अर्थ–विड, कृत्रिमक, पाक्य, धूर्त, द्राविड, आसुर ये छः नाम नयारी नमकके हैं । नयारी नमक हलका है, गर्म है, विष्टंभ करता है, शूल, हृद्रोग, भारीपन, अरुचि, अफरा, कफ, शूल इन्होंको नाशता है और अधोवातको अनुलोमित करता है ॥ ५६ ॥

सामुद्रकनामगुणाः ।

सामुद्रं वारिसम्भूतमक्षीवं चासुरं तथा ।
सामुद्रं दीपनं स्वादु नात्युष्णं भेदनं कटुः ।
श्लेष्मलं वातनुत्तिक्तमरूक्षं नातिपित्तलम् ॥ ५७ ॥

अर्थ–सामुद्र, वारिसंभूत, अक्षीव, आसुर ये चार नाम सांभरनमकके हैं । सांभरनमक अग्निको जगाता है, स्वादु है, अत्यंत गर्म नहीं है, भेदन है, चर्परा है, कफको दूर करता है, वातको दूर करता है, कडुवा है, रूखा नहीं है और अत्यंत पित्तको नहीं करता है ॥ ५७ ॥

औद्भिदनामगुणाः ।

औद्भिदं भूमिजं भौमं पार्थिवं पृथिवीभवम् ।
औद्भिदं रक्तलं सूक्ष्मं लघु वातानुलोमनम् ॥ ५८ ॥

अर्थ–औद्भिद, भूमिज, भौम, पार्थिव, पृथिवीभव ये पांच नाम रेह नमकके हैं । रेह नमक रक्त उपजाता है, महीन है, हलका है, वातको अनुलोमित करता है ॥ ५८ ॥

गण्डनामगुणाः ।

गण्डाख्यं रोमलवणं रोमशाकम्भरीभवम् ।
गण्डाख्यं लघुवातघ्नमत्युष्णं भेदि मूत्रलम् ॥ ५९ ॥

अर्थ–गंडाख्य, रोमलवण, रोम, शाकंभरीभव ये चार नाम रोमक नमकके हैं । रोमक नमक हलका है, वातको नाशता है, अत्यंत गर्म है, भेदन है और मूत्रको उपजाता है ॥ ५९ ॥

क्षारनामगुणाः ।

क्षारं पांसुभवं त्वौषमौषरं पांसवं वसु ।
क्षारं गुरु कटु स्निग्धं श्लेष्मलं वातनाशनम् ॥ ६० ॥

अर्थ–क्षार, पांसुभव, औषर, पांसव, वसु ये छः नाम खारी नमकके हैं । खारी नमक भारी है, चर्परा है, चिकना है, कफको करता है और वातको नाशता है ॥ ६० ॥

काचलवणनामगुणाः ।

काचं त्रिकूटं पाक्याह्वं लवणं काचसम्भवम् ।
काचं दीपनमत्युष्णं रक्तपित्तविवर्द्धनम् ॥ ६१ ॥

अर्थ–काच, त्रिकूट, पाक्याह्व लवण, काचसंभव ये पांच नाम काच नमकके हैं। काच नमक अग्निको जगाता है, अत्यंत गर्म है और रक्तपित्तको बढाता है ॥६१॥

यवक्षारनामगुणाः ।

यवक्षारः सूकपाक्यो यवसूको यवाग्रजः ।
स्वर्जिका स्वर्जिकापाक्यः सुखपाक्यः सुवर्चिका ॥ ६२ ॥

अर्थ–यवक्षार, सूकपाक्य, यवसूक, यवाग्रज ये चार नाम जवाखारके हैं। स्वर्जिका, स्वर्जिकापाक्य, सुखपाक्य सुवर्चिका ये चार नाम सज्जीके हैं ॥ ६२ ॥

यवक्षारोऽग्निकृद्वातश्लेष्मश्वासगलामयान् ।
आमार्शोग्रहणीगुल्मयकृत्प्लीहरुजो जयेत् ॥ ६३ ॥

अर्थ–जवाखार अग्निको करता है, वात, कफ, श्वास, गलरोग, बवासीर, ग्रहणी, गुल्म, यकृत्, तिल्लीरोग इन्होंको जीतता है ॥ ६३ ॥

स्वर्जिकाऽन्यगुणा तस्माद्विशेषाद्गुल्मशूलनुत् ॥ ६४ ॥

अर्थ–साजीमें यवाखारसे अल्प गुण हैं। विशेषकर गुल्म और शूलको दूर करती है ॥ ६४ ॥

टङ्कणनामगुणाः ।

टङ्कणो मालतीजातो द्रावी लोहविशुद्धिदः ।
टङ्कणोऽग्निकरो रूक्षः कफघ्नो वातपित्तजित् ॥ ६५ ॥

अर्थ–टंकण, मालतीजात, द्रावी, लोहविशुद्धिद ये चार नाम सुहागेके हैं। सुहागा अग्निको करता है, रूखा है, कफको नाशता है और वातपित्तको जीतता है ॥ ६५ ॥

सुधाक्षारनामगुणाः ।

सुधाह्वयं सुधा सौधभूषणं कटुशर्करा ।
सुधाक्षारोऽग्निसङ्काशः पाकी क्लेदी विदारणः ॥ ६६ ॥

अर्थ–सुधाह्वय, सुधा, सौधभूषण, कटुशर्करा ये चार नाम थोहरखारके हैं। थोहरका खार अग्निके समान है, पकाता है, क्लेदी है और फाडनेवाला है ॥ ६६ ॥

सर्वक्षारनामगुणाः ।

पलाशतिलनालश्ववंष्ट्रकाकदलीभवाः ।
अपामार्गार्कसेहुण्डमोक्षकादिसमुद्भवाः ॥ ६७ ॥

अर्थ–टेसू, तिलनाल, गोखरू, केला, ऊंगा, आक, थोहरविशेष, मोषा, आदिसे उपजे ॥ ६७ ॥

क्षारा वह्निसमाः सर्वे पाचना भेदिदारुणाः ।
लघवः क्लेदिनस्तीक्ष्णाः शुक्रला दृष्टिनाशनाः ॥ ६८ ॥

अर्थ–खार अग्निके समान हैं, पाचन हैं, भेदन हैं, फाडनेवाले हैं, हलके हैं, क्लेद, करते हैं, तेज हैं, वीर्य देते हैं, दृष्टिको नाशते हैं ॥ ६८ ॥

रक्तपित्तकरा घ्नन्ति विबन्धानाहपीनसान् ।
यकृत्प्लीहबलासामगुल्माशोंग्रहणीकृमीन् ॥ ६९ ॥

अर्थ–रक्तपित्तको करते हैं, बंधा, अफरा, पीनस, यकृत्, तिल्लीरोग, कफ, आम, गुल्म, बवासीर, संग्रहणी, कृमि इन्होंको नाशते हैं ॥ ६९ ॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण
निर्मितेऽत्र । ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्णः शुण्ठ्या-
दिः खलु भिषजो हिताय वर्गः ॥ ७० ॥

अर्थ–राजाओंमें अत्यंत प्रधान जो कटारमल्ल हुआ उसी मदनराजाकरके रचे हुए अमरविनोद नामक इस ग्रंथमें वैद्यके हितके अर्थ शुंठ्यादि वर्ग पूर्ण हुआ ॥ ७० ॥

इति द्वितीयवर्गः ।

आरोप्य पाणौ नवबल्लवीभिर्बालं विनोदात्परिचुम्बितास्यम् ।
ओष्ठं पिबन्तं प्रतिबद्धदन्तमाश्चर्ययुक्तं हरिमाश्रयामि ॥ १ ॥

अर्थ–हाथपर आरोपित कर नवीन गोपिकाओंकरके आनंदसे चुंबित है मुख जिसका और ओष्ठको पीता हुआ प्रतिबद्ध हुए दंतोंवाला आश्चर्यसे युत ऐसे बाल-रूप हरिको मैं आश्रित होता हूं ॥ १ ॥

कर्पूरनामगुणाः ।

कर्पूरः स्फटिकश्चन्द्रः सिताभ्रो हिमवालुकः ।
हिमोपलः शीतरजो भूतिकस्तु हिमाह्वयः ।
हिमाभ्रो घनसारश्च चन्द्राह्वश्चापि गीयते ॥ २ ॥

अर्थ–कर्पूर, स्फाटिक, चन्द्र, सिताभ्र, हिमवालुक, हिमोपल, शीतरज, भूतिक, हिमाह्वय, हिमाभ्र, घनसार, चन्द्राह्व ये बारह नाम कपूरके हैं ॥ २ ॥

कर्पूरः शीतलो वृष्यश्चक्षुष्यो लेखनो लघुः ।
कफदाहास्यवैरस्यमेदःशोथविषापहः ॥ ३ ॥

अर्थ–कपूर शीतल है, धातुको पुष्ट करता है, नेत्रोंमें हित करता है, लेखन है, हलका है और कफ, दाह, मुखका विरसपना, मेदोरोग, शोजा, विष इन्होंको दूर करता है ॥ ३ ॥

कस्तूरिकाद्वयनामगुणाः ।

कस्तूरिका मृगमदो वेदमुख्या मृगाण्डजः ।
मृगनाभिरथान्या स्याल्लताकस्तूरिका मता ॥ ४ ॥

अर्थ–कस्तूरिका, मृगमद, वेदमुख्या, मृगांडज, मृगनाभि ये पांच नाम कस्तूरीके हैं । दूसरी लताकस्तूरी मानी है ॥ ४ ॥

कस्तूरी शुक्रला गुर्वी कटुका कफशीतजित् ।
उष्णा हन्ति विषच्छर्दिशोफदौर्गन्ध्यमारुतान् ॥ ५ ॥

अर्थ–कस्तूरी वीर्यको देती है, भारी है, चर्परी है, कफ और शीतको जीतती है, गर्म है, विष, छर्दि, शोजा, दुर्गंध, वातरोग इन्होंको नाशती है ॥ ५ ॥

लताकस्तूरिका तद्वन्नेत्र्या शीता लघुस्तथा ॥ ६ ॥

अर्थ–लताकस्तूरीमेंभी येही गुण हैं, परंतु नेत्रोंमें हित करती है, शीतल है और हलकी है ॥ ६ ॥

मार्जारीनामगुणाः ।

मार्जारी पूतिका पूतिकचा स्याद्गन्धचेलिका ।
मार्जारी वान्तिमाधत्ते चक्षुष्या कफवातजित् ॥ ७ ॥

अर्थ–मार्जारी, पूतिका, पूतिकचा, गंधचेलिका ये चार नाम मार्जारी कस्तूरीके हैं । मार्जारीकस्तूरी छर्दिको उपजाती है, नेत्रोंमें हित है और कफवातको जीतती है ॥७॥

चन्दननामगुणाः ।

चन्दनं तिलपर्णं स्यान्महार्हं श्वेतचन्दनम् ।
भद्रश्रयं मलयजं गोशीर्षं गन्धसारकम् ॥ ८॥

अर्थ–चंदन, तिलपर्ण, महार्ह, श्वेतचन्दन, भद्रश्री, मलयज, गोशीर्ष, गंधसारक ये आठ नाम चंदनके हैं ॥ ८ ॥

चन्दनं शीतलं रूक्षं तिक्तमाह्लादनं लघु ।
हृद्यं वर्ण्यं विषश्लेष्मतृष्णापित्तास्रदाहजित् ॥ ९ ॥

अर्थ–चंदन शीतल है, रूखा है, कडुवा है, आनंद करता है, हलका है, हृदयमें गुण करता है, वर्णको निखारता है और विष, कफ, तृषा, पित्तरक्त, दाह इन्होंको जीतता है ॥ ९ ॥

रक्तचन्दननामगुणाः ।

रक्तचन्दनमुद्दिष्टं लोहितं क्षुद्रचन्दनम् ।
ताम्रसारं रक्तसारं ज्योतिःसोमं च रञ्जनम् ॥ १० ॥

अर्थ–रक्तचंदन, उद्दिष्ट, लोहित, क्षुद्रचंदन, ताम्रसार, रक्तसार, ज्योतिःसोम, रंजन ये आठ नाम लालचंदनके हैं ॥ १० ॥

रक्तं शीतं गुरु स्वादु छर्दितृष्णास्रपित्तनुत् ।
तिक्तं नेत्रहितं वृष्यं ज्वरघ्नं च विषापहम् ॥ ११ ॥

अर्थ–लालचंदन शीतल है, भारी है, स्वादु है और छर्दि, तृषा रक्तपित्त इन्हों-को दूर करता है । यह कडुवा है, नेत्रोंमें हित करता है, धातुको पुष्ट करता है, ज्वरको नाशता है और विषको दूर करता है ॥ ११ ॥

कृष्णचन्दननामगुणाः ।

कालीयकं पीतसारं पीतं नारायणप्रियम् ।
कालीयकं रक्तगुणं विशेषात् पवनापहम् ॥ १२ ॥

अर्थ–कालीयक, पीतसार, पीत, नारायणप्रिय ये चार नाम मलयागिरीचंदनके हैं। मलयागिर चंदनमें लाल चंदनके सब गुण हैं, विशेषकर वातको नाशता है ॥ १२ ॥

कृष्णागुरुनामगुणाः ।

कृष्णागुरु स्यादगुरु राजार्हं विश्वरूपकम् ।
जोङ्गकं शीतमलिनं कृमिजघ्नमनक्तकम् ।
कृष्णागुरूष्णं कर्णाक्षिरोगनुत्पित्तलं लघु ॥ १३ ॥

अर्थ–कृष्णागुरु, अगुरु, राजार्ह, विश्वरूपक, जोङ्गक, शीतमलिन, कृमिजघ्न, अनक्तक ये आठ नाम कृष्ण अगरके हैं । कृष्णागुरु गर्म है, कानरोग, नेत्ररोग इन्होंको दूर करता है, पित्तको उपजाता है और हलका है ॥ १३ ॥

कुंकुमनामगुणाः ।

कुङ्कुमं चारु बाह्लीकं वर्ण्यमग्निशिखं वरम् ।

काश्मीरं पीतमभ्राह्वं सङ्कोचं पिशुनांशुकम् ॥ १४ ॥

अर्थ–कुंकुम, चारु, बाह्लीक, वर्ण्य, अग्निशिख, वर, काश्मीर, पीत, अभ्राह्व, संकोच, पिशुन, अंशुक ये बारह नाम केसरके हैं ॥ १४ ॥

कुङ्कुमं कटुकं सिध्मशिरोरुग्व्रणजन्तुजित् ।
उष्णं हास्यकरं बल्यं व्यङ्गदोषत्रयापहम् ॥ १५ ॥

अर्थ–केसर चर्परी है, यह सींप, शिरका शूल, घाव, कृमि इन्होंको जीतती है, गर्म है, हांसीको करती है, बलको उपजाती है, व्यंग और त्रिदोषको नाशती है ॥ १५ ॥

सिल्हकनामगुणाः ।

सिल्हकः कपिजो धूम्रस्तुरुष्कः पिण्डितः कपिः ।
सिल्हकः कुष्ठकण्डूघ्नः स्निग्धोष्णः शुक्रकान्तिकृत् ॥ १६ ॥

अर्थ–सिल्हक, कपिज, धूम्र, तुरुष्क, पिण्डित, कपि ये छः नाम लोबानके हैं । सिल्हक अर्थात् शिलारस लोबान कुष्ठ और दादको नाशता है, चिकना है, गर्म है, वीर्य और कांतिको करता है ॥ १६ ॥

एलवालुकनामगुणाः ।

एलवालुकमेल्वालु वालुकं हरिवालुकम् ।
एल्वालु शीतलं हन्ति कण्डूकुष्ठकफकृमीन् ।
तृट्छर्दिकफपित्तास्रहृन्मूत्रगदजिल्लघु ॥ १७ ॥

अर्थ–एलवालुक, एल्वालु, वालुक, हरिवालुक ये चार नाम एलवालुके हैं । एलवालु शीतल है, खाज, कुष्ठ, कफ, कृमि इन्होंको नाशता है, तृषा, छर्दि, कफ, पित्तरक्त, मूत्ररोग इन्होंको जीतता है और हलका है ॥ १७ ॥

जातीफलनामगुणाः ।

जातीफलं जातिसूतं शलूकं मालतीसुतम् ।
जातीफलं लघु स्वर्यं हृद्यं दीपनपाचनम् ॥ १८ ॥

अर्थ–जातीफल, जातिसूत, शलूक, मालतीसुत ये चार नाम जायफलके हैं । जायफल हलका है, स्वरमें हित है, सुंदर है, अग्निको जगाता है और पाचन है ॥१८॥

उष्णं कफानिलच्छर्दिकृमिपीनसकासजित् ॥ १९ ॥

अर्थ–यह गर्म है, कफ, वात, छर्दि कृमि, पीनस, खांसी इन्होंको जीतता है॥१९॥

जातीपत्रीनामगुणाः ।

जातीपत्री जातिपर्णा मालतीपत्रिका तथा ।
जातीपत्री लघूष्णा स्यात्कफकृमिविषापहा ॥ २० ॥

अर्थ–जातीपत्री, जातिपर्णा, मालतीपत्रिका ये तीन नाम जावित्रीके हैं । जावित्री हलकी और गर्म है । यह कफ, कृमि, विष इन्होंको नाशती है ॥ २० ॥

लवङ्गनामगुणाः ।

लवङ्गं शिखरं दिव्यं लवं चन्दनपुष्पकम् ।
श्रीपुष्पं देवकुसुमं भृङ्गारं वारिसम्भवम् ॥ २१ ॥

अर्थ–लवंग, शिखर, दिव्य, लव, चंदनपुष्पक, श्रीपुष्प, देवकुसुम, भृंगार, वारिसंभव ये नव नाम लौंगके हैं ॥ २१ ॥

लवङ्गं लघु चक्षुष्यं हृद्यं दीपनपाचनम् ।
शूलानाहकफश्वासकासच्छर्दिक्षयापहम् ॥ २२ ॥

अर्थ–लौंग हलका है, नेत्रोंमें हित है, सुंदर है, अग्निको जगाता है, पाचन है । यह शूल, अफरा, कफ, श्वास, खांसी, छर्दि, क्षय इन्होंको नाशता है ॥ २२ ॥

कङ्कोलनामगुणाः ।

कङ्कोलं कटुकं कोलं मारीचं माधवोषितम् ।
कङ्कोलमुष्णं हृद्रोगकफवाताग्निमान्द्यजित् ॥ २३ ॥

अर्थ–कंकोल, कटुक, कोल, मारीच, माधवोषित ये पांच नाम कंकोलके हैं । कंकोल गर्म है और हृद्रोग, कफ, वात, मंदाग्नि इन्होंको जीतती है ॥ २३ ॥

एलानामगुणाः ।

एला त्रुटिश्चन्द्रबाला बहुला निष्कुटिस्त्विषा ।
कपोतवर्णा सूक्ष्मैला कुनटी द्राविडी मता ।
एला सूक्ष्मा कफश्वासकासार्शोमूत्रकृच्छ्रनुत् ॥ २४ ॥

अर्थ–एला, त्रुटि, चंद्रबाला, बहुला, निष्कुटि, त्विषा, कपोतवर्णा, सूक्ष्मैला, कुनटी, द्राविडी ये दश नाम छोटी इलायचीके हैं । छोटी इलायची कफ, श्वास, खांसी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र इन्होंको दूर करती है ॥ २४ ॥

स्थूलैलानामगुणाः ।

स्थूलैला त्रिपुटा कन्या भद्रैला त्रिदिवोद्भवा ।
स्थूलैला रोचनी तीक्ष्णा लघूष्णा कफपित्तजित् ॥ २५ ॥

अर्थ–स्थूलैला, त्रिपुटा, कन्या, भद्रा, एला, त्रिदिवोद्भवा ये छः नाम बडी इलायचीके हैं । बडी इलायची रुचिको उपजाती है, तेज है, हलकी और गर्म है, कफ-पित्तको जीतती है ॥ २५ ॥

हृल्लासविषवस्त्यास्यशिरोरुग्वमिकासनुत् ॥ २६ ॥

अर्थ–और थुकथुकी, विष, बस्तिरोग, मुखरोग, शिरोरोग, छर्दि, खांसी इन्होंको जीतती है ॥ २६ ॥

त्वचनामगुणाः ।

त्वचं वराङ्गं सकलं त्वक्कोचं तनुकं वरम् ।
लाटपर्ण्यं घनं भृङ्गं गुरुत्वक् स्वर्णभूमिकम् ॥ २७ ॥

अर्थ–त्वच, वरांग, सकल, त्वक्कोच, तनुक, वर, लाटपर्ण्य, घन, भृंग, गुरुत्वक्, स्वर्णभूमिक ये ग्यारह नाम दालचीनीके हैं ॥ २७ ॥

त्वचं लघूष्णं कटुकं विषदं स्वादु पित्तलम् ।
हृद्बस्तिरोगवातार्शःपीनसकृमिशुक्रनुत् ॥ २८ ॥

अर्थ–दालचीनी हलकी है, गर्म है, चर्परी है, विषको नाशती है, स्वादु है, पित्तको उपजाती है और हृद्रोग, बस्तिरोग, वात, बवासीर, पीनस, कृमि, वीर्यरोग इन्होंको नाशती है ॥ २८ ॥

तेजपत्रनामगुणाः ।

पत्रं हलाह्वं तामूमं तमालं रोम रोमशम् ।
पत्रमुष्णं लघु श्लेष्महृल्लासार्शोऽनिलापहम् ॥ २९ ॥

अर्थ–पत्र, दलाह्व, तामूम, तमाल, रोम, रोमश ये छः नाम तेजपातके हैं । तेजपात गर्म और हलका है, कफ, थुकथुकी, बवासीर, वात इन्होंको नाशता है ॥२९॥

नागकेशरनामगुणाः ।

नागकेशरकं नागं चाम्पेयं केशरं गजम् ।
नागकेशरकं रूक्षमुष्णं लघ्वामपाचनम् ।
दौर्गन्ध्यकुष्ठवीसर्पकफपित्तविषापहम् ॥ ३० ॥

अर्थ–नागकेशरक, नाग, चांपेय, केशर, गज ये पांच नाम नागकेसरके हैं । नागकेशर रूखी और गर्म है, हलकी है, आमको पकाती है और दुर्गंध, कुष्ठ, विसर्प, कफ, पित्त, विष इन्होंको नाशती है ॥ ३० ॥

त्रिजातचतुर्जातनामगुणाः ।

एला द्वित्रिभिरुद्दिष्टं त्रिजातं त्रिसुगन्धकम् ।
चतुर्जातं सनागं तद्वयं वातकफापहम् ॥ ३१ ॥

अर्थ–दालचीनी, इलायची, तेजपात इन्होंकरके त्रिजात होता है । इसीका नाम त्रिसुगंध है । दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेसर इन्होंका नाम चतुर्जात है । त्रिजात और चतुर्जात वातकफको नाशते हैं ॥ ३१ ॥

तालीसपत्रनामगुणाः ।

तालीसपत्रं तालीसं धात्रीपत्रं सकोदनम् ।
अपरं ग्रन्थिकापत्रं पत्राढ्यं तुलसीच्छदम् ॥ ३२ ॥

अर्थ–तालीसपत्र, तालीस, धात्रीपत्र, सकोदन, अपर, ग्रंथिकापत्र, पत्राढ्य, तुलसीच्छद ये आठ नाम तालीसपत्रके हैं ॥ ३२ ॥

तालीसं लघु तीक्ष्णोष्णं श्वासकासकफानिलान् ।
निहन्ति रुच्यं गुल्मामवह्निमान्द्यक्षयामयान् ॥ ३३ ॥

अर्थ–तालीसपत्र हलका है, तेज और गर्म है, श्वास, खांसी, कफ, वात, गुल्म, आम, मंदाग्नि, क्षय इनको नाशता है और रुचिको उपजाता है ॥ ३३ ॥

सरलनामगुणाः ।

सरलो मदनश्चण्डो नमेरुः पीतवृक्षकः ।
सरलः कण्ठकर्णाक्षिगदघ्नोष्णो लघुः कटुः ॥ ३४ ॥

अर्थ–सरल, मदन, चंड, नमेरु, पीतवृक्षक ये पांच नाम सरलके हैं । सरल कंठरोग, कानरोग, नेत्ररोग इन्होंको नाशता है, यह हलका और चर्परा है ॥ ३४ ॥

श्रीवासनामगुणाः ।

श्रीवासो वेष्टको दासी श्रीनिवासः कलिद्रुमः ।
श्रीवासः कफमूर्द्धाक्षिरोगवातहरः सरः ॥ ३५ ॥

अर्थ–श्रीवास, वेष्टक, दासी, श्रीनिवास, कलिद्रुम ये पांच नाम श्रीवासके हैं । श्रीवास कफ, शिरोरोग, नेत्ररोग, वात इन्होंको हरता है और सर है ॥ ३५ ॥

वालकनामगुणाः ।

वालकं वारि ह्रीबेरं पिङ्गमाचमनं कचम् ।
उदीच्यं वज्रमन्थाह्वं वरिष्ठं गन्धमूलकम् ॥ ३६ ॥

अर्थ–वालक, वारि, ह्रीबेर, पिंग, आचमन, कच, उदीच्य, वज्र, मंथाह्व, वरिष्ठ, गंधमूलक ये ग्यारह नाम नेत्रवालाके हैं ॥ ३६ ॥

वालकं शीतलं रूक्षं लघु दीपनपाचनम् ।
रक्तपित्तज्वरश्लेष्मदाहतृष्णाव्रणापहम् ॥ ३७ ॥

अर्थ–नेत्रवाला शीतल है, रूखा है, हलका है, अग्निको जगाता है, पाचन है, रक्तपित्त, ज्वर, कफ, दाह, तृषा, घाव इन्होंको नाशता है ॥ ३७ ॥

मांसीनामगुणाः ।

मांसी जटा भूतकेशी क्रव्यादानलदं शिखा ।
कृष्णान्या पूतनाकेशी गन्धमांसी पिशाचिका ।
मांसी हिमा त्रिदोषास्रदाहवीसर्पकुष्ठजित् ॥ ३८ ॥

अर्थ–मांसी, जटा, भूतकेशी, क्रव्याद, अनलद, शिखा ये छः नाम और दूसरी कृष्णा, पूतनाकेशी, गंधमांसी, पिशाचिका ये चार नाम बालछडके हैं । बालछड शीतल है, त्रिदोष, रक्त, दाह, विसर्प, कुष्ठ इन्होंको जीतती है ॥ ३८ ॥

उशीरनामगुणाः ।

उशीरमभयं सेव्यं वारं वीरणी मूलिका ।
उशीरं पाचनं शीतं स्तंभनं कफपित्तजित् ।
तृष्णास्रविषवीसर्पदाहकृच्छ्रव्रणापहम् ॥ ३९ ॥

अर्थ–उशीर, अभय, सेव्य, वार, वीरणी, मूलिका ये छः नाम खसके हैं । खस पाचन है, शीतल है, स्तंभन है, कफपित्तको जीतता है । यह तृषा, रक्त, विष, विसर्प, दाह, मूत्रकृच्छ्र, घाव इन्होंको नाशता है ॥ ३९ ॥

रेणुकानामगुणाः ।

रेणुका कपिला कौन्ती पाण्डुपत्री हरेणुका ।
रेणुका पित्तला मेध्या वह्निकृद्गर्भपातिनी ॥ ४० ॥

अर्थ–रेणुका, कपिला, कौंती, पांडुपत्री, हरेणुका ये पांच नाम रेणुकाके हैं । रेणुका पित्तको करती है, बुद्धिको बढाती है, अग्निको करती और गर्भको गिराती है ॥ ४० ॥

प्रियंगुनामगुणाः ।

प्रियङ्गुः फलिनी श्यामा कान्ताह्वा नन्दनी लता ।
प्रियङ्गुः शीतलो वान्तिदाहपित्तज्वरास्रजित् ।

सुखकान्तिप्रजननो गात्रदौर्गन्ध्यनाशनः ॥ ४१ ॥

अर्थ–प्रियंगु, फलिनी, श्यामा, कांताह्वा, नन्दनी, लता ये छः नाम मँहदीके हैं । मँहदी शीतल है, छर्दि, दाह, पित्तज्वर, रक्त इन्होंको जीतती है, सुख और कांतिको उपजाती है और शरीरकी दुर्गंधिको नाशती है ॥ ४१ ॥

पारिपेलनामगुणाः ।

पारिपेलं ध्रुवं वन्यं शुकाह्वं परिपेलकम् ।
पारिपेलं हिमं कण्डूकुष्ठास्रकफपित्तजित् ॥ ४२ ॥

अर्थ–पारिपेल, ध्रुव, वन्य, शुकाह्व, परिपेलक ये पांच नाम पारिपेलके हैं । पारिपेल शीतल है, खाज, कुष्ठ, रक्त, कफ, पित्त इन्होंको जीतती है ॥ ४२ ॥

शैलेयनामगुणाः ।

शैलेयं स्थविरं वृद्धं शिलापुष्पं शिलोद्भवम् ।
शैलेयं शीतलं हृद्यं कफपित्तहरं लघु ॥ ४३ ॥

अर्थ–शैलेय, स्थविर, वृद्ध, शिलापुष्प, शिलोद्भव ये पांच नाम छलिराके हैं । छलिरा शीतल है, सुंदर है, कफपित्तको हरता है और हलका है ॥ ४३ ॥

लामज्जकनामगुणाः ।

लामज्जकं जलाधारं दीर्घमूलं जलाशयम् ।
इष्टकापथकं शीघ्रममृणालं सुनालकम् ।
लामज्जकं हिमं कृच्छ्रदाहदोषत्रयास्रजित् ॥ ४४ ॥

अर्थ–लामज्जक, जलाधार, दीर्घमूल, जलाशय, इष्टकापथक, शीघ्र, अमृणाल, सुनालक ये आठ नाम खसभेदके हैं । खसभेद शीतल है, मूत्रकृच्छ्र, दाह, त्रिदोष, रक्त इन्होंको जीतता है ॥ ४४ ॥

कुन्दुरुनामगुणाः ।

कुन्दुरुर्मेचकः कुन्दः खपुरो भीषणो बली ।
कुन्दुरुः स्वेदपवनश्लेष्मब्रध्नज्वरापहः ॥ ४५ ॥

अर्थ–कुंदुरु, मेचक, कुंद, खपुर, भीषण, बली ये छः नाम कुंदुरु गूंदके हैं । कुंदुरु पसीना, वात, कफ, ब्रध्नरोग, ज्वर, इन्होंको नाशता है ॥ ४५ ॥

गुग्गुलुनामगुणाः ।

गुग्गुलुः कालनिर्यासो महिषाक्षः पलङ्कषः ।
जटायुः कौशिको धूर्तो देवधूपः शिवः पुरः ॥ ४६ ॥

अर्थ–गुग्गुलु, कालनिर्यास, महिषाक्ष, पलंकष, जटायु, कौशिक, धूर्त, देवधूप, शिव, पुर ये दश नाम गूगुलके हैं ॥ ४६ ॥

गुग्गुलुर्विशदस्तिक्तो वीर्योष्णो मधुरः सरः ।
भग्नसन्धानकृद् वृष्यः सूक्ष्मः स्वर्यो रसायनः ॥ ४७ ॥

अर्थ–गुग्गुल सुंदर है, तेज है, वीर्यमें गर्म है, मीठा है, सर है, टूटेको जोडनेवाला है, धातुको पुष्ट करता है, महीन है, स्वरमें हित है और बुढापेको नहीं आने देता है ॥ ४७ ॥

दीपनः पिच्छलो बल्यः कफवातव्रणापचीः ।
मेदोमेहास्रवातास्रक्लेदकुष्ठाममारुतान् ॥ ४८ ॥

अर्थ–यह अग्निको जगाता है, पिच्छल है, बलको करता है और कफ, वात, घाव, अपची, मेदरोग, प्रमेह, रक्तवात, रक्तस्वेद, कुष्ठ, आमवात ॥ ४८ ॥

पिटिकाग्रन्थिशोफार्शोग्रन्थिगण्डकृमीन् जयेत् ।
स नवो बृंहणो वृष्यः पुराणस्त्वतिलेखनः ॥ ४९ ॥

अर्थ–पिटिका, ग्रंथि, शोजा, बवासीर, गलगंड, कृमि इन्होंको जीतता है । नया गूगुल वीर्यको बढाता है, धातुको पुष्ट करता है, पुराना गूगुल अत्यंत लेखन है ॥४९॥

रालानामगुणाः ।

राला सर्जरसो यक्षधूपः सर्जोऽग्निवल्लभः ।
क्षणकः सालनिर्यासो लाक्षा स्याल्ललनो वरः ॥ ५० ॥

अर्थ–राल, सर्जरस, यक्षधूप, सर्ज, अग्निवल्लभ, क्षणक, सालनिर्यास, लाक्षा, ललन, वर ये दश नाम रालके हैं ॥ ५० ॥

राला हिमा गुरुस्तिक्ता कषाया ग्राहिणी जयेत् ।
ग्रहास्रस्वेदवीसर्पविषव्रणविपादिकाः ॥ ५१ ॥

अर्थ–राल शीतल है, भारी है, कडुवी है, कषैली है, मलको बांधती है और ग्रहदोष, रक्त, पसीना, विसर्प, विष, घाव, विपादिका इन्होंको जीतती है ॥ ५१ ॥

स्थौणेयकनामगुणाः ।

स्थौणेयकं बहिश्चूडं शुक्लवर्णं शुकच्छदम् ।
स्थौणेयं शीतलं वृष्यं मेध्यं दोषत्रयास्रजित् ॥ ५२ ॥

अर्थ–स्थौणेयक, बहिश्चूड, शुक्लवर्ण, शुकच्छद ये चार नाम थुनेराके हैं । थुनेरा

शीतल है, धातुको पुष्ट करता है, बुद्धिको बढाता है, त्रिदोषको और रक्तको जीतता है ॥ ५२ ॥

चौरकनामगुणाः ।

चौरकः कितवश्चन्द्रो दुष्पुत्रः शङ्कितो रिपुः ।
चौरः स्वादुर्लघुः शीतः कुष्ठवातकफास्रजित् ॥ ५३ ॥

अर्थ–चौरक, कितव, चंद्र, दुष्पुत्र, शंकित, रिपु ये छः नाम चौरकके हैं । चौरक स्वादु है, हलका है, शीतल है और कुष्ठ, वात, कफ, रक्त इन्होंको जीतता है ॥५३॥

मुरानामगुणाः ।

मुरा गन्धवती दैत्या गन्धाढ्या सुरभिः कुटिः ।
मुरा शीता लघुः कुष्ठग्रहपित्तानिलास्रजित् ॥ ५४ ॥

अर्थ–मुरा, गंधवती, दैत्या, गंधाढ्या, सुरभि, कुटि ये छः नाम मुराके हैं । मुरा शीतल है, हलकी है और कुष्ठ, ग्रहदोष, पित्त, वातरक्त इन्होंको जीतती है ॥ ५४ ॥

कचूरनामगुणाः ।

कचूरो द्राविडो गन्धमूलको दुर्लभः शटी ।
कचूरो दीपनो रुच्यः कुष्ठार्शोव्रणकासजित् ।
उष्णो लघुर्जयेच्छ्वासगुल्मवातकफकृमीन् ॥ ५५ ॥

अर्थ–कचूर, द्राविड, गंधमूलक, दुर्लभ, शटी ये पांच नाम कचूरके हैं । कचूर अग्निको जगाता है, रुचिको उपजाता है और कुष्ठ, बवासीर, घाव, खांसी इन्होंको जीतता है । यह गर्म है, हलका है और श्वास, गुल्म, वात, कफ, कृमि इन्होंको जीतता है ॥ ५५ ॥

शटीनामगुणाः ।

शटी पलाशी षड्ग्रन्था सुव्रता गन्धमूलिनी ।
शटी सीता ज्वरामास्रकासजिद् ग्राहिणी लघुः ॥ ५६ ॥

अर्थ–शटी, पलाशी, षड्ग्रंथा सुव्रता, गंधमूलिनी ये पांच नाम कचूरभेदके हैं। कचूरभेद शीतल है और ज्वर, आम, रक्त, खांसी इन्होंको जीतता है । यह मलको बांधता है और हलका है ॥ ५६ ॥

स्पृक्कानामगुणाः ।

स्पृक्का स्पृक् ब्राह्मणी देवी निर्माल्या कुटिका वधूः ।
स्पृक्का स्वादुर्हिमा वृष्या कुष्ठालक्ष्मीत्रिदोषनुत् ॥ ५७ ॥

अर्थ–स्पृक्का, स्पृक्, ब्राह्मणी, देवी, निर्माल्या, कुटिका, वधू ये सात नाम स्पृक्काके हैं । स्पृक्का स्वादु है, शीतल है, वीर्यको बढाती है और कुष्ठ, फीकापन, त्रिदोष इन्होंको जीतती है ॥ ५७ ॥

ग्रन्थिपर्णनामगुणाः ।

ग्रन्थिपर्णो नीलपुष्पः शुकपुष्पं शुकच्छदम् ।
ग्रन्थिपर्णो लघुस्तिक्तो रुच्योष्णः कफवातजित् ॥ ५८ ॥

अर्थ–ग्रंथिपर्ण, नीलपुष्प, शुकपुष्प, शुकच्छद ये चार नाम ठिवनाके हैं । ठिवना हलका है, कडुवा है, रुचिको उपजाता है, गर्म है और कफ-वातको जीतता है ॥ ५८ ॥

नलिकानामगुणाः ।

नलिका नर्त्तकी शून्या निर्मला धमनी नटी ।
नली पित्तास्रजिच्छीता चक्षुष्या कुष्ठकृच्छ्रजित् ॥ ५९ ॥

अर्थ–नलिका, नर्तकी, शून्या, निर्मला, धमनी, नटी ये छः नाम नलिकाके हैं । नलिका पित्तरक्तको जीतती है, शीतल है, नेत्रोंमें हित है, कुष्ठ और मूत्रकृच्छ्रको जीतती है ॥ ५९ ॥

पद्मकनामगुणाः ।

पद्मकं मलयश्चारुः पीतरक्तश्च सुप्रभः ।
पद्मकं दाहविस्फोटकुष्ठश्लेष्मास्रपित्तहृत् ।
गर्भसंस्थापनं शीतं तृष्णावीसर्पदाहजित् ॥ ६० ॥

अर्थ–पद्मक, मलय, चारु, पीतरक्त, सुप्रभ ये पांच नाम पद्मकके हैं । पद्मक, दाह, विस्फोट, कुष्ठ, कफ, रक्तपित्त इन्होंको हरता है, गर्भको स्थित करता है, शीतल है, तृषा, विसर्प, दाह, इन्होंको जीतता है ॥ ६० ॥

प्रपुण्डरीकनामगुणाः ।

प्रपुण्डरीकः पौण्ड्राह्वः शतपुष्पं सुपुष्पकम् ।
पुण्ड्राह्वं शुक्रलं शीतं चक्षुष्यं श्लेष्मपित्तजित् ॥ ६१ ॥

अर्थ–प्रपुंडरीक, पौंड्राह्व, शतपुष्प, सुपुष्पक ये चार नाम प्रपुंडरीकके हैं। पुंडरीक वीर्यको उपजाता है, शीतल है, नेत्रोंमें हित करता है और कफपित्तको जीतता है ॥ ६१ ॥

तगरनामगुणाः ।

तगरं बर्हिणं जिह्वं वक्राह्वं नहुषं मतम् ।

अपरं पिण्डतगरं चीनं कटु महोरगम् ॥ ६२ ॥

अर्थ–तगर, बर्हिण, जिह्व, वक्राह्व, नहुष, मत ये छः नाम तगरके हैं। पिंड-तगर, चीन, कटु, महोरग ये दूसरे चार नाम तगरके हैं ॥ ६२ ॥

तगरं मधुरं स्निग्धं तिक्तोष्णं लघु भूतजित् ।
विषापस्मारमूर्द्धाक्षिरोगदोषत्रयापहम् ॥ ६३ ॥

अर्थ–तगर मीठा है, चिकना है, कडुवा है, गर्म है, हलका है, भूतको जीतता है और विष, मृगीरोग, शिरोरोग, नेत्ररोग, त्रिदोष इन्होंको नाशता है ॥ ६३ ॥

गोरोचनानामगुणाः ।

गोरोचना रुचिर्गौरी रोचना पिङ्गला मता ।
मङ्गल्या गोतमी मेध्या वन्ध्या गोपित्तसम्भवा ॥ ६४ ॥

अर्थ–गोरोचना, रुचि, गौरी, रोचना, पिंगला, मता, मंगल्या, गोतमी, मेध्या, वंध्या, गोपित्तसंभवा ये ग्यारह नाम गोरोचनाके हैं ॥ ६४ ॥

रोचना शीतला वश्या गर्भस्रावग्रहास्रजित् ॥ ६५ ॥

अर्थ–गोरोचन शीतल है, वश करता है, गर्भस्राव, ग्रहदोष, रक्त इन्होंको जीतता है ॥ ६५ ॥

नखद्वयनामगुणाः ।

नखाह्वो नखरः शुक्तिहनुर्नागहनुः खरः ।
शुक्तिशङ्खो व्याघ्रनखमन्यद्व्याघ्रतलं पदम् ॥ ६६ ॥

अर्थ–नखाह्व, नखर, शुक्तिहनु, नागहनु, खर, शुक्तिशंख, व्याघ्रनख ये सात नाम नखके हैं। व्याघ्रतल, पद ये दो नाम दूसरे नखके हैं ॥ ६६ ॥

नखद्वयं ग्रहश्लेष्मवातास्रज्वरकुष्ठजित् ।
लघूष्णं शुक्रलं बल्यं हृद्यं स्वादु विषापहम् ॥ ६७ ॥

अर्थ–दोनों नख ग्रहदोष, कफ, वातरक्त, ज्वर, कुष्ठ इन्होंको जीतते हैं, हलके हैं, गर्म हैं, वीर्यको उपजाते हैं, बलको करते हैं, दिलको ताकत देते हैं, स्वादु हैं और विषको नाशते हैं ॥ ६७ ॥

पतङ्गनामगुणाः ।

पतङ्गं पटरागं स्याद्रक्तकाष्ठं कुचन्दनम् ।
सुरङ्गकं जगत्याह्वं पत्तूरं पटरञ्जकम् ।
पतङ्गं मधुरं शीतं पित्तश्लेष्मव्रणास्रजित् ॥ ६८ ॥

अर्थ–पतंग पटराग, रक्तकाष्ठ, कुचंदन, सुरंगक, जगत्याह्व, पत्तूर, पटरंजक ये आठ नाम पतंगके हैं । पतंग मीठा है, शीतल है और पित्त, कफ, घाव, रक्त इन्होंको जीतता है ॥ ६८ ॥

लाक्षानामगुणाः ।

लाक्षा निर्भत्सरो रक्ता द्रुमव्याधिः पलङ्कषा ।
कृमिजा जतु दीप्ताह्वा जावको लवको मतः ॥ ६९ ॥

अर्थ–लाक्षा, निर्भत्सर, रक्ता, द्रुमव्याधि, पलंकषा, कृमिजा, जतु, दीप्ताह्वा, जावक और लवक ये दस नाम लाखके हैं ॥ ६९ ॥

लाक्षा वर्ण्या हिमा बल्या स्निग्धा श्लेष्मास्रपित्तजित् ।
व्रणोरःक्षतवीसर्पकृमिकुष्ठग्रहापहा ।
अलक्तको गुणैस्तद्वद्विशेषाद्व्यङ्गनाशनः ॥ ७० ॥

अर्थ–लाख वर्णको निखारती है, शीतल है, बलको करती हैं, चिकनी है तथा कफ, रक्तपित्त इन्होंको जीतती है । यह घाव, छातीका फूटना, विसर्प, कृमि, कुष्ठ, ग्रहदोष इन्होंको नाशती है, अलक्तकमेंभी येही गुण हैं, विशेषकरके व्यंगको नाशती है ॥ ७० ॥

पर्पटीनामगुणाः ।

पर्पटी रजनी कृष्णा जातका जननी जनी ।
पर्पटी वर्णदा शीता कफपित्तास्रकुष्ठजित् ॥ ७१ ॥

अर्थ–पर्पटी, रजनी, कृष्णा, जातका, जननी, जनी ये छः नाम पापडीके हैं । पापडी वर्णको देती है, शीतल है और कफ,पित्त,रक्त,कुष्ठ इन्होंको जीतती है,॥७१॥

पद्मिनीकैरविणीनामगुणाः ।

पद्मिनी बिसिनी ज्ञेया नलिनी सूर्यवल्लभा ।
कुमुद्वती कैरविणी कुमुदिन्युडुपप्रिया ॥ ७२ ॥

अर्थ–पद्मिनी, बिसिनी, नलिनी, सूर्यवल्लभा ये चार नाम पद्मिनीके हैं । कुमुद्वती, कैरविणी, कुमुदिनी, उडुपप्रिया ये चार नाम कुमोदिनीके हैं ॥ ७२ ॥

पद्मिनी शीतला गुर्वी पित्तश्लेष्मविषास्रजित् ।
रूक्षा विष्टम्भिनी स्वादुस्तद्वत् कुमुदिनी मता ॥ ७३ ॥

अर्थ–पद्मिनी शीतल है, भारी है और पित्त, कफ, विष, रक्त इन्होंको जीतती है, रूखी है, विष्टंभको करती है और स्वादु है । येही गुण कुमोदिनीमें हैं ॥ ७३ ॥

पद्माचारिणीनामगुणाः ।

पद्मचारिण्यतिचरा पद्माह्वा चारटी मता ।
पद्मा हिमा लघुः श्लेष्मकृच्छ्रजित् स्तनदाहकृत् ॥ ७४ ॥

अर्थ–पद्मचारिणी, अतिचरा, पद्माह्वा, चारटी ये चार नाम पद्मचारिणीके हैं । पद्मचारिणी शीतल है, हलकी है, कफ और मूत्रकृच्छ्रको जीतती है, चूंचियोंमें दाह करती है ॥ ७४ ॥

श्वेतकमलनामानि ।

कमलं श्वेतमम्भोजं सारसं सरसीरुहम् ।
सहस्रपत्रं श्रीगेहं शतपत्रं कुशेशयम् ।
पङ्केरुहं तामरसं राजीवं पुष्कराह्वयम् ॥ ७५ ॥

अर्थ–कमल, श्वेत, अंभोज, सारस, सरसीरुह, सहस्रपत्र, श्रीगेह, शतपत्र, कुशेशय, पंकेरुह, तामरस, राजीव, पुष्कराह्वय ॥ ७५ ॥

अब्जमम्भोरुहं पद्मं पुण्डरीकं च पङ्कजम् ।
नलं सरोजं नलिनमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ७६ ॥

अर्थ–अब्ज, अंभोरुह, पद्म, पुंडरीक, पंकज, नल, सरोज, नालिन, अरविंद, महोत्पल ये तेईस नाम सुफेद कमलके हैं ॥ ७६ ॥

रक्तोत्पलनामानि ।

रक्तोत्पलं कोकनदं हल्लकं रक्तसन्ध्यकम् ॥ ७७ ॥

अर्थ–रक्तोत्पल, कोकनद, हल्लक, रक्तसंध्यक ये चार नाम लाल कमलके हैं ॥ ७७ ॥

नीलोत्पलनामानि ।

नीलोत्पलं कुवलयं भद्रमिन्दीवरं मतम् ।
एतदेव सितं किञ्चित् कुमुदं वैवरं कुमुत् ॥ ७८ ॥

अर्थ–नीलोत्पल, कुवलय, भद्र, इंदीवर ये चार नाम नीलकमलके हैं । यही कछुक सुपेद हो तो कुमुद, वैरव, कुमुत् इन तीन नामोंवाला कहाता है ॥ ७८ ॥

कमलादिगुणाः ।

कमलं शीतलं वर्ण्यं मधुरं कफपित्तजित् ।
तृष्णादाहास्रविस्फोटविषवीसर्पनाशनम् ।
तस्मादल्पगुणं किञ्चिदन्यद्रक्तोत्पलादिकम् ॥ ७९ ॥

अर्थ–कमल शीतल है, वर्णको निखारता है, मीठा है, कफपित्तको जीतता है और तृषा, दाह, रक्त, विस्फोट, विष, विसर्प इन्होंको नाशता है, लाल कमल आदिमें इससे कम गुण हैं ॥ ७९ ॥

कल्हारनामगुणाः ।

कल्हारं ह्रस्वपाथोजं सौम्यं सौगन्धिकं महत् ।
कल्हारं ग्राहि विष्टम्भि रुजं गुरु सुशीतलम् ॥ ८० ॥

अर्थ–कल्हार, ह्रस्वपाथोज, सौम्य, सौगंधिक, महत् ये पांच नाम कल्हारके हैं। कल्हार मलको बांधता है, विष्टंभको करता है, कोमल है, भारी है, सुंदर और शीतल है ॥ ८० ॥

किञ्जल्कनामगुणाः ।

किञ्जल्कः केशरं गौरमापीतं काञ्चनाह्वयम् ।
किञ्जल्कः शीतलो ग्राही रक्तार्शःकफपित्तजित् ॥ ८१ ॥

अर्थ–किंजल्क, केशर, गौर, आपीत, कांचनाह्वय ये पांच नाम कमलकेशरके है । कमलकेशर शीतल है, मलको बांधती है और रक्त, बवासीर, कफ, पित्त इन्हों-को जीतती है ॥ ८१ ॥

पद्मबीजनामगुणाः ।

पद्मबीजं तु कालेयं पद्माक्षं पद्मकर्कटी ।
पद्मबीजं हिमं स्वादु गर्भसंस्थापनं गुरु ।
कफवातहरं बल्यं ग्राहि पित्तास्रदाहजित् ॥ ८२ ॥

अर्थ–पद्मबीज, कालेय, पद्माक्ष, पद्मकर्कटी ये चार नाम कमलबीजके हैं । कम-लबीज शीतल है, स्वादु है, गर्भको स्थिर करता है, भारी है, कफ वातको हरता है, बलमें हित है, मलको बांधता है और पित्त,रक्त,दाह इन्होंको जीतता है ॥८२॥

मृणालकनामगुणाः ।

मृणालं बिसमम्भोजं नालं च नालिनीरुहम् ।
पद्मादिमूलं शालूकं शालीनं करहाटकम् ॥ ८३ ॥

अर्थ–मृणाल, बिस, अंभोज, नल, नालिनीरुह, पद्मादिमूल, शालूक, शालीन, करहाटक ये नव नाम कमलकी डंडीके हैं ॥ ८३ ॥

मृणालं शीतलं वृष्यं पित्तदाहास्रजित् गुरु ।
संग्राहि मधुरं रूक्षं शालूकमपि तद्गुणम् ॥ ८४ ॥

अर्थ–कमलकी डंडी शीतल है, वीर्यको बढाती है और पित्त, दाह, रक्त इन्होंको जीतती है, भारी है, मलको बांधती है और रूखी है, शालूकमेंभी येही गुण हैं ॥ ८४ ॥

जातीनामगुणाः ।

जाती प्रियंवदा राज्ञी मालनी सुमना मता ।
पीता सत्यपरा पीतपुष्पा काञ्चनपुष्पिका ।
जाती लघूष्णा मूर्द्धाक्षिदन्तार्तिव्रणरक्तजित् ॥ ८५ ॥

अर्थ–जाती, प्रियंवदा, राज्ञी, मालती, सुमना, पीता, सत्यपरा, पीतपुष्पा, कांचनपुष्पिका ये नव नाम चमेलीके हैं । चमेली हलकी है, गर्म है और मस्तक-रोग, नेत्ररोग, दंतरोग, घाव, रक्त इन्होंको जीतती है ॥ ८५ ॥

मल्लिकानामगुणाः ।

मल्लिका मोदिनी मुक्तबन्धना मदयन्तिका ।
मल्लिकोष्णा लघुर्वृष्या वातपित्तास्रनाशजित् ॥ ८६ ॥

अर्थ–मल्लिका, मोदिनी, मुक्तबंधना, मदयंतिका ये चार नाम मालतीके हैं । मालती गर्म है, वीर्यमें हित है और वात, पित्त, रक्त इन्होंको जीतती है ॥ ८६ ॥

यूथिकानामगुणाः ।

यूथिका हारिणी बाला पुष्पगन्धा शिखण्डिनी ।
स्वर्णयूथापरा पीता गणिका स्वर्णपुष्पिका ।
यूथी हिमास्रमूर्द्धाक्षिरोगजित् कफवातकृत् ॥ ८७ ॥

अर्थ–यूथिका, हारिणी, बाला, पुष्पगंधा, शिखंडिनी, स्वर्णयूथा ये छः नाम जूहीके हैं । पीता, गणिका, स्वर्णपुष्पिका ये तीन नाम दूसरीके हैं । जूई शीतल है, रक्त, शिरोरोग इन्होंको जीतती है और कफवातको करती है ॥ ८७ ॥

कुब्जकानामगुणाः ।

कुब्जका भद्रतरुणी बृहत्पुष्पा महासहा ।
शतपत्री तरुण्युक्ता कर्णिका चारुकेशरा ।
रक्तापरा रक्तपुष्पा लाक्षापुष्पाऽतिमंजुला ॥ ८८ ॥

अर्थ–कुब्जका, भद्रतरुणी, बृहत्पुष्पा, महासहा, शतपत्री, तरुणी, कर्णिका, चारुकेशरा ये आठ नाम गुलाब सेवंतीके हैं । रक्ता, रक्तपुष्पा, लाक्षापुष्पा, अति-मंजुला ये चार नाम दूसरीके हैं ॥ ८८ ॥

शतपत्री हिमा हृद्या ग्राहिणी शुक्रला लघुः ।
दोषत्रयास्रजिद्वर्ण्या कुब्जकोऽपि च तद्गुणः ॥ ८९ ॥

अर्थ–गुलाब और सेवती शीतल है, दिलको ताकत देती है, मलको बांधती है, वीर्यको देती है, हलकी है, त्रिदोष, रक्त इन्होंको जीतती है तथा वर्णको निखारती है । कुब्जामेंभी येही गुण हैं ॥ ८९ ॥

केतकीसुवर्णकेतकीनामगुणाः ।

केतकी सूचिकापुष्पो जम्बूकः ककचच्छदः ।
सुवर्णकेतकी चान्या लघुपुष्पा सुगन्धिनी ।
केतकी कटुका स्वादुर्लघुस्तिक्ता कफापहा ॥ ९० ॥

अर्थ–केतकी, सूचिकापुष्प, जंबूक, ककचच्छद ये चार नाम केतकीके हैं और सुवर्णकेतकी, लघुपुष्पा, सुगंधिनी ये तीन नाम सुवर्णकेतकीके हैं। केतकी चर्परी है, स्वादु है, हलकी है, कडुवी है, कफको नाशती है ॥ ९० ॥

वासन्तीनामगुणाः ।

वासन्ती सारणी कुन्दा प्रहसन्ती वसन्तजा ।
वासन्ती शीतला लघ्वी तिक्ता दोषात्रयास्रनुत् ॥ ९१ ॥

अर्थ–वासंती, सारणी, कुन्दा, प्रहसंती, वसंतजा ये पांच नाम वासंतीके हैं । वासंती शीतल है, कडुवी है, हलकी है और त्रिदोषको दूर करती है ॥ ९१ ॥

नैपालीनामगुणाः ।

नैपाली ग्रैष्मिका लूता लापिनी वनमल्लिका ।
वार्षिकी त्रिपुटा त्वन्या श्रीमती षट्पदप्रिया ॥ ९२ ॥

अर्थ–नैपाली, ग्रैष्मिका, लूता, लापिनी, वनमल्लिका ये पांच नाम नेपालीके हैं और वार्षिकी, त्रिपुटा, श्रीमती, षट्पदप्रिया ये चार नाम वार्षिकीके हैं ॥ ९२ ॥

नैपाली शीतला तिक्ता लघ्वी दोषत्रयापहा ।
कर्णाक्षिमुखरोगघ्नी तद्गुणा वार्षिकी मता ॥ ९३ ॥

अर्थ–नैपाली शीतल है, कडुवी है, हलकी है, त्रिदोषको हरती है और कानरोग, नेत्ररोग, मुखरोग इन्होंको नाशती है । वार्षिकीमेंभी येही गुण हैं ॥ ९३ ॥

माधवीनामगुणाः ।

माधवी मण्डपः कामी पुष्पेन्द्रोऽभीष्टगन्धकः ।
माधवी मधुरा शीता लघुर्दोषत्रयापहा ॥ ९४ ॥

अर्थ–माधवी, मंडप, कामी, पुष्पेन्द्र, अभीष्टगंधक ये पांच नाम माधवीके हैं, माधवी मीठी है, शीतल है, हलकी है और त्रिदोषको हरती है ॥ ९४ ॥

चम्पकनामगुणाः ।

चम्पकः काचरो रम्यश्चाम्पेयः सुरभिश्चलः ।
चम्पकः शीतलः कृच्छ्रकफपित्तास्रवातजित् ॥ ९५ ॥

अर्थ–चंपक, काचर, रम्य, चांपेय, सुरभि, चल ये छः नाम चंपाके हैं । चंपा शीतल है, कृच्छ्र, कफ, पित्त, रक्तवात इन्होंको जीतता है ॥ ९५ ॥

पुन्नागनामगुणाः ।

पुन्नागः पाटलीपुष्पः केशरः षट्पदालयः ।
पुन्नागो मधुरः शीतो रक्तपित्तकफापहः ॥ ९६ ॥

अर्थ–पुन्नाग, पाटलीपुष्प, केशर, षट्पदालय ये चार नाम केशरके हैं । केशर मीठी है, शीतल है, रक्तपित्त और कफको दूर करती है ॥ ९६ ॥

बकुलनामगुणाः ।

बकुलः केशरो मध्यगन्धः सिंहो विशारदः ।
बकुलः शीतलः श्लेष्मपित्तदन्तमदापहः ।
तत्फलं वातलं ग्राहि कफपित्तहरं हिमम् ॥ ९७ ॥

अर्थ–बकुल, केशर, मध्यगंध, सिंह, विशारद ये पांच नाम मौलसरीके हैं । मौलसरी शीतल है, कफ, पित्त, दंतरोग, मद इन्होंको नाशता है, मौलसरीका फल वातको करता है, मलको बांधता है, कफपित्तको हरता है और शीतल है ॥ ९७ ॥

वुषनामगुणाः ।

वुषो वुकः स्थूलपुष्पो वसुकश्शिवशोधकः ।
वुषः शीतो विषश्लेष्मपित्तकृच्छ्राश्मदाहहृत् ॥ ९८ ॥

अर्थ–वुष, वुक, स्थूलपुष्प, वसुक, शिवशोधक ये पांच नाम बगहलाके हैं । बगहला शीतल है, विष, कफ, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह इन्होंको हरताहै ॥९८ ॥

कुन्दनामगुणाः ।

कुन्दः शुक्लः सदापुष्पो भृङ्गबन्धुर्मनोरमः ।
कुन्दः शीतो लघुः श्लेष्मशिरोरुग्विषपित्तजित् ॥ ९९ ॥

अर्थ–कुंद, शुक्ल, सदापुष्प, भृंगबंधु, मनोरम ये पांच नाम कुंदके हैं । कुंद शीतल और हलका है, कफ, शिरका रोग, विष, पित्त इन्होंको जीतता है ॥ ९९॥

मुचुकुन्दनामगुणाः ।

मुचुकुन्दः क्षेत्रवृद्धौ चिबुकः प्रतिविप्लुषः ।
मुचुकुन्दः शिरःपीडापित्तास्रमुखनाशनः ॥ १०० ॥

अर्थ–मुचुकुंद, क्षेत्र, वृद्ध, चिबुक, प्रतिविप्लुष ये पांच नाम मुचुकुंदके हैं । मुचुकुंद शिरकी पीडा, रक्तपित्त, मुखरोग इन्होंको नाशता है ॥ १०० ॥

विचाच्छिन्ननामगुणाः ।

भूमण्डली विचच्छिन्नो द्विपदाष्टपदी तथा ।
शीतो लघुर्विचच्छिन्नः कफपित्तविषापहः ॥१ ॥

अर्थ–भूमंडली, विचच्छिन्न, द्विपदा, अष्टपदी ये चार वेलाके हैं । वेला शीतल और हलका है, कफ, पित्त तथा विषको हरता है ॥ १ ॥

तिलकनामगुणाः ।

तिलकः क्षुरकः श्रीमान् विचित्रो मुखमण्डनः ।
तिलकः कफनुत् कुष्ठहरोऽत्युष्णो रसायनः ॥ २ ॥

अर्थ–तिलक, क्षुरक, श्रीमान्, विचित्र, मुखमंडन ये पांच नाम तिलकके हैं । तिलक कफको दूर करता है, कुष्ठको हरता है, गर्म है और बुढापेको नहीं आने देता है ॥ २ ॥

गणेरुकनामगुणाः ।

गणेरुकः कर्णिकारः कर्णश्च गणकारिका ।
गणेरुः शोधनः शोफश्लेष्मास्रव्रणकुष्ठनुत् ॥ ३ ॥

अर्थ–गणेरुक, कर्णिकार, कर्ण, गणकारिका, ये चार नाम मतिपाडीके हैं । मतिपाडी शोधन है और शोजा, कफ, रक्त, घाव, कुष्ठ इन्होंको दूर करती है ॥ ३ ॥

बन्धुकनामगुणाः ।

बन्धुजीवः शरत्पुष्पो बन्धुर्बन्धूकरक्तकौ ।
बन्धुकः कफकृद् ग्राही वातपित्तहरो लघुः ॥ ४ ॥

अर्थ–बंधुजीव, शरत्पुष्प, बंधु, बंधूक, रक्तक ये पांच नाम दुपहरियाके हैं । दुपहरिया कफको करता है, मलको बांधता है, वात-पित्तको हरता है और हलका है ॥ ४ ॥

जपापुष्पनामगुणाः ।

जपापुष्पं जपारक्तं त्रिसन्ध्या त्वरुणासिता ।

जपा संग्राहिणी केश्या त्रिसन्ध्या कफपित्तजित् ॥ ५ ॥

अर्थ–जपापुष्प, जपारक्त, त्रिसंध्या, अरुणा, असिता ये पांच नाम जासवंदके हैं । जासवंद मलको बांधती और बालोंको बढाती है । त्रिसंध्या कफ, पित्त इन्होंको जीतती है ॥ ५ ॥

सिन्दूरीनामगुणाः ।

सिन्दूरी रक्तबीजा स्याद्रक्तपुष्पा सुकोमला ।
सिन्दूरी कफपित्तास्रतृष्णावान्तिहरा हिमा ॥ ६ ॥

अर्थ–सिंदूरी, रक्तबीजा, रक्तपुष्पा, सुकोमला ये चार नाम सिंदूरीके हैं । सिंदूरी कफ, पित्त, रक्त, तृषा, छर्दि इन्होंको हरती है और शीतल है ॥ ६ ॥

तुलसीनामगुणाः ।

तुलसी सुरसा गौरी भूतघ्नी बहुमञ्जरी ।
तुलसी कटुका तिक्ता हृद्योष्णा दाहपित्तकृत् ।
दीपनी कुष्ठकृच्छ्रास्रपार्श्वरुक्कफवातजित् ॥ ७ ॥

अर्थ–तुलसी, सुरसा, गौरी, भूतघ्नी, बहुमंजरी ये पांच नाम तुलसीके हैं । तुलसी चर्परी है, कडुवी है, दिलको ताकत देती है, गर्म है, दाह-पित्तको करती है, अग्निको जगाती है और कुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र, रक्त, पसलीशूल, कफ, वात इन्होंको जीतती है ॥ ७ ॥

मरुनामगुणाः ।

मरुर्मरुबकस्तीक्ष्णः खरपुष्पः फणिज्झकः ।
महदग्निप्रदो हृद्यस्तीक्ष्णोष्णः पित्तलो लघुः ।
वृश्चिकादिविषश्लेष्मवातकुष्ठकृमीन् जयेत् ॥ ८ ॥

अर्थ–मरु,मरुबक, तीक्ष्ण, खरपुष्प, फणिज्झक ये पांच नाम मरुवाके हैं । मरुवा बहुत अग्नि देता है, दिलको ताकत देता है, तेज है, गर्म है, पित्तको उपजाता है, हलका है और बीछू आदिका विष, कफ, वात, कुष्ठ, कृमि इन्होंको जीतता है॥८॥

मदननामगुणाः ।

मदनो मदना दान्तो दमो मुनिसुतो मुनिः ।
गन्धोत्कटो मदनको विनीता कुलपुत्रकः ।
मदनोऽक्षिप्रकुष्ठास्रमेदःकण्डूत्रिदोषजित् ॥ ९ ॥

अर्थ–मदन, मदना, दांत, दम, मुनिसुत, मुनि, गंधोत्कट, मदनक, विनीता, कुलपुत्रक ये दश नाम दौनाके हैं। दौना आंखरोग, कुष्ठ, रक्त, मेद, खाज, त्रिदोष इन्होंको जीतता है ॥ ९ ॥

वर्वरीत्रयनामगुणाः ।

वर्वरी वर्जकः कुण्ठो वैकुण्ठः स्यात् कुठेरकः ।
कपित्थार्जक इत्यन्यो वटपत्रः कटिञ्जरः ।
कृष्णार्जकः कालमासः करालः कृष्णमल्लिका ॥ ११० ॥

अर्थ–वर्वरी, वर्जक, कुंठ, वैकुंठ, कुठेरक, कपित्थार्जक, वटपत्र, कटिंजर, कृष्णार्जक, कालमास, कराल, कृष्णमल्लिका ये बारह नाम काली मल्लिकाके हैं ॥ ११० ॥

वर्वरीत्रितयं रूक्षं शीतं कटु विदाहि च ।
पित्तलं कफवातास्रदद्रुकृमिविषापहम् ॥ १११ ॥

अर्थ–तीनों प्रकारकी काली मल्लिका रूखी है, शीतल है, चर्परी है, दाहको करती है, पित्तको करती है और कफ, वात, रक्त, दाह, कृमि, विष इन्होंको नाशती है ॥ १११ ॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेऽत्र ।
ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्णः कर्पूरप्रभृतिसुगन्धिद्रव्यवर्गः ११२

अर्थ–राजाओंमें जो अत्यंत प्रधान कटारमल्ल है उसी मदनराजके रचन किये इस अमरविनोदनामक ग्रंथमें कपूर आदि सुगंधित द्रव्यवर्ग पूर्ण हुआ ॥ ११२ ॥

इति तृतीयवर्गः ।

यद्वाञ्छया विश्वकृतोऽपि देवा ब्रह्मादयो यान्ति मुहुर्भवन्ति ।
अचिन्त्यकृत्यं पुरुषं पुराणं गोपत्वमाप्तं तमुपाश्रयामि ॥ १ ॥

अर्थ–जिसकी इच्छाकरके जगत्को करनेवाले ब्रह्मा आदि देवता वारंवार होते हैं उस अचिंत्यकृत्यवाले पुरुष और पुराणरूप और गोपजातिको प्राप्त हुए परमेश्वरको आश्रित होता हूं ॥ १ ॥

सुवर्णनामगुणाः ।

सुवर्णं काञ्चनं हेम हाटकं तप्तकाञ्चनम् ।
चामीकरं शातकुम्भं तपनीयं च रुक्मकम् ॥ २ ॥

अर्थ–सुवर्ण, कांचन, हेम, हाटक, तप्तकांचन, चामीकर, शातकुंभ, तपनीय, रुक्मक ॥ २ ॥

जाम्बूनदं हिरण्यं च स्वरलं जातरूपकम् ।
सुवर्णं शीतलं वृष्यं बल्यं गुरु रसायनम् ॥ ३ ॥

अर्थ–जांबूनद, हिरण्य, स्वरल, जातरूपक ये तेरह नाम सोनेके हैं । सोना शीतल है, स्त्रीसंगमें सुख देता है, बलको करता है, भारी है, बुढापेको नहीं आने देता है ॥ ३ ॥

कान्तिकरं विषोन्मादत्रिदोषज्वरशोषजित् ।
कषायं तिक्तमधुरं सुवर्णं गुरु लेखनम् ॥ ४ ॥

अर्थ–कांतिको करता है और विष, उन्माद, त्रिदोष, ज्वर, शोष इन्होंको जीतता है, कषैला है, कडुवा है, मीठा है और अत्यंत लेखन है ॥ ४ ॥

रूप्यकनामगुणाः ।

रूप्यकं रजतं रूप्यं तारं श्वेतं वसूत्तमम् ।
रूप्यं शीतं सरं वातपित्तहारि रसायनम् ॥ ५ ॥

अर्थ–रूप्यक, रजत, रूप्य, तार, श्वेत, वसूतम ये छः नाम चांदीके हैं । चांदी शीतल है, सर है, वातपित्तको हरती है, बुढापेको नहीं आने देती है ॥ ५ ॥

लेखनं च कषायाम्लं विपाके चापरं सरम् ।
वयसः स्थापनं स्निग्धं धातूनां हितमुच्यते ॥ ६ ॥

अर्थ–लेखन है, कषैली है और पाकमें खट्टी है, दूसरी चांदी सर है, अवस्थाको ठहराती है, चिकनी है और धातुओंको हित कही गई है ॥ ६ ॥

ताम्रनामगुणाः ।

ताम्रं म्लेच्छमुखं शुल्बं नैपालं रविनामकम् ।
उदुम्बरं सूर्यप्रियं रक्तजं रक्तधातुकम् ॥ ७ ॥

अर्थ–ताम्र, म्लेच्छमुख, शुल्ब, नैपाल, रविनामक, उदुम्बर, सूर्यप्रिय, रक्तज, रक्तधातुक ये नव नाम तांबेके हैं ॥ ७ ॥

ताम्रं सरं लघु स्वादु शीतं पित्तकफापहम् ।
रोपणं पाण्डुकुष्ठार्शःश्वयथुश्वासकासजित् ॥ ८ ॥

अर्थ–तांबा सर है, हलका है, स्वादु है, शीतल है, पित्त-कफको नाशता है, घावपर अंकुर लाता है और पांडु, कुष्ठ, बवासीर, सोजा, श्वास, खांसी इन्होंको जीतता है ॥ ८ ॥

कांस्यनामगुणाः ।

कांस्यं लोहं निजं घोषं पञ्चलोहं प्रकाशकम् ।
कांस्यं गुरूष्णं चक्षुष्यं कफपित्तहरं सरम् ॥ ९ ॥

अर्थ–कांस्य, लोह, निज, घोष, पंचलोह, प्रकाशक ये छः नाम कांसीके हैं । कांसी भारी है, गर्म है, नेत्रोंमें हित करता है, कफपित्तको हरता है और सर है ॥९॥

पीतलोहनामगुणाः ।

पीतलोहं सिंहलकं कपिलं सौकुमारकम् ।
वर्त्तलोहं त्रिलोहं च राजरीतिर्महेश्वरी ।
पीतलोहं हिमं रूक्षं कटूष्णं कफपित्तनुत् ॥ १० ॥

अर्थ–पीतलोह, सिंहलक, कपिल, सौकुमारक, वर्तलोह, त्रिलोह, राजरीति, महेश्वरी ये आठ नाम पीतलके हैं । पीतल शीतल है, रूखी है, चर्परी है, गर्म है और कफ-पित्तको दूर करती है ॥ १० ॥

रङ्गनामगुणाः ।

रङ्गकं तीरकं वङ्गं त्रपु स्यात् करटी घनम् ।
रङ्गं लघु सरं रूक्षमुष्णं मेहकफकृमीन् ।
निहन्ति पाण्डुं सश्वासदृश्यमीषत् तु पित्तलम् ॥ ११ ॥

अर्थ–रंगक, तीरक, वंग, त्रपु, करटी, घन ये छः नाम रांगके हैं । रांग हलका है, सर है, रूखा है, गर्म है, प्रमेह, कफ, कृमि, पांडु, श्वास इन्होंको दूर करता है और कछुक पित्तको उपजाता है ॥ ११ ॥

जसदनामगुणाः ।

जसदं रङ्गसदृशं दितिहेतुश्च तन्मतम् ।
जसदं तुवरं तिक्तं शीतलं कफपित्तनुत् ।
चक्षुष्यं परमं मेहान् पाण्डुं श्वासं च नाशयेत् ॥ १२ ॥

अर्थ–जसद, रंगसदृश, दितिहेतु ये तीन नाम जसदके हैं । जसद कषैला है, कडुवा है, शीतल है, कफपित्तको हरता है, नेत्रोंमें हित करता है, उत्तम है और प्रमेह, पांडु, श्वास इन्होंको नाशता है ॥ १२ ॥

सीसनामगुणाः ।

सीसं धातुमलं नागमुरगं परिपिष्टकम् ।

जवनेष्टं च भुजगं विसृष्टं कृष्णकं विदुः ।
सीसं रङ्गगुणं ज्ञेयं विशेषान्मेहनाशनम् ॥ १३ ॥

अर्थ–सीस, धातुमल, नाग, उरग, पिरिपिष्टक, जवनेष्ट, भुजग, विसृष्ठ, कृष्णक ये नव नाम सीसाके हैं । सीसामें रांगके सब गुण हैं । विशेषकरके प्रमेहको नाशता है ॥ १३ ॥

लोहनामगुणाः ।

लोहं शस्त्रमयः कुष्टं व्यङ्गं पारावतं घनम् ।
कृष्णायस्तन्मलं किट्टं मण्डूरो लोहजं रजः ॥ १४ ॥

अर्थ–लोह, शस्त्र, अयः, कुष्ठ, व्यंग, पारावत, घन ये सात नाम लोहेके हैं । कृष्णायस, तन्मल, किट्ट, मंडूर, लोहज, रज ये छः नाम लोहेके मलके हैं ॥ १४ ॥

लोहं सरं गुरु स्वादु कषायं कफपित्तनुत् ।
शीतं नेत्रहितं रूक्षं बलदं वातलं समम् ॥ १५ ॥

अर्थ–लोहा सर है, भारी है, स्वादु है, कषैला है, कफपित्तको दूर करता है, शीतल है, आंखोंमें हित है, रूखा है, बलको देता है, वातको उपजाता है और उत्तम है ॥ १५ ॥

शोफकुष्ठप्रमेहार्शोगरपाण्डुकृमीन् जयेत् ।
तत्किट्टं तद्गुणं ज्ञेयं विशेषात् पाण्डुनाशनम् ॥ १६ ॥

अर्थ–यह शोजा, कुष्ठ, प्रमेह, बवासीर, कृत्रिमविष, पांडु, कृमि इन्होंको जीतता है । लोहेके मैलमेंभी लोहेके सब गुण हैं विशेषकरके पांडुरोगको नाशता है॥१६॥

पारदनामगुणाः ।

पारदश्चपलो हेमनिधिः सूतो रसोत्तमः ।
त्रिनेत्रो रोषणः स्वामी हरबीजं रसः प्रभुः ॥ १७ ॥

अर्थ–पारद, चपल, हेमनिधि, सूत, रसोत्तम, त्रिनेत्र, रोषण, स्वामी, हरबीज, रस, प्रभु ॥ १७ ॥

रसेन्द्रश्च इति ख्यातो रसलोहं महारसः ।
पारदः कृमिकुष्ठघ्नश्चक्षुष्योष्णो रसायनः ॥ १८ ॥

अर्थ–रसेंद्र, रसलोह, महारस ये चौदह नाम पारेके हैं । पारा कृमि और कुष्ठको नाशता है, आंखोंमें हित करता है, गर्म है और बुढापेको नहीं आने देता है ॥१८॥

अभ्रकनामगुणाः ।

अभ्रकं स्वच्छमाकाशं पटलं वरपीतकम् ।
अभ्रं गुरु हिमं बल्यं कुष्ठमेहत्रिदोषनुत् ॥ १९ ॥

अर्थ–अभ्रक, स्वच्छ, आकाश, पटल, वरपीतक ये पांच नाम भोडरके हैं। भोडर भारी है, शीतल है, बल करता है, कुष्ठ, प्रमेह, त्रिदोष इन्होंको दूर करता है ॥ १९ ॥

गगनं कृमिकुष्ठमेहहा विशदं शुक्रकरं च दीपनम् ।
कथितं मुनिभिश्च पूर्वजैर्बलकृत् शुक्रकरं च सेवितम् ॥ २० ॥

अर्थ–सेवित किया भोडर कृमि, कुष्ठ और प्रमेहको हरता है, उत्तम है, वीर्यको करता है, अग्निको जगाता है, बलको करता है और वीर्यको उपजाता है ऐसे पुराने मुनियोंने कहा है ॥ २० ॥

गन्धकनामगुणाः ।

गन्धः सौगन्धको लेखी गन्धाश्मा गन्धपीतकः ।
लेलीतको बलिवसा वेगन्धो गन्धको बलिः ॥ २१ ॥

अर्थ–गंध, सौगंधक, लेखी, गंधाश्मा, गंधपीतक, लेलीतक, बलिवसा, वैगंध, गंधक, बलि ये दश नाम गंधकके हैं ॥ २१ ॥

गन्धकः कटुकः पाके वीर्योष्णः पित्तलः सरः ।
हन्ति कुष्ठक्षयप्लीहकफवातरसामयान् ॥ २२ ॥

अर्थ–गन्धक पाकमें चर्परा है, वीर्यमें गर्म है, पित्तको करता है, सर है और कुष्ठ, क्षय, तिल्लीरोग, कफ, वात, पारेसे उपजे रोग इन्होंको नाशता है ॥ २२ ॥

सुवर्णमाक्षिकनामगुणाः ।

माक्षिकं धातुमाक्षीकं ताप्यं तापीजमुच्यते ।
माक्षिकं तुवरं वृष्यं स्वर्यं लघु रसायनम् ॥ २३ ॥

अर्थ–माक्षिक, धातुमाक्षीक, ताप्य, तापीज ये चार नाम सोनामाखीके हैं। सोनामाखी कषैली है, स्त्रीसंगमें हित करती है, स्वरमें हित है, हलकी है और बुढापेको दूर करती है ॥ २३ ॥

चक्षुष्यं कुष्ठशोफार्शोमेहव्रस्त्यर्तिपाण्डुताः ।
व्यवायि कटुकं हन्ति कुष्ठोदरविषक्षयान् ॥ २४ ॥

अर्थ–यह नेत्रोंमें हित करती है और कुष्ठ, शोजा, प्रमेह, बस्तिरोग, पांडु, उदररोग, विष, क्षय इन्होंको हरती है और भोगमें आनंद देती है तथा चर्परी है ॥२४॥

मनःशिलानामगुणाः ।

मनःशिला शिला गोला नैपाली कुनटी कुला ।
दिव्यौषधिर्नागमाता मनोगुप्ता मनोऽम्बिका ॥ २५ ॥

अर्थ–मनःशिला, गोला, नैपाली, कुनटी, कुला, दिव्यौषधि, नागमाता, मनोगुप्ता, मनोम्बिका ये दश नाम मनाशिलके हैं ॥ २५ ॥

मनःशिला कृच्छ्रहरा सरोष्णा लेखनी कटुः ।
तिक्ता स्निग्धा विषश्वासकासभूतकफास्रजित् ॥ २६ ॥

अर्थ–मनःशिल कछदादको हरती है, फैलनेवाली है, लेखनी है, चर्परी है, कडुवी है, चिकनी है और विष, श्वास, खांसी, भूतदोष, कफ, रक्त इन्होंको जीतती है ॥२६॥

हरितालनामगुणाः ।

हरितालमलं तालं गोदन्तं नटभूषणम् ।
हरितालं कटु स्निग्धं कषायोष्णं विषं जयेत् ।
कण्डूकुष्ठास्यरोगांश्च कफपित्तकचग्रहान् ॥ २७ ॥

अर्थ–हरिताल, अल, ताल, गोदंत, नटभूषण ये पांच नाम हरतालके हैं । हरताल चर्परा है, चिकना है, कषैला है, गर्म है और विष, खाज, कुष्ठ, मुखरोग, कफ, पित्त, बालग्रहदोष इन्होंको जीतता है ॥ २७ ॥

गैरिकनामगुणाः ।

गैरिकं रक्तपाषाणं गिरिमृच्च गवेधुकम् ।
स्वर्णवर्णं परं स्वर्णमण्डलं स्वर्णगैरिकम् ॥ २८ ॥

अर्थ–गैरिक, रक्तपाषाण, गिरिमृत्, गवेधुक ये चार नाम गेरूके हैं । स्वर्णवर्ण, स्वर्णमण्डल, स्वर्णगैरिक ये तीन नाम सोनागेरूके हैं ॥ २८ ॥

गैरिकं दाहपित्तास्रकफहिक्काविषापहम् ।
चक्षुष्यमन्यत्तद्वच्च विशेषाद्भ्रान्तिनाशनम् ॥ २९ ॥

अर्थ–गेरू दाह, पित्त, रक्त, कफ, हिचकी, विष इन्होंको नाशती है, आंखोंमें हित करती है । सोनागेरूमेंभी येही गुण हैं, परंतु विशेषकर छर्दिको नाशती है ॥ २९ ॥

तुत्थनामगुणाः ।

तुत्थं कर्पूरिकातुत्थममृतासङ्गमुच्यते ।

मयूरग्रीवकं चान्यच्छिखिकण्ठं च तुत्थकम् ॥ ३० ॥

अर्थ–तुत्थ, कर्पूरिकातुत्थ, अमृतासंग, मयूरग्रीवक ये चार नाम नीलाथोथाके हैं । दूसरा शिखिकंठ होता है ॥ ३० ॥

तुत्थकं लेखनं भेदि कण्डूकुष्ठविषापहम् ।
कफकृमिहरं तद्वदन्यच्चक्षुष्यमुत्तमम् ॥ ३१ ॥

अर्थ–नीलाथोथा लेखन और भेदन है, खाज, कुष्ठ, विष, कफ, कृमि इन्होंको नाशता है । दूसरा नीलाथोथा आंखोंमें हित करता और उत्तम है ॥ ३१ ॥

कासीसनामगुणाः ।

कासीसं धातुकासीसं खेचरं तप्तलोमशम् ।
अपरं पुष्पकासीसं तुवरं वस्त्ररागधृक् ॥ ३२ ॥

अर्थ–कासीस, धातुकासीस, खेचर, तप्तलोमश ये चार नाम हीराकसीसके हैं । पुष्पकासीस, तुवर, वस्त्ररागधृक् ये तीन नाम दूसरेके हैं ॥ ३२ ॥

कासीसद्वयमम्लोष्णं तिक्तं केश्यं दृशे हितम् ।
हन्ति कण्डूविषश्वित्रमूत्रकृच्छ्रकफानिलान् ॥ ३३ ॥

अर्थ–दोनों हीराकसीस खट्टे हैं, गर्म हैं, कडुवे हैं, बालोंको बढाते हैं, नेत्रोंमें हित हैं और खाज, विष, श्वित्रकुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र, कफ, वात इन्होंको नाशते हैं ॥ ३३ ॥

हिंगुलनामगुणाः ।

हिङ्गुलं दरदं म्लेच्छं सैकतं चूर्णपारदम् ।
हिङ्गुलं पित्तकफनुच्चक्षुष्यं विषकुष्ठहृत् ॥ ३४ ॥

अर्थ–हिंगुल, दरद, म्लेच्छ, सैकत, चूर्ण, पारद ये छः नाम सिंगरफके हैं । सिंगरफ पित्त-कफको दूर करता है, नेत्रोंमें हित करता है, विष और कुष्ठको हरता है ॥ ३४ ॥

सिन्दूरनामगुणाः ।

सिन्दूरं नागजं रक्तं श्रीमच्छृङ्गारभूषणम् ।
वसन्तमण्डनं नागरक्तं रक्तरजस्तथा ॥ ३५ ॥

अर्थ–सिंदूर, नागज, रक्त, श्रीमत्, शृंगारभूषण, वसंतमंडन, नागरक्त, रक्तरज ये आठ नाम सिंदूरके हैं ॥ ३५ ॥

सिन्दूरमुष्णं वीसर्पकुष्ठकण्डूविषापहम् ।
भग्नसन्धानजननं व्रणशोधनरोपणम् ॥ ३६ ॥

अर्थ–सिंदूर गर्म है, विसर्प कुष्ठ, खाज, विष इन्होंको नाशता है, टूटे हुएको जोडता है, घावको शोधता है और अंकुर लाता है ॥ ३६ ॥

सौवीरनामगुणाः ।

सौवीरमञ्जनं कृष्णं कालनीलं सुवीरजम् ।
स्रोतोऽञ्जनं तु स्रोतोजं नदीजं यामुनं वरम् ॥ ३७ ॥

अर्थ–सौवीर, अंजन, कृष्ण, कालनील, सुवीरज, स्रोतोंजन, स्रोतोज, नदीज, यामुन, वर ये दश नाम सुरमाके हैं ॥ ३७ ॥

सौवीरं ग्राहि मधुरं चक्षुष्यं कफवातजित् ।
सिध्माक्षयास्रनुच्छीतं स्रोतोऽञ्जनमपीदृशम् ॥ ३८ ॥

अर्थ–सुरमा मलको बाधता है, मीठा है, आंखोंमें हित है, कफ वातको जीतता है, सींप और क्षय रोगको नाशता है तथा शीतल है, स्रोतोंजनमेंभी येही गुण हैं ॥ ३८ ॥

रसाञ्जननामगुणाः ।

रसाञ्जनं रसोद्भूतं तार्क्ष्यं शैलं च तार्क्ष्यजम् ।
रसाग्र्यं कृत्रिमं तार्क्ष्यं दार्व्यं दार्वीरसोद्भवम् ॥ ३९ ॥

अर्थ–रसांजन, रसोद्भूत, तार्क्ष्य, शैल, तार्क्ष्यज, रसाग्र्य, कृत्रिम, तार्क्ष्य, दार्व्य, दार्वीरसोद्भव ये दश नाम रसौतके हैं ॥ ३९ ॥

रसाञ्जनं कटु श्लेष्ममुखनेत्रविकारजित् ।
उष्णं रसायनं तिक्तं छेदनं व्रणदोषजित् ॥ ४० ॥

अर्थ–रसौत चर्परा है, कफ, मुखरोग और नेत्ररोगको जीतता है, गर्म है, बुढापेको दूर करता है, कडुवा है, छेदन है और घाव दोषको जीतता है ॥ ४० ॥

पुष्पाञ्जननामगुणाः ।

पुष्पाञ्जनं पुष्पकेतु रीतिजं कुसुमाञ्जनम् ।
पुष्पाञ्जनं क्षारमुष्णं काचार्मपटलापहम् ॥ ४१ ॥

अर्थ-पुष्पांजन, पुष्पकेतु, रीतिज, कुसुमांजन ये चार नाम पुष्पांजनके हैं । पुष्पांजन खारा है, गर्म है, काच, अर्म, पटल इन्होंको नाशता है ॥ ४१ ॥

शिलाजतुनामगुणाः ।

शिलाजतूष्णजं शैलं निर्यासो गिरिशाह्वयम् ।
शिलाह्वं गिरिजं शैलं शैलेयं गिरिजत्वपि ॥ ४२ ॥

अर्थ–शिलाजतु, उष्णज, शैल, निर्यास, गिरिशाह्वय, शिलाह्व, गिरिज शैल, शैलेय, गिरिजतु ये दश नाम शिलाजीतके हैं ॥ ४२ ॥

शिलाजतूष्णं कटुकं योगवाहि रसायनम् ।
छर्दिप्रमेहवातार्शःकुष्ठास्योदरपाण्डुताः ।
हन्ति श्वासक्षयोन्मादरक्तशोफकफकृमीन् ॥ ४३ ॥

अर्थ–शिलाजीत गर्म है, चर्परा है, योगवाहि अर्थात् योगमें मिलके उसका गुण देता है, बुढापेको दूर करता है, छर्दि, प्रमेह, वात, बवासीर, कुष्ठ, मुखरोग उदर-रोग, पांडुरोग, श्वास, क्षय, उन्माद, रक्त, शोजा, कफ, कृमि इन्होंको नाशताहै॥४३॥

वीरनामगुणाः ।

बोलं गन्धरसं वीरं निर्लोहं बर्बरं चलम् ।
सुगन्धि नालिका पिण्डं रसगन्धं च तद्विधा ॥ ४४ ॥

अर्थ–बोल, गंधरस, वीर, निर्लोह, बर्बर, चल, सुगंधि, नालिका, पिंड, रसगंध ये दश नाम बोलके हैं । यह दो प्रकारका है ॥ ४४ ॥

बोलं रक्तहरं शीतं मेध्यं दीपनपाचनम् ।
ज्वरापस्मारकुष्ठघ्नं गर्भाशयविशोधनम् ॥ ४५ ॥

अर्थ–बोल रक्तको हरता है, शीतल है, बुद्धिको बढाता है, अग्निको जगाता है, पाचन है, ज्वर, मृगीरोग, कुष्ठ इन्होंको नाशता है और गर्भाशयको शोधता है ॥ ४५ ॥

स्फटिकाख्यानामगुणाः ।

स्फटिकाख्या मृता बाष्पी काक्षी सौराष्ट्रसम्भवा ।
आढकी तुवरा त्वन्या भूतिका सुरमृत्तिका ॥ ४६ ॥

अर्थ–स्फटिकाख्या, मृता, बाष्पी, काक्षी, सौराष्ट्रसंभवा ये पांच नाम फिटकडीके हैं । दूसरीके आढकी, तुवरा, भूतिका, सुरमृत्तिका ये चार नाम हैं ॥ ४६ ॥

स्फटिकाख्या कषायोष्णा कफपित्तविषव्रणान् ।
निहन्ति श्वित्रवीसर्पास्तुवरी तद्गुणा मता ॥ ४७ ॥

अर्थ–फिटकडी कषैली और गर्म है । यह कफ-पित्त, विष, घाव, श्वित्रकुष्ठ, विसर्प इन्होंको नाशती है । तुवरीमेंभी येही गुण हैं ॥ ४७ ॥

समुद्रफेननामगुणाः ।

समुद्रफेनो हिण्डीरः फेनो वारिकफो द्विजः ।

समुद्रफेनश्चक्षुष्यो लेखकः शमनः सरः ॥ ४८ ॥

अर्थ–समुद्रफेन, हिंडीर, फेन, वारिकफ, द्विज ये पांच नाम समुद्रझागके हैं । समुद्रझाग नेत्रोंमें हित है, लेखक है, शमन और फैलनेवाला है ॥ ४८ ॥

प्रवालनामगुणाः ।

प्रवालं विद्रुमं सिन्धुं लताग्रं रक्तवर्णकम् ।
पुष्टिकान्तिबलकरं वर्द्धनं बलशुक्रयोः ॥ ४९ ॥

अर्थ–प्रवाल, विद्रुम, सिंधु, लताग्र रक्तवर्णक ये पांच नाम मूंगाके हैं । मूंगा पुष्टि, कांति, बल इन्होंको करता है तथा बल और वीर्यको बढाता है ॥ ४९ ॥

मौक्तिकनामगुणाः ।

मौक्तिकं तौतिला मुक्ताफलं मुक्ता च शुक्तिजम् ।
मौक्तिकं मधुरं शीतं रोगघ्नं विषनाशनम् ॥ ५० ॥

अर्थ–मौक्तिक, तौतिला, मुक्ताफल, मुक्ता, शुक्तिज ये पांच नाम मोतीके हैं । यह मीठा है, शीतल है, रोग और विषको नाशता है ॥ ५० ॥

माणिक्यनामानि ।

माणिक्यं पद्मरागं स्याद्वसु रत्नं सुरत्नकम् ॥ ५१ ॥

अर्थ–माणिक्य, पद्मराग, वसु, रत्न, सुरत्नक ये पांच नाम लालके हैं ॥ ५१ ॥

सूर्यकान्तमणिनामानि ।

सूर्यकान्तः सूर्यमणिः सूर्याक्षो दहनोपलः ॥ ५२ ॥

अर्थ–सूर्यकांत, सूर्यमणि, सूर्याक्ष, दहनोपल ये चार नाम सूर्यकांतमणिके हैं ५२

चन्द्रकांतमणिनामानि ।

चन्द्रकान्तश्चन्द्रमणिः स्फटिकः स्फटिकोपलः ॥ ५३ ॥

अर्थ–चंद्रकांत, चंद्रमणि, स्फटिक, स्फटिकोपल ये चार नाम चंद्रकांत मणिके हैं ॥ ५३ ॥

गोमेदनामानि ।

गोमेदं सुन्दरं पीतं रत्नं तृणचरं तथा ॥ ५४ ॥

अर्थ–गोमेद, सुन्दर, पीत, रत्न, तृणचर ये पांच नाम पन्नाके हैं ॥ ५४ ॥

हीरकनामानि ।

हीरकं भिदुरं वज्रं सूचीवक्रं वरार्धकम् ॥ ५५ ॥

अर्थ–हीरक, भिदुर, वज्र, सूचीवक्र, वरार्धक ये पांच नाम हीराके हैं ॥ ५५ ॥

नीलवैडूर्यनामानि ।

नीलरक्तं नीलमणिर्वैडूर्यं बालवायजम् ॥ ५६ ॥

अर्थ–नीलरक्त, नीलमणि, वैडूर्य, बालवायज ये चार नाम लसनियाके हैं ॥५६॥

मरकतमणिनामानि ।

गारुत्मतं मारकतं दृषद्गर्भं हरिन्मणिः ॥ ५७ ॥

अर्थ–गारुत्मत, मारकत, दृषद्गर्भ, हरिन्मणि ये चार नाम मरकतमणिके हैं ॥५७॥

मुक्तास्फोटनामानि ।

मुक्तास्फोटोऽब्धिमण्डूकी शुक्तिर्मौक्तिकमन्दिरम् ॥ ५८ ॥

अर्थ–मुक्तास्फोट, अब्धिमंडूकी, शुक्ति, मौक्तिकमंदिर ये नाम मोतीसीपके हैं ५८

मुक्तिकान्तिनामानि ।

मुक्तिकान्तिः कटुकान्तिर्दीपनी वह्निनाशिनी ॥ ५९ ॥

अर्थ–मुक्तिकांति, कटुकांति, दीपनी, वह्निनाशिनी ये चार नाम मोतीकांतिके हैं ५९

प्रवालादिगुणाः ।

प्रवालमुक्तिमाणिक्यसूर्यशीतकरोपलाः ।
गोमेदवज्रवैडूर्यनीलगारुत्मतादयः ॥ ६० ॥

अर्थ–मूंगा, मोती, लाल, सूर्यकान्तमणि, चंद्रमणि, पन्ना, हीरा, लसनियां मरकतमणि इत्यादि रत्न ॥ ६० ॥

चक्षुष्या लेखनाः शीताः कषाया मधुराः सराः ।
माङ्गल्या धारणा दाहदुष्टग्रहविषापहाः ॥ ६१ ॥

अर्थ–आंखोंमें हित करते हैं, लेखन हैं, शीतल हैं, कषैले हैं, मीठे हैं, फैलनेवाले हैं, मङ्गलको देते हैं, धारण करनेको उत्तम हैं तथा दाह, दुष्टग्रह, विष इन्होंको नाशते हैं ॥ ६१ ॥

शङ्खनामगुणाः ।

शङ्खः कम्बुर्जलधरो वारिजो दीर्घनिःस्वनः ।
शङ्खो हि कटुकः पाके कषायो मधुरो लघुः ॥ ६२ ॥

अर्थ–शंख, कंबु, जलधर, वारिज, दीर्घनिःस्वन ये पांच नाम शंखके हैं । शंख पाकमें चर्परा है, कषैला है, मीठा है और हलका है ॥ ६२ ॥

चक्षुष्यो लेखनः पंक्तिशूलपित्तविनाशनः ।
शङ्खो नेत्रहितः शीतो लघुपित्तकफास्रजित् ॥ ६३ ॥

अर्थ–यह नेत्रोंमें हित करता है, लेखन है, पक्तिशूल और पित्तको नाशता है, शीतल है तथा पित्त, कफ, रक्तको जीतता है ॥ ६३ ॥

लघुशङ्खकपर्दनामगुणाः ।

शङ्खो लघुः शङ्खनकः शम्बुका वारिशुक्तयः ।
कपर्दाः क्षुल्लका ज्ञेयाश्चराचरवराटकाः ।
लघु शङ्खादयः शीता नेत्ररुक्स्फोटनाशनाः ॥ ६४ ॥

अर्थ–शंख, लघु, शंखनक, शंबुक, वारिशुक्ति ये पांच नाम छोटे शंखके हैं । कपर्द, क्षुल्लक, चराचर, वराटक ये चार नाम कौडीके हैं । छोटा शंख आदि शीतल हैं, आंखरोग और फोडाको नाशते हैं ॥ ६४ ॥

खटीगौडग्रावनामगुणाः ।

खटी कपोलः खटिनी श्वेता नाडीतरङ्गकः ।
तद्भेदो गौडपाषाणः क्षीरपाक उदाहृतः ।
खटी दाहास्रनुच्छीता गौडग्रावापि तद्गुणः ॥ ६५ ॥

अर्थ–खटी, कपोल, खटिनी, श्वेता, नाडीतरंगक ये पांच नाम खडियाके हैं। इसीके भेद और पाषाण, क्षीरपाक कहे हैं । खडिया दाह, रक्त इन्होंको दूर करती है और शीतल है, गौडग्रावमेंभी येही गुण हैं ॥ ६५ ॥

पङ्कवालुकानामगुणाः ।

पङ्कः कर्दमको ज्ञेयो वालुका सिकता तथा ।
पङ्को दाहास्रपित्तार्त्तिशोथघ्नः शीतलः सरः ।
वालुका लेखनी सीता व्रणोरःक्षतनाशिनी ॥ ६६ ॥

अर्थ–पंक, कर्दमक, वालुका, सिकता ये चार नाम कीचड और वालूके हैं । कीचड दाह, रक्तपित्त, शोजा इन्होंको नाशता है, शीतल और सर है । वालू लेखन है, शीतल है, घाव और छातीके फटनेको नाशती है ॥ ६६ ॥

चुम्बकपाषाणनामगुणाः ।

चुम्बकः कान्तपाषाणोऽयस्कान्तो लोहकर्षकः ।
चुम्बको लेखनः शीतो मेदोविषगरापहः ॥ ६७ ॥

अर्थ–चुंबक, कांतपाषाण, अयस्कांत, लोहकर्षक ये चार नाम चुंबक पत्थरके हैं । चुंबक लेखन और शीतल है तथा मेद, विष, कृत्रिमविष इन्होंको नाशता है ॥ ६७ ॥

काचनामगुणाः ।

काचः कृत्रिमरत्नं स्याद्विगुणः काचभाजनम् ।
काचो विदारणो व्रण्यश्चक्षुष्यो लेखनो लघुः ॥ ६८ ॥

अर्थ–काच, कृत्रिमरत्न, विगुण, काचभाजन ये चार नाम कांचके हैं । कांच फाडता है, घावमें गुण करता है, नेत्रोंमें हित है, लेखन है और हलका है ॥ ६८ ॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण
निर्मितेऽत्र । ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्णश्चित्रोऽयं
ललितपदैः सुवर्णवर्गः ॥ ६९ ॥

अर्थ–राजाओंमें अत्यन्त प्रधान जो कटारमल्ल उसी मदनपाल राजाके रचे हुए इस अमरविनोद नामक ग्रन्थमें ललित पदोंकरके चित्ररूप सोना आदि यह वर्ग पूर्ण हुआ ॥ ६९ ॥

इति चतुर्थवर्गः ।

करेण संगृह्य कुचौ महिष्याः पयः पिबन्तं पुरुषं पुराणम् ।
विचित्रलीलं परिशुद्धशीलं तमालनीलं शिशुमाश्रयामि॥१॥

अर्थ–यशोदा रानीकी चूंचियोंको हाथसे ग्रहण कर दूधको पीता हुआ और पुराणपुरुष विचित्र लीलावाला सब तरफसे शुद्ध और शीलरूप ऐसे कृष्णरूप उस बालकका मैं आश्रित होता हूं ॥ १ ॥

वटनामगुणाः ।

वटो रक्तपदा क्षीरी बहुपादो वनस्पतिः ।
यक्षावासः पदारोही न्यग्रोधः स्कन्धजो ध्रुवः ।
वटः शीतो गुरुर्ग्राही कफपित्तव्रणापहः ॥ २ ॥

अर्थ–वट, रक्तपदा, क्षीरी, बहुपाद, वनस्पति, यक्षावास, पदारोही, न्यग्रोध, स्कंधज, ध्रुव ये दश नाम वडके हैं । वड शीतल है, भारी है, मलको बांधता है और कफ, पित्त, घाव इन्होंको नाशता है ॥ २ ॥

पिप्पलनामगुणाः ।

पिप्पलः श्यामलोऽश्वत्थः क्षीरवृक्षो गजाशनः ।
हरिवासश्चलदलो मङ्गल्यो बोधिपादपः ।
पिप्पलो दुर्जयः शीतः पित्तश्लेष्मव्रणान्नजित् ॥ ३ ॥

अर्थ–पिप्पल, श्यामल, अश्वत्थ, क्षीरवृक्ष, गजाशन, हरिवास, चलदल, मंगल्य, बोधिप्रादप ये नव नाम पीपलके हैं । पीपल दुःखको जीतता है, शीतल है और पित्त, कफ, घाव, रक्त इन्होंको जीतता है ॥ ३ ॥

पारिशाश्वत्थकनामगुणाः ।

पारिशोऽन्यः फलीशः स्यात् कपिनूतः कपीतनः ।
पारिशाश्वत्थको वृष्यः स्निग्धः श्लेष्मकृमिप्रदः ॥ ४ ॥

अर्थ–पारिश, फलीश, कपिनूत, कपीतन ये चार नाम पारस पीपलके हैं । पारसपीपल स्त्रीसंगमें हित है, चिकना है, कफ और कृमिको देता है ॥ ४ ॥

उदुम्बरनामगुणाः ।

उदुम्बरः क्षीरवृक्षो जन्तुवृक्षः सदाफलः ।
हेमदुग्धः कृमिफलो यक्षाङ्गः शीतवल्कलः ।
उदुम्बरो हिमो व्रण्यो कफपित्तास्रजिद् गुरुः ॥ ५ ॥

अर्थ–उदुंबर, क्षीरवृक्ष, जंतुवृक्ष, सदाफल, हेमदुग्ध, कृमिफल, यक्षांग, शीतवल्कल ये आठ नाम गूलरके हैं । गूलर शीतल है, घावमें हित है और कफ, पित्त, रक्तको जीतता है तथा भारी है ॥ ५ ॥

काकोदुम्बरिकानामगुणाः ।

काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलायुश्चित्रभेषजम् ।
काकोदुम्बरिका तद्वद्विशेषाच्छिन्ननाशिनी ॥ ६ ॥

अर्थ–काकोदुंबरिका, फल्गु, मलायु, चित्रभेषज ये चार नाम कटुंबरके हैं । कटुंबरमें गूलरके सब गुण हैं । विशेषकर छिन्न हुएको नाशती है ॥ ६ ॥

प्लक्षनामगुणाः ।

प्लक्षः प्लवश्चारुवृक्षः सुपार्श्वो गर्भभाण्डकः ।
वटी कमण्डलुर्यूपः पिप्परिश्चारुदर्शनः ।
प्लक्षः शीतो व्रणश्लेष्मपित्तशोथविसर्पजित् ॥ ७ ॥

अर्थ–प्लक्ष, प्लव, चारुवृक्ष, सुपार्श्व, गर्भभांडक, वटी, कमंडलु, यूप, पिप्परि, चारुदर्शन ये दश नाम पिलखनके हैं । पिलखन शीतल है और घाव, कफ, पित्त, शोजा, विसर्प इन्होंको जीतता है ॥ ७ ॥

पंचक्षीरवृक्षनामगुणाः ।

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थाः पारिप्लक्षश्च पादपः ।

पञ्चैते क्षीरिणः प्रोक्तास्तेषां त्वक् पञ्चवल्कला ॥ ८ ॥

अर्थ–वड, गूलर, पीपल, पारसपीपल, पिलखन ये पांच क्षीरीवृक्ष हैं । इन्होंके छाल पंचवल्कल कहाते हैं ॥ ८ ॥

त्वक्पञ्चकं हिमं ग्राहि व्रणशोथविसर्पजित् ।
केचित् तु पारिशस्थाने शिरीषं वेतसं परे ॥ ९ ॥

अर्थ–पञ्चवल्कल शीतल तथा ग्राही हैं और व्रण, शोजा, वीसर्प इनको नाशते हैं । कितनेक वैद्य पारसपीपलके स्थानमें शिरस मिलाते हैं और कितनेक वेतस लेते हैं ॥ ९ ॥

क्षीरवृक्षा हिमव्रण्या योनिदोषव्रणापहाः ।
शोफपित्तकफास्रघ्नाः स्तन्या भग्नास्थियोगदाः ॥ १० ॥

अर्थ–क्षीरवृक्ष शीतल हैं, घावमें हित हैं, योनिदोष, घाव, शोजा, पित्त, कफ, रक्त इन्होंको नाशते हैं, चूंचियोंमें दूध बढाते हैं, टूटी हड्डीको जोडते हैं ॥ १० ॥

तेषां पत्रं हिमं ग्राहि कफवातास्रनुल्लघु ।
फलं विष्टम्भि संग्राहि रक्तपित्तकफापहम् ॥ ११ ॥

अर्थ–क्षीरवृक्षोंका पत्ता शीतल है, मलको बांधता है और कफ, पित्त, रक्त इन्होंको दूर करता है तथा हलका है । क्षीरी वृक्षोंका फल विष्टंभ करता है, मलको बांधता है, रक्तपित्त और कफको दूर करता है ॥ ११ ॥

नन्दीवृक्षोऽश्वत्थभेदः प्ररोही गजपादपः ।
नन्दीवृक्षोऽश्वत्थगुणो लघूष्णो गरनुत् पुनः ॥ १२ ॥

अर्थ–नंदीवृक्ष, अश्वत्थभेद, प्ररोही, गजपादप ये चार नाम नन्दीवृक्षके हैं । नन्दीवृक्षमें पीपलके सब गुण हैं, परंतु हलका, गर्म और विषको दूर करनेवाला है॥१२॥

कदम्बनामगुणाः ।

कदम्बो गन्धवत्पुष्पः प्रावृषेण्यो मनोन्नतिः ।
अन्यो धूलिकदम्बः स्यान्नीपो राजकदम्बकः ।
कदम्बः शीतलः श्लेष्मपित्तरक्तगदापहः ॥ १३ ॥

अर्थ–कदम्ब, गंधवत्पुष्प, प्रावृषेण्य, मनोन्नति ये चार नाम कदंबके हैं । धूलिकदंब, नीप, राजकदंबक ये तीन नाम दूसरे कदंबके हैं । कदंब शीतल है और कफ, पित्त, रक्त इन रोगोंको नाशता है ॥ १३ ॥

ककुभार्जुननामगुणाः ।

ककुभोऽर्जुननामा स्यान्नदो मंजुः शठद्रुमः ।

ककुभः शीतलो भग्नक्षतक्षयविषास्रजित् ॥ १४ ॥

अर्थ-ककुभ, अर्जुननामा, नद, मंजु, शठद्रुम ये पांच नाम कोहके हैं । कोह शीतल है और भग्न, क्षत, क्षय, विष, रक्त इन्होंको जीतता है ॥ १४ ॥

शिरीषनामगुणाः ।

शिरीषः प्लवगो विप्रः शुकवृक्षः कपीतनः ।
मृदुपुष्पः श्यामवर्णो भण्डीरः शङ्खिनीफलः ।
शिरीषः शीतलो वर्ण्यो विषवीसर्पशोथजित् ॥ १५ ॥

अर्थ-शिरीष, प्लवग, विप्र, शुकवृक्ष, कपीतन, मृदुपुष्प, श्यामवर्ण, भंडीर, शंखिनीफल ये नव नाम शिरसके हैं । शिरस शीतल है, वर्णको निखारता है तथा विष, विसर्प, शोजा इन्होंको जीतता है ॥ १५ ॥

आर्त्तगलनामगुणाः ।

आर्गटः स्यादार्त्तगलो बहुकण्टः प्रघर्षणः ।
आर्गटस्तुवरः शीतो व्रणशोधनरोपणः ॥ १६ ॥

अर्थ-आर्गट, आर्तगल, बहुकंट, प्रघर्षण ये चार नाम आर्तगलके हैं । आर्तगल कषैला है, शीतल है, घावको शोधता है और अंकुर लाता है ॥ १६ ॥

वेतसनामानि ।

वेतसो वञ्जुलो नम्रो वानीरो दीर्घपत्रकः ।
नादेयो मध्यपुष्पोऽन्यस्तोयकामो निकुञ्जकः ॥ १७ ॥

अर्थ-वेतस, वंजुल, नम्र, वानीर, दीर्घपत्रक, नादेय, मध्यपुष्प, तोयकाम, निकुंजक ये नव नाम वेतसके हैं ॥ १७ ॥

जलवेतसनामानि ।

जलौकासम्भृतोऽभोजो निचुलो जलवेतसः ॥ १८ ॥

अर्थ-जलौकासंभृत, अंभोज, निचुल, जलवेतस ये चार नाम जलवेतके हैं॥ १८॥

इज्जलनामानि ।

इज्जलो हिञ्जलो गुच्छः पला स्यात् कच्छपीलिका ॥ १९ ॥

अर्थ-इज्जल, हिञ्जल, गुच्छ, पला, कच्छपीलिका ये पांच नाम इज्जलके हैं ॥ १९॥

वेतसादिगुणाः ।

वेतसः शीतलो दाहशोफाशोंयोनिरुग्व्रणान् ।
हन्ति वीसर्पकृच्छ्रास्रपित्ताश्मरिकफानिलान् ॥ २० ॥

अर्थ–वेतस शीतल है और दाह, शोजा, बवासीर, योनिरोग, घाव, विसर्प, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, पथरी, कफ, वात इन्होंको नाशता है ॥ २० ॥

जलजो वेतसः शीतः संग्राही वातकोपनः ।
इज्जलस्तद्गुणः प्रोक्तो विशेषाद्विषनाशनः ॥ २१ ॥

अर्थ–जलवेतस शीतल है, मलको बांधता है, वातको कुपित करता है । इज्जलमें-भी येही गुण हैं, विशेषकर विषको नाशता है ॥ २१ ॥

श्लेष्मान्तकनामगुणाः ।

श्लेष्मान्तकः कर्बुदारः पिच्छली भूतपादपः ।
शेलुः शैलुश्च शैलूकः शैलिको द्विजकुत्सिकः ॥ २२ ॥

अर्थ–श्लेष्मांतक, कर्बुदार, पिच्छली, भूतपादप, शेलु, शैलु, शैलूक, शैलिक, द्विजकुत्सिक ये नव नाम लहेशवाके हैं ॥ २२ ॥

श्लेष्मान्तको विषस्फोटव्रणवीसर्पकुष्ठजित् ।
केश्योष्णस्तत्फलं वृष्यं वातपित्तक्षयास्रजित् ॥ २३ ॥

अर्थ–लहेशवा विष, फोडा, घाव, विसर्प, कुष्ठ इन्होंको जीतता है, बालोंमें हित है और गर्म है । लहेसवाका फल वीर्यको पुष्ट करता है तथा वात, पित्त, क्षय, रक्त इन्होंको जीतता है ॥ २३ ॥

पीलुनामगुणाः ।

पीलुः शतसहस्रांशी तीक्ष्णस्तु करभप्रियः ।
सहस्राङ्गी गुडफलस्तत्फलं पीलु पीलुजम् ॥ २४ ॥

अर्थ–पीलु, शतसहस्रांशी, तीक्ष्ण, करभप्रिय, सहस्राङ्गी, गुडफल ये छः नाम पीलूके हैं । पीलु, पीलुज ये दो नाम पीलूके फलके हैं ॥ २४ ॥

पीलूष्णं दीपनं भेदि रक्तपित्तकरं लघु ।
गुल्मार्शःप्लीहवाताश्मकफहारि रसायनम् ॥ २५ ॥

अर्थ–पीलु गर्म है, अग्निको जगाता है, भेदी है, रक्त-पित्तको करता है, हलका है और गुल्म, बवासीर, तिल्लीरोग, वात, पथरी, कफ इन्होंको हरता है तथा बुढा-पेको दूर करता है ॥ २५ ॥

शाकनामगुणाः ।

शाकः खरच्छदो भूमिसहो दीर्घच्छदो मतः ।
शाकः श्लेष्मानिलास्रघ्नो गर्भसन्धानदो हिमः ॥ २६ ॥

अर्थ–शाक, खरच्छद, भूमिसह, दीर्घच्छद ये चार नाम शाकवनुके हैं । शाकवनु कफ, वात, रक्त इन्होंको नाशता है, गर्भको स्थापित करता है और शीतल है ॥ २६ ॥

शालनामगुणाः ।

शालः सर्जरसः सर्जः श्रीकृष्णारिश्च पत्रकः ।
शालो ग्राही व्रणश्लेष्मदग्धरुग्विषनुद्भिमः ॥ २७ ॥

अर्थ–शाल, सर्जरस, सर्ज, श्रीकृष्णारि, पत्रक ये पांच नाम शालके हैं । शाल मलको बांधता है, घाव, कफ, दग्ध (जला हुआ), विष इन्होंको दूर करता है और शीतल है ॥ २७ ॥

तमालनामगुणाः ।

तमाल उक्तस्तापिच्छः कालस्कन्धो मितद्रुमः ।
तमालस्तद्गुणः शोथदाहविस्फोटहृत् पुनः ॥ २८ ॥

अर्थ–तमाल, तापिच्छ, कालस्कंध, मितद्रुम ये चार नाम तमालके हैं । तमालमें सालके सब गुण हैं और शोजा, दाह, विस्फोट इन्होंको हरता है ॥ २८ ॥

खदिरनामगुणाः ।

खदिरो रक्तसारः स्यात् गायत्री बालपत्रकः ।
खदिरः श्वेतसारोऽन्यः कार्मुकः कुब्जकण्टकः ॥ २९ ॥

अर्थ–खदिर, रक्तसार, गायत्री, बालपत्रक ये चार नाम खैरके हैं । खदिर, श्वेतसार, कार्मुक, कुब्जकंटक ये चार नाम खदिरके हैं ॥ २९ ॥

खदिरः शीतलो दन्त्यः कृमिमेहज्वरव्रणान् ।
श्वित्रशोथामपित्तास्रपाण्डुकुष्ठकफान् जयेत् ॥ ३० ॥

अर्थ–खैर शीतल है और दांतोंमें हित करता है, कृमि, प्रमेह, ज्वर, घाव, श्वित्र, शोजा, आम, पित्तरक्त, पांडु, कुष्ठ, कफ इन्होंको जीतता है ॥ ३० ॥

निर्यासस्तस्य मधुरो बल्यः शुक्रविवर्द्धनः ।
सारस्तु विशदो बल्यो मुखरोगकफास्रजित् ॥ ३१ ॥

अर्थ–इसका गोंद मधुर है, बल देनेवाला है, शुक्रको बढानेवाला है । इसका सार विशद है, बल करनेवाला है, मुखरोग, कफ, अस्रको जीतता है ॥ ३१ ॥

अरिमेदनामगुणाः ।

अरिमेदो विट्खदिरो गोधास्कन्धोऽरिमेदकः ।

अरिमेदः कषायोष्णो मुखदन्तगदास्रनुत्।
हन्ति कण्डूविषश्लेष्मकृमिकुष्ठव्रणान् जयेत् ॥ ३२ ॥

अर्थ–अरिमेद, विट्खदिर, गोधास्कंध, अरिमेदक ये चार नाम गंधित खैरके हैं। गंधवाला खैर कषैला है, गर्म है, मुखरोग, दंतरोग, रक्त इन्होंको दूर करता है और खाज, विष, कफ, कृमि, कुष्ठ, घाव इन्होंको जीतता है ॥ ३२ ॥

बबूलनामगुणाः।

बबूलः किङ्करालः स्यात् पीतकः पीतपुष्पकः।
बबूलः कफनुद् ग्राही कुष्ठकृमिविषापहः।
रक्तपित्तं कषायेण पिबन्ति दिनसप्तकम् ॥ ३३ ॥

अर्थ–बबूल, किंकराल, पीतक, पीतपुष्पक ये चार नाम बबूलके हैं। बबूल कफको दूर करता है, मलको बांधता है और कुष्ठ, कृमि, विष, इन्होंको दूर करता है। इसके क्वाथको ७ दिन पीवे तो रक्तपित्त दूर होता है ॥ ३३ ॥

बीजकनामगुणाः।

बीजकोऽशनकः सौरी प्रियः काम्योऽलकप्रियः ॥ ३४ ॥

अर्थ–बीजक, अशनक, सौरी, प्रिय, काम्य, अलकप्रिय ये छः नाम विजयसारके हैं ॥ ३४ ॥

बीजकः कुष्ठवीसर्पश्वित्रमेहज्वरकृमीन्।
हन्ति श्लेष्मास्रपित्तानि त्वच्यः केश्यो रसायनः ॥ ३५ ॥

अर्थ–विजयसार कुष्ठ, विसर्प, श्वित्र, प्रमेह, ज्वर, कृमि, कफ, रक्तपित्त इन्होंको जीतता है, खालमें गुण करता है, बालोंको बढाता है और बुढापेको दूर करता है ॥ ३५ ॥

तिनसनामगुणाः।

तिनसः स्पन्दनो नेमी सर्वसारोऽश्मगन्धकः।
तिनसः श्लेष्मपित्तास्रमेदकुष्ठप्रमेहनुत् ॥ ३६ ॥

अर्थ–तिनस, स्पंदन, नेमी, सर्वसार, अश्मगंधक ये पांच नाम तिनसके हैं। तिनस कफ, पित्त, रक्त, मेद, कुष्ठ, प्रमेह इन्होंको दूर करता है ॥ ३६ ॥

भूर्जपत्रनामगुणाः।

भूर्जो भुजो बहुपुटो मृदुत्वग्लेख्यपत्रकः।
भूर्जो भूतग्रहश्लेष्मकर्णरुग्रक्तपित्तजित् ॥ ३७ ॥

अर्थ-भूर्ज, भुज, बहुपुट, मृदुत्वक्, लेख्यपत्रक ये पांच नाम भोजपत्रके हैं । भोजपत्र भूतदोष, ग्रहदोष, कफ, कानरोग, रक्तपित्त इन्होंको जीतता है ॥ ३७ ॥

पलाशनामगुणाः ।

पलाशः किंशुकः किर्मी याज्ञिको ब्रह्मपादपः ।
क्षीरश्रेष्ठो रक्तपुष्पः त्रिवृत्तः समिदुत्तमः ॥ ३८ ॥

अर्थ-पलाश, किंशुक, किर्मी, याज्ञिक, ब्रह्मपादप, क्षीरश्रेष्ठ, रक्तपुष्प, त्रिवृत्त, सामित्, उत्तम ये दश नाम ढाकके हैं ॥ ३८ ॥

पलाशो दीपनो वृष्यः सरोष्णो व्रणगुल्मजित् ।
भग्नसन्धानकृद्दोषग्रहण्यर्शःकृमीन् हरेत् ॥ ३९ ॥

अर्थ-ढाक अग्निको जगाता है, धातुको पुष्ट करता है, सर है, गर्म है, घाव और गुल्मको जीतता है, टूटे हुएको जोडता है तथा ग्रहणी, बवासीर, कृमि इन्होंको नाशता है ॥ ३९ ॥

तत्पुष्पं कफपित्तास्रकृच्छ्रजिद् ग्राहि शीतलम् ।
फलं लघूष्णं मेहार्शःकृमिदुष्टकफापहम् ॥ ४० ॥

अर्थ-केशूका फूल कफ, पित्तरक्त, मूत्रकृच्छ्र इन्होंको जीतता है और मलको बांधता है तथा शीतल है । इसका फल हलका और गर्म है, प्रमेह, बवासीर, कृमि, दुष्ट कफ इन्होंको हरता है ॥ ४० ॥

धवनामगुणाः ।

धवो नन्दितरुर्गौरः शकटाक्षो धुरन्धरः ।
धवः शीतप्रमेहास्रपाण्डुपित्तकफापहः ॥ ४१ ॥

अर्थ-धव, नांदितरु, गौर, शकटाक्ष, धुरंधर ये पांच नाम धवके हैं । धव शीत, प्रमेह, रक्त, पांडु, पित्त, कफ इन्होंको हरता है ॥ ४१ ॥

धन्वननामगुणाः ।

धन्वनो गोत्रविटपी धर्मणो गोत्रपुष्पकः ।
धन्वनः कफपित्तास्रकासजित्तुवरो लघुः ॥ ४२ ॥

अर्थ-धन्वन, गोत्रविटपी, धर्मण, गोत्रपुष्पक ये चार नाम धामणिके हैं । धामणि कफ, पित्तरक्त, खांसी इन्होंको जीतता है, कषैला और हलका है ॥ ४२ ॥

सर्जनामगुणाः ।

सर्जोऽजकर्णः स्वेदघ्नो लतावृक्षः कुदेहकः ।

सर्जो वर्ण्यः कफस्वेदमलपित्तकृमीन् जयेत् ॥ ४३ ॥

अर्थ-सर्ज, अजकर्ण, स्वेदघ्न, लतावृक्ष, कुदेहक ये पांच नाम सोजाके हैं। सोजा वर्णमें हित करता है और कफ, पसीना, मल, पित्त, कृमि इन्होंको जीतता है ॥ ४३ ॥

शाखोटनामगुणाः ।

शाखोटः स्यात् पीतफलश्छागी क्षीरविनाशनः ।
शाखोटो वातरक्तास्रकफवातातिसारजित् ॥ ४४ ॥

अर्थ-शाखोट, पीतफल, छागी, क्षीरविनाशन ये चार नाम शाखोटके हैं । शाखोट वातरक्त, रक्त, कफ, वात, अतिसार इन्होंको जीतता है ॥ ४४ ॥

वरुणनामगुणाः ।

वरुणो वरणः श्वेतः शाकवृक्षः कुमारकः ।
वरुणः पित्तलो भेदी श्लेष्मकृच्छ्रास्रमारुतान् ।
निहंति गुल्मवातास्रकृमिशोथांश्च दीपनः ॥ ४५ ॥

अर्थ-वरुण, वरण, श्वेत, शाकवृक्ष, कुमारक ये पांच नाम वरनाके हैं । वरना पित्तको करता है और भेदी है, कफ, मूत्रकृच्छ्र, रक्त, वात, गुल्म, वातरक्त, कृमि, शोजा इन्होंको नाशता है और अग्निको जगाता है ॥ ४५ ॥

जिङ्गिणीनामगुणाः ।

जिङ्गिणी झिङ्गिणी जिङ्गी मुनिर्यासा च मोटकी ।
जिङ्गिणी व्रणहृद्रोगवातातीसारजित् कटुः ।
उष्णस्तस्यास्तु निर्यासो नस्याद् बाहुव्यथापहः ॥ ४६ ॥

अर्थ-जिंगिणी, झिंगिणी, जिंगी, मुनि, यासा, मोटकी ये छः नाम जींगणके हैं । जींगण घाव, हृद्रोग, वात, अतिसार इन्होंको जीतता है, कडुवा है । जींगणका सत गर्म है, नस्य लेनेसे बाहुकी पीडाको हरता है ॥ ४६ ॥

शल्लकीनामगुणाः ।

शल्लकी वल्लकी मोची गजभक्षा महारुहा ।
गन्धवीरा कुन्दुरुकी सुस्रावा वनकर्णिका ।
शल्लकी व्रणपित्तास्रश्लेष्मपित्तातिसारजित् ॥ ४७ ॥

अर्थ-शल्लकी, वल्लकी, मोची, गजभक्षा, महारुहा, गन्धवीरा, कुन्दुरुकी,

सुस्रावा, वनकर्णिका ये नौ नाम सालकके हैं । सालक घाव, पित्तरक्त, कफ, पित्त, अतिसार इन्होंको जीतता है ॥ ४७ ॥

इंगुदनामगुणाः ।

इङ्गुदो भल्लकी वृक्षकण्टकस्तापसद्रुमः ।
इङ्गुदः कुष्ठभूतादिग्रहव्रणविषकृमीन् ।
हन्त्युष्णः श्वित्रशूलघ्नस्तत्फलं कफवातजित् ॥ ४८ ॥

अर्थ–इंगुद, भल्लकी, वृक्षकंटक, तापसद्रुम ये चार नाम हिंगोटके हैं । हिंगोट कुष्ठ, भूत आदि ग्रहदोष, घाव, विष, कृमि इन्होंको हरता है, गर्म है और श्वित्र-कुष्ठ, और शूलको नाशता है । हिंगोटका फल कफ और वातको नाशता है ॥४८॥

कटम्भरनामगुणाः ।

कटम्भरश्चारुशृङ्गी कटभी तृणशैण्डकः ।
कटम्भरः प्रमेहास्रनाडीव्रणविषकृमीन् ॥ ४९ ॥

अर्थ–कटंभर, चारुशृंगी, कटभी, तृणशैण्डक ये चार नाम कटहाके हैं । कटहा प्रमेह, रक्त, नाडीव्रण, विष, कृमि ॥ ४९ ॥

हन्त्युष्णः कफकुष्ठघ्नं तत्फलं कफशुक्रनुत् ।
निर्यासोऽस्य गुरुर्वृष्यो बलकृद्धातनाशनः ॥ ५० ॥

अर्थ–इन्होंको नाशता है और कफ तथा कुष्ठको हरता है । कटहाका फल कफ और वीर्यको दूर करता है, इसका सत भारी है, धातुको पुष्ट करता है, बलको करता है और वातको नाशता है ॥ ५० ॥

मुष्ककनामगुणाः ।

मुष्ककको मोक्षको घुण्टी शिखरी क्षुद्रपाटला ।
मोक्षकः कफवातघ्नो ग्राही गुल्मविषकृमीन् ॥ ५१ ॥

अर्थ–मुष्कक, मोक्षक, घुंटी, शिखरी, क्षुद्रपाटला ये पांच नाम मोषाके हैं । मोषावृक्ष कफ वातको नाशता है, मलको बांधता है और गुल्म, विष, कृमि इन्होंको ॥ ५१ ॥

हन्त्युष्णो बस्तिरुक्कण्डूस्तत्पुष्पं कफपित्तजित् ।
निर्यासोऽस्य परं वृष्यः शोषपित्तानिलापहः ॥ ५२ ॥

अर्थ–हरता है तथा गर्म है । मोषाका फूल बस्तिरोग, खाज, कफ, पित्त इन्हों-

को जीतता है। मोषाका सत धातुको अत्यंत पुष्ट करता है और शोष, पित्त, वात इन्होंको नाशता है ॥ ५२ ॥

पारिभद्रनामगुणाः।

पारिभद्रो निम्बवृक्षो रक्तपुष्पः प्रभद्रकः।
कण्टकी पारिजातः स्यान्मन्दारः कटिकिंशुकः।
पारिभद्रः कृमिश्लेष्ममेदःकफानिलापहः॥ ५३ ॥

अर्थ–पारिभद्र, निम्बवृक्ष, रक्तपुष्प, प्रभद्रक, कंटकी, पारिजात, मंदार, कटिकिंशुक ये आठ नाम पहाडी नींबके हैं। पहाडी नींब कृमि, कफ, मेद, कफ-वात इन्होंको नाशता है ॥ ५३ ॥

शाल्मलीनामगुणाः।

शाल्मली तूलिनी मोचा कुक्कुटी रक्तपुष्पिका।
कण्टकाढ्या स्थूलफला पिच्छला चिरजीविनी ॥ ५४ ॥

अर्थ–शाल्मली, तूलिनी, मोचा, कुक्कुटी, रक्तपुष्पिका, कंटकाढ्या, स्थूलफला, पिच्छला, चिरजीविनी ये नव नाम शंभलके हैं ॥ ५४ ॥

शाल्मली शीतला वृष्या बृंहणी रक्तपित्तजित्।
निर्यासोऽस्य परं वृष्यः शोफपित्तानिलास्रजित्।
रसायनवरा स्निग्धातत्पुष्पं ग्राहि पित्तजित् ॥ ५५ ॥

अर्थ–शंभल शीतल है, धातुको पुष्ट करती है, वीर्यको बढाती है और रक्तपित्तको जीतती है। शंभलका गूंद धातुको बहुत पुष्ट करता है, शोजा, पित्त, वातरक्त इन्होंको जीतता है, बुढापेको दूर करता है और चिकना है। शंभलका फूल मलको बांधता है और पित्तको जीतता है ॥ ५५ ॥

तुणिनामगुणाः।

तुणिः कुठेर आपीतस्तनुको नन्दिपादपः।
तुणिर्ग्राही हिमो वृष्यो व्रणकुष्ठास्रपित्तहा ॥ ५६ ॥

अर्थ–तुणि, कुठेर, आपीत, तनुक, नंदिपादप ये पांच नाम तुनिके हैं। तुनि मलको बांधती है, शीतल है, धातुको पुष्ट करती है और घाव, कुष्ठ, रक्तपित्त इन्होंको नाशती है ॥ ५६ ॥

सप्तपर्णनामगुणाः।

सप्तपर्णो गुच्छपुष्पश्छत्री शाल्मलिपत्रकः।

सप्तपर्णो व्रणश्लेष्मवातकुष्ठहरः सरः ॥ ५७ ॥

अर्थ–सप्तपर्ण, गुच्छपुष्प, छत्री, शाल्मलिपत्रक ये चार नाम सातलाके हैं। सातला घाव, कफ, वात, कुष्ठ इन्होंको हरता है और सर है ॥ ५७ ॥

हारिद्रकनामगुणाः ।

हारिद्रकः पीतवर्णः श्रीमान् गैरद्रुमो वरः ।
हारिद्रकः कफहरो व्रणशोधनरोपणः ॥ ५८ ॥

अर्थ–हारिद्रक, पीतवर्ण, श्रीमान्, गैरद्रुम, वर ये पांच नाम हरिद्रुके हैं। हरिद्रु कफको हरता है तथा घावको शोधित और रोपित करता है ॥ ५८ ॥

करंजनामगुणाः ।

करञ्जो नक्तमालः स्यान्नक्ताह्वो घृतवर्णकः ।
पूतिकोऽन्यः पूतिवर्णः प्रकीर्णश्चिरबिल्वकः ॥ ५९ ॥

अर्थ–करंज, नक्तमाल, नक्ताह्व, घृतवर्णक, पूतिक, पूतिवर्ण, प्रकीर्ण, चिरबिल्वक ये आठ नाम करंजके हैं ॥ ५९ ॥

करञ्जः कटुकस्तीक्ष्णो वीर्योष्णो योनिदोषजित् ।
कुष्ठोदावर्त्तगुल्मार्शोव्रणकृमिकफापहः ॥ ६० ॥

अर्थ–करंज चर्परा है, तेज है, वीर्यमें गर्म है, योनिदोषको जीतता है और कुष्ठ, उदावर्त, गुल्म, बवासीर, घाव, कृमि, कफ इन्होंको नाशता है ॥ ६० ॥

तत्फलं कफवातघ्नं मेहार्शःकृमिकुष्ठजित् ।
तत्पत्रं कफवातार्शःकृमिशोथहरं परम् ॥ ६१ ॥

अर्थ–करंजका फल कफ, वात, प्रमेह, बवासीर, कृमि, कुष्ठ इन्होंको जीतता है। करंजका पत्ता कफ, वात, बवासीर, कृमि, शोजा इन्होंको हरता है और उत्तम है ॥ ६१ ॥

करञ्जीनामगुणाः ।

करञ्जी काकतिक्ता च वयस्याऽङ्गारवल्लरी ।
करञ्जिकोष्णवातार्शःकृमिकुष्ठप्रमेहनुत् ॥ ६२ ॥

अर्थ–करंजी, काकतिक्ता, वयस्या, अंगारवल्लरी ये चार नाम करंजीके हैं। करंजी उष्णवात, बवासीर, कृमि, कुष्ठ, प्रमेह इन्होंको दूर करती है ॥ ६२ ॥

तिरिगिच्छिनामगुणाः ।

तिरिगिच्छिर्गजकण्टः करञ्जी क्षीरिणी द्विपः।

तिरिगिच्छिर्बलासार्शःकृमिकुष्ठप्रमेहहृत् ॥ ६३ ॥

अर्थ–तिरिगिच्छी, गजकंट, करंजी, क्षीरिणी, द्विप ये पांच नाम तिरिगिच्छीके हैं। तिरिगिच्छी कफ, बवासीर, कृमि, कुष्ठ, प्रमेह इन्होंको हरती है ॥ ६३ ॥

शमीनामगुणाः।

शमी तुङ्गा शङ्कुफला पवित्रा केशहृत्फला।
लक्ष्मीः शिवान्याधिमती भूशमी शङ्कराह्वया ॥ ६४ ॥

अर्थ–शमी, तुंगा, शंकुफला, पवित्रा, केशहृत्फला, लक्ष्मी, शिवा, अधिमती, भूशमी, शंकराह्वया ये दश नाम जांठीके हैं ॥ ६४ ॥

शमी शीता लघुः श्वासकुष्ठार्शःकफहृत् सरा।
तत्फलं पित्तलं रूक्षं मेध्यं केशविनाशनम् ॥ ६५ ॥

अर्थ–जांठी शीतल और हलकी है, श्वास, कुष्ठ, बवासीर, कफ इन्होंको हरती है और सर है। जांठीका फल पित्तको उपजाता है, वृद्धिको बढाता और बालोंको नाशता है ॥ ६५ ॥

टिण्ठिणीनामगुणाः।

शमीषिका टिण्ठिणिका दुर्बलाऽम्बुशिरीषिका।
टिण्ठिणी कफकुष्ठार्शःसन्निपातविषापहा ॥ ६६ ॥

अर्थ–शमीषिका, टिंठिणिका, दुर्बला, अंबुशिरीषिका ये चार नाम झिंझिणीके हैं। झिंझिणी कफ, कुष्ठ, बवासीर, सन्निपात, विष इन्होंको नाशती है ॥ ६६ ॥

अरिष्टकनामगुणाः।

अरिष्टको गर्भपाती कुम्भवीर्यश्च फेनिलः।
कृष्णबीजो रक्तबीजः पीतफेनोऽर्थसाधनः।
अरिष्टकस्त्रिदोषघ्न उष्णो गर्भग्रहापहः ॥ ६७ ॥

अर्थ–अरिष्टक, गर्भपाती, कुंभवीर्य, फेनिल, कृष्णबीज, रक्तबीज, पीतफेन, अर्थसाधन ये आठ नाम रीठाके हैं। रीठा त्रिदोषको नाशता है, गर्म है, गर्भ और ग्रहदोषको दूर करता है ॥ ६७ ॥

शिंशपानामगुणाः।

शिंशपा कपिला कृष्णा सारमण्डलपत्रिका।
अन्या कुशिंशपा भस्मपिङ्गला स्याद्रसादनी ॥ ६८ ॥

अर्थ–शिंशपा, कपिला, कृष्णा, सारमंडलपात्रिका, कुशिंशपा, भस्मपिंगला, वसादनी ये सात नाम शीसमके हैं ॥ ६८ ॥

शिंशपोष्णा हरेन्मेहान् कुष्ठश्वित्रवमिकृमीन् ।
वस्तिरुग्व्रणदाहास्रगर्भगूढनिपातिनी ॥ ६९ ॥

अर्थ–शीसम गर्म है और प्रमेह, कुष्ठ, श्वित्रकुष्ठ, छर्दि, कृमि, वस्तिरोग, घाव, दाह, रक्त, गर्भ इन्होंको गिराती है ॥ ६९ ॥

अगस्त्यनामगुणाः ।

अगस्त्यो वङ्गसेनाह्वो मधुशिग्रुर्मुनिद्रुमः ।
अगस्त्यः पित्तकफजिन्निदाघशमनो हिमः ।
तत्पुष्पं नीलमश्लेष्मपित्तनक्तान्ध्यनाशनः ॥ ७० ॥

अर्थ–अगस्त्य, वंगसेनाह्व, मधुशिग्रु, मुनिद्रुम ये चार नाम अगस्तके हैं । अगस्तवृक्ष पित्त, कफ, गर्म इन्होंको जीतता है और शीतल है । अगस्तका फूल पीनस, कफ, पित्त, रतौंधी इन्होंको नाशता है ॥ ७० ॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेऽत्र ।
ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्णश्चित्रोऽयंललितपदैर्वटादिवर्गः ॥७१॥

अर्थ–राजाओंमें अत्यंत प्रधान जो कटारमल्ल उसी मदन राजाके रचित किये इस अमरविनोद नामक ग्रंथमें ललितपदोंसे वटादि वर्ग पूर्ण हुआ ॥ ७१ ॥

इति पञ्चमवर्गः ।

भ्रमोच्छलद्बर्हरिकाग्रपृष्ठं मन्दस्मितं वेणुनिनादरक्तम् ।
गोपालिकानां करतालिकाभिर्नृत्यन्महस्तत्परमं स्मरामि ॥ १ ॥

अर्थ–भ्रमनेसे उछलता है, अग्रभाग और पृष्ठभागसहित मंदमुसकानसहित बांसुरीके शब्दसे रागवाला और गोपियोंके हाथकी तालिकाओंकरके नाचता हुआ ऐसे उस उत्तम तेजको स्मरण करता हूं ॥ १ ॥

द्राक्षानामगुणाः ।

द्राक्षा मधुफला स्वाद्वी हारहूणा फलोत्तमा ।
मृद्वीका मधुयोनिश्च रसाला गोस्तनी गुडा ॥ २ ॥

अर्थ–द्राक्षा, मधुफला, स्वाद्वी, हारहूणा, फलोत्तमा, मृद्वीका, मधुयोनि, रसाला, गोस्तनी, गुडा ये दश नाम दाखके हैं ॥ २ ॥

द्राक्षा पक्का सरा शीता चक्षुष्या बृंहणी गुरुः ।
हन्ति तृष्णाज्वरश्वासवान्तिवातास्रकामलाः ॥ ३ ॥

अर्थ–पकी हुई दाख सर है, शीतल है, आंखोंमें हित करती है, धातुको पुष्ट करती है, भारी है और तृषा, ज्वर, श्वास, छर्दि, वातरक्त, कामला इन्होंको नाशती है ॥ ३ ॥

कृच्छ्रास्रपित्तसम्मोहदाहशोषमदात्ययान् ।
आमा साल्पगुणा गुर्वी सैवाम्ला रक्तपित्तकृत् ॥ ४ ॥

अर्थ–और यह मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, मोह, दाह, शोष, मदात्ययकोभी नाशती है । कच्ची दाख अल्पगुण करती है और भारी है तथा खट्टी दाख रक्तपित्तको करती है ॥ ४ ॥

निर्वीर्याऽन्या लघुद्राक्षा गोस्तनीसदृशा गुणैः ।
द्राक्षा पर्वतजा लघ्वी साम्लश्लेष्माल्पपित्तनुत् ॥ ५ ॥

अर्थ–छोटी दाख वीर्यसे रहित होती है, गौके थनके समान दाख गुणोंकरके समान होती है, पहाडमें उपजी दाख हलकी है और खट्टापन, कफ, अम्लपित्त इन्होंको जीतती है ॥ ५ ॥

पक्वापक्वशुष्काम्लाम्रनामगुणाः ।

आम्र चूतो रसालोऽसौ सहकारोऽतिसौरभः ।
माकन्दः पिकबन्धुः स्याद्रसालः कामवल्लभः ॥ ६ ॥

अर्थ–आम, चूत, रसाल, सहकार, अतिसौरभ, माकंद, पिकबंधु, रसाल, कामवल्लभ ये नव नाम पके आमके हैं ॥ ६ ॥

आम्रो ग्राही प्रमेहास्रकफपित्तव्रणान् जयेत् ।
तत्फलं बालमत्यम्लं रूक्षं दोषत्रयास्रजित् ॥ ७ ॥

अर्थ–आम्र मलको बांधता है और प्रमेह, रक्त, कफ, पित्त, घाव इन्होंको जीतता है । आमका कच्चा फल अत्यंत खट्टा और रूखा है तथा त्रिदोष और रक्तको जीतता है ॥ ७ ॥

पक्वं तु मधुरं वृष्यं स्निग्धं हृद्यं बलप्रदम् ।
गुरु वातहरं रुच्यं वर्ण्यं शीतमपित्तलम् ।
रसस्तस्य सरः स्निग्धो रोचनो बलवर्णकृत् ॥ ८ ॥

अर्थ–पका हुआ आम मीठा है, वीर्यको बढाता है, चिकना है, दिलको ताकत देता है, बल देता है, भारी है, वातको हरता है, रुचिको उपजाता है, रूपको निखारता है, शीतल है और पित्तको नहीं करता है। उसका रस सर है, चिकना है, रुचिको उपजाता है, बल और वर्णको करता है ॥ ८ ॥

सहकारं च वातघ्नं पित्तश्लेष्मविनाशनम् ।
कषायं मधुरं वृष्यं गुरु स्निग्धं विशेषतः ॥ ९ ॥

अर्थ–आम वातको नाशता है, पित्त कफको हरता है, कषैला है, मीठा है, धातुको पुष्ट करता है, भारी और विशेषकर चिकना है ॥ ९ ॥

पक्वाम्रं जनयेदायुर्मांसशुक्रबलप्रदम् ।
शुष्काम्रं तु कषायाम्लं भेदनं कफवातजित् ॥ १० ॥

अर्थ–पका हुआ आम आयुको करता है, मांस, वीर्य, बल इन्होंको देता है, सूखा आम कषैला है, खट्टा है, कफ और वातको जीतता है ॥ १० ॥

जम्बूनामगुणाः ।

महाजम्बू राजजम्बूर्महास्कन्धा बृहत्फला ।
क्षुद्रजम्बूर्वीरपत्रा मेघाभा कामवल्लभा ॥ ११ ॥

अर्थ–महाजम्बू, राजजम्बू, महास्कंधा, बृहत्फला, क्षुद्रजम्बू, वीरपत्रा, मेघाभा, कामवल्लभा ॥ ११ ॥

नादेयी स्यात् क्षुद्रफला तत्फलं जम्बु जाम्बवम् ।
जम्बूः संग्राहिणी रूक्षा कफपित्तव्रणास्रजित् ॥ १२ ॥

अर्थ–नादेयी, क्षुद्रफला ये दश नाम जामुनका हैं । जामुनके फल जंबु, जांबव इन दो नामोंवाला होता है । जामुन मलको बांधती है, रूखी है और कफ, पित्त, घाव, रक्त इन्होंको जीतती है ॥ १२ ॥

राजजम्बूफलं स्वादु विष्टंभि गुरु रोचनम् ।
क्षुद्रजम्बूफलं तद्वत् विशेषाद्दाहनाशनम् ॥ १३ ॥

अर्थ–राजजामुनका फल स्वादु है, विष्टंभ करता है, भारी है और रुचिको उपजाता है । छोटी जामुनका फलभी ऐसाही है, विशेषकर दाहको नाशता है ॥ १३ ॥

नारिकेलनामगुणाः ।

नारिकेलो दृढफलो महावृक्षो महाफलः ।
तृणराजस्तृणफलस्तृणाह्वो दृढबीजकः ॥ १४ ॥

अर्थ–नारिकेल, दृढफल, महावृक्ष, महाफल, तृणराज, तृणफल, तृणाह्व, दृढबीजक ये आठ नाम नारियलके हैं ॥ १४ ॥

नारिकेलफलं शीतं दुर्जरं बस्तिशोधनम् ।
विष्टम्भि बृंहणं वृष्यं वातपित्तास्रदाहजित् ॥ १५ ॥

अर्थ–नारियलका फल शीतल है, देरमें जरता है, बस्तिको शोधता है, विष्टंभ करता है, धातुको पुष्ट करता है, वीर्यको बढाता है और वात, पित्त, रक्त, दाह इन्होंको जीतता है ॥ १५ ॥

तस्याम्भः शीतलं हृद्यं दीपनं शुक्रलं लघु ।
तत्पादपशिरोमज्जा शुक्रला वातपित्तजित् ॥ १६ ॥

अर्थ–नारियलका रस शीतल है, दिलको ताकत देता है, अग्निको जगाता है, वीर्यको बढाता है और हलका है । नारियलवृक्षके शिरकी मज्जा वीर्यको बढाती है और वातपित्तको जीतती है ॥ १६ ॥

खर्जूरिकानामगुणाः ।

श्रेणी खर्जूरिकावृक्षः श्रीफला द्वीपसम्भवा ।
पिण्डखर्जूरिका खर्जूर्दुःप्रधर्षा सुकण्टका ॥ १७ ॥

अर्थ–श्रेणी, खर्जूरिकावृक्ष, श्रीफला, द्वीपसंभवा, पिंडखर्जूरिका, खर्जू, दुःप्रधर्षा, सुकंटका ॥ १७ ॥

अन्या स्कन्धफला स्वाद्वी दुरास्तेह मृदुच्छदा ।
भूमिखर्जूरिका काककर्कटी कासुकर्कटी ॥ १८ ॥

अर्थ–स्कंदफला, स्वाद्वी, दुरास्ता, मृदुच्छदा, भूमिखर्जूरिका, काककर्कटी, कासुकर्कटी ये पंद्रह नाम छुहारा और खजूरके हैं ॥ १८ ॥

खर्जूरिकाफलं शीतं स्वादु स्निग्धं क्षतास्रजित् ।
बल्यं हन्ति मरुत्पित्तं मदमूर्च्छामदात्ययान् ॥ १९ ॥

अर्थ–खजूरका फल शीतल है, स्वादु है, चिकना है, घाव और रक्तको जीतता है, बलमें हित है और वात, पित्त, मद, मूर्च्छा, मदात्यय इन्होंको नाशता है॥१९॥

तस्मादल्पगुणं ज्ञेयमन्यत् खर्जूरिकाफलम् ।
तन्मज्जा मूर्द्धजूः शीतो वृष्यः पित्तास्रदाहजित् ॥ २० ॥

अर्थ–छुहारामें इससे अल्प गुण हैं, छुहाराकी गिरी मस्तकरोगको जीतती है, शीतल है, धातुको पुष्ट करती है, पित्तरक्त और दाहको जीतती है ॥ २० ॥

शिलेमानीनामगुणाः ।

शिलेमानी लोकपरा मृदुला तिवरीफला ।
शिलेमानी श्रमभ्रान्तिदाहमूर्च्छास्रपित्तनुत् ॥ २१ ॥

अर्थ–शिलेमानी, लोकपरा, मृदुला, तिवरीफला ये चार नाम सुलेमानीके हैं । सुलेमानी परिश्रम, भ्रम, दाह, मूर्च्छा, रक्तपित्त इन्होंको दूर करती है ॥ २१ ॥

कदलीनामगुणाः ।

कदली ग्रन्थिनी मोचा रम्भा वीराऽऽयतच्छदा ।
कदली वारणबुसा रम्भामोचा महाफला ॥ २२ ॥

अर्थ–कदली, ग्रंथिनी, मोचा, रंभा, वीरा, आयतच्छदा, कदली, वारणबुसा, महाफला ये नव नाम केलाके हैं ॥ २२ ॥

कदली योनिदोषाश्मरक्तपित्तहरा हिमा ।
तत्कन्दः शीतलो बल्यः केश्यः पित्तकफास्रजित् ॥ २३ ॥

अर्थ–केला योनिदोष, पथरी, रक्तपित्त इन्होंको हरता और शीतल है । केलेका कंद शीतल है, बलको करता है, बालोंको बढाता है तथा पित्त, कफ, रक्त इन्होंको जीतता है ॥ २३ ॥

तत्फलं मधुरं शीतं विष्टम्भि कफकृद्गुरु ।
स्निग्धं पित्तास्रतृट्दाहक्षतक्षयसमीरजित् ॥ २४ ॥

अर्थ–केलेका फल मीठा और शीतल है, विष्टंभ करता और कफको करता है, भारी और चिकना है, पित्तरक्त, तृषा, दाह, क्षत, क्षय, वात इन्होंको जीतता है ॥२४॥

दाडिमीनामगुणाः ।

दाडिमी रक्तकुसुमा दन्तबीजा शुकप्रिया ।
दाडिमं दीपनं हृद्यं रोचनं नातिपित्तलम् ॥ २५ ॥

अर्थ–दाडिमी, रक्तकुसुमा, दंतबीजा, शुकप्रिया ये चार नाम अनारके हैं । अनार अग्निको जगाता है, दिलको ताकत देता है, रुचिको उपजाता है और अत्यंत पित्तको नहीं करता है ॥ २५ ॥

कषायानुरसं ग्राहि द्विविधा ह्यम्लवेतवत् ।
तयोः स्वादु त्रिदोषघ्नमम्लं वातबलास्रजित् ।
शुष्काम्लं दाडिमीसारः कृच्छ्रितं कफवातहृत् ॥ २६ ॥

अर्थ–कषैलाके अनुसार रसवाला है, मलको बांधता है और अम्लवेतसकी तरह दो प्रकारका है । उन दोनोंमें स्वादिष्ठ अनार त्रिदोषको नाशता है, खट्टा अनार वात, बल, रक्त इन्होंको जीतता है । सूखे हुए खट्टे अनारमेंभी येही गुण हैं । अनारका रस कफ और वातको हरता है ॥ २६ ॥

कतकनामगुणाः ।

कतकस्य फलं नेत्र्यं जलनिर्मलकारकम् ।
वातश्लेष्महरं शीतं मधुरं तुवरं गुरु ॥ २७ ॥

अर्थ–कतकफल आंखोंमें हित है, पानीको निर्मल करता है, वात और कफको हरता है, शीतल है, मीठा है, कषैला और भारी है ॥ २७ ॥

बदरीनामगुणाः ।

बदरी कर्कटी मोघा कोरण्टी युग्मकण्टका ।
अन्या स्निग्धच्छदा क्रोशफला सौवीरिकाऽपरा ॥ २८ ॥

अर्थ–बदरी, कर्कटी, मोघा, कोरंटी, युग्मकंटका, दूसरी–स्निग्धच्छदा, क्रोशफला, तीसरी–सौवीरिका ॥ २८ ॥

हस्तिकोलिः परा त्वन्या लघ्वी कर्कन्धुः कीधुका ।
बदरी शीतला तिक्ता रूक्षा पित्तकफापहा ।
बदरं त्वपरं लोके फेनिलं कुवलं कुहम् ॥ २९ ॥

अर्थ–चौथी–हस्तिकोलि, छोटी वडबेरी कर्कन्धु, कीधुका ऐसे नामोंवाली कहाती है । वडबेरी शीतल है, कडुवी है, रूखी है, पित्त और कफको नाशती है । संसारमें बेर फेनिल, कुवल, कुह ॥ २९ ॥

कर्कन्धु ह्रस्वबदरं वरटं च धुकन्धुकम् ।
पक्वमांसं च मधुरं मतं सौवीरकं महत् ॥३० ॥

अर्थ–कर्कंधु, ह्रस्वबदर, वरट, धुकंधुक और पका हुआ गूदेवाला बेर मीठा माना है, बडा बेर सौवीरक होता है ॥ ३० ॥

बदरं लघु संग्राहि रुच्यमुष्णं समीरजित् ।
कफपित्तकरं तद्वत् कोलं गुरु सरं स्मृतम् ॥ ३१ ॥

अर्थ–बेर हलका है, मलको बांधता है, रुचिको उपजाता है, गर्म है, वातको जीतता है, कफ-पित्तको करता है । कोल नामक बेर भारी और सर है ॥ ३१ ॥

सौवीरं बदरं शीतं भेदनं गुरु शुक्रलम् ।

बृंहणं पित्तदाहास्रक्षततृष्णानिलापहम् ।
शुष्कं भेद्यग्निकृत् सर्वं लघु तृष्णाकुमास्रजित् ॥ ३२ ॥

अर्थ–सौवीर बेर शीतल है, भेदन है, भारी है, वीर्यको उपजाता है, धातुको पुष्ट करता है और पित्त, दाह, रक्त, क्षत, तृषा, वात इन्होंको हरता है । सूखा बेर भेदी है, अग्निको करता है, हलका है और तृषा, ग्लानि, रक्त इन्होंको जीतता है ॥ ३२ ॥

कर्कन्धु मधुरं स्निग्धं गुरु पित्तानिलापहम् ।
मरुत्पित्तहरा मज्जा वृष्या वीर्यबलप्रदा ॥ ३३ ॥

अर्थ–छोटी बडबेरीका बेर मीठा है, चिकना है, भारी है, पित्त और वातको नाशता है, बेरकी गीरी वात-पित्तको हरती है, धातुको पुष्ट करती है, वीर्य और बलको देती है ॥ ३३ ॥

क्षीरीनामगुणाः ।

क्षीरी क्षत्रियराजाह्वा राजादनफलाशिनौ ।
राजन्यः स्तम्भनोऽन्योऽश्वचिबुको मुचिलिण्टकः ॥ ३४ ॥

अर्थ–क्षीरी, क्षत्रिया, राजाह्वा, राजादन, फलाशी, राजन्य, स्तंभन, अश्वचिबुक, मुचिलिंटक ये नव नाम खिरनीके हैं ॥ ३४ ॥

क्षीरवृक्षफलं शीतं स्निग्धं गुरु बलप्रदम् ।
तृष्णामूर्च्छामदभ्रान्तिक्षयदोषत्रयास्रजित् ॥ ३५ ॥

अर्थ–खिरनीका फल शीतल है, चिकना है, भारी है, बलको देता है और तृषा, मूर्च्छा, मद, भ्रम, क्षय, त्रिदोष, रक्त इन्होंको जीतता है ॥ ३५ ॥

चारनामगुणाः ।

चारो धनुःपटः शालः प्रियालो मुनिवल्लभः ।
चारः पित्तकफास्रघ्नस्तत्फलं मधुरं गुरु ॥ ३६ ॥

अर्थ–चार, धनुःपट, शाल प्रियाल, मुनिवल्लभ ये पांच नाम चिरोंजीके हैं । चिरोंजी पित्त, कफ, रक्त इन्होंको नाशती है । चिरोंजीका फल मीठा और भारी है ॥ ३६ ॥

स्निग्धं सरं मरुत्पित्तदाहतृष्णाक्षतापहम् ।
तन्मज्जा मधुरा वृष्या शुक्रला पित्तवातजित् ॥ ३७ ॥

अर्थ–चिकना है, सर है और वात, पित्त, दाह, तृषा, क्षत इन्होंको नाशता

है । चिरोंजीकी गीरी मीठी है, धातुको पुष्ट करती है, वीर्यको उपजाती है, पित्त और वातको जीतती है ॥ ३७ ॥

परूषकनामगुणाः ।

परूषको मृदुफलः परूषो रोषणः परः ।
परूषकं कषायाम्लमामपित्तकरं लघु ॥ ३८ ॥

अर्थ–परूषक, मृदुफल, परूष, रोषण, पर ये पांच नाम फालसाके हैं । फालसा कषैला है, खट्टा है, आम और पित्तको करता है तथा हलका है ॥ ३८ ॥

पक्वं तु मधुरं पाके शीतं विष्टम्भि बृंहणम् ।
हृद्यं तृट्पित्तदाहास्रक्षतक्षयसमीरनुत् ॥ ३९ ॥

अर्थ–पका हुआ फालसा पाकमें मीठा है, शीतल है, विष्टंभी है, धातुको पुष्ट करता है, दिलको ताकत देता है और तृषा, पित्त, दाह, रक्त, क्षत, क्षय, वात इन्होंको दूर करता है ॥ ३९ ॥

तिंदुकनामगुणाः ।

तिन्दुकः स्पन्दनः स्फूर्ज्यः कालसारश्च रावणः ।
काकपीलुः कुपीलुः स्यादपरो विषतिन्दुकः ॥ ४० ॥

अर्थ–तिंदुक, स्पंदन, स्फूर्ज्य, कालसार, रावण, काकपीलु, कुपीलु ये सात नाम तेंदुके हैं । दूसरा–विषातिंदुक नामवाला होता है ॥ ४० ॥

तिन्दुको व्रणवातघ्नस्तत्सारः पित्तरोगजित् ।
आममस्य फलं ग्राहि वातलं शीतलं लघु ॥ ४१ ॥

अर्थ–तेंदु घाव और वातको नाशता है । इसका सार पित्तरोगको जीतता है । तेंदुका कच्चा फल मलको बांधता है, वातको करता है, शीतल और हलका है॥४१॥

पक्वं पित्तप्रमेहास्रश्लेष्मघ्नं विशदं गुरु ।
विषतिन्दुकमप्येवं विशेषात् ग्राहि शीतलम् ॥ ४२ ॥

अर्थ–पका हुआ फल पित्त, प्रमेह, रक्त, कफ इन्होंको नाशता है और भारी है । विषतेंदुमेंभी येही गुण हैं, विशेषकर मलको बांधता है और शीतल है ॥४२॥

किंकिणीनामगुणाः ।

किङ्किणीलो व्याघ्रपादो देवदारुश्चरः क्वचित् ।
किङ्किणी तुवरा तिक्ता पित्तश्लेष्महरा हिमा ।
तत्फलं वातलं त्वामं पक्वं स्वादु त्रिदोषजित् ॥ ४३ ॥

अर्थ–किंकिणील, व्याघ्रपाद, देवदारु, चर ये चार नाम कांकईके हैं । कांकई कषैली है, कडुवी है, पित्त और कफको हरती है तथा शीतल है । कांकईका कच्चा फल वातको करता है, पका फल स्वादु है और त्रिदोषको जीतता है ॥ ४३ ॥

आरुकनामगुणाः ।

आरुकं वीरसेनं तज्जातिभेदाच्चतुर्विधम् ।
आरुकं जारकं वातमेहार्शःकफनाशनम् ॥ ४४ ॥

अर्थ–आरुक, वीरसेन जातिके भेदसे चार प्रकारका है । आडू वात, प्रमेह, बवासीर, कफ इन्होंको नाशता है ॥ ४४ ॥

मधूकनामगुणाः ।

मधूको मधुकस्तीक्ष्णः सारश्च गुडपुष्पकः ।
गोलाफलो मधुकोष्ठो मधुकोष्ठी मधुद्रुमः ॥ ४५ ॥

अर्थ–मधूक, मधुक, तीक्ष्ण, सार, गुडपुष्पक, गोलाफल, मधुकोष्ठ, मधुकोष्ठी, मधुद्रुम ये नव नाम महुआके हैं ॥ ४५ ॥

मधुकान्यो ह्रस्वफलो मधुरो दीर्घपुष्पकः ।
मधुकः कफवातघ्नः कषायो व्रणरोपणः ॥ ४६ ॥

अर्थ–दूसरा महुवा ह्रस्वफल, मधुर, दीर्घपुष्पक इन तीन नामोंवाला है । महुवा कफ-वातको नाशता है, कषैला है और घावको रोपता है ॥ ४६ ॥

तत्पुष्पं मधुरं बल्यं शीतलं गुरु बृंहणम् ।
फलं शीतं गुरु स्वादु शुक्रलं वातपित्तजित् ।
अत्यर्थं हन्ति तृष्णास्रदाहश्वासक्षतक्षयान् ॥ ४७ ॥

अर्थ–महुवाका फूल मीठा है, बलको करता है, शीतल है, भारी है और धातुको पुष्ट करता है । महुवाका फल शीतल है, भारी है, स्वादु है, वीर्यको करता है, वातपित्तको जीतता है, दिलको ताकत नहीं देता है और तृषा, रक्त, दाह, श्वास, क्षत, क्षय इन्होंको हरता है ॥ ४७ ॥

पनसनामगुणाः ।

पनसः कण्टकिफलः श्वासहा गर्भकण्टकः ।
पनसं शीतलं पक्वं स्निग्धं पित्तानिलापहम् ॥ ४८ ॥

अर्थ–पनस, कंटकिफल, श्वासहा, गर्भकंटक ये चार नाम कटहलके हैं । कटहल शीतल है, चिकना है, पित्तवातको हरता है ॥ ४८ ॥

बल्यं शुक्रप्रदं हन्ति रक्तपित्तक्षतक्षयान् ।
आमं तदेव विष्टम्भि वातलं तुवरं लघु ॥ ४९ ॥

अर्थ–बल देता है, वीर्यको देता है और रक्तपित्त, क्षत, क्षय इन्होंको नाशता है । कच्चा कटहल विष्टंभ करता है, वातको उपजाता है, कषैला और हलका है॥४९॥

लकुचनामगुणाः ।

लकुचः क्षुद्रपनसो निकुचो ग्रन्थिमत्फलः ।
लकुचं गुरु विष्टम्भि स्वाद्वम्लं रक्तपित्तकृत् ।
श्लेष्मकारि समीरघ्नमुष्णं शुक्राग्निनाशनम् ॥ ५० ॥

अर्थ–लकुच, क्षुद्रपनस, निकुच, ग्रन्थिमत्फल ये चार नाम बढहलके हैं । बढहल भारी है, विष्टंभ करता है, स्वादु है, खट्टा है, रक्तपित्त और कफको करता है, वातको नाशता है, गर्म है, वीर्य और अग्निको नाशता है ॥ ५० ॥

तालनामगुणाः ।

तालो ध्वजो दुरारोहस्तृणराजो महाद्रुमः ।
तालः शीतो मरुत्पित्तव्रणजिन्मदशुक्रकृत् ॥ ५१ ॥

अर्थ–ताल, ध्वज, दुरारोह, तृणराज, महाद्रुम ये पांच नाम ताडके हैं । ताड शीतल है और वात, पित्त, घाव इन्होंको जीतता है, मद और वीर्यको करता है॥५१॥

तत्फलं शीतलं बल्यं स्निग्धं स्वादु रसं गुरु ।
विष्टम्भि वातपित्तास्रक्षतदाहक्षतापहम् ।
बीजं मूत्रकरं वृष्यं वातपित्तहरं हिमम् ॥ ५२ ॥

अर्थ–ताडका फल शीतल है, बलको करता है, चिकना है, स्वादु रसवाला है, भारी है और विष्टंभ करता है तथा वात, पित्त, रक्त, क्षत, दाह इन्होंको नाशता है । ताडका बीज मूत्रको करता है, धातुको पुष्ट करता है वातपित्तको हरता है और शीतल है ॥ ५२ ॥

खर्बूजनामगुणाः ।

खर्बूजं फलराजः स्यादमृताह्वं दशाङ्गुलम् ॥ ५३ ॥

अर्थ–खर्बूज, फलराज, अमृताह्व, दशांगुल ये चार नाम खर्बूजाके हैं ॥ ५३ ॥

खर्बूजं मूत्रलं बल्यं कोष्ठशुद्धिकरं गुरु ।
स्निग्धं स्वादुकरं शीतं वृष्यं पित्तानिलापहम् ॥ ५४ ॥

अर्थ–खर्बूजा मूत्रको देता है, बलको करता है, कोष्ठकी शुद्धि करता है, भारी है,

चिकना है, स्वादु है, शीतल है, धातुको पुष्ट करता है और पित्तवातको हरता है ॥ ५४ ॥

तेषु यच्चाम्लमधुरं सक्षारं च रसाद्भवेत् ।
रक्तपित्तकरं तत्तु मूत्रकृच्छ्रकरं परम् ॥ ५५ ॥

अर्थ–सब तरहके खर्बूजोंमें जो खट्टा और मीठा है और जो रससे खारा होता है वह खर्बूजा रक्तपित्तको और मूत्रकृच्छ्रको जरूर करता है ॥ ५५ ॥

सेवनामगुणाः ।

हिमं स्यन्दनकं स्निग्धं मूत्रलं स्वादु शीतलम् ।
त्वग्दाहमन्तर्दाहं च हृत्कम्पान् पित्तसम्भवान् ।
हरेत्तत् सञ्चितमलं ज्वरघ्नं तु विषापहम् ॥ ५६ ॥

अर्थ–सेव शीतल है, झिराता है, चिकना है, मूत्रको करता है, स्वादु है और खालमें दाह, भीतर दाह, पित्तसे उपजे हृत्कंप, संचित मल, ज्वर, विष इन्होंको नाशता है ॥ ५६ ॥

मुष्टिप्रमाणं बदरं सेवं सीवफलं तथा ॥ ५७ ॥

अर्थ–मुष्टिप्रमाण, बदर सेव, सीवफल ॥ ५७ ॥

फलं च सितिकापूर्वं वातपित्तहरं गुरु ।
बृंहणं कफकृत् वृष्यं स्वादु पाकरसं हिमम् ॥ ५८ ॥

अर्थ–सितिकाफल ये पांच नाम सेवके हैं । यह वातपित्तको हरता है, भारी है, धातुको पुष्ट करता है, कफको करता है, स्त्रीसंगमें हित है, स्वादु है तथा पाकमें और रसमें शीतल है ॥ ५८ ॥

अमृतनामगुणाः ।

अन्यदम्भःफलं चान्यो महत्सिञ्चितिकाफलम् ।
अमृतं गुरु वातघ्नं स्वाद्वम्लं रुचिशुक्रकृत् ।
अपरं सेवगुणकृत् विशेषात् तुवरं हिमम् ॥ ५९ ॥

अर्थ–दूसरा अंभःफल, महत्सिंचितिकाफल इन दो नामोंवाला है । यह सेवके समान गुण करता है, विशेषकर कषैला और शीतल है ॥ ५९ ॥

अमृताह्वं रुचिफलं लघुबिल्वं फलाकृति ।
अमृतं गुरु वातघ्नं स्वाद्वम्लरुचिशुक्रकृत् ॥ ६० ॥

अर्थ–अमृताह्व, रुचिफल, लघुबिल्व, फलाकृति ये चार नाम अमृतफलके हैं। अमृतफल गर्म है, वातको नाशता है, स्वादु है, खट्टा है, रुचि और वीर्यको करता है ॥ ६० ॥

बादामनामगुणाः ।

बादामं सुफलं वातवैरि नेत्रोपमं मतम् ।
बादाममुष्णं सुस्निग्धं वातघ्नं बलशुक्रकृत् ॥ ६१ ॥

अर्थ–बादाम, सुफल, वातवैरि, नेत्रोपम ये चार नाम बादामके हैं। बादाम गर्म है, बहुत चिकना है, वातको नाशता है, बल और वीर्यको करता है ॥ ६१ ॥

पित्तनामगुणाः ।

निकोचकं चारुफलमंकोटं गलकोजकम् ।
पित्तं मुकुलकं ज्ञेयं दन्तीफलसमाकृति ॥ ६२ ॥

अर्थ–निकोचक, चारुफल, अंकोट, गलकोजक, पित्त, मुकुलक, दंतीफलसमाकृति ये सात नाम पिस्ताके हैं ॥ ६२ ॥

निकोचकं गुरु स्निग्धं वृष्योष्णं स्वादु बृंहणम् ।
रक्तप्रसादनं बल्यं वातघ्नं कफपित्तकृत् ।
तद्वन्मुकूलकं ज्ञेयं विशेषात् गुरु दुर्जरम् ॥ ६३ ॥

अर्थ–पिस्ता भारी है, चिकना है, स्त्रीसंगमें गुण देता है, गर्म है, स्वादु है, धातुको पुष्ट करता है, रक्तको बदलता है, बलको करता है, वातको नाशता है, तथा कफ और पित्तको करता है। चिलगोजामेंभी येही गुण हैं। विशेषकर देरमें जरता है और भारी है ॥ ६३ ॥

एलागुणाः ।

एलानामामवातघ्नमम्लोष्णं गुरु रेचनम् ।
पक्वं स्वादु हिमं बल्यं वातपित्तविनाशनम् ॥ ६४ ॥

अर्थ–एला अर्थात् इलायची आमवातको नाशती है, खट्टी है, गर्म है, भारी है, दस्तावर है। पकी हुई इलायची स्वादु है, शीतल है, बलको करती है और वातपित्तको नाशती है ॥ ६४ ॥

आलुनामगुणाः ।

आलूकमल्लभल्लूकं भल्लू रक्तफलं तथा ।
आलूकं रसतः शीतं स्वाद्वम्लं वातपित्तकृत् ॥ ६५ ॥

अर्थ–आल्लूक, अल्लू, भल्लूक, भल्लू, रक्तफल ये पांच नाम आलूके हैं। आलू रसमें शीतल है, स्वादु है, खट्टा है, वात और पित्तको करता है ॥ ६५ ॥

अञ्जीरनामगुणाः ।

अञ्जीरं मज्जलं ज्ञेयं काकोदुम्बरिकाफलम् ।
अञ्जीरं शीतलं स्वादु गुरु पित्तास्रवातजित् ।
तस्मादन्यगुणं ज्ञेयमञ्जीरं लघु वा गुणैः ॥ ६६ ॥

अर्थ–अंजीर, मज्जल, काकोदुंबरिकाफल ये तीन नाम अंजीरके हैं। अंजीर शीतल है, स्वादु है, भारी है, पित्तरक्त और वातको जीतता है। लघु अंजीर इससे भिन्न गुणवाला है ॥ ६६ ॥

आक्षोटनामगुणाः ।

आक्षोटको वैधृतफलं कन्दलाभः पृथुच्छदः ।
आक्षोटं मधुरं बल्यं गुरूष्णं वातहृत् सरम् ॥ ६७ ॥

अर्थ–आक्षोटक, वैधृतफल, कंदलाभ, पृथुच्छद ये चार नाम अखरोटके हैं। अखरोट मीठा है, बलको करता है, भारी है, गर्म है, वातको हरता है और सर है ६७

पालेवतनामगुणाः ।

पालेवतं सितं पुष्पैस्तिन्दुकं च फलं स्मृतम् ।
अन्यं मानवकं ज्ञेयं महापालेवतं तथा ॥ ६८ ॥

अर्थ–पालेवत, सितपुष्प, तिंदुकफल ये तीन नाम पालेवतके हैं। दूसरेके मानवक, महापालेवत ये दो नाम हैं ॥ ६८ ॥

तद्वन्मानवकं हृद्यं तृष्णाघ्नमिष्टमम्लकम् ।
पालेवतं हिमं स्वादु गुरूष्णं वह्निवातजित् ॥ ६९ ॥

अर्थ–महापालेवत दिलको ताकत देता है, तृषाको नाशता है, वांछित और खट्टा है। पालेवत शीतल है, स्वादु है, भारी है, गर्म है, अग्नि और वातको जीतता है ॥ ६९ ॥

तूतनामगुणाः ।

तूतं तूदं ब्रह्मकोषं ब्राह्मण्यं ब्रह्मदारु च ।
तूतं गुरु हिमं पक्वं स्वादु पित्तानिलापहम् ॥ ७० ॥

अर्थ–तूत, तूद, ब्रह्मकोष, ब्राह्मण्य, ब्रह्मदारु ये पांच नाम सहतूतके हैं। सहतूत शीतल है, पका हुआ स्वादु है, भारी है, गर्म है और पित्त-वातको नाशता है ॥ ७० ॥

गंगेरुनामगुणाः ।

गङ्गेरुकं कर्कटकं कारकं मृगलिण्डकम् ।
तोदनं क्रन्दनं चान्यन्मृगविट्सदृशं तथा ॥ ७१ ॥

अर्थ–गंगेरुक, कर्कटक, कारक, मृगलिंडक ये चार नाम गंगेरुवाके हैं । दूसरेके तोदन, क्रंदन, मृगविट्सदृश ये तीन नाम हैं ॥ ७१ ॥

गङ्गेरु रेचनं पक्कं गुरु वातास्रजिन्मतम् ।
तोदनं ग्राहि मधुरं वातपित्तहरं लघु ॥ ७२ ॥

अर्थ–गंगेरुवा दस्तावर है, पका हुआ भारी है और वातरक्तको जीतता है । तोदन मलको बांधता है, मीठा है, वातपित्तको हरता है और हलका है ॥ ७२ ॥

तुम्बरनामगुणाः ।

तुम्बरा टित्रिकं साम्लमुष्णमामं तु पित्तलम् ।
कालायनफलैः पत्रैः केशराभैः समुद्रजैः ॥ ७३ ॥

अर्थ–तुंबर, टित्रिक ये दो नाम तुंवरके हैं । यह गर्म और खट्टा है, कच्चा तुंवर पित्तको करता है । समुद्रमें उपजे और केशरके समान शोभावाले ऐसे कालायनके फल और पत्तोंके समान ॥ ७३ ॥

वृक्षस्तुम्बरको ज्ञेयो भल्लातकसमो गुणैः ।
तुम्बरं कफजित् पाके कटूष्णं व्रणमेहकृत् ॥ ७४ ॥

अर्थ–तुंबर वृक्ष जानना । इसमें भिलावेके समान गुण हैं, तुंवर कफको जीतता है, पाकमें चर्परा है, गर्म है तथा घाव और प्रमेहको करता है ॥ ७४ ॥

बीजपूरनामगुणाः ।

बीजपूरो मातुलिङ्गः कुशरी फलपूरकः ।
बीजपूरफलं रुच्यं रसाम्लं दीपनं लघु ॥ ७५ ॥

अर्थ–बीजपूर, मातुलिंग, कुशरी, फलपूरक ये चार नाम बिजौराके हैं । बिजौराका फल रुचिको करता है, रसमें खट्टा है, अग्निको जगाता है और हलका है ॥७५॥

रक्तपित्तकरं कण्ठ्यं जिह्वाहृच्छोधनं परम् ।
तन्मांसं बृंहणं शीतं गुरुपित्तसमीरजित् ॥ ७६ ॥

अर्थ–रक्तपित्तको करता है, कंठमें हित है, जीभ और हृदयको शोधता है । बिजौरेका गूदा धातुको पुष्ट करता है, शीतल है, भारी है, पित्त और वातको जीतता है ॥ ७६ ॥

केशरं लघु संग्राहि शूलगुल्मोदरापहम् ।
बीजमुष्णं कृमिश्लेष्मवातजिद्गर्भदं गुरु ॥ ७७ ॥

अर्थ–बिजौरेकी केशर हलकी है, मलको बांधती है और शूल, गुल्म, उदररोग इन्होंको नाशती है । बिजौरेका बीज गर्म है और कृमि, कफ, वात इन्होंको जीतता है, गर्भको देता है तथा भारी है ॥ ७७ ॥

तत्पुष्पं वातलं ग्राहि रक्तपित्तहरं लघु ।
शूलाजीर्णविबन्धेषु मन्दाग्नौ कफमारुते ।
अरुचौ श्वासकासेषु रसस्तस्योपदृश्यते ॥ ७८ ॥

अर्थ–बिजौरेका फूल वातको करता है, मलको बांधता है, रक्तपित्तको हरता है और हलका है । शूल, अजीर्ण, बंधा, मंदाग्नि, कफ, वात, अरुचि, श्वास, खांसी इन्होंमें बिजौरेका रस उत्तम है ॥ ७८ ॥

मधुकर्कटीनामगुणाः ।

मधुकर्कटिका स्वादुर्लुङ्गी घण्टालिका घटा ।
मधुकर्कटिका शीता रक्ता पित्तहरा गुरुः
तन्मूलं तु विषूचिघ्नं कर्णशोथविनाशनम् ॥ ७९ ॥

अर्थ–मधुकर्कटिका, स्वादु, लुङ्गी, घंटालिका, घटा ये पांच नाम मधुककडीके हैं । मधुककडी शीतल है, लाल रंगकी पित्तको हरती है, भारी है, मधुककडीकी जड हैजा और कानके शोजाको नाशती है ॥ ७९ ॥

नारङ्गीनामगुणाः ।

नारङ्गी नागरङ्गः स्याद्गोरक्षो योगसागरः ।
नारङ्गमम्लमत्युष्णं पित्तवातहरं सरम् ।
स्वाद्वम्लमपरं हृद्यं दुर्जरं वातनाशनम् ॥ ८० ॥

अर्थ–नारंगी, नागरंग, गोरक्ष, योगसागर ये चार नाम नारंगीके हैं । नारंगी खट्टी है, अत्यंत गर्म है, पित्तवातको हरती है, सर है और स्वादु है । खट्टी नारंगी दिलको ताकत देती है, देरमें जरती है और वातको नाशती है ॥ ८० ॥

जंभीरीनामगुणाः ।

जम्भीरको दन्तसटो जम्भीरो जङ्गलो मतः ।
जम्भीरमम्लं शूलघ्नं गुरूष्णं कफवातजित् ।

आस्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमान्द्यकृमीन् जयेत् ॥ ८१ ॥

अर्थ–जंबीरक, दंतसट, जंबीर, जंगल ये चार जंभीरीके हैं। जंभीर नींबू खट्टा है, शूलको नाशता है, भारी है, गर्म है, कफवातको जीतता है और मुखका विरसपना, हृत्पीडा, मंदाग्नि, कृमि इन्होंको जीतता है ॥ ८१ ॥

अम्लवेतसनामगुणाः ।

अम्लोऽम्लवेतसश्चुक्रो वेतसः शरभेदकः ।
अम्लवेतसमत्युष्णं भेदनं लघु दीपम् ॥
हृद्रोगशूलगुल्मघ्नं पित्ततृट्कफदूषणम् ॥ ८२ ॥

अर्थ–अम्ल, अम्लवेतस, चुक्र, वेतस, शरभेदक ये पांच नाम अम्लवेतसके हैं। अम्लवेतस अत्यंत गर्म है, भेदन है, हलकी है, अग्निको जगाती है और हृद्रोग, शूल, गुल्म इन्होंको नाशती है, भारी है और पित्त, तृषा, कफ इन्होंको दूषित करती है ॥ ८२ ॥

साराम्लनामगुणाः ।

साराम्लकः सारगुलो रसालः सारपादपः ।
साराम्लमम्लवातघ्नं गुरु पित्तकफप्रदम् ॥ ८३ ॥

अर्थ–साराम्लक, सारगुल, रसाल, सारपादप ये चार नाम साराम्लके हैं। साराम्ल अम्लवातको नाशता है, भारी है, पित्त और कफको देता है ॥ ८३ ॥

निम्बूनामगुणाः ।

निम्बूकं निम्बुकं राजनिम्बूकमपरं स्मृतम् ।
निम्बूकमम्लं वातघ्नं पाचनं दीपनं लघु ।
राजनिम्बूफलं स्वादु गुरु पित्तसमीरजित् ॥ ८४ ॥

अर्थ–निम्बूक, निंबुक ये दो नाम नींबूके हैं। दूसरा राजनिंबूक नामक होता है। नींबू खट्टा है, वातको नाशता है, पाचन है, अग्निको जगाता है और हलका है। राजनिंबू स्वादु है, भारी है, पित्त और वातको जीतता है ॥ ८४ ॥

कर्मरङ्गनामगुणाः ।

कर्मरङ्गं नागफलं भव्यं पिच्छिलबीजकम् ।
कर्मरङ्गं हिमं ग्राहि स्वाद्वम्लं कफपित्तजित् ॥ ८५ ॥

अर्थ–कर्मरंग, नागफल, भव्य, पिच्छिलबीजक ये चार नाम कमरखके हैं। कमरख शीतल है, मलको बांधता है, स्वादु है, खट्टा है और कफपित्तको जीतता है॥८५॥

अम्लीनामगुणाः ।

आम्लिका चुक्रिका चिञ्चा तिन्तिडी शुक्तिचन्द्रिका ।
अम्लिकामा गुरुर्वातहरा पित्तकफास्रजित् ॥ ८६ ॥

अर्थ–अम्लिका, चुक्रिका, चिंचा, तिंतिडी, शुक्तिचंद्रिका ये पांच नाम इमलीके हैं । कच्ची इमली भारी है, वातको हरती है और पित्त, कफ, रक्त इन्होंको जीतती है ॥ ८६ ॥

पक्का तद्वत्सरा रुच्या वह्निबस्तिविशुद्धिकृत् ।
शुष्का हृद्या श्रमभ्रान्तितृष्णाक्लमहरा लघुः ॥ ८७ ॥

अर्थ–पकी इमली भारी है, रुचिको उपजाती है और अग्नि तथा बस्तिकी शुद्धि करती है । सूखी इमली दिलको ताकत देती है और परिश्रम, भ्रम, तृषा, ग्लानि इन्होंको हरती है और हलकी है ॥ ८७ ॥

तिन्तिडीकनामगुणाः ।

तिन्तिडीकं तु वृक्षाम्लमम्लशाकोऽम्लपादपः ।
तिन्तिडीकं समीरघ्नमाममुष्णं परं गुरु ।
तत्पक्वं लघु संग्राहि ग्रहणीकफवातजित् ॥ ८८ ॥

अर्थ–तिंतडीक, वृक्षाम्ल, अम्लशाक, अम्लपादप ये चार नाम तिंतडीकके हैं । कच्चा तिंतडीक वातको नाशता है, गर्म और भारी है । पका हुआ तिंतडीक हलका है, मलको बांधता है और ग्रहणी, कफ, वात इन्होंको जीतता है ॥ ८८ ॥

करमर्दीनामगुणाः ।

करमर्दी सुषेणा स्यादन्या कृष्णफला मता ।
करमर्दी गुरूष्णाम्लं रक्तपित्तकफप्रदम् ।
तत्पक्वं मधुरं रुच्यं लघु पित्तसमीरजित् ॥ ८९ ॥

अर्थ–करमर्दी, सुषेणा, कृष्णफला ये तीन नाम करोंदाके हैं । करोंदा भारी है, गर्म है, खट्टा है और रक्तपित्त, कफ इन्होंको देता है । पका हुआ करोंदा मीठा है, रुचिको उपजाता है, हलका है तथा पित्त और वातको जीतता है ॥ ८९ ॥

कपित्थनामगुणाः ।

कपित्थको दधिफलः कपित्थः सुरभिच्छदः ।
कपित्थमामं संग्राहि लघु दोषत्रयापहम् ॥ ९० ॥

अर्थ-कपित्थक, दधिफल, कपित्थ, सुरभिच्छद ये चार नाम कैथके हैं । कच्चा कैथ मलको बांधता है, हलका है और त्रिदोषको नाशता है ॥ ९० ॥

पक्वं गुरु तृषाहिक्काशमनं वातपित्तजित् ।
स्वाद्वम्लं तुवरं कण्ठशोधनं ग्राहि दुर्जरम् ॥ ९१ ॥

अर्थ-पका हुआ कैथ भारी है, तृषा और हिचकीको शांत करता है, वातपित्तको जीतता है, स्वादु है, खट्टा है, कषैला है, कंठको शोधता है, मलको बांधता है और देरमें जरता है ॥ ९१ ॥

कपित्थपत्रीनामगुणाः ।

कपित्थपत्री फणिजा कुलजा जीवपत्रिका ।
कपित्थपत्री तीक्ष्णोष्णा कफमेहविषापहा ॥ ९२ ॥

अर्थ-कपित्थपत्री, फणिजा, फलजा, जीवपत्रिका ये चार नाम कैथपत्रीके हैं । कैथपत्री तेज है, गर्म है और कफ, प्रमेह, विष इन्होंको नाशती है ॥ ९२ ॥

आम्रातकनामगुणाः ।

आम्रातकश्चाम्रवटः फली मोदः फलः कपिः ।
आम्रातमामवातघ्नं गुरूष्णं रुचिकृत् सरम् ।
पक्वं स्वादु हिमं वृष्यं मरुत्पित्तक्षयास्रजित् ॥ ९३ ॥

अर्थ-आम्रातक, आम्रवट, फली, मोद, फल, कपि ये छः नाम अंबाडेके हैं । कच्चा अंबाडा वातको नाशता है, भारी है, गर्म है, रुचि करता है और सर है । पका हुआ अंबाडा स्वादु है, शीतल है, धातुको पुष्ट करता है और वातपित्त, क्षय, रक्त इन्होंको जीतता है ॥ ९३ ॥

राजाम्रनामगुणाः ।

राजाम्राह्वं काम्रनामा कामाह्वो राजपुत्रकः ।
राजाम्रं मधुरं शीतं ग्राहि पित्तकफापहम् ॥ ९४ ॥

अर्थ-राजाम्राह्व, काम्रनाम, कामाह्व, राजपुत्रक ये चार नाम राजा आमके हैं । राजा आम मीठा है, शीतल है, मलको बांधता है, पित्त और कफको नाशता है ॥ ९४ ॥

पञ्चाम्लनामगुणाः ।

वृक्षाम्लं दाडिमीचिञ्चाकपित्थैश्चतुराम्रकम् ।
अम्लवेतसवृक्षाम्लं दाडिमो बदरः क्वचित् ।
बीजपूरयुतैरेतैः पञ्चाम्लमुदितं बुधैः ॥ ९५ ॥

अर्थ–तिंतडीक, अनार, इमली, कैथ इन्होंकरके चतुराम्ल होता है । आम्लवेत, तिंतडी, अनार, बेर, बिजौरा इन्होंकरके पंडितोंने पंचाम्ल कहा है ॥ ९५ ॥

कोशाम्रनामगुणाः ।

कोशाम्रको घनस्कन्धो जन्तुवृक्षश्च कोशकः ।
कोशाम्रः कुष्ठशोथास्रपित्तव्रणकफापहः ॥ ९६ ॥

अर्थ–कोशाम्रक, घनस्कंध, जंतुवृक्ष, कोशक ये चार नाम कोशाम्रके हैं । कोशाम्र कुष्ठ, शोजा, रक्तपित्त, घाव और कफको नाशता है ॥ ९६ ॥

तत्फलं ग्राहि वातघ्नमम्लोष्णं गुरु पित्तलम् ।
पक्वं तद्दीपनं रुच्यं लघूष्णं कफवातजित् ।
मज्जा पित्तसमीरघ्ना स्वादुर्बल्याऽग्निदीपना ॥ ९७ ॥

अर्थ–कोशाम्रका फल मलको बांधता है, वातको नाशता है, खट्टा है, गर्म है, भारी है और पित्तको करता है । पका हुआ कोशाम्र अग्निको जगाता है, रुचिको उपजाता है, हलका है, गर्म है और कफवातको जीतता है । इसकी गिरी पित्त-वातको नाशती है, स्वादु है, बलको करती है, अग्निको जगाती है ॥ ९७ ॥

पूगीफलनामगुणाः ।

क्रमूकं क्रमुकं पूगं पूगीफलमुदाहृतम् ।
पूगं गुरु हिमं रूक्षं कषायं कफपित्तजित् ॥ ९८ ॥

अर्थ–क्रमूक, क्रमुक, पूग, पूगीफल ये चार नाम सुपारीके हैं । सुपारी भारी है, शीतल है, रूखी है, कषैली है और कफपित्तको जीतती है ॥ ९८ ॥

मोहनं दीपनं रुच्यमास्यवैरस्यनाशनम् ।
आर्द्रं तद्दुर्वभिष्यन्दि वह्निदृष्टिहरं परम् ॥ ९९ ॥

अर्थ–यह मोह करती है, अग्निको जगाती है, रुचिको उपजाती है और मुखके विरसपनेको नाशती है । गीली सुपारी भारी है, कफ करती है, अग्नि और दृष्टिको हरती है ॥ ९९ ॥

स्निग्धं त्रिदोषहृत्सर्वं पक्वं शुष्कं तु वातलम् ।
पूगं स्यात् दृढमध्येष्टं तद्धि नानाविधं हिमम् ॥ १०० ॥

अर्थ–पकी हुई चिकनी सुपारी त्रिदोषको हरती है, सूखी सुपारी वातको करती है, बरडी सुपारी बहुत अच्छी है, अनेक प्रकारकी सुपारी होती है सो शीतल है १००

पाकदेशविभेदेन चिक्कणं सर्पदोषनुत्।
कृमिकृत् पूगपुष्पं तु कषायं मधुरं गुरु।
स्निग्धं त्रिदोषहृत् बल्यं तद्भेदास्तद्वदादिशेत् ॥ १ ॥

अर्थ–पाक और देशभेदकरके चिकनी सुपारी सब दोषोंको हरती है। सुपारीका फूल कृमि करता है, कषैला है, मीठा और भारी है। चिकनी सुपारी त्रिदोषको हरती है, बलको करती है, चिकनी सुपारीके भेदोंमेंभी येही गुण हैं ॥ १ ॥

ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागिनी नागवल्लरी।
ताम्बूलं विशदं रुच्यं तीक्ष्णोष्णं तुवरं सरम् ॥ २ ॥

अर्थ–ताबूलवल्ली, तांबूली, नागिनी, नागवल्लरी, तांबूल ये पांच नाम नागरपानके हैं। नागरपान दिलको ताकत देता है, रुचिको उपजाता है और तेज, गर्म, कषैला तथा सर है ॥ २ ॥

तिक्तक्षारोषणं कामरक्तपित्तकरं लघु।
बल्यं श्लेष्मास्यदौर्गन्ध्यं मलवातश्रमापहम् ॥ ३ ॥

अर्थ–यह कडुवा, खारा और चर्परा है, खांसी और रक्तपित्तको करता है, बलको करता है और कफ, मुखकी दुर्गंध, मल, वात, परिश्रम इन्होंको नाशता है ॥ ३ ॥

ताम्बूलं स्वर्णवर्णं क्रमुकफलयुतं संग्रमप्यगृहीतं।
कर्पूरेणाण्डजाभ्यां कृतखदिरवटी सौरभेणातिचूर्णम् ॥
चूर्णं ग्रीवानुजातं शिशिरकिरणवत् प्रोज्ज्वलं तेन साकं।
दत्त्वा विप्राय पूर्वं तदनु नरपतिर्भक्षयेदाप्तदत्तम् ॥ ४ ॥

अर्थ–सोनाके समान वर्णवाला, सुपारीके छिलकोंसे युत किया, कपूर और कस्तूरीसे सुगंधित किया, कत्थेसे संयुत किया और कली लगाके चंद्रमाके समान प्रकाशित किया गया ऐसा नागरपान प्रथम ब्राह्मणको देके पीछे सेवकके हाथसे दिये नागरपानको राजा खावे ॥ ४ ॥

चूर्णं कफानिलहरं खदिरं कफपित्तजित्।
संयोगतो दोषहरं सौमनस्यं करोति च।
मुखवैरस्यसौगन्ध्यकान्तिशोभाकरं परम् ॥ ५ ॥

अर्थ–चूना कफ और वातको हरता है, कत्था कफ और पित्तको जीतता है और संयोगसे दोषको हरता है तथा सुगंधित करता है, मुखमें विरसपना, सुगंधि, कांति, शोभा इन्होंको करता है ॥ ५ ॥

घनस्निग्धा महाप्रांशुः प्रपुन्नाटसमच्छदा।
सुगन्धमूला लवली पाण्डुः कोमलवल्कली ॥ ६ ॥

अर्थ–घनस्निग्धा, महाप्रांशु, प्रपुन्नाट, समच्छदा, सुगंधमूला, लवली, पांडु, कोमलवल्कली ये आठ नाम लवलीके हैं ॥ ६ ॥

लवल्याः फलमुद्दिष्टं श्यामं ज्योत्स्नाफलं तथा ॥ ७ ॥

अर्थ–श्याम, ज्योत्स्नाफल ये दो नाम लवलीके फलके हैं ॥ ७ ॥

लवलीफलमश्माशोंवातपित्तहरं लघु।
विशदं रोचनं रूक्षं हृद्यं पित्तकफापहम्।
फलं तुल्यगुणं सर्वं मज्जानमपि निर्दिशेत् ॥ ८ ॥

अर्थ–लवलीफल पथरी, बवासीर, वात, पित्त इन्होंको हरता है और हलका है, यह दिलको ताकत देता है, रुचिको उपजाता है, रूखा है, सुंदर है। वृक्षकेही समान सब फलोंमें गुण होते हैं। गिरीमेंभी ऐसेही गुण होते हैं ॥ ८ ॥

फलं हिमाग्निदुर्वातव्यालकीटादिदूषितम् ॥ ९ ॥

अर्थ–जाडा, अग्नि, दुष्ट पवन, सर्प, कीडा आदि इन्होंसे दूषित ॥ ९ ॥

अकालजातं नाश्नीयात्पाकातीसारभूमिजम्।
आमं दोषकरं प्रायः फलं बिल्वं विनाऽखिलम् ॥ ११० ॥

अर्थ–अकालमें उपजा, पाकको उल्लंघित करनेवाला और बुरी पृथिवीमें उपजा हुआ फल नहीं खाना। कच्चा फल विशेषकर दोषको करता है, बेलफलके विना ॥ ११० ॥

यस्य यस्य फलस्येह वीर्यं भवति यादृशम्।
तस्य तस्यैव वीर्येण मज्जानमपि निर्दिशेत् ॥ १११ ॥

अर्थ–जिस जिस फलका जैसा वीर्य हो उसीके वीर्यके समान गूदाभी जानना ॥ ११ ॥

व्याधितं कृमिदुष्टं च पाकातीतमकालजम्।
वर्जनीयात् प्रयत्नेन सपर्यागतमेव च ॥ ११२ ॥

अर्थ–रोगसे युत हुआ, कीडोंसे युत हुआ, पाकसे अतीत हुआ, विना समयमें उपजा, तत्काल पका हुआ ऐसे फल वर्जित हैं ॥ ११२ ॥

इति फलादिवर्गः।

राधापदाब्जे निपतन् विनोदी मानापनुत्यै जगदेकवन्द्यः ।
केनापि कामेन स गोपरूपी पायादपायात् पुरुषः पुराणः ॥ १ ॥

अर्थ–मानको दूर करनेके अर्थ राधाजीके चरणकमलमें निरंतर गिरता हुआ, आनंदवाला, संसारमें एकही वंदनाके योग्य, किसीका कार्य करके गोपरूपवाला ऐसा पुराणपुरुष नाशसे रक्षा करे ॥ १ ॥

सर्वशाकेषु जीवन्ती श्रेष्ठा निन्द्यस्तु सर्षपः ।
शाकं चतुर्द्धा तत्पुष्पं छदकन्दफलैः स्मृतम् ॥ २ ॥

अर्थ–सब शाकोंमें जीवंती उत्तम है और सरसोंका शाक बुरा है । फूल, पत्ता, कंद, फल इन्होंकरके शाक चार प्रकारका कहा है ॥ २ ॥

कूष्मांडनामगुणाः ।

कूष्माण्डकी पुष्पफली पचनालिश्चतुर्विधः ।
कर्कारुरफला कन्दी स्यादारू राजकर्कटी ॥ ३ ॥

अर्थ–कूष्मांडकी, पुष्पफली, पचनालि, चतुर्विध, कर्कारु, अफला, कंदी, आरु, राजकर्कटी ये नौ नाम पेठेके हैं ॥ ३ ॥

कूष्माण्डं बृंहणं शीतं गुरु पित्तास्रवातजित् ।
बल्यं पित्तापहं शीतं मध्यमं कफकारकम् ॥ ४ ॥

अर्थ–पेठा धातुको पुष्ट करता है, शीतल है, भारी है, पित्तरक्त और वातको जीतता है, बलको करता है और पित्तको हरता है । मध्यम पका हुआ पेठा शीतल है, कफको करता है ॥ ४ ॥

पक्वं नातिहिमं स्वादु सक्षारं दीपनं लघु ।
बस्तिशुद्धिकरं रेतोरोगदोषत्रयापहम् ॥ ५ ॥

अर्थ–पका हुआ पेठा अत्यंत शीतल नहीं है, खारसहित है, अग्निको जगाता है, हलका है, बस्तिको शोधता है और वीर्यरोग तथा त्रिदोषको नाशता है ॥ ५ ॥

कूष्माण्डं नातिमधुरं वाताश्मरिकफापहम् ।
तन्मज्जा पित्तनुद् वृष्यो मधुरो बस्तिशोधनः ॥ ६ ॥

अर्थ–कोहडा अत्यंत शीतल नहीं है और वात, पथरी, कफको नाशता है । पेठेका गूदा पित्तको दूर करता है, वीर्यको बढाता है, मीठा है और बस्तिको शोधता है ॥ ६ ॥

कर्कटं शीतलं ग्राहि रक्तपित्तहरं गुरु ।
पक्वं पित्ताग्निजननं सक्षारं श्लेष्मवातजित् ॥ ७ ॥

अर्थ-लघु पेठा शीतल है, मलको बांधता है, रक्तपित्तको हरता है और भारी है । यही पका हुआ पित्त और अग्निको उपजाता है, खारसहित है और कफवातको जीतता है ॥ ७ ॥

कर्कटीनामगुणाः ।

कर्टटी लोमशी व्यालपत्रैर्वारुर्बृहत्फला ।
कर्कटी शीतला रूक्षा ग्राहिणी मधुरा गुरुः ॥ ८ ॥

अर्थ-कर्कटी, लोमशी, व्यालपत्रा, एर्वारु, बृहत्फला ये पांच नाम ककडीके हैं । ककडी शीतल है, रूखी है, मलको बांधती है, मीठी है और भारी है ॥ ८ ॥

कालिङ्गनामगुणाः ।

कालिङ्गं कृष्णबीजं स्यात् कलिङ्गं फलवर्तुलम् ।
कालिङ्गं ग्राहि दृक्पित्तशुक्रहृच्छीतलं गुरु ।
पक्वं तु सोष्णं सक्षारं पित्तलं कफवातजित् ॥ ९ ॥

अर्थ-कालिंग, कृष्णबीज, कलिंग, फलवर्तुल ये चार नाम तरबूजके हैं । तरबूज मलको बांधता है, नेत्ररोग और पित्तको हरता है, शीतल और भारी है, पका हुआ तरबूज गर्म है, खारसहित है, पित्तको करता है, कफ और वातको जीतता है ॥ ९ ॥

मिष्टतुम्बीनामगुणाः ।

तुम्बी मिष्टा महातुम्बी राजाऽलाबुरलाबुनी ।
मिष्टं तुम्बीफलं वृष्यं कफपित्तहरं गुरु ॥ १० ॥

अर्थ-तुंबी, मिष्टा, महातुंबी, राजा, अलाबु, अलाबुनी ये छः नाम मीठी तूंबीके हैं । मीठा तुंबीफल धातुको पुष्ट करता है, कफ और पित्तको हरता है तथा भारी है ॥ १० ॥

कटुतुम्बीनामगुणाः ।

कटुतुम्बी मिष्टफली राजपुत्री च दुग्धिनी ।
कटुतुम्बी हिमा हृद्या पित्तकासविषापहा ॥ ११ ॥

अर्थ-कटुतुंबी, मिष्टफली, राजपुत्री, दुग्धिनी ये चार नाम कडुवी तूंबीके हैं ।

कडुवी तूंबी शीतल है, दिलको ताकत देती है और पित्त, खांसी, विष इन्होंको नाशती है ॥ ११ ॥

त्रपुषनामगुणाः ।

त्रपुषं कण्टकिलता सुधावासोऽपरं कटुः ।
छर्दिपर्णी मूत्रफला पित्तकं हस्तिपर्णिनी ॥ १२ ॥

अर्थ–त्रपुष, कंटकिलता, सुधावास, कटु, छर्दिपर्णी, मूत्रफला, पित्तक, हस्तिपर्णिनी ये आठ नाम खीराके हैं ॥ १२ ॥

त्रपुषं मूत्रलं शीतं रूक्षं पिताश्मकृच्छ्रनुत् ।
तत्पक्वमुष्णमम्लं स्यात् पित्तलं कफवातजित् ॥ १३ ॥

अर्थ–खीरा मूत्रको उपजाता है, शीतल है, रूखा है और पित्त, पथरी, मूत्रकृच्छ्रको दूर करता है, पका हुआ खीरा गर्म है, खट्टा है, पित्तको उपजाता है तथा कफ और वातको जीतता है ॥ १३ ॥

चिर्भटनामगुणाः ।

चिर्भटं धेनुदुग्धं स्यात् ज्ञेयं गोरक्षकर्कटी ।
चिर्भटं मधुरं रूक्षं गुरु पित्तकफापहम् ॥ १४ ॥

अर्थ–चिर्भट, धेनुदुग्ध, गोरक्षकर्कटी ये तीन नाम चिपटके हैं । चिपट अर्थात् गोरख काकडी मीठी है, रूखी है, भारी है, पित्त और कफको नाशती है ॥ १४ ॥

शीतं विष्टम्भि संग्राहि पक्वमुष्णं तु पित्तनुत् ॥ १५ ॥

अर्थ–यह शीतल है, विष्टंभ करती है, मलको बांधती है, पकी हुई चिपट गर्म है और पित्तको दूर करती है ॥ १५ ॥

वालुकनामगुणाः ।

वालुकं काण्डकं वालु तच्छीतं मधुरं गुरु ।
रक्तपित्तहरं भेदि लघूष्णं पक्वमग्निकृत् ॥ १६ ॥

अर्थ–वालुक, कांडक, वालु ये तीन नाम वालुकके हैं । वालुक शीतल है, मीठा है, भारी है, रक्तपित्तको हरता है, भेदी है, हलका तथा गर्म है, पका हुआ वालुक अग्निको करता है ॥ १६ ॥

शीर्णवृन्तनामगुणाः ।

शीर्णवृन्तं चित्रफलं विचित्रं पीतवर्णकम् ।
शीर्णवृन्तं लघु स्वादु भेद्युष्णं वह्निपित्तकृत् ॥ १७ ॥

अर्थ–शीर्णवृंत, चित्रफल, विचित्र, पीतवर्णक ये चार नाम सेवके हैं । सेव हलका है, स्वादु है, भेदी है, गर्म है, अग्नि और पित्तको करता है ॥ १७ ॥

कोशातकीनामगुणाः ।

कोशातकी शतच्छिद्रा जालिनी कृतवेधसा ।
मृदङ्गफलका ज्वेरा घोटाकी कर्कशच्छदा ॥ १८ ॥

अर्थ–कोशातकी, शतच्छिद्रा, जालिनी, कृतवेधसा, मृदंगफलका, ज्वेरा, घोटाकी, कर्कशच्छदा ये आठ नाम तोरीके हैं ॥ १८ ॥

कोशातकी लघुस्तिक्ता रूक्षाऽमाशयशोधनी ।
शोफपाण्डूदरप्लीहकुष्ठार्शःकफपित्तजित् ।
तत्फलं भेदनं शीतं लघु मेहत्रिदोषजित् ॥ १९ ॥

अर्थ–तोरी (तुरई) हलकी है, कडुवी है, रूखी है, आमांशको शोधती है और शोजा, पांडु, उदररोग, तिल्ली, कुष्ठ, बवासीर, कफ तथा पित्तको जीतती है । तोरईका फल भेदन है, शीतल है, हलका है, प्रमेह और त्रिदोषको जीतता है ॥ १९ ॥

राजकोशातकीनामगुणाः ।

राजकोशातकी मिष्टा महाजालिः सपीतका ।
राजकोशातकी शीता ज्वरघ्नी कफवातला ॥ २० ॥

अर्थ–राजकोशातकी, मिष्टा, महाजालि, सपीतका ये चार नाम घीयातोरईके हैं । घीयातोरई शीतल है, ज्वरको नाशती है कफ और वातको करती है ॥ २० ॥

महाकोशातकीनामगुणाः ।

महाकोशातकी त्वन्या हस्तिघोषा महाफला ।
महाकोशातकी स्निग्धा मिष्टा पित्तानिलापहा ॥ २१ ॥

अर्थ–महाकोशातकी, हस्तिघोषा, महाफला ये तीन नाम बडी तोरईके हैं । बडी तोरई चिकनी है, मीठी है, पित्त और वातको नाशती है ॥ २१ ॥

वृंताकीनामगुणाः ।

वृन्ताकी वार्तिकी वृत्ता भण्टाकी भण्टिका मता ।
वृन्ताकं स्वदु तीक्ष्णोष्णं कटुपाकं च पित्तलम् ॥ २२ ॥

अर्थ–वृंताकी, वार्तिकी, वृत्ता, भंटाकी, भंटिका ये पांच नाम बैंगनके हैं । बैंगन स्वादु है, तेज है, गर्म है, पाकमें कडुवा है और पित्तको उपजाता है ॥ २२ ॥

कफवातहरं हृद्यं दीपनं शुक्रलं लघु ।

ज्वरारोचककासघ्नं पक्वं तत् पित्तलं गुरु ॥ २३ ॥

अर्थ–यह कफ और वातको हरता है और दिलको ताकद देता है, अग्निको जगाता है, वीर्यको पैदा करता है, हलका है और ज्वर, अरुचि तथा खांसीको नाशता है । पका हुआ बैंगन पित्तको करता है और भारी है ॥ २३ ॥

श्वेतवार्ताकुनामगुणाः ।

अपरः श्वेतवार्त्ताकुः कुक्कुटाण्डफलोपमः ।
तस्माद्धीनगुणः किञ्चिदर्शसां च हितः स्मृतः ॥ २४ ॥

अर्थ–श्वेतवार्ताकु, कुक्कुटांडफलोपम ये दो नाम सफेद बैंगनके हैं । इसमें बैंगनसे कम गुण हैं और बवासीरवालोंको हित कहा है ॥ २४ ॥

बिम्बीनामगुणाः ।

बिम्बी रक्तफला गोला तुण्डी दन्तच्छदोपमा ।
बिम्बी वान्तिप्रदा हन्ति रक्तपित्तास्रकामलाः ॥ २५ ॥

अर्थ–बिंबी, रक्तफला, गोला, तुंडी, दन्तच्छदोपमा ये पांच नाम कंदूरीके हैं । कंदूरी छर्दिको देती है और रक्तपित्त, रक्त, कामला इन्होंको नाशती है ॥ २५ ॥

तत्फलं शीतलं स्वादु गुरुपित्तास्रदाहजित् ।
स्तम्भनं लेखनं वातविबन्धाध्मानकारकम् ॥ २६ ॥

अर्थ–कंदूरीका फल शीतल है, स्वादु है, भारी है, पित्तरक्त और दाहको जीतता है, स्तंभन है, लेखन है तथा वात, बंधा, आध्मान इन्होंको करता है ॥ २६ ॥

कारवेल्लनामगुणः ।

कारवेल्लं कटिल्लं स्यादुग्रकाण्डं सुकाण्डकम् ।
कारवल्ली वारिवल्ली बृहद्वल्लचपरा स्मृता ॥ २७ ॥

अर्थ–कारवेल्ल, कटिल्ल, उग्रकांड, सुकांडक, कारवल्ली, वारिवल्ली, बृहद्वल्ली ये सात नाम करेलाके हैं ॥ २७ ॥

कारवेल्लं हिमं भेदि लघु तिक्तमवातलम् ।
पित्तास्रकामलापाण्डुकफमेहकृमीन् जयेत् ॥ २८ ॥

अर्थ–करेला शीतल है, भेदी है, हलका है, कडुवा है, वातको नहीं करता है और पित्तरक्त, कामला, पांडु, कफ, प्रमेह, कृमि, इन्होंको जीतता है ॥ २८ ॥

कर्कोटकीनामगुणाः ।

कर्कोटकी पीतपुष्पा महाजालिनिरुच्यते ।

तद्वत् कर्कोटकं पुष्पं किलासारुचिनाशनम् ॥ २९ ॥

अर्थ–कर्कोटकी, पीतपुष्पा, महाजालिनी ये तीन नाम ककोडाके हैं । इसी प्रकार कर्कोटक पुष्प किलास और अरुचिको नाशता है ॥ २९ ॥

वन्ध्याकर्कोटकीनामगुणाः ।

वन्ध्याकर्कोटकी देवी नागारिर्विषकण्टका ।
वन्ध्या कर्कोटकी तिक्ता विषवीसर्पकासजित् ॥ ३० ॥

अर्थ–वन्ध्याकर्कोटकी, देवी, नागारि, विषकंटका ये चार नाम वांझ ककोडीके हैं । वांझककोडी कडुवी है और विष, विसर्प खांसीको नाशती है ॥ ३० ॥

डोडिकानामगुणाः ।

डोडिका विषमुष्टिः स्याद् विषयष्टिः समुष्टिका ।
डोडिका कफपित्तार्शःकृमिगुल्मविषापहा ॥ ३१ ॥

अर्थ–डोडिका, विषमुष्टि, विषयष्टि, समुष्टिका ये चार नाम करेरुआके हैं । यह कफ, पित्त, बवासीर, कृमि, गुल्म और विषको नाशती है ॥ ३१ ॥

डिण्डिसनामगुणाः ।

डिण्डिसो रोमशफलो तिन्दिसो मुनिनिर्मितः ।
डिण्डिसो वातलो रूक्षो मूत्रलोऽश्मरिभेदकः ॥ ३२ ॥

अर्थ–डिंडिस, रोमशफल, तिन्दिस, मुनिनिर्मित ये चार नाम डिंडिस (ढेडस, टिंडे) के हैं । डिंडिस वातको उपजाता है, रूखा है, मूत्रको देता है और पथरीको भेदता है ॥ ३२ ॥

कोलशिम्बीनामगुणाः ।

कोलशिम्बी कृष्णफला षड्वसी करपादिका ।
कोलशिम्बी समीरघ्नी गुर्वामकफपित्तकृत् ॥ ३३ ॥

अर्थ–कोलशिंबी, कृष्णफला, षड्वसी, करपादिका ये चार नाम सुआरा सेमके ह । कोलशिंबी वातको नाशती है, भारी है और आम, कफ, पित्त इन्होंको करती है ॥ ३३ ॥

शिम्बीनामगुणाः ।

शिम्बी कुशिम्बी कुत्सास्त्रशिम्बी पुत्रकशिम्बिका ।
शिम्बी शीता गुरुर्बल्या श्लेष्मला वातपित्तजित् ॥ ३४ ॥

अर्थ–शिंबी, कुशिंबी, कुत्सा, अस्त्रशिंबि, पुत्रकशिंबिका ये पांच नाम सेमके

हैं । शिंबी शीतल है, भारी है, बलको करती है, कफको देती है और वातको जीतती है ॥ ३४ ॥

वास्तुकनामगुणाः ।

वास्तुकः शाकपत्रः स्यात् कम्बीरस्तु प्रसादकः ।
वास्तुकः पाचनो रुच्यो लघुः शुक्रबलप्रदः ।
सरः प्लीहान्त्रपित्तार्शःकृमिदोषत्रयापहः ॥ ३५ ॥

अर्थ–वास्तुक, शाकपत्र, कंबीर, प्रसादक ये चार नाम बथुवाके हैं । बथुवा पाचन है, रुचिको करता है, हलका है, वीर्य और बलको देता है, सर है, तिल्ली-रोग, रक्तपित्त, बवासीर, कृमि, क्षय इन्होंको नाशता है ॥ ३५ ॥

जीवन्तकनामगुणाः ।

जीवन्तकः शाकवीरो रक्तनालः प्रणालकः ।
जीवन्तो वातकृत् क्षारः स्वादुपाकस्त्रिदोषनुत् ॥ ३६ ॥

अर्थ–जीवंतक, शाकवीर, रक्तनाल, प्रणालक ये चार नाम जीवंतीके हैं । जीवंती वातको करती है, खारी है, पाकमें स्वादु है और त्रिदोषको दूर करतीहै॥३६॥

चिल्लीनामगुणाः ।

चिल्ली बृहद्बला रक्ता चिल्लिका गौडवास्तुका ।
चिल्ली सरा लघुः शीता रुच्या मेध्याऽग्निदीपनी ।
बल्या रूक्षा हरेत् प्लीहरक्तदोषत्रयकृमीन् ॥ ३७ ॥

अर्थ–चिल्ली, बृहद्बला, रक्ता, चिल्लिका, गौडवास्तुका ये पांच नाम चिल्लीके हैं । चिल्ली सर है, हलकी है, शीतल है, रुचिको उपजाती है, बुद्धिको बढाती है, अग्निको जगाती है, बलको करती है, रूखी है और तिल्लीदोष, रक्त, त्रिदोष, कृमि इन्होंको नाशती है ॥ ३७ ॥

कालशाकनामगुणाः ।

कालशाकं कालिका स्यात् चुञ्चुका चुञ्चुकोऽपरः ।
कालशाकं सरं रुच्यं वातलं कफशोफजित् ॥ ३८ ॥

अर्थ–कालशाक, कालिका, चुचुका, चुचुक ये चार नाम कालशाकके हैं । कालशाक सर है, रुचिको करता है, वातको उपजाता है, कफ और शोजाको जीतता है ॥ ३८ ॥

पित्र्यं पवित्रमायुष्यं नातिपित्तप्रकोपनम् ।

चक्षुः शीता सरा रूक्षा स्वाद्वी दोषत्रयापहा ॥ ३९ ॥

अर्थ–यह पितृकर्ममें उत्तम है, पवित्र है, आयुको बढाता है, पित्तको अत्यंत कुपित नहीं करता है, शीतल है, सर है, रूखा है, स्वादु है और त्रिदोषको हरता है ॥ ३९ ॥

तण्डुलीयनामगुणाः ।

तण्डुलीयो मेघनादः काण्डीरस्तण्डुलीयकः ।
विषघ्नः कवरोऽन्यः स्यात् मारीषो मार्षिकस्तथा ॥ ४० ॥

अर्थ–तण्डुलीय, मेघनाद, कांडीर, तंडुलीयक, विषघ्न, कवर, मारीष, मार्षिक ये आठ नाम चौलाईके हैं ॥ ४० ॥

तण्डुलीयो लघुः शीतो रूक्षः पित्तकफास्रजित् ।
सृष्टमूत्रमलो रुच्यो दीपनो रक्तपित्तहः ॥ ४१ ॥

अर्थ–चौलाई हलकी है, शीतल है, रूखी है और पित्त, कफ, रक्तको जीतती है, मूत्र और मलको उपजाती है, रुचिमें हित है, अग्निको जगाती है और रक्तपित्तको नाशती है ॥ ४१ ॥

फोगनामगुणाः ।

फोगो मरुद्भवः शृङ्गी सूक्ष्मपुष्पः शशादनः ।
फोगः संग्राहकः शीतो रक्तपित्तकफापहः ॥ ४२ ॥

अर्थ–फोग, मरुद्भव, शृंगी, सूक्ष्मपुष्प, शशादन ये पांच नाम फोगके हैं । फोग मलको बांधता है, शीतल है, रक्तपित्त और कफको नाशता है ॥ ४२ ॥

मारिषगुणाः ।

मारिषो रेचनः शीतो गुरुर्मेदस्त्रिदोषजित् ॥ ४३ ॥

अर्थ–मरसा दस्तावर है, शीतल है, भारी है, मेद और त्रिदोषको नाशता है ४३

पटोलनामगुणाः ।

पटोलः पाण्डुको जातीकलकः कर्कशच्छदः ।
राजीफलः पाण्डुफलो राजीमानमृताफलम् ॥ ४४ ॥

अर्थ–पटोल, पांडुक, जातीकलक, कर्कशच्छद, राजीफल, पांडुफल, राजीमान्, अमृताफल ये आठ नाम परवलके हैं ॥ ४४ ॥

तिक्तोत्तमा बीजगर्भाऽपरा राजपटोलिका ।
ज्यात्स्नी पटोलिका जाली नादेयी भूमिजम्बुका ॥ ४५ ॥

अर्थ–तिक्तोत्तमा, बीजगर्भा, राजपटोलिका, ज्योत्स्नी, पटोलिका, जाली, नादेयी, भूमिजंबुका ये आठ नाम दूसरे परवलके हैं ॥ ४५ ॥

पटोलं पाचनं हृद्यं वृष्यं लघ्वग्निदीपनम् ।
स्निग्धोष्णं हन्ति वातास्रज्वरदोषत्रयकृमीन् ॥ ४६ ॥

अर्थ–परवल पाचन है, दिलको ताकत देता है, धातुको पुष्ट करता है, हलका है, अग्निको जगाता है, चिकना है, गर्म है और वातरक्त, ज्वर, त्रिदोष, कृमि इन्होंको नाशता है ॥ ४६ ॥

पत्रं पित्तहरं शीतं तस्य वल्ली कफापहा ।
मूलं विरेचनं प्रोक्तं फलं दोषत्रयापहम् ॥४७ ॥

अर्थ–परवलका पत्ता पित्तको हरता है और शीतल है, परवलकी वेल कफको नाशती है, इसकी जड दस्तावर है और इसके फलको त्रिदोषनाशक कहा है ॥४७॥

चंचुडनामगुणाः ।

चञ्चुडो वेश्मकूलोऽन्यः श्वेतराजी बृहत्फला ।
किञ्चिन्न्यूनगुणस्तस्माद्विशेषाच्छोषणो हितः ॥ ४८ ॥

अर्थ–चंचुड, वेश्मकूल, श्वेतराजी, बृहत्फला ये चार नाम चिचेंडाके हैं । इसमें गुण परवलसे कम हैं, विशेषकर शोषक और हित है ॥ ४८ ॥

पालक्यानामगुणाः ।

पालक्या वास्तुकाकारा छुरिका चीरितच्छदा ।
पालक्या वातला शीता भेदिनी श्लेष्मला गुरुः ।
विष्टम्भिनी मदश्वासरक्तपित्तकफापहा ॥ ४९ ॥

अर्थ–पालक्या, वास्तुकाकारा, छुरिका, चीरितच्छदा ये चार नाम पालकके हैं । पालक वातको करता है, शीतल है, भेदन है, कफको करता है, भारी है, विष्टंभ करता है और मद, श्वास, रक्तपित्त, कफ इन्होंको नाशता है ॥ ४९ ॥

पोतकीनामगुणाः ।

पोतकी पोतका प्रोक्ता मत्स्या कालीसुरङ्गिका ।
पोतकी शीतला स्निग्धा श्लेष्मला वातपित्तजित् ॥ ५० ॥

अर्थ–पोतकी, पोतका, मत्स्या, काली, सुरंगिका ये पांच नाम पोईके हैं। पोई शीतल है, चिकनी है, कफको करती है और वातपित्तको जीतती है ॥ ५० ॥

अकण्ठ्या पिच्छला निद्राशुक्रदा रक्तपित्तनुत् ।
पोतक्या पोदिका दिव्या शुक्रदा रक्तपित्तजित् ॥ ५१ ॥

अर्थ–कंठमें हित नहीं है, पिच्छिल है, नींद और वीर्यको देती है तथा रक्तपित्तको जीतती है । पोतक्या, पोदिका, दिव्या ये तीन नाम दूसरी पोईके हैं । यह वीर्यको देती है और रक्तपित्तको जीतती है ॥ ५१ ॥

लोणीकुटीरनामगुणाः ।

लोणिकोक्ता बृहच्छोटी कुटिरस्तु कुटिञ्जरः ।
दुन्दुरः स्याद् गुडीरीकः पिण्डी पिण्डीतकस्तथा ॥ ५२ ॥

अर्थ–लोणिका, बृहच्छोटी, कुटिर, कुटिंजर, दुंदुर, गुडीरीक, पिंडी, पिंडीतक ये आठ नाम लोनियां कुटीरके हैं ॥ ५२ ॥

लोणी रूक्षा गुरु शीता सरा विष्टम्भिनी कटुः ।
दोषला मधुरा पाके तद्वत् कुट्टीरत्वत् गुरुः ।
लोणिका वातला श्वासकासश्लेष्मविषापहा ॥ ५३ ॥

अर्थ–लोनियां रूखा है, भारी है, शीतल है, सर है, विष्टंभ करता है, सलौना है, दोषको उपजाता है और पाकमें मीठा है । कुटीरमेंभी येही गुण हैं । यह हृद्रोगको हरता है और भारी है । लोनियां वातको करता है और श्वास, खांसी, कफ, विष इन्होंको देता है ॥ ५३ ॥

सुषेणनामगुणाः ।

सुषेणस्तु स्वस्तिकः स्याद् बलदस्तिलपर्णिका ।
सुनिषण्णो हिमो ग्राही मेहदोषत्रयापहः ॥ ५४ ॥

अर्थ–सुषेण, स्वस्तिक, बलद, तिलपर्णिका, सुनिषण्ण ये पांच नाम फंजीके हैं । फंजी शीतल है, मलको बांधती है और प्रमेह तथा त्रिदोषको हरती है ॥५४॥

तिलपर्णी हिमा रुच्या ग्राहिणी कफपित्तजित् ॥ ५५ ॥

अर्थ–तिलपर्णी शीतल है, रुचिको उपजाती है, मलको बांधती है और कफपित्तको जीतती है ॥ ५५ ॥

सूक्ष्मपत्रनामगुणाः ।

सूक्ष्मपत्रस्तीक्ष्णशाको धनुःपुष्पः सुबोधकः ।
चौरकः कफवातघ्नः सुतीक्ष्णो नातिपित्तलः ॥ ५६ ॥

अर्थ–सूक्ष्मपत्र, तीक्ष्णशाक, धनुःपुष्प, सुबोधक, चौरक ये पांच नाम रुंदि-

याके हैं । रुंटिया कफ वातको नाशता है, बहुत तेज है और अत्यंत पित्तल नहीं है ॥ ५६ ॥

टुण्टुको विटपो रूक्षः स्वरपत्रस्त्वरण्डजः ।
टुण्टुको वातलो रूक्षो विष्टम्भी कफनाशनः ॥ ५७ ॥

अर्थ-टुंटुक, विटप, रूक्ष, स्वरपत्र, अरंडज ये पांच नाम टुंटुकके हैं । टुंटुक वातको करता है, रूखा है, विष्टंभ करता है और कफको नाशता है ॥ ५७ ॥

वल्लीनामगुणाः ।

घनागमभवा वल्ली प्रसिद्धो नाम बस्तिजः ।
घनागमे त्रिदोषघ्नो तत्पुष्पं मधुरं सरम् ।
फलं तस्य सरं वृष्यमामं मिष्टं तु वातलम् ॥ ५८ ॥

अर्थ-घनागमभवा, वल्ली, प्रसिद्ध, बास्तिज ये चार नाम नसियाके हैं । नसिया त्रिदोषको नाशती है । नसियाका फूल मीठा है और सर है । नसियाका फल सर है और धातुको पुष्ट करता है । इसका कच्चा फल वांछित है और वातको उपजाता है ॥ ५८ ॥

शीतवारनामगुणाः ।

शीतवारः कुरण्डी स्यान्नाडी तु नलिका मता ।
शीतवारः सरो वृष्यः शोफघ्नो वातपित्तलः ॥ ५९ ॥

अर्थ-शीतवार, कुरंडी ये दो नाम कुरंडके हैं । नाडी, नलिका ये दो नाम नलवाके हैं । कुरंड सर है, हलका है धातुको पुष्ट करता है, शोजाको नाशता है तथा वात और पित्तको करता है ॥ ५९ ॥

नाडी सरा लघुः शीता पित्तनुत् कफवातला ॥ ६० ॥

अर्थ-नलुवाका शाक सर है, हलका है, शीतल है, पित्तको दूर करता है, कफ और वातको करता है ॥ ६० ॥

सर्षपनामगुणाः ।

सार्षपं सर्षपोद्भूतं कौसुम्भं कुङ्कुमोद्भवम् ।
सार्षपं बद्धविण्मूत्रं गुरूष्णं वा त्रिदोषकृत् ।
कौसुम्भं स्वादु रूक्षोष्णं कफजित् पित्तलं लघु ॥ ६१ ॥

अर्थ-सार्षप और सर्षपोद्भुत ये दो नाम सरसोंके हैं । कौसुंभ, कंकुमोद्भव ये दो नाम कुसुंभके हैं । सरसों विष्ठा मूत्रको बांधती है, भारी है, गर्म है और

त्रिदोषको करती है । कुसुंभा स्वादु है, रूखा है, गर्म है, कफको जीतता है, पित्तको करता है और हलका है ॥ ६१ ॥

चणकचाङ्गेरीनामगुणाः ।

चणकं शाकमुद्दिष्टं दुर्जरं कफवातनुत् ।
कलायशाकं भेदि स्याल्लघु पित्तकफापहम् ॥ ६२ ॥

अर्थ–चरक, शाक ये दो नाम चनाशाकके हैं । चनाका शाक देरमें जरता है तथा कफ और वातको करता है । मटरका शाक भेदन है, हलका है तथा पित्त और कफको जीतता है ॥ ६२ ॥

चाङ्गेरी त्वाम्लिका चुक्रा क्षुद्राम्लिका चतुश्छदा ।
चाङ्गेरी दीपनी रुच्या लघूष्णा कफवातजित् ।
सपित्तला ग्रहण्यर्शःकुष्ठातीसारनाशिनी ॥ ६३ ॥

अर्थ–चांगेरी, आम्लिका, चुक्रा, क्षुद्राम्लिका, चतुच्छदा ये पांच नाम चूका शाकके हैं । चूका अग्निको जगाता है, रुचिको उपजाता है, हलका है, गर्म है, कफवातको जीतता है, पित्तको करता है और ग्रहणीरोग, बवासीर, कुष्ठ, अतिसारको नाशता है ॥ ६३ ॥

कासमर्दनामगुणाः ।

कासमर्दः कर्कशः स्याद् गृञ्जनोऽगजरस्तथा ।
कासमर्द लघुः कण्ठ्यः कासदोषविषास्रजित् ॥ ६४ ॥

अर्थ–कासमर्द, कर्कश, गृंजन, अगजर ये चार नाम कसोंदी (गाजर) के हैं । कसोंदी हलकी है, कंठमें हित है और खांसी, त्रिदोष, विष, रक्तको नाशतीहै॥६४॥

गृञ्जननामगुणाः ।

गृञ्जनः कटुकस्तीक्ष्णस्तिक्तोष्णो दीपनो लघुः ।
संग्राही रक्तपित्ताशोंग्रहणीकफवातजित् ॥ ६५ ॥

अर्थ–गाजर विशेष चर्परी है, तेज है, कडुवी है, गर्म है, अग्निको जगाती है, हलकी है, मलको बांधती है और रक्तपित्त, बवासीर, ग्रहणीरोग, कफ, वात इन्होंको जीतती है ॥ ६५ ॥

मूलकनामगुणाः ।

मूलकं हस्तिदन्तं च बालमूलं कफान्तकम् ।
मूलकं वातलं रुच्यं स्वर्योष्णं पाचनं लघु ॥ ६६ ॥

अर्थ–मूलक, हस्तिदंत, बालमूल, कफांतक ये चार नाम मूलीके हैं। मूली वात करती है, रुचिको उपजाती है, स्वरमें हित है, गर्म है, पाचन है और हलकी है॥६६॥

हन्ति त्रिदोषजं श्वासगदाक्षिगलपीनसम् ।
स्निग्धसिद्धं तदेव स्याद् दोषत्रयविनाशनम् ॥ ६७ ॥

अर्थ–त्रिदोषसे उपजे श्वास, आंखरोग, गलरोग, पीनस इन्होंको मूली नाशती है। घृतमें सिद्ध की हुई मूली त्रिदोषको हरती है ॥ ६७ ॥

शुष्कं तद्धि विशोथघ्नं लघु दोषत्रयापहम् ।
तत्पुष्पं श्लेष्मपित्तघ्नं फलं वातकफापहम् ॥ ६८ ॥

अर्थ–सूखी मूली शोजाको हरती है, हलकी है और त्रिदोषको हरती है। मूली-का फूल कफपित्तको हरता है और इसका फल वातकफको नाशता है ॥ ६८ ॥

करीरनामगुणाः ।

करीरको गूढपत्रः ऋकचो ग्रन्थिलो मतः ।
करीरः कटकी भेदी तीक्ष्णोष्णः कफवातजित् ॥ ६९ ॥

अर्थ–करीरक, गूढपत्र, ऋकच, ग्रंथिल ये चार नाम करीरके हैं। करीर चर्परा है, भेदी है, तेज है, गर्म है और कफवातको जीतता है ॥ ६९ ॥

व्रणशोथविषार्शोघ्नस्तत्पुष्पं कफपित्तजित् ।
फलं ग्राहि कषायोष्णं मधुरं श्लेष्मपित्तकृत् ॥ ७० ॥

अर्थ–घाव, शोजा, विष बवासीरको कैर नाशता है। कैरका फूल कफपित्तको जीतता है। कैरका फल मलको बांधता है, कषैला है, गर्म है, मीठा है, कफ और पित्तको करता है ॥ ७० ॥

सौभाञ्जननामगुणाः ।

शिग्रुः सौभाञ्जनः कृष्णगन्धः स्याद् बहुलच्छदः ।
रक्तोऽन्यो मधुशिग्रुस्तु श्वेतोऽन्यो हरितच्छदः ॥ ७१ ॥

अर्थ–शिग्रु, सौभांजन, कृष्णगंध, बहुलच्छद ये चार नाम सहींजनाके हैं। दूसरा लाल सहींजना होता है। तीसरा मधुशिग्रु, हरितच्छद ऐसे दो नामवाला है॥७१॥

तद्बीजं श्वेतमरिचं तीक्ष्णोष्णं चक्षुषे हितम् ।
शिग्रुस्तीक्ष्णो लघुर्ग्राही वह्निदः कफवातजित् ।
तीक्ष्णोष्णो विद्रधिप्लीहव्रणघ्नो रक्तपित्तकृत् ॥ ७२ ॥

अर्थ–सहींजनाका बीज श्वेत मरिच कहाता है । यह तेज है, गर्म है और आखोंमें हित है, सहींजना तेज है, हलका है, मलको बांधता है, अग्निको देता है, कफवातको जीतता है, गर्म है और विद्रधि, तिल्लीरोग, घावको नाशता है तथा रक्तपित्तको करता है ॥ ७२ ॥

मधुशिग्रुर्गुणैस्तद्वद्विशेषात् दीपनः सरः ।
तत्पुष्पं लघु संग्राहि वातलं कफशोथजित् ।
फलं ग्राहि कषायोष्णं मधुरं श्लेष्मपित्तहृत् ॥ ७३ ॥

अर्थ–मीठे सहींजनेमेंभी येही गुण हैं । विशेषसे उत्तम दीपन और सर है । मीठे सहींजनेका फूल हलका है, मलको बांधता है, वातको करता है, कफ और शोजाको जीतता है, मीठे सहींजनेका फल मलको बांधता है, कषैला है, गर्म है, मीठा है और कफपित्तको जीतता है ॥ ७३ ॥

लशुननामगुणाः ।

लशुनः स्यादुग्रगन्धी यवनेष्टो रसोनकः ।
गृञ्जनोऽन्यो महाकन्दो जर्जरो दीर्घपत्रकः ॥ ७४ ॥

अर्थ–लशुन, उग्रगंधी, यवनेष्ट, रसोनक, गृंजन, महाकंद, जर्जर, दीर्घपत्रक ये आठ नाम लहसनके हैं ॥ ७४ ॥

लशुनो बृंहणो वृष्यः स्निग्धोष्णः पाचनः सरः ।
भग्नसन्धानकृत्केश्यो गुरुः पित्तास्रबुद्धिदः ॥ ७५ ॥

अर्थ–लहसन धातुको पुष्ट करता है, वीर्यको बढाता है, चिकना है, गर्म है पाचन है, सर है, टूटे हुएको जोडता है, बालोंको बढाता है, भारी है, पित्तरक्त और बुद्धिको देता है ॥ ७५ ॥

रसायनं कफश्वासकासगुल्मज्वरारुचीः ।
हन्ति शोथप्रमेहार्शःकुष्ठशूलानिलकृमीन् ।
तत्पत्रं मधुरं क्षारं नालो मधुरपित्तलः ॥ ७६ ॥

अर्थ–यह बुढापेको दूर करता है और कफ, श्वास, खांसी, गुल्म, ज्वर, अरुचि, शोजा, प्रमेह, बवासीर, कुष्ठ, शूल, वात, कृमि इन्होंको नाशता है । लहसनका पत्ता मीठा है, खारा है, लहसनकी नाल मीठी है और पित्तको उपजाती है ॥७६॥

पलाण्डुनामगुणाः ।

पलाण्डुर्धवलाख्यश्च दुर्गन्धो मुखदूषकः ।

पलाण्डुस्तद्गुणैस्तुल्यः कफकृन्नातिपित्तलः ।
अनुष्णः केवलं वातं स्वादुः पाके रसान् जयेत् ॥ ७७ ॥

अर्थ–पलांडु, धवलाख्य, दुर्गंध, मुखदूषक ये चार नाम पियाजके हैं । पियाजमें लहसनके गुण हैं परंतु कफको करता है, अत्यंत पित्तको नहीं करता है, गर्म नहीं है, अकेला वातको और रसोंको जीतता है तथा पाकमें स्वादु है ॥ ७७ ॥

गृञ्जननामगुणाः ।

गृञ्जनः पित्तलो ग्राही तीक्ष्णोऽर्शोरोगनाशनः ।
गन्धाकृतिरसैस्तुल्यः सूक्ष्मनालः पलाण्डुवत् ॥ ७८ ॥

अर्थ–गृंजन अर्थात् गाजर पित्तको करती है, मलको बांधती है, तेज है, बवासीरको नाशती है और गंध, आकृति, रस इन्होंसे पियाजके समान है तथा महीन नालवाली है ॥ ७८ ॥

सूरणद्वयनामगुणाः ।

सूरणः कन्दलः कन्दो गुदामयहरोऽपरः ।
वल्लकन्दः सुरेंद्रः स्याद्वन्योऽन्यश्चित्रकन्दकः ॥ ७९ ॥

अर्थ–सूरण, कंदल, कन्द, गुदामयहर; दूसरा–वल्लकन्द, सुरेन्द्र; तीसरा–वनमें होनेवाला चित्रकन्दक होता है ये सब नाम जिमीकन्दके हैं ॥ ७९ ॥

सूरणो दीपनो रूक्षः कषायः कटुकण्डुकृत् ।
विष्टम्भी विशदो रुच्यः कफार्शःकृन्तनो लघुः ॥ ८० ॥
नालं सूरणकं रुच्यं कफवातहरं लघु ।
अर्शसां तु विशेषेण हितं कामाग्निदीपनम् ॥ ८१ ॥
सूरणो दीपनो रूक्षः कफार्शःकृन्तनो लघुः ।
तद्वदन्यो वज्रकन्दः कफघ्नः पित्तरक्तकृत् ॥ ८२ ॥

अर्थ–जिमीकन्द अग्निको जगाता है, रूखा है, कषैला है, चर्परा है, खाज करता है, विष्टंभ करता है, सुंदर है, रुचिको उपजाता है और कफ, बवासीरको काटता है तथा हलका है । वनमें होनेवाले जिमीकन्दमें येही गुण हैं, वह वज्रकंद कहाता है, कफको नाशता है और पित्तरक्तको करता है ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

अस्थिशृङ्खलिकानामगुणाः ।

अस्थिशृङ्खलिका वज्री ग्रन्थिमानस्थिसंहतिः ।

अस्थिशृङ्खलिका वृष्या श्लेष्मला मधुरा हिमा ।
अस्थिसन्धानकृत् बल्या पित्तरक्तानिलापहा ॥ ८३ ॥

अर्थ–अस्थिशृंखलिका, वज्री, ग्रंथिमान्, अस्थिसंहति ये चार नाम हडसंहारीके हैं । हडसंहारी वीर्यको बढाती है, कफको करती है, मीठी है, शीतल है, हड्डीको जोडती है, बलको करती है, पित्तरक्त और वातको नाशती है ॥ ८३ ॥

वाराहीनामगुणाः ।

वाराही मागधी गृष्टिस्तत्कन्दः सौकरः किटिः ।
सौकरः पित्तलो वर्ण्यः स्वादुस्तिक्तो रसायनः ।
आयुःशुक्राग्निकृन्मेहकफकुष्ठानिलापहः ॥ ८४ ॥

अर्थ–वाराही, मागधी, गृष्टि, वाराहीकंद, सौकर, किटि ये छः नाम वाराहीकंदके हैं । वाराहीकंद पित्तको करता है, वर्णको निखारता है, स्वादु है, कडुवा है, बुढापेको दूर करता है और आयु, वीर्य, अग्नि इन्होंको करता है तथा प्रमेह, कफ, कुष्ठ, वात इन्होंको नाशता है ॥ ८४ ॥

मुसलीनामगुणाः ।

मुसली तालपत्री स्यात् खलिनी तालमूलिका ।
मुसली बृंहणी बल्या वीर्योष्णार्शोऽनिलापहा ॥ ८५ ॥

अर्थ–मुसली, तालपत्री, खलिनी, तालमूलिका ये चार नाम मुसलीके हैं । मुसली धातुको पुष्ट करती है, बल करती है, वीर्यमें गर्म है, बवासीर और वातको नाशती है ॥ ८५ ॥

कंचुकनामगुणाः ।

कञ्चुका पीलुनी पीलुः फेलुका दलशालिनी ।
कञ्चुकं वातलं ग्राहि दीपनं कफपित्तनुत् ॥ ८६ ॥

अर्थ–कंचुका, पीलुनी, पीलु, फेलुका, दलशालिनी ये पांच नाम कंचुकके हैं । कंचुक वातको करता है, मलको बांधता है, अग्निको जगाता है और कफ-पित्तको दूर करता है ॥ ८६ ॥

भूच्छत्रनामगुणाः ।

भूच्छत्रं पृथिवीकन्दः शिलीन्ध्रं बलकं मतम् ।
भूच्छत्रं शीतलं बल्यं गुरु भेदि त्रिदोषजित् ॥ ८७ ॥

अर्थ–भूच्छत्र, पृथिवीकंद, शिलीन्ध्र, बलक ये चार नाम भूछत्रके हैं । भूछत्र

शीतल है, बल करता है, भारी है, भेदन है और त्रिदोषको जीतता है ॥ ८७ ॥

स्थूलकन्दमानकन्दनामगुणाः ।

स्थूलकन्दो ग्रामकन्दो मानकन्दो महाच्छदः ।
स्थूलकन्दो गुरुः श्लेष्मवातलः पित्तशोथजित् ।
मानकः शीतलः स्वादुः पित्तरक्तहरो गुरुः ॥ ८८ ॥

अर्थ–स्थूलकन्द, ग्रामकन्द और मानकन्द, महाच्छद ये दो दो नाम स्थूलकन्द और मानकंदके हैं । स्थूलकंद भारी है, कफ-वातको करता है, पित्त और शोजाको हरता है । मानकंद शीतल है, स्वादु है, पित्तरक्तको हरता है और भारी है ॥ ८८ ॥

कसेरुशृङ्गाटनामगुणाः ।

कसेरुकं स्वल्पकन्दं बृहद्राजं कसेरुजम् ।
शृङ्गाटो जलकन्दः स्यात् त्रिकोणस्त्रिकटुः स्मृतः ॥ ८९ ॥

अर्थ–कसेरुक, स्वल्पकन्द, बृहद्राज, कसेरुज ये चार नाम कसेरुकके हैं । और शृङ्गाट, जलकन्द, त्रिकोण, त्रिकटु ये चार नाम सिंगाडेके हैं ॥ ८९ ॥

कसेरुकं हिमं स्वादु गुरु पित्तास्रदाहजित् ।
ग्राहि पित्तानिलश्लेष्मप्रदं शृङ्गाटकं तथा ॥ ९० ॥

अर्थ–कसेरु शीतल है, स्वादु है, भारी है और पित्तरक्त और दाहको जीतता है । सिंगाडा मलको बांधता है और पित्त, वात, कफ इन्होंको देता है ॥ ९० ॥

पिण्डालुकं वृष्यगन्धो मध्वालुः स्यात्तु रोमशम् ।
शङ्खालुश्चित्रसङ्काशः काष्ठालुः स्वल्पकाष्ठकम् ॥ ९१ ॥

अर्थ–पिंडालुक, वृष्यगन्ध, मध्वालु, रोमश, शंखालु, चित्रसंकाश, काष्ठालु, स्वल्पकाष्ठक ॥ ९१ ॥

हस्तालुकं महाकाष्ठं रक्तकन्दं महाफलम् ।
आलुकं शीतलं सद्यो विष्टम्भि मधुरं सरम् ॥ ९२ ॥

अर्थ–हस्तालुक, महाकाष्ठ, रक्तकन्द, महाफल ये नाम क्रमसे पिंडालु, मध्यालु, शंखालु, काष्ठालु, हस्तालुके हैं । आलुक शीतल है, तत्काल विष्टंभ करता है, मीठा है और सर है ॥ ९२ ॥

सूक्ष्मं मूत्रमयं रूक्षं दुर्जरं रक्तपित्तनुत् ।
कफानिलकरं बल्यं वृष्यं स्तन्यविवर्धनम् ॥ ९३ ॥

अर्थ–यह सूक्ष्म है, मूत्रको उपजाता है, रूखा है, देरमें जरता है, रक्तपित्तको दूर करता है, कफ-वातको हरता है, बल करता है, वीर्यको उपजाता है और दूधको बढाता है ॥ ९३ ॥

पिण्डालुकमभिष्यन्दि तिक्तोष्णं दोषलं गुरु ।
मध्वालुकं पित्तकरं कटु पाके कफापहम् ॥ ९४ ॥

अर्थ–पिंडालु कफ करता है, कडुवा है, गर्म है, दोषको उपजाता है और भारी है । मध्वालु पित्तको करता है, पाकमें चर्परा है और कफको नाशता है ॥ ९४ ॥

केयूरनामगुणाः ।

केयूरं स्वल्पविटपं कन्दलः स्वादुकन्दलः ।
केयूरं शीतलं ग्राहि पित्तलं कफवातजित् ॥ ९५ ॥

अर्थ–केयूर, स्वल्पविटप, कन्दल, स्वादुकन्दल ये चार नाम केलूटके हैं । केलूट शीतल है, मलको बांधता है, पित्तको करता है, कफवातको जीतता है ॥ ९५ ॥

अतिजीर्णमकालोत्थं रूक्षं स्निग्धमभूमिजम् ।
जठरः कोमलं वातशीतापित्तानिलापहम् ॥ ९६ ॥

अर्थ–बहुत पुराना, विना समय उपजा, रूखा, चिकना, बुरी पृथिवीपर उपजा, कठोर, कोमल, वात, जाडा और गर्मीसे दूषित हुआ ॥ ९६ ॥

शुष्कं शाकं च सकलं नाश्नीयान् मूलकैर्विना ॥ ९७ ॥

अर्थ–और सूखा ऐसे संपूर्ण शाकोंको नहीं खावे, परंतु मूलीके विना ॥ ९७ ॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण
निर्मितेऽत्र । ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्णः कूष्मा-
ण्डप्रभृतिरयं च शाकवर्गः ॥ ९८ ॥

अर्थ–राजाओंमें जो प्रधानरूप कटारमल्ल हुआ उसी मदनपाल राजाके रचन किये इस अमरविनोद नामक ग्रन्थमें पेठा आदि शाकवर्ग समाप्त हुआ ॥ ९८ ॥

इति सप्तमवर्गः ।

करेण संगृह्य कुचौ कपोले मात्राङ्गुलीभिर्मृदु ताड्यमानम् ।
मुक्तं त्वराजानुबलेन पानं नमामि कृष्णं नवनीतचोरम् ॥ १ ॥

अर्थ–हाथकरके स्तनोंके दूधको पीता हुआ और माताकी अंगुलियोंसे गालों-पर ताडित हुआ, गोडाके बलसे शीघ्र छुटा हुआ और नौनी घृतका चोर ऐसे कृष्णको प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥

पानीयनामगुणाः ।

पानीयं जीवनं नीरं कीलालममृतं जलम् ।
आपोऽम्भस्तोयमुदकं पाथोऽम्बु सलिलं पयः ॥ २ ॥

अर्थ–पानीय, जीवन, नीर, कीलाल, अमृत, जल, आप, अंभ, तोय, उदक, पाथ, अंबु, सलिल, पय ये चौदह नाम पानीके हैं ॥ २ ॥

पानीयं शीतलं हृद्यं हन्ति पित्तविषभ्रमम् ।
दाहाजीर्णश्रमच्छर्दिमदमूर्च्छामदात्ययान् ॥ ३ ॥

अर्थ–पानी शीतल है, दिलको ताकत देता है, पित्त, विष, भ्रम, दाह, अजीर्ण, परिश्रम, छर्दि, मद, मूर्च्छा, मदात्यय इन्होंको नाशता है ॥ ३ ॥

शीतलं स्तिमिते कोष्ठे गलरोगे नवज्वरे ।
ग्रहणीपीनसाध्मानहिक्कागुल्मेषु विद्रधौ ॥ ४ ॥

अर्थ–स्तिमितरोग, कोष्ठरोग, गलरोग, नया ज्वर, ग्रहणी, पीनस, आध्मान, हिचकी, गुल्म, विद्रधि ॥ ४ ॥

कासमेहारुचिश्वासपाण्डुवातामयेषु च ।
पार्श्वशूले स्नेहपीतं सद्यः शुद्धौ न शस्यते ॥ ५ ॥

अर्थ–खांसी, प्रमेह, अरुचि, श्वास, पांडु, वातरोग, पसलीशूल, स्नेहपान, तत्काल वमन, जुलाब आदि इन्होंमें शीतल पानी अच्छा नहीं है ॥ ५ ॥

दिव्यं तुषारजं धारं कारिहैममिति स्मृतम् ।
चतुर्विधं वरं धारं लघुत्वात् तत् पुनर्द्विधा ॥ ६ ॥

अर्थ–दिव्य, तुषारज, धार, कारिहैम इन चार प्रकारका पानी होता है । इन्होंमें हलकेपनसे दिव्य उत्तम है और दिव्यभी दो प्रकारका है ॥ ६ ॥

गाङ्गं समुद्रजं चेति गाङ्गं श्रेष्ठतमं स्मृतम् ।
आश्विने मासि सामुद्रं गणैर्गाङ्गवदाचरेत् ॥ ७ ॥
स्थापिते हेमजे पात्रे राजते मृन्मयेऽपि वा ।
तज्जलं शीतलं ज्ञेयं दोषत्रयविषापहम् ॥ ८ ॥

अर्थ–गांग, सामुद्रज इन्होंमें गांग पानी उत्तम है । आश्विन महीनेमें वर्षे हुए पानीको सोना चांदी वा मिट्टीके पात्रमें भर धरे उस पानीको शीतल जानना वह त्रिदोष और विषको नाशता है ॥ ७ ॥ ८ ॥

तद्गाङ्गं सर्वदोषघ्नं पेयं सामुद्रमन्यथा ।
सक्षारं लवणं मिश्रं शुक्रदृष्टिबलापहम् ॥ ९ ॥

अर्थ–वही गांग पानी पीने योग्य है, सब दोषोंको नाशता है । इससे विपरीत सामुद्र पानी होता है । यह खारसहित, नमकरूप और मिला हुआ होता है तथा वीर्य, दृष्टि, बलको नाशता है ॥ ९ ॥

रसायनं तृषामूर्छातन्द्रादाहक्लमापहम् ।
सौम्यं रसायनं दिव्यं महानिद्रात्रिदोषजित् ॥ १० ॥

अर्थ–गांग पानी बुढापेको दूर करता है और तृषा, मूर्च्छा, तंद्रा, दाह तथा ग्लानिको नाशता है । दिव्य अर्थात् आकाशसे वर्षा हुआ पानी सुंदर है, बुढापेको दूर करता है, बहुत नींद और त्रिदोषको जीतता है ॥ १० ॥

आश्वासजननं ह्लादि श्रमघ्नमतिबुद्धिकृत् ।
तदेव भूमिपतितं भौममित्यभिधीयते ॥ ११ ॥

अर्थ–यह सुंदर श्वासको उपजाता है, आनंद देता है, परिश्रमको नाशता है और अत्यंत बुद्धिको देता है । आकाशका पानी पृथिवीमें पडके भौम ऐसा कहाता है ॥ ११ ॥

दिव्याभावे तु तत् तोयं प्रविचार्यो गुणागुणाः ।
कौपं श्लेष्महरं क्षारं पित्तलं दीपनं लघु । १२ ॥

अर्थ–आकाशका पानी नहीं मिले तो गुण दोष विचारकर भौम पानी लेना । कूएका पानी कफको हरता है, खारा है, पित्तको उपजाता है, अग्निको जगाता है और हलका है ॥ १२ ॥

ताडागं वातलं स्वादु तुवरं कटुपाकि च ।
वाप्यं पित्तकरं क्षारं कटुवातकफापहम् ॥ १३ ॥

अर्थ–तलावका पानी वातको उपजाता है, स्वादु है, कषैला है और पाकमें चर्परा है । बावडीका पानी पित्तको करता है, खारा है, चर्परा है, वात और कफको नाशता है ॥ १३ ॥

नैर्झरं लेखनं ह्रद्यं कफघ्नं दीपनं लघु ।
ह्लादं च लघु पित्तघ्नमविदाहातिदीपनम् ॥ १४ ॥

अर्थ–झरनेका पानी लेखन है, दिलको ताकत देता है, कफको नाशता है,

अग्निको जगाता है और हलका है। कुंडका पानी हलका है, पित्तको नाशता है, दाहको नहीं करता है और अग्निको अत्यंत जगाता है ॥ १४ ॥

चौड्यमग्निप्रदं रूक्षं स्वादु श्लेष्मकरं न च।
नादेयं दीपनं रूक्षं वातलं लघु लेखनम् ॥ १५ ॥

अर्थ–चोवाका पानी अग्निको उपजाता है, रूखा है, स्वादु है और कफको नहीं करता है। नदीका पानी अग्निको जगाता है, रूखा है, वातको करता है, हलका और लेखन है ॥ १५ ॥

सारसं मधुरं बल्यं तृष्णाघ्नं तुवरं लघु।
कैदारं स्वाद्वभिष्यन्दि विपाके गुरु दोषलम् ॥ १६ ॥

अर्थ–जोहडका पानी मीठा है, बल और तृषाको नाशता है, कषैला है और हलका है। जंगलके जोहडका पानी स्वादु है, कफको करता है, पाकमें भारी है और दोषोंको उपजाता है ॥ १६ ॥

पाल्वलं तद्वदुद्दिष्टं विशेषात् सर्वदोषकृत्।
तौषारं वातलं शीतं रूक्षं पित्तकफापहम् ॥ १७ ॥

अर्थ–पालके पानीमेंभी येही गुण हैं, विशेषकर सब दोषोंको करता है। ओस का पानी वातको करता है, शीतल है, रूखा है, पित्त और कफको नाशता है॥१७॥

धारं भूमावपतितं दिव्यं तत्सर्वदोषनुत्।
नैर्झरं गुरु वै प्रोक्तं विशदं कफवातनुत् ॥ १८ ॥

अर्थ–आकाशसे वर्षे पानीकी धार पृथिवीपर नहीं पडे और पात्र आदिमें ग्रहण करी जावे, वह दिव्य पानी सब दोषोंको दूर करता है। पहाडसे झिरा पानी भारी कहा है, सुंदर है, कफ और वातको दूर करता है ॥ १८ ॥

हैमं गुरुतरं शीतं पित्तनुद् वातवर्द्धनम्।
चन्द्रकान्तजलं रूक्षं लघुपित्तविषास्रनुत् ॥ १९॥

अर्थ–बर्फका पानी अत्यंत भारी है, शीतल है, पित्तको दूर करता है और वातको बढाता है, चन्द्रकांत पानी रूखा है, हलका है और पित्त, विष, रक्तको दूर करता है ॥ १९ ॥

दिवाकरकरैर्जुष्टं निशि शीतकरांशुभिः।
ज्ञेयं हंसोदकं नाम स्निग्धं दोषत्रयापहम् ॥ २० ॥

अर्थ–दिनमें सूर्यकी किरणोंसे युत और रात्रिमें चन्द्रमाकी किरणोंसे युत ऐसा पानी हंसोदक जानना । यह चिकना है और त्रिदोषको नाशता है ॥ २० ॥

अनभिष्यन्दि निर्दोषमन्तरिक्षजलोपमम् ।
बल्यं रसायनं मेध्यं शीतं लघु सुधोपमम् ॥ २१ ॥

अर्थ–यह अभिष्यंद नहीं है और दोषोंसे रहित है । आकाशसे वर्षे हुए पानीके समान है, बलको करता है, बुढापेको दूर करता है, बुद्धिको बढाता है, शीतल है, हलका और अमृतके समान है ॥ २१ ॥

वर्षासु दिव्यं पानीयमौद्भिदं वा प्रशस्यते ।
शरत्प्रसन्नमुदकमगस्त्योदयनिर्विषम् ॥ २२ ॥

अर्थ–वर्षाऋतु अर्थात् श्रावण भादवामें आकाशका पानी अथवा पृथिवीका पानी श्रेष्ठ है । शरद् अर्थात् आश्विन कार्तिकमें अगस्त्य ताराके उदय करके विषसे रहित हुआ और स्वच्छ पानी उत्तम है ॥ २२ ॥

हेमन्ते सारसं तोयं ताडागं वा गुणावहम् ।
वसन्तग्रीष्मयोः कौप्यं वाप्यं नैर्झरमेव च ॥ २३ ॥

अर्थ–हेमंत अर्थात् मंगशिर पौषमें सरोवरका पानी अथवा माघ फाल्गुनमें तालावका पानी गुणोंको देता है । वसंत अर्थात् चैत्र वैशाख ग्रीष्म अर्थात् ज्येष्ठ आषाढ इन महीनोंमें कुएका पानी, बावडीका पानी और झरनेका पानी हित है ॥ २३ ॥

प्रावृषि प्रवरं चौद्यं तथाऽविष्टम्भकारि च ।
नद्यः शीघ्रवहा लघ्व्यः सर्वा याश्चामलोदकाः ॥ २४ ॥

अर्थ–वर्षाऋतुमें चोवाका पानी उत्तम है और विष्टंभ नहीं करता है । शीघ्र बहनेवाली और निर्मल पानीवाली सब नदी हलकी हैं ॥ २४ ॥

मन्दगाः कलुषा गुर्व्यो याश्च शैवालसेविताः ।
हिमवत्प्रभवाः पथ्या नद्योऽश्माहतपाथसः ॥ २५ ॥

अर्थ–मंद वहनेवाली, मैली और शिवालसे युत हुई नदी भारी है । पत्थरोंसे आहत हुए पानीवाली और हिमालयसे उत्पन्न हुई ऐसी नदी पथ्य है ॥ २५ ॥

गङ्गाशतद्रुसरयूयमुनाद्या गुणोत्तमाः ।
ईषत्पित्तकराः स्वच्छाः पुण्या वातकफापहाः ॥ २६ ॥

अर्थ–गङ्गा, सतलज, सरजू, यमुना आदि नदियां उत्तम गुणोंवाली हैं । कछुक पित्तको करती हैं, स्वच्छ हैं, पवित्र हैं और वात तथा कफको नाशती हैं ॥ २६ ॥

मलयाचलजा नद्यो लघ्व्यः शीघ्रवहा हिताः ।
कृतमालाताम्रपर्णीप्रमुखा विमलोदकाः ॥ २७ ॥

अर्थ-मलयाचलसे उपजी नदी हलकी है, शीघ्र बहती है और हित है । कृतमाला और ताम्रपर्णी आदि नदी निर्मल पानीवाली है ॥ २७ ॥

स्थिरापस्तत्प्रभावा ये कुर्वन्ति श्लीपदापचीः ।
शोथपदशिरःकण्ठगलरोगार्बुदकृमीन् ॥ २८ ॥

अर्थ-स्थिर पानीवाली और मलयाचलसे उपजी नदी श्लीपद, अपची, शोजा, पैररोग, शिरोरोग, कंठरोग, गलरोग, गांठ, कृमिको उत्पन्न करती हैं ॥ २८ ॥

सद्यः शैलभवा नद्यो वेणीगोदावरीमुखाः ।
कुर्वन्ति प्रायशः कुष्ठमीषद्वातकफापहाः ॥ २९ ॥

अर्थ-पर्वतसे निकसी वेणी, गोदावरी आदि नदी विशेषसे कुष्ठको करती हैं और वात, कफ इन्होंको नाशती हैं ॥ २९ ॥

विन्ध्याचले भवाः शिप्रारेवाद्याः पाण्डुकुष्ठदाः ।
पारियात्रोद्भवाः प्रोक्ता द्विधा चर्मण्वतीमुखाः ॥ ३० ॥

अर्थ-विंध्य पर्वतसे निकसी शिप्रा रेवा आदि नदी पांडु और कुष्ठको देती हैं । पारियात्र पर्वतसे निकसी चम्मल आदि नदी ॥ ३० ॥

पथ्यास्तडागजास्तत्र त्रिदोषघ्न्यो बलापहाः ।
दरीजा कुष्ठकवह्निश्लेष्मश्लीपदरोगदाः ॥ ३१ ॥

अर्थ-और जो तालावसे निकसी हैं वे पथ्य हैं, त्रिदोषको नाशती हैं और बलको दूर करती हैं । जो दरीसे निकसी हैं वे कुष्ठ, अग्नि, कफ, श्लीपद इन रोगोंको देती हैं ॥ ३१ ॥

प्राच्यावन्त्यपराः पश्चात् गुदजानि प्रकुर्वते ।
मरुजा मधुरा बल्या लघवोऽग्निप्रदाः परम् ॥ ३२ ॥

अर्थ-पूर्व और अवंत्य देशकी नदी गुदाके रोगोंको करती हैं । वागड देशसे निकसी नदी मीठी हैं, बलको करती हैं, हलकी हैं और अग्निको बहुत देती है ॥३२॥

पश्चिमाम्भोधिपतिता गोमतीनर्मदादयः ।
पथ्या वातास्रपित्तघ्न्यो बल्याः कण्डूकफापहाः ॥ ३३ ॥

अर्थ-पश्चिमके समुद्रमें पडनेवाली गोमती नर्मदा आदि नदियां पथ्य हैं, वात-रक्त, पित्त इन्होंको नाशती हैं, बलको देती हैं तथा खाज और कफको देती हैं ॥३३॥

दक्षिणाब्धिगता बल्याः पित्तघ्न्यः कफवातदाः ।
पूर्वाम्भोधिवहा नद्यो मन्दगा गुरवो घनाः ॥ ३४ ॥

अर्थ–दक्षिणके समुद्रमें पडनेवाली नदी बलको करती है, पित्तको नाशती है और कफवातको देती है । पूर्वके समुद्रमें पडनेवाली नदी मंद चलती है, भारी है और घन है ॥ ३४ ॥

भौमानामम्भसां प्रातः सर्वेषां ग्रहणं वरम् ।
नैर्मल्यं तत्र शैत्यं तत्तेषां स च परो गुणः ॥ ३५ ॥
भुक्त्वादौ सलिलं पीतं कार्श्यं मन्दाग्निदोषकृत् ।
मध्येऽग्निदीपनं श्रेष्ठमन्ते स्थौल्यकफप्रदम् ॥ ३६ ॥

अर्थ–पृथिवीमेंसे निकसे सब पानी प्रभातमें ग्रहण करनेमें उत्तम हैं । इन्हों-मेंभी निर्मल और शीतल हो वह पानी बहुत उत्तम है । भोजनके आदिमें पिया हुआ पानी शरीरका माडापन मंदाग्नि दोषको करता है । भोजनके मध्यमें पिया गया पानी अग्निको जगाता है, अत्यंत उत्तम है । भोजनके अंतमें पिया हुआ पानी बुढापा और कफको देता है ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

जीवन्ती जीवना जीवा जगत् सर्वं तु तन्मयम् ।
ततोऽत्यन्ततया सुज्ञैर्न क्वचिद्वारि वार्यते ॥ ३७ ॥

अर्थ–पानीसे जीवन रहता है और संपूर्ण जगत् पानीरूप है इस कारणसे अत्यंत करके पंडितजन पानीको कहींभी वर्जित नहीं करे ॥ ३७ ॥

पानीयं प्राणिनां प्राणा विश्वमेव हि तन्मयम् ।
अतोऽत्यन्तनिषेधेऽपि न क्वचिद् वारि वार्यते ॥ ३८ ॥

अर्थ–प्राणियोंका प्राण पानी है, संसार पानीसे उपजता है, इस कारणसे अत्यंत निषेधमेंभी कहीं पानी वारित नहीं किया जाता ॥ ३८ ॥

पानीयं न तु पानीयं पानीयं च प्रदेशयेत् ।
अजीर्णे कथितं चामे पक्वेऽजीर्णे च तन्नरैः ॥ ३९ ॥

अर्थ–कहीं गर्म, कहीं शीतल, कहीं औटाया इस प्रकार पानी देना । अजीर्णमें और आममें औटाया पानी और पके हुए अजीर्णमें नितरा हुआ पानी देना ॥ ३९ ॥

तृषितस्तु विदग्धेऽन्ने यः पिबेत् शीतलं जलम् ।
विदाहः प्रशमं याति शेषमन्नं च जीर्यते ॥ ४० ॥

अर्थ–विदग्ध अजीर्णमें तृषावाला मनुष्य शीतल पानीको पीवे उसके दाह शांत हो और शेष रहा अन्न जर जावे ॥ ४० ॥

आकूपं दोषकृद्वारि प्रायोऽभिष्यन्दि निन्दितम् ।
जाङ्गलं हन्ति सकलं दोषमग्निप्रदीपनम् ।
साधारणं हिमं स्वादु तृष्णाघ्नं हर्षदं लघु ॥ ४१ ॥

अर्थ–अनूप देशका पानी दोषोंको करता है, कफको उपजाता है और निंदित है । जांगल देशका पानी संपूर्ण दोषोंको नाशता है और अग्निको जगाता है । साधारण देशका पानी शीतल है, स्वादु है, तृषाको नाशता है, आनंद देता है और हलका है ॥ ४१ ॥

वर्षासु योऽवगाहेत पिबेदथ नवं पयः ।
पर्णादिदुष्टं लभते स बाह्याभ्यन्तरामयान् ॥ ४२ ॥

अर्थ–वर्षाऋतुके पानीमें जो स्नान करे और नया पानी पीवे, पत्तों आदिसे युत हुए पानीको पीवे तो उसके शरीरके भीतर और बाहिर रोग उपजते हैं ॥ ४२ ॥

कलुषं छन्नमम्भोजपर्णनीलतृणादिभिः ।
दुष्टगन्धाद्यसंस्पृष्टं सूर्याचन्द्रमसांशुभिः ॥ ४३ ॥

अर्थ–मैला और कमलके पत्ते, शिवाल, तृण आदिसे आच्छादित, बुरे गन्धादिसे दूषित और सूर्य चंद्रमाकी किरणोंसे ॥ ४३ ॥

व्यापन्नमिति जानीयात् सर्वदोषप्रकोपकृत् ।
तोयं तद्वर्जयेत् सर्वं यच्चान्यर्त्तुसमुद्भवम् ॥ ४४ ॥

अर्थ–युत पानी व्यापन्न जानना । यह सब दोषोंके कोपको करता है । जो विना समय वर्षा हुआ पानी हो वह पानी नहीं पीना चाहिये ॥ ४४ ॥

व्यापन्नमिति पानीयं कथितं सूर्यतापितम् ।
तप्तायःसूर्यसिकताग्रावादिष्वथ धारितम् ॥ ४५ ॥
कर्पूरपूरपुन्नागपाटलादिसुवासितम् ।
स्वच्छं कनकमुक्ताद्यैः शीतं दोषाय न क्वचित् ॥ ४६ ॥

अर्थ–तपाये हुए लोह और सूर्यसे गर्म किये हुए और वालू, रेत आदिसे बुझाये पानीको कपूर, केशर, पाटल आदिसे सुगंधित किया हो और निर्मल, सोना और मोती आदिसे युत किया हो वह शीतल पानी कहींभी दोषको नहीं करता है ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

तत् क्वाथ्यमानं निष्फेणं निर्वेगं निर्मलं जलम् ।
तत् सर्वदोषशमनं दीपनं पाचनं लघु ॥ ४७ ॥

अर्थ–औटाया हुआ, झागोंसे रहित, वेगसे वर्जित और निर्मल पानी सब दोषोंको शांत करता है, अग्निको जगाता है, पाचन है और हलका है ॥ ४७ ॥

उष्णं तदग्निजननं लघ्वेतदग्निशोधनम् ।
पार्श्वरुक्पीनसाध्मानहिक्कानिलकफापहम् ॥ ४८ ॥

अर्थ–गर्म रहा हुआ पानी अग्निको उपजाता है, हलका है, अग्निको शोधता है और पसलीशूल, पीनस, आध्मान, हिचकी, वात और कफको नाशता है ॥ ४८ ॥

तत् पादहीनं वातघ्नमर्द्धहीनं च पित्तजित् ।
त्रिपादहीनं श्लेष्मघ्नं संग्राह्यग्निप्रदं लघु ॥ ४९ ॥

अर्थ–जलानेसे चौथाई भाग हीन किया पानी वातको नाशता है, आधा भाग हीन किया पानी पित्तको हरता है, तीन भाग हीन किया पानी कफको नाशता है, मलको बांधता है, अग्निको देता है और हलका है ॥ ४९ ॥

निहन्ति श्लेष्मसङ्घातं मारुतं चापि कर्षति ।
अजीर्णं जरयत्याशु पीतमुष्णोदकं निशि ॥ ५० ॥

अर्थ–रात्रिमें पिया हुआ गर्म पानी कफके समूहको नाशता है और वातको दूर करता है और अजीर्णको शीघ्र दूर करता है ॥ ५० ॥

पादावशेषं सलिलं ग्रीष्मे शरदि शस्यते ।
हेमन्ते शिशिरे वर्षास्वर्द्धहीनमथापि च ॥ ५१ ॥

अर्थ–चौथाई भाग शेष रहा पानी ज्येष्ठ, आषाढ, आश्विन और कार्तिक इन महीनोंमें श्रेष्ठ है। मंगशिर, पौष, माघ, फाल्गुन, श्रावण और भादवा इन महीनोंमें आधा भाग शेष रहा पानी श्रेष्ठ है ॥ ५१ ॥

शृतशीतं सदा पथ्यं लघु नीरं त्रिदोषनुत् ।
तच्च पर्युषितं निघ्नमम्लीभूतं त्रिदोषकृत् ॥ ५२ ॥

अर्थ–गर्म करके शीतल किया पानी सब कालमें पथ्य है, हलका है, त्रिदोषको दूर करता है । वही पानी रात्रिभर धरा बासी हुआ भारी है, खट्टा है और त्रिदोषको करता है ॥ ५२ ॥

दिवा शृतं पयो रात्रौ गुरुतामधिगच्छति ।

रात्रौ श्रृतं दिवा पीतं तथा दोषकरं परम् ॥ ५३ ॥

अर्थ–दिनमें गर्म किया पानी रात्रिमें भारी हो जाता है, रात्रिमें गर्म किया पानी दिनमें पिया जावे तो दोषोंको करता है ॥ ५३ ॥

दुग्धनामगुणाः ।

दुग्धं प्रस्रवणं क्षीरं सौम्यं सञ्जीवनं पयः ।
दुग्धं बलकरं शीतं मधुरं वातपित्तजित् ॥ ५४ ॥

अर्थ–दुग्ध, प्रस्रवण, क्षीर, सौम्य, संजीवन, पय ये छः नाम दूधके हैं । दूध बलको करता है, शीतल है, मीठा है और वातपित्तको जीतता है ॥ ५४ ॥

स्निग्धं रसायनं मेध्यं जीवनं धातुवर्द्धनम् ।
चेतोरक्तगदश्वासक्षयार्शोभ्रमनुद् गुरु ॥ ५५ ॥

अर्थ–यह चिकना है, बुढापेको दूर करता है, बुद्धिको बढाता है, जीवन है, धातुको बढता है और चित्तका बिगडना, रक्तरोग, श्वास, क्षय, बवासीर, भ्रम इत्यादिको दूर करता है तथा भारी है ॥ ५५ ॥

बालवृद्धकृशादीनां स्त्रीसक्तानां प्रशस्यते ।
प्रायः प्राणभृतां साम्यं विशेषादोजसे हितम् ॥ ५६ ॥

अर्थ–बालक, बूढा, माडा आदिको और स्त्रियोंमें प्रसक्त हुओंको श्रेष्ठ है, विशेषकरके प्राणियोंके दोषोंको समान करता है और बलमें हित है ॥ ५६ ॥

गोदुग्धगुणाः ।

गोक्षीरं मधुरं शीतं गुरु स्निग्धं रसायनम् ।
बृंहणं स्तन्यकृद्वर्ण्यं जीवनं वातपित्तनुत् ॥ ५७ ॥

अर्थ–गोक्षीर अर्थात् गायका दूध मीठा है, शीतल है, भारी है, चिकना है, बुढापेको दूर करता है, धातुको पुष्ट करता है, चूंचियोंमें दूधको उत्पन्न करता है, वर्णमें हित है और जीवन है तथा वातपित्तको दूर करता है ॥ ५७ ॥

कृष्णगवां वरं क्षीरं श्वेतानां श्लेष्मलं गुरु ।
बालवत्साविवत्सानां गवां क्षीरं त्रिदोषकृत् ।
पिण्याकाद्यशनाज्जातं क्षीरं गुरु कफापहम् ॥ ५८ ॥

अर्थ–काली गौका दूध उत्तम है, सफेद गौओंका दूध कफको करता है, भारी है, बालक बछडावाली और जिसका बच्चा मर जावे ऐसी गौओंका दूध त्रिदोषको करता है, खल आदिको खानेसे उपजा दूध भारी है और कफको नाशता है ॥ ५८ ॥

अजादुग्धगुणाः ।

आजं गव्यगुणं ग्राहि विशेषाद्दिपनं लघु ।
हन्ति क्षयार्शोऽतीसारप्रदरास्रभ्रमज्वरान् ॥ ५९ ॥

अर्थ–अजा अर्थात् बकरीके दूधमें गायके दूधके सब गुण हैं परंतु मलको बांधता है, विशेषकर अग्निको जगाता है, हलका है और क्षय, बवासीर, अतिसार, पैरा, रक्त, भ्रम, ज्वर इन्होंको नाशता है ॥ ५९ ॥

अजानामल्पकायत्वात् कटुतिक्तादिभक्षणात् ।
स्तोकाम्बुपानाद् व्यायामात् पयः सर्वमदापहम् ॥ ६० ॥

अर्थ–छोटा शरीर होनेसे, चर्परा और कडुवा आदि खानेसे, थोडा पानी पीनेसे, बहुत फिरना आदिसे दूध सब रोगोंको हरता है ॥ ६० ॥

आविदुग्धगुणाः ।

आविकं मधुरं केश्यं स्निग्धं वातकफापहम् ।
गुरु कासेऽनिलोद्भूते केवले चानिले वरम् ॥ ६१ ॥

अर्थ–आविक अर्थात् भेडका दूध मीठा है, बालोंको बढाता है, चिकना है, वातकफको नाशता है, भारी है, वातकी खांसीमें और केवल वातमें उत्तम है॥६१॥

महिषीदुग्धगुणाः ।

माहिषं मधुरं गव्यं स्निग्धं गुरु बलप्रदम् ।
निद्राशुक्रकरं शीतं मलाभिष्यन्दि वह्निनुत् ॥ ६२ ॥

अर्थ–माहिष अर्थात् भैंसका दूध मीठा है, कछुक गायके दूधके समान है, चिकना है, भारी है, बलको देता है, नींद और वीर्यको करता है, शीतल है, मलको रोकनेवाला है और अग्निको नाशता है ॥ ६२ ॥

नारीदुग्धगुणाः ।

नार्या लघु पयः शीतं दीपनं वातपित्तजित् ।
चक्षुःशूलाभिघातघ्नं नस्याश्च्योतनयोर्वरम् ॥ ६३ ॥

अर्थ–नारीपय अर्थात् नारीका दूध हलका है, शीतल है, अग्निको जगाता है, वातपित्तको जीतता है, आंखके शूल और चोटको नाशता है, नस्य और आश्च्योतन अर्थात् आंखमें डालनेविषै हित है ॥ ६३ ॥

हस्तिनीदुग्धगुणाः ।

हस्तिन्याः स्वादु बलकृत् चक्षुष्यं शीतलं गुरु ॥ ६४ ॥

थर्थ–हस्तिनीदुग्ध अर्थात् हस्तिनीका दूध स्वादु है, बलको करता है, आंखोंमें हित है, शीतल है और भारी है ॥ ६४ ॥

औष्ट्रदुग्धगुणाः ।

औष्ट्रं स्वादुरसं रूक्षं लवणं लघु दीपनम् ।
कृमिकुष्ठकफानाहशोथोदरहरं सरम् ॥ ६५ ॥

अर्थ–औष्ट्र अर्थात् ऊंटनीका दूध स्वादु रसवाला है, सलौना है, हलका है, अग्निको जगाता है और कृमि, कुष्ठ, कफ, अफरा, शोजा, उदररोग इन्होंको हरता है तथा दस्तावर है ॥ ६५ ॥

आश्वदुग्धगुणाः ।

आश्वमुष्णं पयो रूक्षं बल्यं वातकफापहम् ।
लवणाम्लं लघु स्वादु सर्वमेकशफं तथा ॥ ६६ ॥

अर्थ–आश्व अर्थात् घोडीका दूध गर्म है, रूखा है, बलको करता है, वातकफको नाशता है, सलोना है, खट्टा है तथा हलका है और स्वादु है । एक खुरवाले सब पशुओंके दूधमें ये गुण हैं ॥ ६६ ॥

दुग्धसामान्यगुणाः ।

धारोष्णं दीपनं बल्यं लघु शीतं त्रिदोषनुत् ।
मुहूर्त्तत्रितयादूर्ध्वं पयो भवति विक्रियम् ।
तदेवं द्विगुणे काले विषवद्धन्ति मानवम् ॥ ६७ ॥

अर्थ–धारसे निकसा दूध गर्म है, अग्निको जगाता है, बलको करता है, हलका है, शीतल है और त्रिदोषको दूर करता है । छः घडीसे उपरांत धरा दूध वर्तनेके योग्य नहीं रहता और बारह घडीसे उपरांत धरा दूध विषके समान मनुष्यको मार देता है ॥ ६७ ॥

तस्मात् शीतगुणं तत्स्यात् पयस्तात्कालिकं पिबेत् ।
सुधासमं तदेव स्यात् धाराशीतं त्रिदोषकृत् ॥ ६८ ॥

अर्थ–तिस कारणसे शीतल गुणवाला दूध हो जाता है, तत्काल निकाले हुए दूधको पीवे, यह दूध अमृतके समान हो जाता है । धारका निकाला दूध शीतल करके पिया जावे तो त्रिदोषको करता है ॥ ६८ ॥

धारोष्णं शस्यते गव्यं धाराशीतं तु माहिषम् ।
श्रृतोष्णमाविकं पथ्यं श्रृतशीतमजापयः ॥ ६९ ॥

अर्थ–धारसे निकला गर्मरूप गायका दूध उत्तम है, धारसे निकला शीतल किया भैंसका दूध उत्तम है, गर्म कर गर्मही पिया हुआ दूध भेडका उत्तम है, गर्म कर शीतल किया हुआ बकरीका दूध उत्तम है ॥ ६९ ॥

शृतशीतं जयेत्पित्तं शृतोष्णं कफमारुतौ ।
अतिपक्वं गुरु स्निग्धं वृष्यं बलविवर्द्धनम् ॥ ७० ॥

अर्थ–गर्म करके शीतल किया दूध पित्तको जीतता है, गर्म करके गर्मरूपही पान किया गया दूध कफवातको हरता है, अत्यंत पक्व किया हुआ दूध भारी है, चिकना और वीर्यमें हित है तथा बलको बढाता है ॥ ७० ॥

आममामपदं क्षीरमभिष्यन्दकरं गुरु ।
आममेव स्त्रियाः क्षीरं पथ्यं पक्वं तु दोषकृत् ॥ ७१ ॥

अर्थ–कच्चा दूध आम और कफको करता है तथा भारी है । स्त्रीका कच्चा दूध पथ्य है और पकाया दूध दोषको करता है ॥ ७१ ॥

प्राभातिकं पयः प्रायो विष्टम्भि गुरु बृंहणम् ।
रात्रौ चन्द्रगुणाधिक्याद् व्यायामपरिवर्जनात् ॥ ७२ ॥

अर्थ–प्रभातका दूध विशेषकरके विष्टंभ करता है, भारी है, धातुको पुष्ट करता है, रात्रिमें चंद्रमाके गुणकी अधिकता और चलने फिरने आदिके वर्जनेसे ॥ ७२ ॥

प्रदोषश्रमनुद् बल्यं चक्षुष्यं वातपित्तहृत् ।
दिवाकरकराघातात् व्यायामानिलसेवनात् ॥ ७३ ॥

अर्थ–सांझका दूध परिश्रमको नाशता है, बलको करता है, आंखोंमें हित करता है, वातपित्तको हरता है, सूर्यकी किरणोंके लगने तथा वात और चलना फिरना होनेसे ॥ ७३ ॥

विवर्णमम्लदुर्गन्धि लवणं ग्रन्थितं पयः ।
वर्जयेदम्ललवणयोगात् कुष्ठादिदोषकृत् ॥ ७४ ॥

अर्थ–वर्णसे बिगडा, खट्टा, दुर्गंधयुत, नमकके स्वादसे युत हुआ और गांठोंवाला दूध नहीं पीना । खटाई और नमकके संयोगसे दूध कुष्ठ आदि दोषको करता है ॥७४॥

सान्तानिकं परं रूक्षं शृतदुग्धोपरि स्मृतम् ।
सान्तानिका गुरुः शीता वृष्या पित्तास्रवातनुत् ॥ ७५ ॥

अर्थ–पके हुए दूधपर आई खुरचन बहुत रूखी कही है । मलाई भारी है, शीतल है, स्त्रीसंगमें हित है, पित्त, रक्त और वातको दूर करती है ॥ ७५ ॥

सप्तरात्रात्परं क्षीरमप्रसन्नं तु मोरटम् ।
नष्टदुग्धं भवेन्मस्तु मोरटं जैय्यटोऽब्रवीत् ॥ ७६ ॥

अर्थ–सात रात्रितक रहा दूध बुरा हो जाता है । फटा हुआ दूध, नष्ट हुआ दूध ये सब बुरे हैं, इस प्रकार जैय्यट कहता है ॥ ७६ ॥

क्षीरं तत्कालसूतायाः पीयूषघनमुच्यते ।
पक्वं दध्ना समं क्षीरं विज्ञेया दधिकूर्चिका ॥ ७७ ॥

अर्थ–तत्काल व्याई गायका दूध पीयूष घन अर्थात् खीस कहाता है । दहीके बराबर दूध डाल पकावे उसे दधिकूर्चिका जाननी ॥ ७७ ॥

तक्रेण तक्रकूर्चिका तयोः पिण्डः किलाटकः ।
पाकं विना स एव स्यात् क्षीरमुक्तसितान्वितः ॥ ७८ ॥
मोरटस्तु सपीयूषः कूर्चिका दधितक्रयोः ।
किलाटक्षीरशाकाभ्यामेते निद्रामपुष्टिदाः ॥ ७९ ॥

अर्थ–तक्र अर्थात् छाछके बराबर दूध मिलाकर पकाया जावे वह तक्रकूर्चिका होती है, विना औटाये जो जमाया जावे वह किलाट कहाता है, इसमें मिश्री मिला वर्ते । पीयूषसहित मोरट होता है, दही और छाछकी कूर्चिका होती है । किलाट और क्षीर शाकके संग ये नींद, आम और पुष्टिको देते हैं ॥ ७८ ॥ ७९ ॥

गुरवः श्लेष्मला वृष्या हृद्या वाताग्निनाशिनी ।
वातला दुर्जरा रूक्षा ग्राहिणी तक्रकूर्चिका ॥ ८० ॥

अर्थ–ये सब भारी हैं, कफको करती हैं, स्त्रीसंगमें हित हैं और दिलको ताकत देते हैं । तक्रकूर्चिका वात और अग्निको नाशती है, वातको करती है, देरमें जरती है, रूखी है और मलको बांधती है ॥ ८० ॥

दधिनामगुणाः ।

दधि स्त्यानं पयः सम्यक् स्त्यानमीषत्तु मन्दकम् ।
तन्मिष्टमम्लमत्यम्लं मधुराम्लमिति स्मृतम् ॥ ८१ ॥

अर्थ–दधि, स्त्यान, पयःसम्यक्, ईषत्स्त्यान, मंदक हे पांच नाम दहीके हैं । मीठा, खट्टा, अत्यंत खट्टा, मीटा खट्टा ये सब दहीके भेद कहे गये हैं ॥ ८१ ॥

दध्युष्णं दीपनं स्निग्धं कषायानुरसं गुरु ।
पाकेऽम्लं ग्राहि पित्तास्रशोफमेदःकफप्रदम् ॥ ८२ ॥

अर्थ–दही गर्म है, अग्निको जगाता है, चिकना है, पीछे कषैले रसवाला है, भारी है, पाकमें खट्टा है, मलको बांधता है और पित्तरक्त, शोजा, मेद, कफ इन्होंको देता है ॥ ८२ ॥

मूत्रकृच्छ्रे प्रतिश्याये शीतके विषमे ज्वरे ।
अतिसारेऽरुचौ काश्र्ये शस्यते बलवर्द्धनम् ॥ ८३ ॥

अर्थ–मूत्रकृच्छ्र, प्रतिश्याय, शीत, विषमज्वर, अतीसार, अरुचि, काश्र्यरोग इन्होंमें दही श्रेष्ठ है और बलको बढाता है ॥ ८३ ॥

मन्दं त्रिदोषजननं मधुरं वातपित्तजित् ।
अम्लं पित्तास्रकफकृदत्यम्लं रक्तपित्तदम् ।
मधुराम्लं गुणैर्मिश्रैर्दधि पूर्ववदादिशेत् ॥ ८४ ॥

अर्थ–मंदक दही त्रिदोषको करता है, मीठा दही वातपित्तको जीतता है, खट्टा दही पित्तरक्त और कफको करता है, अत्यंत खट्टा दही रक्तपित्तको देता है । खट्टा मीठा दही मिले हुए गुणोंवाला पूर्वरीतिसे कहा जावे ॥ ८४ ॥

गव्यं दध्युत्तमं बल्यं पाके स्वादु रुचिप्रदम् ।
पवित्रं दीपनं स्निग्धं पुष्टिकृत्पवनापहम् ॥ ८५ ॥

अर्थ–गायका दही उत्तम है, बलको करता है, पाकमें स्वादु है, रुचिको देता है, पवित्र है, अग्निको जगाता है, चिकना है, पुष्टिको करता है और वातको नाशता है ॥ ८५ ॥

आजं दध्युत्तमं ग्राहि लघु दोषत्रयापहम् ।
शस्यते श्वासकासार्शःक्षयकाश्र्येषु दीपनम् ॥ ८६ ॥

अर्थ–बकरीका दही उत्तम है, मलको बांधता है, हलका है, त्रिदोषको नाशता है और श्वास, खांसी, बवासीर, क्षय, काश्र्यरोग इन्होंमें श्रेष्ठ है और अग्निको जगाता है ॥ ८६ ॥

आविकं दधि पुन्नामकफवातप्रकोपनम् ।
अभिष्यन्दिरसं पाके स्वादु प्रायेण दोषलम् ॥ ८७ ॥

अर्थ–भेडका दही पुरुषपना, कफ, वात इन्होंको प्रकुपित करता है, अभिष्यंदि रसवाला है, पाकमें स्वादु है और विशेषकरके दोषको करता है ॥ ८७ ॥

माहिषं दधि सुस्निग्धं श्लेष्मलं वातपित्तनुत् ।
वृष्यं विपाके मधुरं गुरु रक्तप्रदूषणम् ॥ ८८ ॥

अर्थ–भैंसका दही बहुत चिकना है, कफको करता है, वातपित्तको दूर करता है, वीर्यको पुष्ट करता हैं, पाकमें मीठा है, भारी है और रक्तको दूषित करता है॥८८॥

नार्या दधि त्रिदोषघ्नं चक्षुष्यं तर्पणं गुरु ।
बल्यं विपाके मधुरं स्निग्धं वह्निकरं परम् ॥ ८९ ॥

अर्थ–नारीका दही त्रिदोषको नाशता है, नेत्रोंमें हित करता है, तर्पण है, भारी है, बलको करता है, पाकमें मीठा है, चिकना है और अग्निको बढाता है॥८९॥

हस्तिन्या दधि वीर्योष्णं कटु पाकेऽग्निनाशनम् ।
कषायानुरसं वर्चोवर्द्धनं कफवातजित् ॥ ९० ॥

अर्थ–हथिनीका दही वीर्यमें गर्म है, पाकमें चर्परा है, अग्निको नाशता है, पीछे कषैला रसवाला है, मलको बढाता है और कफवातको जीतता है ॥ ९० ॥

औष्ट्रं विपाके कटुकं भेदि क्षाराम्लकं दधि ।
निहन्त्युदरकुष्ठार्शःशूलबन्धानिलकृमीन् ॥ ९१ ॥

अर्थ–ऊंटनीका दही पाकमें चर्परा है, भेदी है, खारा और खट्टा है तथा उदर-रोग, कुष्ठ, बवासीर, शूल, बंधा, वात, कृमि इन्होंको नाशता है ॥ ९१ ॥

अश्वाद्येकशफं रूक्षं दध्यभिष्यन्दि दोषलम् ।
दीपनं स्वादु चक्षुष्यं वातकृत्कफमूत्रनुत् ॥ ९२ ॥

अर्थ–घोडी आदि एक खुरवाले पशुका दही रूखा है, अभिष्यंदि है, दोषको करता है, अग्निको जगाता है, स्वादु है, आंखोंमें हित है, वातको करता है तथा कफ और मूत्ररोगको दूर करता है ॥ ९२ ॥

सर्वेषु दधिषु श्रेष्ठं गव्यमेव गुणावहम् ।
गालितं दधि सुस्निग्धं वातघ्नं श्लेष्मलं गुरु ॥ ९३ ॥

अर्थ–सब दहियोंमें गायका दही श्रेष्ठ है और गुणोंको देता है । कपडेमें छाना हुआ दही सुंदर चिकना है, वातको नाशता है, कफको करता है और भारी है ॥ ९३ ॥

बलपुष्टिकरं रुच्यं मधुरं नातिपित्तकृत् ।
श्रृतक्षीरभवं रुच्यं दधि स्निग्धं गुणोत्तमम् ॥ ९४ ॥

अर्थ–यह बल और पुष्टिको करता है, रुचिको करता है, मीठा है, बहुत पित्तको नहीं करता है । पकाये हुए दूधका दही रुचिको करता है, चिकना है और उत्तम गुणोंवाला है ॥ ९४ ॥

पित्तानिलापहं सर्वं धात्वग्निबलवर्द्धनम् ॥ ९५ ॥

अर्थ–सब प्रकारका दही पित्तवातको नाशता है और धातु, अग्नि, बलको बढाता है ॥ ९५ ॥

असारं दधि संग्राहि कषायं वातलं लघु ।
विष्टम्भि दीपनं रुच्यं ग्रहणीरोगनाशनम् ॥ ९६ ॥

अर्थ–मलाईसे रहित दही मलको बांधता है, कषैला है, वातको करता है, हलका है, विष्टंभ करता है, अग्निको जगाता है, रुचिमें हित है और ग्रहणीरोगको नाशता है ॥ ९६ ॥

सशर्करं दधि श्रेष्ठं तृष्णापित्तास्रदाहनुत् ।
सगुडं वातनुद् वृष्यं बृंहणं तर्पणं गुरु ॥ ९७ ॥

अर्थ–खांडसहित दही बहुत उत्तम है तथा तृषा, पित्तरक्त, दाह इन्होंको नाशता है । गुडसहित दही वातको दूर करता है, वीर्यको पुष्ट करता है, धातुओंको पुष्ट करता है, तर्पण और भारी है ॥ ९७ ॥

वसन्ते शरदि ग्रीष्मे दधि प्रायेण निन्दितम् ।
हेमन्ते शिशिरे शस्तं वर्षासु च गुणावहम् ॥ ९८ ॥

अर्थ–चैत्र, वैशाख, आश्विन, कार्तिक, ज्येष्ठ और आषाढ इन महीनोंमें दही विशेषकरके निंदित है । मंगशिर, पौष, माघ, फाल्गुन इन महीनोंमें दही उत्तम है । श्रावण और भादवामें दही गुणोंको करता है ॥ ९८ ॥

शस्यते दधि नो रात्रौ शस्तं चाम्बु घृतान्वितम् ।
दध्युत्तरो दधिस्नेहो दध्यग्रः कटुकः सरः ॥ ९९ ॥

अर्थ–रात्रिमें दही उत्तम नहीं है, पानी और घृतसे युत हुआ दही उत्तम है । दध्युत्तर, दधिस्नेह, दध्यग्र, कटुक, सर ये पांच नाम दहीके सरके हैं ॥ ९९ ॥

दध्नः सरो गुरुर्वृष्यो वातवह्निप्रणाशनः ।
बस्तेर्विशोधनश्चाम्लः पित्तश्लेष्मविवर्द्धनः ॥ १०० ॥

अर्थ–दहीका सर भारी है, वीर्यको करता है, वात और अग्निको नाशता है, बस्तिको शोधता है, खट्टा है तथा पित्त और कफको बढाता है ॥ १०० ॥

मस्तु कुमहरं बल्यं लघु भक्ताभिलाषकृत् ।
स्रोतोविशोधनं ह्लादि कफतृष्णानिलापहम् ।

अवृष्यं प्रीणनं शीघ्रं भिनत्ति मलसंग्रहम् ॥ १०१ ॥

अर्थ–दहीका पानी ग्लानिको हरता है, बलको करता है, हलका है, भोजनकी अभिलाषा करता है, स्रोतोंको शोधता है, आनंद करता है और कफ, तृषा, वात इन्होंको नाशता है । यह वीर्यमें हित नहीं है पर तृप्त करता है और मलके संचयको शीघ्र काटता है ॥ १०१ ॥

तक्रवर्गनामगुणाः ।

दण्डाहतं कालशेयं गोरसश्च विलोडितम् ॥ २ ॥

अर्थ–दंडाहत, कालशेय, गोरस, विलोडित ये चार नाम तक्रवर्गके हैं ॥ २ ॥

सरसं निर्जलं घोलं मथितं रसवर्जितम् ।
समोदकमथ श्वेतमुदश्वित्त्वर्धवारिकम् ॥ ३ ॥

अर्थ–रससहित और पानीसे रहित दही घोल होता है, रससे वर्जित दही मथित होता है, बराबर भाग पानीवाला दही श्वेत होता है और आधा पानीवाला दही उदश्वित् होता है ॥ ३ ॥

पादोदकं भवेत्तक्रमर्द्धाम्भोऽन्ये बभाषिरे ।
तक्रं ग्राहि कषायाम्लं मधुरं दीपनं लघु ॥ ४ ॥

अर्थ–चौथाई भाग पानीवाला दही तक्र होता है । कितनेक वैद्य आधे पानी वालेको तक्र कहते हैं । तक्र मलको बांधता है, कषैला और खट्टा है, मीठा है अग्निको जगाता है और हलका है ॥ ४ ॥

वीर्योष्णं बलदं रूक्षं प्रीणनं वातनाशनम् ।
हन्ति शोथगरच्छर्दिप्रसेकविषमज्वरान् ॥ ५ ॥

अर्थ–यह वीर्यमें गर्म है, बलको देता है, रूखा है, तृप्ति करता है, वातको नाशता है और शोजा, कृत्रिम विष, छर्दि, प्रसेक, विषमज्वर ॥ ५ ॥

पाण्डुमेदोग्रहण्यर्शोमूत्रग्रहभगन्दरान् ।
मेहं गुल्ममतीसारं शूलप्लीहकफकृमीन् ।
श्वित्रकोष्ठकफव्यापिकुष्ठतृष्णोदरापचीः ॥ ६ ॥

अर्थ–पांडु, मेद, ग्रहणी, बवासीर, मूत्रका बंध, भगंदर, प्रमेह, गुल्म, अतीसार, शूल, तिल्लीरोग, कफ, कृमि, श्वित्रकुष्ठ, कफरोग, कुष्ठ, तृषा, उदररोग और अपचीको नाशता है ॥ ६ ॥

तक्रं निदाघे शरदि दौर्बल्ये भ्रममूर्च्छयोः ।
पित्तास्रमदशोफेषु कदाचिन्न प्रशस्यते ॥ ७ ॥

अर्थ–गरमीके समयमें, आश्विन और कार्तिकमें, दुर्बलपनमें, भ्रम और मूर्च्छामें, पित्तरक्त, मद, शोजा इन सबोंमें तक्र कभीभी अच्छा नहीं है ॥ ७ ॥

शीतकाले ग्रहण्यर्शःकफवातामयेषु च ।
स्रोतोनिरोधे मन्दाग्नौ तक्रमेवामृतोपमम् ॥ ८ ॥

अर्थ–शीतकालमें ग्रहणी, बवासीर, कफरोग, वातरोग, स्रोतोंका रुकना और मंदाग्नि इन्होंमें तक्र अमृतके समान है ॥ ८ ॥

तक्रं तु मधुरं सर्वं श्लेष्मलं वातपित्तनुत् ॥ ९ ॥

अर्थ–सब प्रकारका तक्र मीठा है, कफको करता है और वातपित्तको दूर करता है ॥ ९ ॥

अम्लं वातहरं तक्रं रक्तपित्तप्रकोपनम् ।
वातेऽम्लं सैन्धवोपेतं स्वादु पित्ते सशर्करम् ॥ ११० ॥

अर्थ–खट्टा तक्र वातको हरता है, रक्तपित्तको कुपित करता है, सेंधानमकसे युत तक्र वातमें हित है और पित्तमें खांडसे मिला हुआ तक्र हित है ॥ ११० ॥

पिबेत्तक्रं कफे रूक्षं व्योषक्षारसमन्वितम् ।
समुद्धृतघृतं तक्रं पथ्यं लघु विशेषतः ॥ ११ ॥

अर्थ–कफमें रूखा तक्रको तथा सोंठ, मिरच, पीपलके खारसे युत किये हुए तक्रको पीवे । घृतसे रहित किया तक्र पथ्य है, विशेषकरके हलका है ॥ ११ ॥

स्तोकोद्धृतघृतं तस्माद् वृष्यं गुरु कफापहम् ।
अनुद्धृतघृतं शीतं गुरु पुष्टिकफप्रदम् ॥ १२ ॥

अर्थ–कछुक निकाले घृतवाला तक्र वीर्यको पुष्ट करता है, भारी है और कफको नाशता है । घृत नहीं निकाला हुआ तक्र शीतल है, भारी है, पुष्टि और कफको करता है ॥ १२ ॥

यान्युक्तानि दधीन्यष्टौ तद्गुणं तक्रमादिशेत् ।
सरसं निर्जलं घोलं मथितं रसवर्जितम् ॥ १३ ॥

अर्थ–जो आठ दही कहे हैं, उन्हींके समान गुणवाले आठों तक्र होते हैं । सरस, निर्जल, घोल, मथित, रसवर्जित ये पांच नाम तक्रके हैं ॥ १३ ॥

दधिवद्घोलमथिते किञ्चित्तु लघु नीरतः ।
मण्डतक्रा लघुतक्रा कूर्चिका दधिसम्भवा ॥ १४ ॥

अर्थ–घोल और मथित दहीके समान होते हैं, परंतु कछुक पानीसे युत घोल और मथित होता है । मंडतक्रा, लघुतक्रा, कूर्चिका, दधिसंभवा ये चार नाम घोल और मथितके हैं । इनमेंभी तक्रके समान गुण हैं ॥ १४ ॥

नवनीतवर्गनामगुणाः ।

हैयङ्गवीनं सरजं नवनीतं तु मन्थनम् ।
नवनीतं लघु ग्राहि सद्यस्कं स्वादु शीतलम् ॥ १५ ॥

अर्थ–हैयङ्गवीन, सरज, नवनीत, मंथन ये चार नाम नौनी घृतके हैं । नौनीघृत हलका है, मलको बांधता है, तत्कालका नौनीघृत स्वादु और शीतल है ॥ १५ ॥

मध्यमीषत्कषायाम्लं वृष्यं पित्तानिलापहम् ।
अविदाह्यग्निकृन्नेत्र्यं क्षयार्शोव्रणकासजित् ॥ १६ ॥

अर्थ–थोडे दिनोंका नौनीघृत कषैला है, खट्टा है, वीर्यको पुष्ट करता है, पित्त-वातको नाशता है, दाह नहीं करता है, अग्निको करता है, आंखोंमें हित है और क्षय, बवासीर, घाव, खांसी इन्होंको जीतता है ॥ १६ ॥

नवनीतं चिरोद्भूतं गुरु मेदःकफप्रदम् ।
शोथघ्नं बलकृद् वृष्यं विशेषादमृतं शिशोः ॥ १७ ॥

अर्थ–बहुत दिनोंका नौनीघृत भारी है, मेद और कफको देता है, शोजाको नाशता है, बलको करता है, वीर्यको पुष्ट करता है, और विशेषकरके बालकको अमृतके समान है ॥ १७ ॥

क्षीरोत्थं तदतिस्निग्धं चक्षुष्यं रक्तपित्तजित् ।
वृष्यं बलकरं ग्राहि मधुरं शीतलं परम् ॥ १८ ॥

अर्थ–दूधसे निकाला नौनीघृत अत्यंत चिकना है, आंखोंमें हित है, रक्तपित्तको जीतता है, वीर्यको पुष्ट करता है, बलको करता है, मलको बांधता है तथा मीठा और उत्तम शीतल है ॥ १८ ॥

घृतनामगुणाः ।

घृतमाज्यं हविः सर्पिराधारममृताह्वयम् ।
घृतं रसायनं स्वादु चक्षुष्यं गुरु दीपनम् ॥ १९ ॥

अर्थ–घृत, आज्य, हवि, सर्पि, आधार, अमृताह्वय ये छः नाम घृतके हैं ।

घृत बुढापेको दूर करता है, स्वादु है, आंखोंमें हित है, भारी है, अग्निको जगाता है ॥ १९ ॥

शीतवीर्यं विषालक्ष्मीवातपित्तानिलापहम् ।
अत्यभिष्यन्दि कान्त्योजस्तेजोलावण्यबुद्धिकृत् ॥ १२० ॥

अर्थ-शीतवीर्यवाला है, विष, दुष्टकान्ति, वातपित्त, वात इन्होंको नाशता है, अत्यंत अभिष्यंदि है, कांति, बल, तेज, लावण्य, बुद्धि इन्होंको करता है ॥१२०॥

उदावर्त्तज्वरोन्मादशूलानाहव्रणान् जयेत् ।
स्निग्धं कफप्रदं रूक्षं क्षयवीसर्परक्तजित् ॥ २१ ॥

अर्थ-उदावर्त, ज्वर, उन्माद, शूल, अफरा, घाव इन्होंको जीतता है, चिकना है, कफको देता है, रूखा है, क्षय, विसर्प, रक्त इन्होंको जीतता है ॥ २१ ॥

स्वर्यं क्षतहरं प्रायः शस्यते बालवृद्धयोः ।
घृतं क्षीरभवं ग्राहि शीतलं नेत्ररोगजित् ॥ २२ ॥

अर्थ-स्वरमें हित है, विशेषकर बालक और वृद्धको श्रेष्ठ है । दूधसे निकला घृत मलको बांधता है, शीतल है, नेत्ररोगको जीतता है ॥ २२ ॥

निहन्ति पित्तदाहास्रमदमूर्च्छाभ्रमानिलान् ।
पुराणं कटुकं पाके सर्पिर्दोषत्रयापहम् ॥ २३ ॥

अर्थ-पित्त, दाह, रक्त, मद, मूर्च्छा, भ्रम, वात इन्होंको नाशता है । पुराना घृत पाकमें चर्परा है, त्रिदोषको नाशता है ॥ २३ ॥

श्रोत्रनेत्रशिरःशूलकुष्ठापस्मारशोथजित् ।
योनिरोगज्वरश्वासकुष्ठार्शोगुल्मपीनसान् ॥ २४ ॥

अर्थ-कानरोग, आंखरोग, शिरका शूल, कुष्ठ, मृगीरोग, शोजा इन्होंको जीतता है, योनिरोग, ज्वर, श्वास, कुष्ठ, बवासीर, गुल्म, पीनस इन्होंको नाशता है ॥२४॥

निहन्ति दीपनं बस्तिनस्यपूर्तिः प्रशस्यते ।
घृतमण्डोऽपि घृतवद् गुणैस्तीक्ष्णो लघुः सरः ॥ २५ ॥

अर्थ-अग्निको जगाता है, बस्तिमें और नस्यमें श्रेष्ठ है, घृतकी छाछमेंभी घृतके समान गुण हैं, परंतु तेज है, हलकी है और फैलनेवाली है ॥ २५ ॥

दशवर्षात्परं सर्पिः कौम्भमित्यभिधीयते ।
रक्षोघ्नं लघु तस्मात् तु गुणैः श्रेष्ठं महाघृतम् ॥ २६ ॥

अर्थ–दशवर्षसे उपरांत घृत कौंभ कहाता है । यह राक्षसदोषको नाशता है, हलका है, महाघृत गुणोंकरके इससे श्रेष्ठ है ॥ २६ ॥

घृतस्य गुणदोषौ तु क्षीरतुल्यौ समादिशेत् ।
सर्वेषु गुणकृत् गव्यमाविकं निन्दितं पुनः ॥ २७ ॥

अर्थ–घृतके गुण और दोष दूधके समान कहे हैं । सब घृतोंमें गायका घृत गुणकारी है और भेडका घृत निंदित है ॥ २७ ॥

तैलगुणाः ।

तैलमुष्णं गुरु स्थैर्यं बलवर्णकरं सरम् ।
वृष्यं विकाशि विशदं मधुरं रसपाकयोः ॥ २८ ॥

अर्थ–तेल गर्म है, भारी है, स्थिरपनमें हित है, बल और वर्णको करता है, फैलनेवाला है, वीर्यको पुष्ट करता है, प्रकाशता है, सुंदर है तथा रस और पाकमें मीठा है ॥ २८ ॥

सोष्णं कषायानुरसं तिक्तं श्लेष्मानिलापहम् ।
विपाके मधुरं तीक्ष्णं बृंहणं रक्तपित्तजित् ॥ २९ ॥

अर्थ–गर्म किया तेल कषैलेके अनुसार रसवाला है, कडुवा है, कफवातको नाशता है, पाकमें मीठा है, तेज है, धातुको पुष्ट करता है और रक्तपित्तको जीतता है ॥ २९ ॥

श्लेष्मलं कटु विण्मूत्रत्वग्गर्भाशयशोधनम् ।
दीपनं मतिदं केश्यं व्यायामव्रणमेहनुत् ॥ १३० ॥

अर्थ–यह कफको करता है, चर्परा है और मल, मूत्र, त्वचा, गर्भाशय इन्होंको शोधता है । यह अग्निको जगाता है, बुद्धिको देता है, बालोंमें हित है और परिश्रम, घाव, प्रमेह इन्होंको दूर करता है ॥ १३० ॥

श्रोत्रयोनिशिरःशूलनेत्ररोगविनाशनम् ।
मथिताच्युतविच्छिन्नभग्नव्यालविषादिषु ।
क्षतेऽग्निदग्धे तत्पथ्यं पानाभ्यङ्गादिभिः सदा ॥ ३१ ॥

अर्थ–कानरोग, योनिरोग, शिरका शूल, नेत्ररोग इन्होंको तेल नाशता है । मथित हुआ, गिरा हुआ, कटा हुआ, टूटा हुआ, सर्प आदिका विष आदि, चोट अग्निमें जला हुआ इन्होंमें पीने और मालिस करने आदिसे तेल सब कालमें पथ्य है ॥ ३१॥

घृतमब्दात्परं पक्वं हीनवीर्यं प्रजायते ।
तैलं पक्वमपक्वं वा चिरस्थायि गुणाधिकम् ॥ ३२ ॥

अर्थ–वर्षसे उपरांत पका हुआ घृत हीनवीर्यवाला हो जाता है, पका हुआ अथवा नहीं पका हुआ और बहुत दिनका धरा हुआ तेल उत्तम गुणवाला हो जाता है ॥ ३२ ॥

एरण्डतैलगुणाः ।

एरण्डतैलं मधुरमुष्णं दीपनशोधनम् ।
वृष्यं त्वच्यं वयःस्थापि मेधाकान्तिबलप्रदम् ।
कषायानुरसं सूक्ष्मं योनिशुक्रविशोधनम् ॥ ३३ ॥
हन्ति वातोदरानाहगुल्माष्ठीलाकटिग्रहान् ।
वातशोणितशूलादिव्रणशोथामविद्रधीन् ॥ ३४ ॥

अर्थ–अरंडका तेल मीठा है, गर्म है, अग्निको जगाता है, शोधन है, वीर्यको पुष्ट करता है, त्वचामें हित है, अवस्थाको ठहराता है और बुद्धि, कांति, बल इन्होंको देता है । यह कषैलाके अनुसार रसवाला है, महीन है, योनि और वीर्यको शोधता है तथा वात, उदररोग, अफरा, गुल्म, अष्ठीला, कटिग्रह, वातरक्त, शूल, घाव, शोजा, आम, विद्रधी इन्होंको नाशता है ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

कटुतैलगुणाः ।

पृथ्वीकामूलजीमूतादन्तीकवचशिग्रुजम् ।
निम्बातसीकरञ्जार्कहस्तिकर्णेङ्गुदीभवम् ॥ ३५ ॥

अर्थ–इलायची, पीपलामूल, देवदाली, जमालगोटाकी जड, कौंच और सहजनाका तेल और नींब, अलसी, करंजुवा, आक, लाल एरंड अथवा हस्तिकंद, हींगनका तेल ॥ ३५ ॥

शङ्खिनीनिम्बकं तैलं तैलं ज्योतिष्मतीकृतम् ।
कुसुम्भसर्षपोद्भूतं तैलं सौवर्चलं तथा ॥ ३६ ॥

अर्थ–शंखिनीतेल, नींबतेल, मालकांगनीतेल, कुसुंभातेल, सरसोंतेल, सुवर्चलातेल ॥ ३६ ॥

निपाके कटुकं तीक्ष्णमुष्णं तिक्तं सरं लघु ।
हन्ति कुष्ठामयं श्लेष्ममेहमूर्च्छामयकृमीन् ॥ ३७ ॥

अर्थ–ये सब पाकमें चर्परे हैं, तेज हैं, गर्म हैं, कडुवे हैं, फैलनेवाले हैं, हलके

हैं और कुष्ठरोग, प्रमेह, मूर्च्छा, कृमि इन्होंको नाशते हैं ॥ ३७ ॥

निम्बतैलगुणाः ।

निम्बतैलं जयेत् कुष्ठं व्रणश्लेष्मज्वरकृमीन् ॥ ३८ ॥

अर्थ–नींबका तेल कुष्ठ, घाव, कफ, ज्वर, कृमि इन्होंको नाशता है ॥ ३८ ॥

अतसीतैलगुणाः ।

अतसीतैलमाग्नेयं स्निग्धोष्णं कफपित्तनुत् ।
कटुपाकमचक्षुष्यं बल्यं वातहरं गुरु ॥ ३९ ।

अर्थ–अलसीका तेल अग्निरूप है, चिकना है, गरम है, कफपित्तको दूर करता है, पाकमें चर्परा है, आंखोंमें हित नहीं है, बलको करता है, वातको हरता है और भारी है ॥ ३९ ॥

सार्षपतैलगुणाः ।

सार्षपं कृमिनुत् तैलं कुष्ठकण्डूहरं लघु ।
पित्तास्रदूषणं हन्ति मेहकर्णशिरोगदान् ॥ १४० ॥

अर्थ–सरसोंका तेल कृमिको दूर करता है, कुष्ठ और खाजको हरता है, हलका है, पित्तरक्तको दूषित करता है, प्रमेह, कानके रोग, शिरके रोग इन्होंको दूर करता है ॥ १४० ॥

कुसुम्भतैलगुणाः ।

कौसुम्भं कटुकं तैलमचक्षुष्यं बलप्रदम् ।
केवलानिलनुत्तीक्ष्णं विदाह्युष्णं द्विदोषकृत् ॥ ४१ ॥

अर्थ–कुसुंभाका तेल चर्परा है, आंखोंमें हित नहीं है, बलको देता है, अकेला वातको दूर करता है, तेज है, दाहको करता है, गरम है और दो दोषोंको करता है॥४१॥

ज्योतिष्मतीतैलगुणाः ।

ज्योतिष्मतीभवं तैलं पित्तलं स्मृतिबुद्धिदम् ॥ ४२ ॥

अर्थ–मालकांगनीका तेल पित्तको करता है तथा स्मृति और बुद्धिको देता है ४२

नारिकेलादितैलगुणाः ।

अक्षोटिकाहिमुक्ताक्षनारिकेलभवं हरेत् ।
तैलं पित्तानिलं केश्यं गुरु श्लेष्मकरं हिमम् ॥ ४३ ॥

अर्थ–अखरोट, सांपकी काचली, बहेडा, नारियल इन्होंका तेल पित्तवातको नाशता है, बालोंमें हित है, भारी है, कफको करता है और शीतल है ॥ ४३ ॥

शिंशपादितैलगुणाः ।

शिंशपागुरुगण्डीररसालामरदारुजम् ।
तैलं कषायं कटुकं तिक्तं दुष्टव्रणापहम् ।
वातरक्तविषश्लेष्मकण्डूकुष्ठानिलान् जयेत् ॥ ४४ ॥

अर्थ–सीसम, अगर, थोहर, ईख, देवदार इन्होंका तेल कषैला और चर्परा है, कडुवा है, दुष्ट घावको नाशता है और वातरक्त, विष, कफ, खाज, कुष्ठ, वात, इन्होंको दूर करता है ॥ ४४ ॥

भल्लातकतैलनामगुणाः ।

भल्लातकं तौवरकं वीर्योष्णं स्वादु तिक्तकम् ।
कुष्ठोर्ध्वाधस्त्रिदोषास्रमेदोमेहकृमीन् हरेत् ॥ ४५ ॥

अर्थ–भिलावेका तेल कषैला है, वीर्यमें गर्म है, स्वादु है, कडुवा है और कुष्ठ, ऊर्ध्वदोष, अधोरोग, त्रिदोष, रक्त, मेद, प्रमेह, कृमि इन्होंको हरता है ॥ ४५ ॥

पालाशमाधूकपाटलतैलगुणाः ।

तैलं पालाशमाधूकपाटलाफलसम्भवम् ।
कषायं मधुरं दाहपित्तश्लेष्मगदान् हरेत् ॥ ४६ ॥

अर्थ–केसू, महुवा, पाटलाफल इन्होंका तेल कषैला और मीठा है तथा दाह, पित्त, कफरोग, इन्होंको जीतता है ॥ ४६ ॥

त्रपुषादितैलगुणाः ।

कूष्माण्डत्रपुषैर्वारुतुम्बीकालिङ्गतिक्तकैः ।
कृतं प्रियालजीवन्ती श्लेष्मान्तकभवं तथा ॥ ४७ ॥

अर्थ–पेठा, ककडी, खरबूजा, तुंबी, तरबूज, परवल, चिरौंजी, जीवंती, लहेसवा इन्होंका तेल ॥ ४७ ॥

तैलं गुरु स्वादुपाकं शीतं मूत्रप्रवर्त्तकम् ।
अदीपनमभिष्यन्दि कफदं वातपित्तजित् ॥ ४८ ॥

अर्थ–भारी है, पाकमें स्वादु है, शीतल है, मूत्रको प्रवृत्त करता है, दीपन नहीं है, अभिष्यंदी है, कफको देता है और वातपित्तको जीतता है ॥ ४८ ॥

एकैषिजतैलगुणाः ।

एकैषिजं हिमं तैलं पित्तघ्नं श्लेष्मवातकृत् ॥ ४९ ॥

अर्थ–पाठाका तेल शीतल है, पित्तको नाशता है और कफवातको करता है ४९

यवतिक्तोद्भवतैलगुणाः ।

यवतिक्तोद्भवं तैलमीषत् तिक्तं रसायनम् ।
दीपनं लेखनं मेध्यं पथ्यं दोषत्रयापहम् ॥ १५० ॥

अर्थ–यवतिक्तोद्भव अर्थात् शंखाहोलीका तेल कलुक कडुवा है, बुढापेको दूर करता है, अग्निको जगाता है, लेखन है, बुद्धिको बढाता है, पथ्य है और त्रिदोशको नाशता है ॥ १५० ॥

आम्रतैलगुणाः ।

आम्रतैलमनाक् तिक्तं मधुरं नातिपित्तकृत् ।
कफवातहरं रूक्षं सुगन्धि विशदं परम् ॥ ५१ ॥

अर्थ–आमका तैल कलुक कडुवा है, मीठा है, पित्तको अत्यंत नहीं करता है, कफवातको हरता है, रूखा है, सुगंधवाला और बहुत सुंदर है ॥ ५१ ॥

स्नेहवर्गगुणाः ।

स्थावरा वातशमनाः स्नेहाः प्रोक्तास्तु तैलवत् ।
गौणमेतेषु तैलत्वं बलवर्णकरं पुनः ॥ ५२ ॥

अर्थ–स्थावर स्नेह तेलकी तरह वातको नाशनेवाले कहे गये हैं। इन्होंमें तेलपणा गौण है फिर बल, वर्णको करता है ॥ ५२ ॥

मेदोमज्जावसा ज्ञेया ग्राम्यानूपौदकोद्भवाः ।
गुरवो मधुराश्चोष्णाः समीरणविनाशनाः ॥ ५३ ॥

अर्थ–ग्राम्य, औदक, अनूप इन देशोंमें रहनेवाले जीवोंकी मेद, मज्जा और वसा भारी है, मीठी है, गर्म है और वातको नाशती है ॥ ५३ ॥

जाङ्गलैकशफादीनां क्रव्यादानां कषायकाः ।
लघवः शीतला ज्ञेया रक्तपित्तनिबर्हणाः ॥ ५४ ॥

अर्थ–जांगल देशमें रहनेवाले, एक खुरवाले और मांस खानेवाले जीवोंकी मेद, मज्जा, वसा कषैली है, हलकी है, शीतल है और रक्तपित्तको दूर करती है ॥ ५४ ॥

प्रतुदा विष्किरादीनां ज्ञातव्याः कफकृन्तनाः ।
घृततैलवसामेदोमज्जानो वातनाशनाः ।
यथोत्तरं परिज्ञेया विपाके स्वादवः परम् ॥ ५५ ॥

अर्थ–प्रतुद अर्थात् चोंचसे चुगनेवाले बडा तोता, परेवा, खंजना, कोयल आदि

विष्किर अर्थात् बतक, लावा, मुर्गा, चकोर आदि जीवोंकी मेद, मज्जा, वसा, कफको नाशती है । घृत, तेल, वसा, मेद, मज्जा वातको नाशते हैं । ये यथोत्तर अर्थात् घृतसे तेल और तेलसे वसा ऐसे पाकमें बहुत स्वादु हैं ॥ ५५ ॥

मद्यभेदनामगुणाः ।

मद्यं हाला सुरा शुण्डा मदिरा वरुणात्मजा ।
सुरा गन्धोत्तमा कल्या देवस्पृष्टा च वारुणी ॥ ५६ ॥

अर्थ–मद्य, हाला, सुरा, शुंडा, मदिरा, वरुणात्मजा, गंधोत्तमा, कल्या, देवस्पृष्टा, वारुणी ये दश नाम मदिराके हैं ॥ ५६ ॥

मद्यं पित्तकरं प्रायः सरं रोचनदीपनम् ।
विदाहि सृष्टविण्मूत्रं तीक्ष्णं वातकफापहम् ॥ ५७ ॥

अर्थ–मदिरा प्रायः पित्तको करती है, फैलानेवाली है, रुचिको उपजाती है, अग्निको जगाती है, दाह करती है, मलमूत्रको उपजाती है, तेज है और वातकफको नाशती है ॥ ५७ ॥

विधिनान्नयुतं पीतं तस्मादमृतसन्निभम् ।
अन्यथा कुरुते रोगानतिपीतं विषोपमम् ॥ ५८ ॥

अर्थ–विधिकरके अन्नसे युत कर पान करी हुई मदिरा अमृतके समान है, अन्य प्रकारसे पान करी मदिरा रोगोंको करती है, बहुत पान करी मदिरा विषके समान है ॥ ५८॥

द्राक्षोत्थमविदाहित्वाद्रक्तपित्तेषु शस्यते ।
बलपुष्टिकरं मद्यं रक्तार्शोहारि दीपनम् ॥ ५९ ॥

अर्थ–दाहको नहीं करनेसे दाखकी मदिरा रक्तपित्तमें उत्तम है, बल और पुष्टिको करती है, रक्तकी बवासीरको हरती है और अग्निको जगाती है ॥ ५९ ॥

माध्वी कल्यगुणा किञ्चित् खर्जूरमनिलप्रदम् ।
तदेव विशदं रुच्यं श्लेष्मघ्नं कर्षणं लघु ॥ १६० ॥

अर्थ–माध्वी मदिरा अल्प गुणोंवाली है, खर्जूरकी मदिरा वातको देती है, वही सुंदर है, रुचिमें हित है, कफको नाशती है, कर्षण है और हलकी है ॥ १६० ॥

शालिषष्टिकपिष्टादिकृतं मद्यं सुरा मतम् ।
सुरा गुर्वी बलस्तन्यपुष्टिमेदःकफप्रदा ।

ग्राहिणी शोथगुल्मार्शोग्रहणीमूत्रकृच्छ्रनुत् ॥ ६१ ॥

अर्थ-शालीचांवल, सांठीचांवल और पीठी आदिकी करी मदिरा सुरा मानी गई है । सुरा भारी है और वल, दूध, पुष्टि, मेद, कफ इन्होंको देती है, मलको बांधती है तथा शोजा, गुल्म, बवासीर, ग्रहणी, मूत्रकृच्छ्र इन्होंको दूर करती है ॥ ६१ ॥

पुनर्नवा शालिपिष्टैर्विहिता वारुणी मता ॥ ६२ ॥

अर्थ-सांठी और शाली चांवलोंकी पीठीसे बनाई हुई मदिरा वारुणी मानी गई है ॥ ६२ ॥

सुरावद्वारुणी लघ्वी पीनसाध्मानशूलनुत् ।
प्रसन्ना स्यात् सुरामण्डस्तस्मात् कादम्बरी घना ॥ ६३ ॥

अर्थ-वारुणीमेंभी सुराके सब गुण हैं, परंतु हलकी है और पीनस, आध्मान, शूल इन्होंको दूर करती है, सुराका मंड प्रसन्ना होती है । सुरामंडसे घनरूप कादंबरी होती है ॥ ६३ ॥

जङ्गलस्तदधः प्रोक्तो जङ्गलान्मेदको घनः ।
पक्कशो जङ्गलः सारः सुराबीजं तु किण्वकम् ॥ ६४ ॥

अर्थ-उससे नीचे जंगल कहा है, जंगलसे घनरूप मेदक होता है, जंगलका साररूप पक्कश होता है, सुराका बीज किण्वक होता है ॥ ६४ ॥

प्रसन्नानाहगुल्मार्शच्छर्द्यरोचकवाताजित् ।
दीपन्याध्मानहृत् कुक्षितोदशूलप्रणाशिनी ॥ ६५ ॥

अर्थ-प्रसन्ना अफरा, गुल्म, बवासीर, छर्दि, अरोचक, वात इन्होंको जीतती है, अग्निको जगाती है, आध्मानको हरती है, कूखके चमके और शूलको नाशती है ॥ ६५ ॥

कादम्बरी गुरुर्वृष्या दीपनी वातकृत्सरा ।
जङ्गलः कफनुद् ग्राही शोफार्शोग्रहणीहरः ॥ ६६ ॥

अर्थ-कादंबरी भारी है, स्त्रीसंगमें हित है, अग्निको जगाती है, वातको करती है और फैलनेवाली है । जंगल कफको दूर करती और मलको बांधती है तथा शोजा, बवासीर, ग्रहणी इन्होंको हरती है ॥ ६६ ॥

मेदको मधुरो बल्यः स्तम्भनः शीतलो गुरुः ।
पक्कशो हृतसारत्वाद् विष्टम्भी वातवर्द्धनः ॥ ६७ ॥

अर्थ-मेदक मीठा है, बलको करता है, वीर्यको थांभता है तथा शीतल और

भारी है । सारसे रहित होनेसे पक्कश विष्टंभ करता है और वातको बढाता है॥६७॥

किण्वकं वातशमनमल्पं दुर्जरं गुरु ।
आक्षिकी सा सुरा या स्यादक्षत्वक्शालितण्डुलैः ॥ ६८ ॥

अर्थ–किण्वक वातको शांत करता है, सुंदर नहीं है, देरमें जरता है और भारी है । बहेडाकी छाल और शाली चांवलोंसे बनी मदिरा आक्षिकी होती है ॥ ६८ ॥

आक्षिकी पाण्डुशोफार्शःपित्तास्रकफकुष्ठनुत् ।
किञ्चिद्वातकरा रूक्षा दीपनी रेचनी लघुः ॥ ६९ ॥

अर्थ–आक्षिकी पांडु, शोजा, बवासीर, पित्तरक्त, कफ, कुष्ठ इन्होंको दूर करती है, कछुक वातको करती है, रूखी है, अग्निको जगाती है, दस्तावर है और हलकी है ६९

यवपिष्टकृतं मद्यं प्रोक्तं यवसुरा च सा ।
काकोलिकी हली ज्ञेया मैरेयो धान्यजासवः ॥ १७० ॥

अर्थ–जवोंकी पीठीसे बनाई मदिरा यवसुरा होती है । काकोलिकी, हली, मैरेय, धान्यजासव ये चार नाम इसके हैं ॥ १७० ॥

आसवश्च सुरायाश्च द्वयोरप्येकभाजनम् ।
साधनं तद्विजानीयान्मैरेयमुभयात्मकम् ॥ ७१ ॥

अर्थ–आसव और सुरा इन दोनोंका एक पात्र है, वह साधन जानना । दोनोंका मैरेय होता है ॥ ७१ ॥

क्वचित्तु धातकीपुष्पं गुडधान्याम्बुसाधितम् ।
गुर्वी यवसुरा रूक्षा स्याद्विष्टम्भित्रिदोषकृत् ॥ ७२ ॥

अर्थ–कहीं तो धायका फूल, गुड और अन्नके पानीसे साधित किया मैरेय होता है । यवसुरा भारी है, रूखी है, विष्टंभ और त्रिदोषको करती है ॥ ७२ ॥

काकोली बृंहणी वृष्या दृष्टिमान्द्यप्रदा गुरुः ।
मैरेयं बृंहणं वृष्यं गुरु सन्तर्पणं सरम् ॥ ७३ ॥

अर्थ–काकोली धातुको पुष्ट करती है, स्त्रीसंगमें हित है, दृष्टिको मंद करती है, भारी है । मैरेय धातुको पुष्ट करता है, स्त्रीसंगमें हित है, भारी है, तृप्ति करनेवाला है, फैलनेवाला है ॥ ७३ ॥

मद्यं सर्वरसं जातं मधूलकमुदीर्यते ।
मधूलकं गुरु स्वादु स्निग्धं शुक्रकफप्रदम् ॥ ७४ ॥

अर्थ–सब रसोंवाली उपजी मदिरा मधूलक कही है । मधूलक भारी है, स्वादु है, चिकना है, वीर्य और कफको देती है ॥ ७४ ॥

शर्करो दीपनः स्वादुः पाचनो रोचनो लघुः ।
स्त्रीविलासकरो वातशोषबस्तिविकारनुत् ॥ ७५ ॥

अर्थ–आसव अग्निको जगाता है, स्वादु है, पाचन है, रुचिको करता है, हलका है, स्त्रीसंभोगमें सुख देता है, वात, शोष, बस्तिविकार इन्होंको दूर करता है ॥७५॥

मध्वासवो लघू रूक्षः कुष्ठमेहविषापहः ।
गौडोऽग्निवर्द्धनो वर्णबलकृत्तर्पणः कटुः ।
तिक्तको बृंहणः स्वादुः सृष्टविण्मूत्रमारुतः ॥ ७६ ॥

अर्थ–मध्वासव हलका है, रूखा है, कुष्ठ प्रमेह, विष इन्होंको नाशता है, गौड-मदिरा अग्निको बढाती है, वर्ण और बलको करती है, तृप्ति करती है, चर्परी है, कडुवी है, धातुको पुष्ट करती है, स्वादु है, मल, मूत्र, वात इन्होंको रचती है॥७६॥

इक्षोः पक्करसः पक्वः सीधुः पक्करसः स्मृतः ।
आसैः स एव विहितो बुधैः शीतरसो मतः ॥ ७७ ॥

अर्थ–ईखका पका हुआ रस सीधु होता है, वही वैद्योंने पक्व रस कहा है, आसवोंसे रचा वही पंडितोंने शीतलरस कहा है ॥ ७७ ॥

सीधुः पक्करसः श्रेष्ठः स्वराग्निबलवर्णकृत् ।
वातपित्तकरो हृद्यः स्नेहनो रोचनो जयेत् ।
विबन्धमेहशोफार्शःशोफोदरकफामयान् ॥ ७८ ॥

अर्थ–सीधु और पक्करस श्रेष्ठ है, स्वर, अग्नि, बल, वर्ण इन्होंको करता है, वातपित्तको करता है, दिलको ताकत देता है, शरीरको चिकना करता है, रुचिको उपजाता है, बंधा, प्रमेह, शोजा, बवासीर, उदररोग, कफरोग इन्होंको जीतता है ॥ ७८ ॥

तस्मादल्पगुणः शीतः सरः संलेखनः स्मृतः ॥ ७९ ॥

अर्थ–उससे अल्पगुणोंवाला शीतलरस फैलनेवाला है, अच्छी तरह लेखन कहा है ॥ ७९ ॥

जाम्बवः क्षौद्रसम्भूतो जम्बूरसगुहोद्भवः ।
जाम्बवो बद्धनिष्यन्दः कषायोऽनिलकोपनः ॥ १८० ॥

अर्थ–शहदसे बनी मदिरा जांबव होती है, जामनका रस आर गुडसे बनी मदिरा जांबव होती है । जांबव आंखको मिचाती है, कषैली है, वातको कुपाती है ॥ १८० ॥

अरिष्टासवसीधूनां गुणान् कर्माणि चादिशेत् ।
बुद्ध्या यथास्वसंस्कारमवेक्ष्य कुशलो भिषक् ॥ ८१ ॥

अर्थ–अरिष्ट, आसव, सीधु इन्होंके गुण और कर्मोंको बुद्धिकरके यथायोग्य अपने संस्कारको देख कुशल वैद्य कहे ॥ ८१ ॥

सान्द्रं विदाहि दुर्गन्धि विरसं कृमिसंकुलम् ।
अह्रद्यं तरुणं रूक्षमुष्णं दुर्भाजने स्थितम् ॥ ८२ ॥

अर्थ–चिकनी, दाह करनेवाली, दुर्गंधवाली, रससे रहित, कीडोंसे युत हुई, नहीं सुंदर, तरुणरूप, रूखी, उष्ण, बुरे पात्रमें स्थित ॥ ८२ ॥

अल्पौषधं पर्युषितमत्यर्थं पिच्छलं च यत् ।
कफप्रकोपि तन्मद्यं दुर्जरं च विशेषतः ॥ ८३ ॥

अर्थ–अल्प औषधोंवाली, बहुत दिनोंकी धरी, झागोंवाली ऐसी मदिरा कफको कुपित करती है और विशेषकरके देरमें जरती है ॥ ८३ ॥

पित्तप्रकोपि बहुलं तीक्ष्णमुष्णं विदाहि च ।
अह्रद्यं पेशलं पूति कृमिलं विरसं गुरु ॥ ८४ ॥

अर्थ–बहुत तेज गर्म, और विशेषकर दाह करनेवाली ऐसी मदिरा पित्तको कुपित करती है, सुंदर नहीं, कोमल, दुर्गंधवाली, कीडोंसे युत हुई, रससे वर्जित और भारी ॥ ८४ ॥

तथा पर्युषितं वापि विद्यादनिलकोपनम् ।
सर्वदोषैरुपेतं तु सर्वदोषप्रकोपनम् ॥ ८५ ॥

अर्थ–तथा पर्युषित अर्थात् बासी मदिरा वातको कुपित करती है और सब दोषोंसे युत हुई मदिरा सब दोषोंको कुपित करती है ॥ ८५ ॥

चिरस्थितं जातरसं दीपनं कफवातजित् ।
रुच्यं प्रसन्नं सुरभि मेध्यं सेव्यं महाहवम् ॥ ८६ ॥

अर्थ–बहुत कालकी धरी और उपजे हुए रसवाली मदिरा अग्निको जगाती है, कफको और वातको जीतती है, रुचिको पैदा करनेवाली, सुंदर, सुगंधित, बुद्धिको बढानेवाली ऐसी मदिरा सेवन करनेके योग्य है ॥ ८६ ॥

तस्मान्नैकप्रकारस्य मद्यस्य रसवीर्यनात् ।
स सौक्ष्म्यादौष्णवातत्वाद्विकाशित्वात् त्ववह्निनुत् ॥ ८७ ॥

अर्थ–तिस कारणसे एक प्रकारकी मदिराके रस वीर्यको जानके नहीं सेवे । वह मदिरा सूक्ष्मपनेसे और गर्म वातवाली और अविकाशी होनेसे अग्निको मंद नहीं करती है ॥ ८७ ॥

समेत्य हृदयं प्राप्य धमनीरूर्ध्वमागतः ।
विक्षुभ्येन्द्रियचेतांसि मदयत्याशु वीर्यतः ॥ ८८ ॥

अर्थ–हृदयको अच्छी तरह प्राप्त होकर धमनियोंके ऊपर प्राप्त हो इन्द्रिय और चित्तको बिगाड वीर्यसे शीघ्र मंद करती है ॥ ८८ ॥

चिरेण श्लेष्मके पुंसि पातनो जायते मदः ।
अचिराद्वातिके दृष्टः पैत्तिके शीघ्रमेव च ॥ ८९ ॥

अर्थ–कफकी प्रकृतिवाले पुरुषमें बहुत देरमें गिरानेवाला मद उपजता है, वातकी प्रकृतिवाले पुरुषके थोडी देरमें मद होता है और पित्तकी प्रकृतिवालेको शीघ्र मद उपजता है ॥ ८९ ॥

नवं मद्यमभिष्यन्दि त्रिदोषजनकं सरम् ।
अरिष्टं बृंहणं दाहि दुर्गन्धि विशदं गुरु ॥ १९० ॥

अर्थ–नई मदिरा अभिष्यंदी है, त्रिदोषको उपजाती है, फैलनेवाली है, अरिष्ट धातुको पुष्ट करती है, दाह करती है, दुर्गंधवाली तथा सुंदर और भारी है ॥१९०॥

जीर्णं तदेव रोचिष्णु कृमिश्लेष्मानिलापहम् ।
हृद्यं सुगन्धि सुगुणं लघु स्रोतोविशोधनम् ॥ ९१ ॥

अर्थ–वही पुराना मद्य रुचिको करता है और कृमि, कफ, वातको नाशता है दिलको ताकत देता है, सुगंधित और सुंदर गुणोंवाला है, हलका है और नाडीके स्रोतोंको शोधता है ॥ ९१ ॥

सात्त्विकं गीतहास्यादि राजसं साहसादिकम् ।
तामसे निन्द्यकर्माणि निद्रादि कुरुते तदा ॥ ९२ ॥

अर्थ–सात्विक प्रकृतिवालेको मदिरा गीत और हँसना आदि उपजाती है, रजोगुणकी प्रकृतिवालेको साहसादि अर्थात् हठ आदि कराती है, तमोगुणकी प्रकृतिवालेको मदिरा निंदित कर्म और नींद आदिमें रत करती है ॥ ९२ ॥

चुक्रं कफघ्नं तीक्ष्णोष्णं लघु रोचनपाचनम् ।
पांडुकृमिहरं रूक्षं भेदनं रक्तपित्तकृत् ॥ ९३ ॥

अर्थ–चुक्र कफको नाशता है, तेज है, गर्म है, हलका है, रुचिको उपजाता है, पाचन है, पांडु और कृमिको हरता है, रूखा है, भेदन है और रक्तपित्तको करता है ॥ ९३ ॥

गौडादिरसयुक्तानि मद्येषूक्तानि यानि च ।
यथापूर्वं गुरुतराण्यभिष्यन्दकराणि च ॥ ९४ ॥

अर्थ–गौडादि रससे युक्त जो मदिरा कही है, वे पूर्व पूर्व क्रमसे भारी और अभिष्यंदकारक है ॥ ९४ ॥

स्यात्काञ्जिकं तु सौवीरमारनालं तु दोषकृत् ।
काञ्जिकं शिशिरस्पर्शं पाचनं रोचनं लघु ॥ ९५ ॥

अर्थ–कांजिक, सौवीर, आरनाल ये तीन नाम कांजीके हैं । कांजी दोषको करती है, शीतल स्वर्शवाली है, पाचन है, रुचिको उपजाती है और हलकी है ९५

तुषोदकं यवैरामं सतुषैः सकलैः कृतम् ।
सौवीरकं कृतं त्वामैः पक्वैर्वा निस्तुषैर्यवैः ॥ ९६ ॥

अर्थ–कच्चे जवोंसे बनाया हुआ तुषोदक होता है, तुषोंसहित कच्चे जवोंसे बनाया अथवा तुषोंरहित पक्के जवोंसे बनाया सौवीर होता है ॥ ९६ ॥

सर्वैं रसै रसाम्लं स्यात् सौवीरकमिति क्वचित् ।
तुषाम्बु दीपनं हृद्यं पाण्डुकृमिगदापहम् ॥ ९७ ॥

अर्थ–कहीं सब रसोंकरके रसाम्लरूप सौवीरक होता है । तुषोदक अग्निको जगाता है, दिलको ताकत देता है और पांडु, कृमिरोग इन्होंको नाशता है ॥९७॥

सौवीरकं ग्रहण्यर्शोनाशनं भेदि दीपनम् ।
धान्याम्लं धान्ययोनित्वात् प्रीणनं लघु दीपनम् ॥ ९८ ॥

अर्थ–सौवीरक ग्रहणी और बवासीरको नाशता है, भेदन है, अग्निको जगाता है । धान्याम्ल धान्यसे उपजानेवाला होनेसे तृप्ति करता है, हलका है और अग्निको जगाता है ॥ ९८ ॥

स्पर्शदाहकरं पानात्पाचनं श्लेष्मनाशनम् ।
गण्डूषान्मुखवैरस्यदौर्गन्ध्यकफकृन्तनम् ॥ ९९ ॥

अर्थ–स्पर्शसे दाह करता है, पीनेसे पाचन है, कफको नाशता है, गरारासे मुखके विरसपन, दुर्गंध और कफको दूर करता है ॥ ९९ ॥

गोहास्तिमाहिषमूत्रगुणाः ।

मूत्रं गोनागमहिषीहयाजाविखरोष्ट्रजम् ।
नराणां च भवेत्सर्वं पाचनं दीपनं लघु ॥ २०० ॥

अर्थ–गाय, हाथी, भैंस, घोडा, बकरी, भेड, गधा, ऊंट और मनुष्य इन सबोंका मूत्र पाचन है, अग्निको जगाता है और हलका है ॥ २०० ॥

लवणानुरसं तिक्तं रूक्षं स्रोतोविशोधनम् ।
पित्तलं कटुकं हृद्यं भेदि वातानुलोमतः ॥ १ ॥

अर्थ–यह नमकके रसवाला है, कडुवा है, रूखा है, नाडीके स्रोतोंको शोधता है, पित्तको करता है, चर्परा है, दिलको ताकत देता है, भेदन है और वातको अनुलोमित करता है ॥ १ ॥

निहन्ति वातगुल्मार्शःशोफोदरकफकृमीन् ।
कुष्ठपाण्डुगदानाहविषशूलारुचीस्तथा ॥ २ ॥

अर्थ–यही वात, गुल्म, बवासीर, शोजा, उदररोग, कफ, कृमिरोग, कुष्ठ, पांडुरोग, अफरा, विष, शूल, अरुचि इन्होंको नाशता है ॥ २ ॥

गोमूत्रं तेषु सर्वेषु मूत्रयोगे प्रशस्यते ।
हस्तिमूत्रं विषार्शोघ्नं कुष्ठगुल्मकृमीन् जयेत् ।
माहिषं शोफगुल्मार्शःपाण्डुमेहेषु योजयेत् ॥३ ॥

अर्थ–उन सबोंमें मूत्रके योगविषै गोमूत्र श्रेष्ठ है, हस्तिमूत्र अर्थात् हाथीका मूत्र विष, बवासीर, कुष्ठ, गुल्म और कृमिको नाशता है, शोजा, गुल्म, बवासीर, पांडु, प्रमेह इन रोगोंमें माहिष अर्थात् भैंसका मूत्र योजित करना ॥ ३ ॥

आश्वमूत्रगुणाः ।

आश्वं भेदि विशेषेण कफदद्रुकृमीन् हरेत् ॥ ४ ॥

अर्थ–आश्व अर्थात् घोडेका मूत्र विशेषकरके भेदन है और कफ, दाह, कृमि इन्होंको हरता है ॥ ४ ॥

आजमूत्रगुणाः ।

आजं गुल्मविषश्वासकामलापाण्डुदोषजित् ॥ ५ ॥

अर्थ–आज अर्थात् बकरीका मूत्र गुल्म, विष, श्वास, कामला, पांडु और दोषको जीतता है ॥ ५ ॥

आविकमूत्रगुणाः ।

आविकं शोफकुष्ठार्शोमेहवर्चोग्रहापहम् ॥ ६ ॥

अर्थ–आविक अर्थात् भेडका मूत्र शोजा, कुष्ठ, ववासीर, प्रमेह और मलके बंधावको नाशता है ॥ ६ ॥

गर्दभमूत्रगुणाः ।

गार्दभं ग्रहणीमेहकुष्ठोन्मादकृमीन् जयेत् ॥ ७ ॥

अर्थ–गार्दभ अर्थात् गधेका मूत्र ग्रहणी, प्रमेह, कुष्ठ, उन्माद और कृमिको जीतता है ॥ ७ ॥

उष्ट्रमूत्रगुणाः ।

औष्ट्रमुन्मादशोफार्शःकृमिशूलोदरापहम् ॥ ८ ॥

अर्थ–औष्ट्र अर्थात् ऊंटका मूत्र उन्माद, शोजा, ववासीर, कृमि, शूल और उदररोगको नाशता है ॥ ८ ॥

नरमूत्रगुणाः ।

नरमूत्रं सरं हन्ति सेवितं सुरसायनम् ॥ ९ ॥

अर्थ–नरमूत्र अर्थात् मनुष्यका मूत्र फैलनेवाला है, सेवनसे रोगको नाशता है और बुढापेको दूर करता है ॥ ९ ॥

गोऽजाविमहिषीणां च स्त्रीणां मूत्रं प्रशस्यते ।
खरोष्ट्रेभनराश्वानां पुंसां मूत्रं हितं मतम् ॥ २१० ॥

अर्थ–गाय, बकरी, भेड, भैंस इस स्त्रीजाति पशुओंका मूत्र श्रेष्ठ है । गधा, ऊंट, हाथी, मनुष्य और घोडा इन पुरुष जातियोंका मूत्र हित माना गया है ॥ २१० ॥

इति पानीयनामविशेषवर्गोऽष्टमः ।

मृद्भक्षितानेन रुषेति वक्त्रे प्रसारिते वीक्ष्य ततो जगन्ति ।
सविस्मयं सादरमीक्ष्यमाणं यशोदया नन्दसुतं नमामि ॥ १ ॥

अर्थ–माटी खाके रोषसे पसारे हुए मुखमें यशोदाको जगत् दिखानेवाले आश्चर्यसहित और आदरसहित ऐसे नंदसुतको प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥

इक्षुभेदनामगुणाः ।

इक्षुर्महारसो वेणुर्निःसृतो गुडपत्रकः ।

तृणराजो मधुतृणो गण्डीरोऽमृतपुष्पकः ॥ २ ॥

अर्थ–इक्षु, महारस, वेणु, निःसृत, गुडपत्रक, तृणराज, मधुतृण, गंडीर, अमृतपुष्पक ॥ २ ॥

ह्रस्वमूलो लोहितेक्षुः पौण्ड्रिकः पौण्ड्रकोऽपरः ।
रसालः सुकुमारोऽपि कृष्णेक्षुर्भीरुको मतः ॥ ३ ॥

अर्थ–ह्रस्वमूल, लोहितेक्षु, पौंड्रिक ये बारह नाम ईखके हैं और पौंड्रक, रसाल, सुकुमार, कृष्णेक्षु, भीरुक ये पांच नाम इसके भेदके हैं ॥ ३ ॥

इक्षुः स्वादुर्गुरुः शीतो वृष्यः स्निग्धो बलप्रदः ।
जीवनो वातपित्तघ्नः कुर्यान्मूत्रकफकृमीन् ॥ ४ ॥

अर्थ–ईख स्वादु है, भारी है, शीतल है, स्त्रीसंगमें हित है, चिकना है, बलको देता है, जीवन है, वातपित्तको नाशता है और मूत्र, कफ, कृमि, इन्होंको करताहै ४

स मूले मधुरोऽत्यर्थं मध्ये मधुर एव च ।
अग्रग्रन्थिषु विज्ञेयो लवणो मूत्रलस्तथा ॥ ५ ॥

अर्थ–जडमें ईख बहुत मीठा है, मध्यमें मीठा है, अग्रभागमें नमकके स्वादवाला और मूत्रको उपजानेवाला है ॥ ५ ॥

लोहितेक्षुगुरुः शीतो दाहपित्तास्रकृच्छ्रनुत् ।
पौण्ड्रकः शीतलः स्निग्धो बृंहणः कफकृत् सरः ॥ ६ ॥

अर्थ–लाल ईख भारी और शीतल है, दाह, पित्तरक्त और मूत्रकृच्छ्रको दूर करता है । पौंडा शीतल है, चिकना है, धातुको पुष्ट करता है, कफको करता है और फैलनेवाला है ॥ ६ ॥

कृष्णेक्षुस्तद्गुणो वंशः क्षारः किञ्चित्तु तत्समः ।
वंशवच्छतपोरोऽपि किञ्चिदुष्णः समीरजित् ॥ ७ ॥

अर्थ–काले ईखमेंभी येही गुण हैं । वंश नामक ईख कछुक खारा है और पूर्वोक्त गुणोंवाला है । शतपोर ईख वंश-ईखके समान गुणोंवाला है, कुछेक गर्म है और वातको जीतता है ॥ ७ ॥

कान्तारतापसैः तद्वत् काष्ठेक्षुर्वातलो हिमः ।
कासकारो गुरुः शीतो रक्तपित्तक्षयापहः ॥ ८ ॥

अर्थ–कांतार और तापस ईखमेंभी येही गुण हैं । काष्ठेक्षु वातको करता है और शीतल है । कासकार ईख भारी है, शीतल है, रक्तपित्त और क्षयको नाशता है ॥ ८ ॥

सूचीपत्रो नीलपरौ नैपालो दीर्घपत्रकः ।
वातलः कफपित्तघ्नः सकषायोऽतिदाहकृत् ॥ ९ ॥

अर्थ–सूचीपत्र, नीलपर, नैपाल, दीर्घपत्रक ये चार नाम नैपाल ईखके हैं। नैपाल ईख भारी है, दाहको करता है, कफपित्तको नाशता है, कषैला और अत्यंत दाहको करता है ॥ ९ ॥

इक्षुरसगुणाः ।

दन्तनिष्पीडितस्तेषां रसः पित्तास्रनाशनः ।
शर्करासमवीर्यः स्यादविदाही कफप्रदः ।
गुरुर्विदाही विष्टम्भी यान्त्रिकस्तु प्रकीर्त्तितः ॥ १० ॥

अर्थ–दंतोंसे पीडित किया ईखका रस पित्तरक्तको नाशता है, खांडके समान वीर्यवाला है, दाहको नहीं करता है, कफको देता है और भारी है। यंत्रसे निकाला ईखका रस भारी है और दाह तथा विष्टंभको करता है ॥ १० ॥

मत्स्यण्डीनामगुणाः ।

सिता मत्स्यण्डिका पल्ली ममाण्डी वलकस्तथा ।
अन्या विषपलद्वन्धा शिग्रुका कृत्तिकामला ॥ ११ ॥

अर्थ–सिता, मत्स्यंडिका, पल्ली, ममाण्डी, वलक, दूसरी विषपलद्वंधा, शिग्रुका, कृत्तिका, अमला ॥ ११ ॥

खण्डमन्यत् खण्डसिता माधवी मधुशर्करा ।
यवासशर्कराऽन्या सा यवासक्काथसम्भवा ॥ १२ ॥

अर्थ–खंड, खंडसिता, माधवी, मधुशर्करा, यवासशर्करा, यवासक्काथसंभवा ॥ १२ ॥

अन्या पुष्पसिता प्रोक्ता पुष्पसंभृतशर्करा ।
फाणितं क्षुद्रगुडको गुडस्त्विक्षुरसोद्भवः ।
मत्स्यण्डी ग्राहिणी बल्या गुरुः पित्तानिलापहा ॥ १३ ॥

अर्थ–पुष्पासिता, पुष्पसंभृतशर्करा, फाणित, क्षुद्रगुडक, गुड, इक्षुरसोद्भव ये नाम राब, खांड, गुड आदिके हैं। राब मलको बांधती है, बलको करती है, भारी है, पित्त और वातको नाशती है ॥ १३ ॥

सितोपलानामगुणाः ।

सितोपला सहा गुर्वी वातपित्तहरा हिमा ॥ १४ ॥

अर्थ–सितोपला, सहा ये दो नाम मिश्रीके हैं । मिसरी भारी है, वातपित्तको हरती है और शीतल है ॥ १४ ॥

खण्डगुणाः ।

खण्डमप्येवमुद्दिष्टं रुच्यं पुष्टिबलप्रदम् ॥ १५ ॥

अर्थ–खांडमेंभी येही गुण हैं, रुचिको बढाती है तथा पुष्टि और बलको देती है १५

मधुशर्करागुणाः ।

माधवी शर्करा रूक्षा कफपित्तहरा गुरुः ॥ १६ ॥

अर्थ–माधवी शर्करा अर्थात् शहदकी खांड रूखी है, शीतल है, वातको करती है और कफपित्तको जीतती है ॥ १६ ॥

यवासशर्करागुणाः ।

यवासशर्करा शीता वातला कफपित्तजित् ॥ १७ ॥

अर्थ–यवासशर्करा अर्थात् गुडको औटायके बनाई गई खांड शीतल है, वातको करती है और कफपित्तको जीतती है ॥ १७ ॥

पुष्पसिताशर्करागुणाः ।

सिता पुष्पसिता हृद्या रक्तपित्तहरा गुरुः ॥ १८ ॥

अर्थ–सिता, पुष्पसिता ये दो नाम चीनी खांडके हैं । पुष्पसिता खांड दिलको ताकत देती है, रक्तपित्तको हरती है और भारी है ॥ १८ ॥

फाणितगुणाः ।

फाणितं गुर्वभिष्यन्दि दोषलं मूत्रशोधनम् ॥ १९ ॥

अर्थ–फाणित अर्थात् राब भेद भारी है, अभिष्यंदी है, दोषको करती है, मूत्रको शोधती है ॥ १९ ॥

मधूकनामगुणाः ।

मधूकं फाणितं बस्तिदूषणं वातपित्तलम् ॥ २० ॥

अर्थ–मधूक, फाणित ये दो नाम मधूकके हैं । मधूक बस्तिको दूषित करता है और वातपित्तको उपजाता है ॥ २० ॥

गुडगुणाः ।

गुडः क्षारो गुरुः स्वादुर्वातपित्ताग्निकृत्सरः ।
बल्यः कृमिश्लेष्मकरो मूत्ररक्तविशोधनः ।
जीर्णो हृद्यो लघुः पथ्यो नाभिष्यन्द्यग्निपुष्टिकृत् ॥ २१ ॥

अर्थ–गुड खारा है, भारी और स्वादु है, वातपित्त और अग्नि इन्होंको करता है, सर (दस्तावर) और बलमें हित है, कृमि और कफको उत्पन्न करता है तथा मूत्र और रक्तको शोधता है । पुराना गुड दिलको ताकत देता है, हलका है, पथ्य है, अभिष्यंदी नहीं है तथा अग्नि और पुष्टिको करता है ॥ २१ ॥

इक्षोर्विकारान् विमलान् यथा कुर्युर्गुणास्तथा ।
तृड्दाहमूर्च्छापित्तासृक्विषमेहहरा हिमाः ।
गुरवो मधुरा बल्याः स्निग्धा वातहराः सराः ॥ २२ ॥

अर्थ–ईखके विकार जितने निर्मल बनावे उतनेही गुण करते हैं । तृषा, दाह, मूर्च्छा, पित्तरक्त, विष, प्रमेह इन्होंको हरते हैं, शीतल हैं, भारी हैं, मीठे हैं, बलको करते हैं, चिकने हैं, वातको हरते और सर हैं ॥ २२ ॥ इति इक्षुवर्गः ।

मधुनामगुणाः ।

मधु पुष्पासवः पुष्परसो माक्षिकमीरितम् ।
माक्षिकं पैत्तिकं क्षौद्रं भ्रामरं मधु विस्तरात् ॥ २३ ॥

अर्थ–मधु, पुष्पासव, पुष्परस, माक्षिक ये चार नाम शहदके हैं । माक्षिक, पैत्तिक, क्षौद्र, भ्रामर इन चार भेदोंवाला शहद होता है ॥ २३ ॥

माक्षिकं तैलसङ्काशं पैत्तिकं घृतसन्निभम् ।
क्षौद्रं कपिलवर्णं स्याद् भ्रामरं स्फटिकोपमम् ॥ २४ ॥

अर्थ–तेलके समान कांतिवाला माक्षिक होता है, घृतके समान कांतिवाला पैत्तिक होता है, कपिल रंगवाला क्षौद्र होता है और गिलोरी पत्थरके समान कांतिवाला भ्रामर होता है ॥ २४ ॥

मधु शीतं लघु स्वादु रूक्षं ग्राहि विलेखनम् ।
चक्षुष्यं दीपनं स्वर्यं व्रणशोधनरोपणम् ॥ २५ ॥

अर्थ–शहद शीतल और हलका है, स्वादु और रूखा है, मलको बांधता है, लेखन है, आंखोंमें हित है और अग्निको जगाता है, स्वरमें हित है तथा घावको शोधता और रोपता है ॥ २५ ॥

वर्ण्यं मेधाकरं वृष्यं विशदं रोचनं जयेत् ।
कुष्ठार्शःकासपित्तासृक्कफमेहकृमीन् ॥ २६ ॥

अर्थ–मधु वर्णको उपजाता है, बुद्धिको बढाता है, धातुको पुष्ट करता है, सुंदर

है और रुचिको उपजाता है तथा कुष्ठ, बवासीर, खांसी, पित्तरक्त, कफ, प्रमेह, ग्लानि, कृमि ॥ २६ ॥

मदतृष्णावमिश्वासहिक्कातीसारहृद्ग्रहान् ।
दाहक्षतक्षयास्रं तु योगवाह्यल्पवातलम् ॥ २७ ॥

अर्थ-मद, तृषा, छर्दि, श्वास, हिचकी, अतिसार, हृदयरोग, दाह, क्षत, क्षय और रक्तको जीतता है । यह योगवाही है और थोडी वातको करता है ॥ २७ ॥

माक्षिकं मधुषु श्रेष्ठं नेत्रामयहरं लघु ।
पैत्तिकं मधु रूक्षोष्णं पित्तदाहास्रवातकृत् ॥ २८ ॥

अर्थ-मधुओंमें माक्षिक शहद श्रेष्ठ है, यह नेत्ररोगको हरता है और हलका है । पैत्तिक शहद रूखा और गर्म है तथा पित्त, दाह और रक्तवातको करता है ॥२८॥

क्षौद्रं माक्षिकमप्येव विशेषान्मेहनाशनम् ।
भ्रामरं रक्तपित्तघ्नं मूत्रजाड्यकरं गुरु ॥ २९ ॥

अर्थ-माक्षिकमें जो गुण हैं वे सब क्षौद्रमेंभी हैं, परंतु विशेषसे क्षौद्र प्रमेहको नाशता है । भ्रामर शहद रक्तपित्तको नाशता है, मूत्र और जडपनको करता है तथा भारी है ॥ २९ ॥

नवीनं मध्वभिष्यन्दि स्निग्धं श्लेष्महरं सरम् ।
पुराणं ग्राहि तद्रूक्षं मेदोघ्नमतिलेखनम् ॥ ३० ॥

अर्थ-नया शहद अभिष्यंदी और चिकना है, कफको हरता है तथा सर है । पुराना शहद मलको बांधता है, रूखा है, मेदरोगको नाशता है और अत्यंत लेखन है ॥ ३० ॥

विषादिपुष्टपुष्पेभ्यः सविषा माक्षिकादयः ।
मधु चिन्वन्ति तस्मात्तत् स्वभावात्सविषं स्मृतम् ॥ ३१ ॥

अर्थ-विष आदिसे पुष्ट पुष्पोंसे विषवाली माखी आदि शहदको करती है, उस कारण करके उसे स्वभावसे विषसहित शहद कहा है ॥ ३१ ॥

तस्मादग्न्यातपात्तप्तं तद्भुक्तं हन्ति मानवम् ।
उष्णे काले च देशे च द्रव्यैरुक्तैश्च योजितम् ॥ ३२ ॥

अर्थ-उसी कारणसे अग्नि और घामसे तपाया हुआ शहद खाया जावे तो मनुष्यको मारता है, गर्मसमयमें और गर्म देशमें उक्त द्रव्योंसे योजित किया ॥३२॥

निरूहे छर्दने तज्ज्ञैस्तदुक्तं न निवार्यते ।
तस्मात्पाकमलब्ध्वैव तयोस्तद्विनिवर्त्तते ।
आमामये जलेनापि तद्द्रवे न निरुध्यते ॥ ३३ ॥

अर्थ–निरूह बस्तिमें और छर्दिमें वह कहीं नहीं निवारित किया जाता है, तिस कारणसे पाकको नहीं प्राप्त होके उन दोनोंमें वह निवृत्त होता है । आमरोगमें पानीके संग और वह द्रव्यमें नहीं रोका जाता है ॥ ३३ ॥

मदनं मधुजं सिक्थं मधूच्छिष्टं मधूलितम् ।
मदनं मृदु सुस्निग्धं भूतघ्नं व्रणरोपणम् ।
भग्नसन्धानकृद्वातकुष्ठवीसर्परक्तजित् ॥ ३४ ॥

अर्थ–मदन, मधुज, सिक्थ, मधूच्छिष्ट, मधूलित ये पांच नाम मोमके हैं । मोम कोमल, सुंदर और चिकना है, भूत-दोषको नाशता है, घावपर अंकुर लाता है, टूटे हुएको जोडता है और वात, कुष्ठ, विसर्प, रक्त इन्होंको जीतता है ॥ ३४ ॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेऽत्र ।
ग्रन्थेऽभून्मदनविनोदनाम्नि पूर्णो वर्गोऽयं मधुररसैरिक्षुकादिः ॥३५॥

अर्थ–राजाओंमें जो कटारमल्ल हुआ उसी मदनराजाके रचे हुए अमरविनोद-नाम इस ग्रंथमें मधुर रस इक्षुकादि वर्ग समाप्त हुआ ॥ ३५ ॥

इति नवमवर्गः ।

अजन्ममृत्युं बहुजन्ममृत्युं तमालभासं विशदप्रकाशम् ।
मुक्तिप्रदं बद्धमुलूखलेन त्रैलोक्यतातं शिशुमाश्रयामि ॥ १ ॥

अर्थ–जन्म मरणसे रहित, बहुत जन्म मरणवाला, तमालके समान कांतिवाला, सुंदर प्रकाशवाला, मुक्तिको देनेवाला, ऊखलसे बंधा हुआ और त्रिलोकीका पिता ऐसे बालकको आश्रित होता हूं ॥ १ ॥

शाल्यादिनामगुणाः ।

शालयो रक्तशाल्याद्या व्रीहयः षष्टिकादयः ।
मुद्गादि वैदलं शैलं कंग्वादि तृणधान्यकम् ॥ २ ॥

अर्थ–लाल शालि चांवल आदि शालि होते हैं, साठी चांवल आदि व्रीहि होते हैं, मूंग आदि वैदल और शैल होते हैं तथा कांगनी आदि तृणधान्य होता है ॥२॥

क्षुद्रधान्यं कुधान्यं तु शूकधान्यं यवादिकम् ।

रक्तशालिर्लोहितः स्याद् गरुडः शकुनीहृतः ॥ ३ ॥

अर्थ-क्षुद्र धान्य और कुधान्य ये कुत्सित अन्नके नाम हैं, जव आदि शुकधान्य होता है, लाल रंगवाला रक्त शालि होता है । गरुड, शकुनीहृत ॥ ३ ॥

सुगन्धिको महाशालिः कलमस्तु कलामकः ।
रक्तशालिर्दीर्घशूकः पुण्ड्रो महिषमस्तकः ॥ ४ ॥

अर्थ-सुगंधिक, महाशालि, कलम, कलामक रक्तशालि, दीर्घशूक, पुण्ड्र, महिषमस्तक ॥ ४ ॥

पूर्णचन्द्रो महाशालिः पुण्डरीकः प्रमादकः ।
पुष्पाण्डकः शीतभीरुः काञ्चनः शकुनीहृतः ॥ ५ ॥

अर्थ-पूर्णचंद्र, महाशालि, पुण्डरीक, प्रमादक, पुष्पाण्डक, शीतभीरु, काञ्चन, शकुनीहृत ॥ ५ ॥

पाण्डुगौरः शारिवाख्यो रोध्रपुष्पः सुगन्धकः ।
हायनो दीर्घलातश्च महादूषकदूषकौ ॥ ६ ॥

अर्थ-पाण्डुगौर, शारिवाख्य, रोध्रपुष्प, सुगन्धक, हायन, दीर्घलात, महादूषक, दूषक ये सब शालि चांवलके भेद हैं ॥ ६ ॥

शालयो मधुराः स्निग्धा बल्याश्च बद्धवर्चसः ।
पित्तघ्नाल्पानिलकफा मूत्रला लघवो हिमाः ॥ ७ ॥

अर्थ-सब शालिचांवल मीठे और चिकने हैं, बलको करते हैं, मलको बांधते हैं, पित्तको नाशते हैं, अल्प वात कफवाले हैं, मूत्रको उपजाते हैं तथा हलके और शीतल हैं ॥ ७ ॥

रक्तशालिर्वरस्तेषां बल्यो वर्ण्यस्त्रिदोषजित् ।
चक्षुष्यो मूत्रलः स्वर्ग्यः शुक्रलस्तृड्ज्वरापहः ॥ ८ ॥

अर्थ-उन्होंमें लालशालि उत्तम हैं, क्योंकि बलको करते हैं, वर्णको करते हैं, त्रिदोषको जीतते हैं, आंखोंमें हित हैं, मूत्रको उपजाते हैं, स्वरको करते हैं, वीर्यको करते हैं तथा तृषा और ज्वरको नाशते हैं ॥ ८ ॥

विषव्रणहरः किञ्चित्तस्मादल्पगुणाः परे ।
महाशालिर्वृष्यो बल्यो रक्तशालिगुणैः समः ॥ ९ ॥

अर्थ-ये विष और घावको नाशते हैं । अन्य शालि इससे कछुक कम

गुणोंवाले हैं । महाशालि स्त्रीसंगमें हित हैं, बलको करते हैं, लालशालिके समान गुणवाले हैं ॥ ९ ॥

कार्मुकः पीत आमोदो लघुर्वृष्यो मुकुन्दकः ।
महाषष्टिककेदारपुष्पाङ्कुरबकादयः ॥ १० ॥

अर्थ–कार्मुक, पीत, आमोद, मुकुंदक ये हलके हैं, वीर्यको पुष्ट करते हैं और महाषष्टिक, केदार, पुष्पांकुर, बक आदि ॥ १० ॥

षष्टिका मधुराः शीता लघवो बद्धवर्चसः ।
वातपित्तप्रशमनाः शालीनां सदृशा गुणैः ॥ ११ ॥

अर्थ–सांठी चांवल मीठे हैं, शीतल हैं, हलके हैं, मलको बांधते हैं, वातपित्तको शांत करते हैं, शालिचावलोंके समान गुणवाले हैं ॥ ११ ॥

षष्टिकः प्रवरस्तेषां लघुः स्निग्धस्त्रिदोषजित् ।
पाके स्वादुर्मृदुर्ग्राही स्थैर्यकारी बलप्रदः ॥ १२ ॥

अर्थ–उन्होंमें सांठी चांवल उत्तम हैं, हलके हैं, चिकने हैं, त्रिदोषको जीतते हैं, पाकमें स्वादु हैं, कोमल हैं, मलको बांधते हैं, स्थिरता करते हैं और बलको देते हैं ॥ १२ ॥

रक्तशालिगुणैस्तुल्यास्तस्मादल्पगुणाः परे ।
कृष्णव्रीहिस्तुरितकः कुक्कुटाण्डकपाटलौ ॥ १३ ॥

अर्थ–लाल शालिके गुणके समान हैं । अन्य अल्प गुणोंवाले हैं, कृष्णव्रीहि, तुरितक, कुक्कुटांडक, पाटल ॥ १३ ॥

शलायुश्च राजीवाक्षो नन्दी जन्तुमुखादयः ।
व्रीहयो मधुराः शीताः षष्टिकानां गुणैः समाः ॥ १४ ॥

अर्थ–शलायु, राजीवाक्ष, नंदी, जंतुमुखादि ये सब व्रीहिके भेद हैं । सब व्रीहि मीठे हैं, शीतल हैं और सांठी चांवलोंके समान गुणवाले हैं ॥ १४ ॥

कृष्णव्रीहिर्वरस्तेषां तस्मादल्पगुणाः परे ।
शालयो दुग्धभुञ्जाना लघुरूक्षाः कफापहाः ॥ १५ ॥

अर्थ–उन्होंमें कृष्णव्रीहि उत्तम हैं, उससे अल्प गुणोंवाले अन्य व्रीहि हैं, भूने हुए शाली हलके हैं, रूखे हैं, कफको नाशते हैं ॥ १५ ॥

स्थूलजाः स्वादवः पित्तकफघ्ना वातवह्निदाः ।

कैदारा वातपित्तघ्ना गुरवः कफशुक्रलाः ॥ १६ ॥

अर्थ–स्थूलज शालि स्वादु हैं, पित्तकफको नाशते हैं, वात और अग्निको देते हैं, कैदार वातपित्तको नाशते हैं, भारी हैं, कफ और वीर्यको देते हैं ॥ १६ ॥

रौप्यातिरौप्या लघवो मूत्रलास्ते गुणोत्तराः ।
छिन्नरूढा हिमा रूक्षाः पितघ्ना लघुपाकिनः ॥ १७ ॥

अर्थ–रौप्य और अतिरौप्य हलके हैं, मूत्रको देते हैं, उत्तम गुणवाले हैं । छिन्नरूढ शीतल हैं, रूखे हैं, पित्तको नाशते हैं, शीघ्र पकते हैं ॥ १७ ॥

पुराणं नेत्रमन्धानां जलक्लिन्नं प्रयत्नतः ।
पुनर्विशोषितं सम्यग्घर्मेरूक्षं लघु स्मृतम् ॥ १८ ॥

अर्थ–पुराने चांवल अंधोंके नेत्र हैं, भिगोयके फिर घाममें अच्छी तरह शोषित किये रूखे हैं, हलके कहे हैं ॥ १८ ॥

दीपनं पाचनं मेध्यं वातश्लेष्महरं परम् ।
व्रीहित्वं षष्टिकस्यापि भिन्नत्वं शीघ्रपाकतः ॥ १९ ॥

अर्थ–अग्निको जगाते हैं, पाचन हैं, बुद्धिको बढाते हैं, वात-कफको हरते हैं । सांठी चांवलकोभी व्रीहित्व है, शीघ्रपाकसे भिन्न हैं ॥ १९ ॥

गोधूमनामगुणाः ।

गोधूमः सुमनः क्षुद्रो मधूली रूपशीतला ।
नन्दीमुखोऽल्पगोधूमो लोकेशी पासिकोच्यते ॥ २० ॥

अर्थ–गोधूम, सुमन, क्षुद्र, मधूली, रूपशीतला, नंदीमुख, अल्पगोधूम, लोकेशी, पासिका ये नौ नाम गेहूंके हैं ॥ २० ॥

गोधूमो मधुरः शीतो वातपित्तहरो गुरुः ।
कफशुक्रप्रदो बल्यः स्निग्धसन्धानकृत्सरः ॥ २१ ॥

अर्थ–गेहूं मीठा है, शीतल है, वात-पित्तको हरता है, भारी है, कफ और वीर्यको देता है, बलको देता है, चिकना है, जोडता है, सर है ॥ २१ ॥

जीवनो बृंहणो वर्ण्यः स्यन्दी रुच्यो स्थिरत्वकृत् ।
मधूली शीतला स्निग्धा पित्तघ्नी मधुरा लघुः ॥ २२ ॥

अर्थ–जीवन है, धातुको पुष्ट करता है, वर्णको निखारता है, झिरनेवाला है, रुचिको करता है, स्थिरता करता है । मधूली शीतल है, चिकनी है, पित्तको नाशती है, मीठी है, हलकी है ॥ २२ ॥

शुक्रला बृंहणी पथ्या तद्वन्नन्दीमुखी मता ।
एतस्मात् स्थूलगोधूमात् क्षुद्रो हीनतरो गुणैः ॥ २३ ॥

अर्थ–नंदीमुख वीर्यको करता है, धातुको पुष्ट करता है, पथ्य है । इस गेहूंसे क्षुद्र गेहूंमें बहुत कम गुण हैं ॥ २३ ॥

यवनामगुणाः ।

यवः शुचिस्तीक्ष्णशूको निशूकोऽतियवोऽपरः ।
यवः कषायो मधुरः शीतः पित्तकफास्रजित् ॥ २४ ॥

अर्थ–यव, शुचि, तीक्ष्णशूक, निशूक, अतियव ये पांच नाम जवके हैं । जव कषैला है, मीठा है, शीतल है, पित्त, कफ, रक्त इन्होंको जीतता है ॥ २४ ॥

व्रणेषु तिलवत्पथ्यो रूक्षो मेधाग्निवर्द्धनः ।
लेखनो बद्धनिष्यन्दः स्वर्यो मेहतृषापहः ॥ २५ ॥

अर्थ–घावोंमें तिलोंकी तरह पथ्य है, रूखा है, बुद्धि और अग्निको बढाता है, लेखन है, बंधाको करता है, स्वरमें हित है, प्रमेह और तृषाको हरता है ॥ २५ ॥

बहुवातमलः स्थैर्यवर्णकारी स पिच्छलः ।
अस्मादतियवः किञ्चिद् गुणैर्न्यूनतरः स्मृतः ॥ २६ ॥

अर्थ–बहुत वात और मलको करता है, स्थिरता और वर्णको करता है, पिच्छिल है, इससे अतियव गुणोंकरके अल्पगुणोंवाला कहा है ॥ २६ ॥

शिंबीनामगुणाः ।

शिम्बी मुद्गश्चणो माषः सतीनः सकुलायकः ।
मसूरश्चकमङ्गल्यौ मकुष्टत्रिपुटादयः ॥ २७ ॥

अर्थ–शिंबी, मूंग, चना, उडद, मटर, मोठ, मसूर, चौला, गुवार, त्रिपुट इत्यादि वैदल अन्न हैं ॥ २७ ॥

वैदला मधुरा रूक्षाः कषायाः कटुपाकिनः ।
वातला कफपित्तघ्ना बद्धमूत्रबला हिमाः ॥ २८ ॥

अर्थ–वैदल मीठे हैं, रूखे हैं, कषैले हैं, पाकमें चर्परे हैं, वातको करते हैं, कफपित्तको नाशते हैं, मूत्र मलको बांधते हैं, शीतल हैं ॥ २८ ॥

ऋते मुद्गमसूराभ्यामन्ये त्वाध्मानकारकाः ।
शिम्बा विष्टम्भिनो मेहदृष्टिघ्ना वातपित्तलाः ॥ २९ ॥

अर्थ-मूंग और मसूरके विना अन्य सब आध्मान करते हैं। शिंब विष्टंभ करते हैं, प्रमेह और दृष्टिको नाशते हैं तथा वातपित्तको करते हैं ॥ २९ ॥

विशदा गुरवो हृद्या रूक्षाः कटुविपाकिनः ।
सितासितादिभेदेन बहुधा ते प्रकीर्तिताः ॥ ३० ॥

अर्थ-सुंदर हैं, भारी हैं, वीर्यको पुष्ट करते हैं, दिलको ताकत देते हैं, पाकमें कडुवे हैं, सुफेद और नहीं सुफेद भेदकरके वे बहुत प्रकारके कहे गये हैं ॥ ३० ॥

मुद्गनामगुणाः ।

मुद्गो बलाढ्यो मङ्गल्यो हरितः शारदोऽपरः ।
पीतः प्रचेतो बलाको माधवः परिकीर्तितः ॥ ३१ ॥

अर्थ-मुद्ग, बलाढ्य, मंगल्य, हरित, शारद, पीत, प्रचेत, बलाक, माधव ये नौ नाम मूंगके हैं ॥ ३१ ॥

वनमुद्गस्तुवरको राजमुद्गस्तु खण्डकः ।
मुद्गो रूक्षो लघुर्ग्राही कफपित्तहरो हिमः ॥ ३२ ॥

अर्थ-वनमुद्ग, तुवरक, राजमुद्ग, खंडक ये चार नाम वनमूंगके हैं । मूंग रूखा है, हलका है, मलको बांधता है और कफ-पित्तको हरता है तथा शीतल है ॥ ३२ ॥

स्वादुरल्पानिलो नेत्र्यो वर्ण्योऽप्येतद्गुणः स्मृतः ।
हरितः प्रवरस्तेषां तच्छाकं तिक्तमुत्तमम् ॥ ३३ ॥

अर्थ-मूंग स्वादु है, अल्प वातको करता है, आंखोंमें हित है, वर्णका प्रकाश करता है, हरा मूंग बहुत उत्तम है, उसका शाक बहुत कडुवा है ॥ ३३ ॥

माषनामगुणाः ।

माषो जीर्णकरो धारी धवलो राजमाषकः ।
माषो गुरुः स्वादुपाकः स्निग्धो वृष्योऽनिलापहः ॥ ३४ ॥

अर्थ-माष, जीर्णकर, धारी, धवल, राजमाषक ये पांच नाम उडदके हैं । उडद भारी है, पाकमें स्वादु है, चिकना है, वीर्यको पुष्ट करता है, और वातको नाशताहै ३४

उष्णः स तर्पणो बल्यः शुक्रलो बृंहणः परम् ।
भिन्नमूत्रकफस्तन्यमेदःपित्तकफप्रदः ।
गुदकीलार्दितश्वासपक्तिशूलानि नाशयेत् ॥ ३५ ॥

अर्थ-यह गर्म है, तृप्ति करता है, बल करता है, वीर्य करता है, धातुको पुष्ट

करता है और मूत्र, कफ, दूध इन्होंको भेदता है तथा कफपित्तको देता है । उडद गुदकील, लकुवा, श्वास, पक्तिशूल इन्होंको नाशता है ॥ ३५ ॥

राजमाषगुणाः ।

राजमाषः स्वादुरूक्षः कषायस्तर्पणो लघुः ।
ग्राही वातकफस्तन्यबहुवर्चोरुधिप्रदः ॥ ३६ ॥

अर्थ–राजमाष अर्थात् राना उडद स्वादु है, रूखा है, कषैला है, हलका है, मलको बांधता है और वात, कफ, दूध, बहुत मल और रक्त इन्होंको देता है ॥३६॥

मसूरनामगुणाः ।

मसूरिका मसूरः स्यान्निष्पावो वल्लकः स्मृतः ।
मसूरो वातलो ग्राही कफपित्तहरो गुरुः ।
वान्तिजिन्मधुरः पाके कृमिकृज्ज्वरनाशनः ॥ ३७ ॥

अर्थ–मसूरिका, मसूर, निष्पाव, वल्लभ ये चार नाम मसूरके हैं । मसूर वातको करता है, मलको बांधता है, कफ-पित्तको हरता है, भारी है, छर्दिको जीतता है, पाकमें मीठा है, कृमिको करता है और ज्वरको नाशता है ॥ ३७ ॥

निष्पावगुणाः ।

निष्पावोऽनिलपित्तास्रमूत्रस्तन्यकरः सरः ।
विदाह्युष्णो गुरुः श्लेष्मशोफकृच्छुक्रनाशनः ॥ ३८ ॥

अर्थ–निष्पाव अर्थात् मोठ वात, पित्तरक्त, मूत्र, दूध इन्होंको करता है, सर है, दाहकारक, गर्म और भारी है, कफ और शोजाको करता है तथा वीर्यको नाशता है ॥ ३८ ॥

सतीननामगुणाः ।

वर्तुलस्तु सतीनः स्याद्धरेणुः स्वल्पवर्तुलः ।
वर्तुलः शीतलो ग्राही कफपित्तहरो लघुः ।
विपाके मधुरो रूक्षो हरेणुस्तद्गुणः स्मृतः ॥ ३९ ॥

अर्थ–वर्तुल, सतीन, हरेणु, स्वल्पवर्तुल ये चार नाम मटरके हैं । मटर शीतल है, मलको बांधता है, कफ-पित्तको हरता है, हलका है, पाकमें मीठा और रूखा है । हरेणुमेंभी येही गुण हैं ॥ ३९ ॥

कलायनामगुणाः ।

कलायः खण्डिकः प्रोक्तस्त्रिपुटः क्षुद्रखण्डिकः ।

कलायः कफपित्तघ्नो ग्राही शीतोऽतिवातलः ।
त्रिपुटोऽपि गुणैरेवं तच्छाकं कफपित्तजित् ॥ ४० ॥

अर्थ–कलाय, खंडिक, त्रिपुट, क्षुद्रखंडिका ये चार नाम चौला गुवारके हैं । चौला कफपित्तको नाशता है, मलको बांधता है, वातको बढाता है । गुवारमेंभी येही गुण हैं । गुवारकी फलियोंका शाक कफ-पित्तको जीतता है ॥ ४० ॥

चणकनामगुणाः ।

चणको हरिमन्थः स्याद्वाजिमन्थश्च जीवनः ।
चणकः शीतलो रूक्षो रक्तपित्तकफापहः ।
लघुः कषायो विष्टम्भी वातलः कुष्ठनाशनः ॥ ४१ ॥

अर्थ–चणक, हरिमंथ, वाजिमंथ, जीवन ये चार नाम चनाके हैं । चना शीतल है, रूखा है, रक्तपित्त और कफको नाशता है, हलका है, कषैला है, विष्टंभ करता है, वातको उपजाता है और कुष्ठको नाशता है ॥ ४१ ॥

मसूरिनामगुणाः ।

मसूरिकारिर्मसूरिर्मङ्गल्या पाण्डुरापलः ।
मसूरिर्मधुरः पाके संग्राही शीतलो लघुः ।
कफपित्तास्रजिद्वल्यस्तच्छाकं लघु तिक्तकम् ॥ ४२ ॥

अर्थ–मसूरिकारि, मसूरि, मंगल्या, पांडुरापल ये नाम मसूरभेदके हैं । मसूरभेद पाकमें मीठा है, मलको बांधता है, शीतल है, हलका है, कफ और पित्तरक्तको जीतता है और मलको करता है । इसका शाक हलका और कडुवा है ॥ ४२ ॥

कुलत्थनामगुणाः ।

कुलत्थश्चक्रकश्चक्रः कुलालो वनजः परः ।
अपरा दृक्प्रसादा च चक्षुष्या च कुलत्थिका ॥ ४३ ॥

अर्थ–कुलत्थ, चक्रक, चक्र, कुलाल, वनज, अपरा, दृक्प्रसादा, चक्षुष्या, कुलत्थिका ॥ ४३ ॥

कुलाली लोचनहिता कुम्भकारी मलापहा ।
कुलत्थः कटुकः पाके कषायो रक्तपित्तजित् ॥ ४४ ॥

अर्थ–कुलाली, लोचनहिता, कुंभकारी, मलापहा ये नाम कुलथीके हैं । कुलथी पाकमें चर्परी है, कषैली है और रक्त-पित्तको जीतती है ॥ ४४ ॥

लघुर्विदाही वीर्योष्णः श्वासकासकफानिलान् ।
हन्ति हिक्काश्मरीशुक्रदृगानाहान् सपीनसान् ॥ ४५ ॥

अर्थ–यह हलकी है, दाहको करती है, वीर्यमें गर्म है और श्वास, खांसी, कफ, वात, हिचकी, पथरी, वीर्य, नेत्ररोग, अफरा, पीनस इन्होंको नाशती है ॥ ४५ ॥

स्वेदसंग्राहको गुल्ममेदःकृमिहरः सरः ।
वन्यो विशेषतः शीतो नेत्रामयविषापहः ॥ ४६ ॥

अर्थ–तथा पसीनाको रोकती है । कुलथी गुल्म, मेद, कृमि इन्होंको हरती है, सर है । रानी कुलथी विशेषकर शीतल है, आंखरोग और विषको नाशती है॥४६॥

तिलनामगुणाः ।

तिलपुष्पस्तैलफलस्तिलपिञ्जोऽपरः सितः ।
जातिलो वनजातः स्यादाढकी तुवरी मता ॥ ४७ ॥

अर्थ–तिलपुष्प, तैलफल, तिलपिञ्ज, सित, जातिल ये नाम तिलके हैं । आढकी, तुवरी ये दो नाम अरहरके हैं ॥ ४७ ॥

तिलः कषायो मधुरस्तिक्तकः कटुको रसे ।
तिलो ग्राही गुरुः स्वादुः स्निग्धोऽस्रकफपित्तलः ॥ ४८ ॥

अर्थ–तिल कषैला है, मीठा है, कडुवा है, रसमें चर्परा है, मलको रोकता है, भारी है, स्वादु है, चिकना है और रक्त, कफ, पित्त इन्होंको देता है ॥ ४८ ॥

बल्यः केश्यो हिमस्पर्शस्त्वच्यो व्रणहितः परम् ।
वन्योऽल्पमूत्रकृद्धातुनाशनोऽग्निमतिप्रदः ॥ ४९ ॥

अर्थ–यह बलको करता है, बालोंको बढाता है, शीतल है, शीतल स्पर्शवाला है, खालमें हित है, घावमें हित है । राना तिल अल्प मूत्र करता है, धातुको नाशता है तथा अग्नि और बुद्धिको देता है ॥ ४९ ॥

कृष्णः श्रेष्ठतमस्तेषु शुक्लो मध्यमः सितः ।
अन्ये हीनतरा प्रोक्तास्तज्ज्ञै रक्तादयस्तिलाः ॥ ५० ॥

अर्थ–काला तिल सब तिलोंमें उत्तम है, वीर्यको करता है । सफेद तिल मध्यम है और लाल तिल आदि पण्डितोंने बहुत हीन कहे हैं ॥ ५० ॥

तुम्बरीगुणाः ।

तुम्बरी ग्राहिणी शीता लघुः कफविषास्रजित् ॥ ५१ ॥

अर्थ–अरहर मलको रोकता है, शीतल है, हलका है और कफ, विष, रक्त इन्हों-को जीतता है ॥ ५१ ॥

अतसीनामगुणाः ।

अतसी मसृणा नीलपुष्पा चेलूत्तमा क्षुमा ।
अतसी शुक्रदृष्टिघ्नी स्निग्धा वातास्रजिद्गुरुः ॥ ५२ ॥

अर्थ–अतसी, मसृणा, नीलपुष्पा, चेलूत्तमा, क्षुमा ये पांच नाम अलसीके हैं । अलसी वीर्य और दृष्टिको नाशती है, चिकनी है, वातरक्तको जीतती है और भारी है५२

कुसुम्भनामगुणाः ।

कुसुम्भं वार्द्धकी पीतमलक्तं वस्त्ररञ्जनी ।
तद्बीजं किरटी लघ्वी तथा शुद्धपयोत्तरा ॥ ५३ ॥

अर्थ–कुसुंम, वार्द्धकी, पीत, अलक्त, वस्त्ररंजनी ये पांच नाम कुसुंभाके हैं । किरटी, लघ्वी, शुद्धपयोत्तरा ये तीन नाम कुसुंभाके बीजके हैं ॥ ५३ ॥

कुसुम्भं वातलं कृच्छ्ररक्तपित्तकफापहम् ।
किरटचतसिवदुद्दिष्टा विशेषाद्विषनाशिनी ॥ ५४ ॥

अर्थ–कुसुंभा वातको करता है और मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, कफ इन्होंको नाशता है। कुसुंभाके बीजमें अलसीके समान गुण हैं, विशेषकर विषको नाशता है ॥ ५४ ॥

सर्षपनामगुणाः ।

सर्षपः कटुकः स्नेहो भूतघ्नो रक्षितफलः ।
तुर्तुभोऽन्यः स उद्दिष्टः सिद्धार्थः श्वेतसर्षपः ॥ ५५ ॥

अर्थ–सर्षप, कटुक, स्नेह, भूतघ्न, रक्षितफल, तुर्तुभ, सिद्धार्थ, श्वेतसर्षप ये आठ नाम सरसोंके हैं ॥ ५५ ॥

राजिका वासुरी राजी सुतीक्ष्णः कृष्णसर्षपः ।
सर्षपः कफवातघ्नस्तीक्ष्णोष्णो रक्तपित्तकृत् ॥ ५६ ॥

अर्थ–राजिका, वासुरी, राजी, सुतीक्ष्ण, कृष्णसर्षप ये पांच नाम राईके हैं । सरस कफवातको नाशती है, तेज है, गर्म है और रक्तपित्तको करती है ॥ ५६ ॥

किञ्चिद्रूक्षोऽग्निदः कण्डूकुष्ठकोष्ठकृमीन् हरेत् ।
राजिकास्तद्गुणा ज्ञेयास्तीक्ष्णास्तीव्रा विशेषतः ॥ ५७ ॥

अर्थ–यह कछुक रूखी है, अग्निको देती है और खाज, कुष्ठ, कोष्ठकृमि इन्होंको हरती है । राईमेंभी येही गुण हैं, तेज और तीव्र विशेषसे हैं ॥ ५७ ॥

शणनामगुणाः ।

शणः प्रोक्तो मातुलानि जन्तुतन्तुर्महाशणः ।
शणो हिमो गुरुर्ग्राही तत्पुष्पं प्रदरास्रजित् ॥ ५८ ॥

अर्थ–शण, मातुलानी, जंतुतंतु, महाशण ये चार नाम शणके हैं । शण शीतल और भारी है, मलको रोकता है । इसका फूल प्रदर और रक्तको जीतता है ॥ ५८॥

कंगूश्यामाकनीवारवरकोद्दालनर्तकाः ।
वरट्टिका तोदपर्णी कोद्रवश्च मधूलिका ॥ ५९ ॥

अर्थ–कंगू, श्यामाक, नीवार, वरक, उद्दाल, नर्तक, वरट्टिका, तोदपर्णी, कोद्रव, मधूलिका ॥ ५९ ॥

नन्दीमुखी वेणुयवा प्रियङ्गुः कोरदूषकः ।
गवेधुका नलो नाली मुकुन्दं वारिकादिकम् ॥ ६० ॥
तृणधान्यं लघु स्वादु कटुपाकि विलेखनम् ।
रूक्षोष्णं बद्धनिष्यन्दं वातपित्तप्रकोपनम् ॥ ६१ ॥

अर्थ–नंदीमुखी, वेणुयवा, प्रियंगु, कोरदूषक, गवेधुका, नल, नाली, मुकुंद, वारिका इत्यादि तृणधान्य हैं । तृणधान्य हलका है, स्वादु है, पाकमें चर्परा है, लेखन है, रूखा है, गर्म है, बंधा करता है और वातपित्तको कुपित करता है॥६०॥६१॥

पीततण्डुलिका कङ्गुः प्रियङ्गुः कर्कटी मता ।
सितकङ्गुस्तु मुसटी रक्तकङ्गुस्तु शोधिका ।
चीनाकः काककङ्गुः स्यात् श्यामाकः शणकङ्गुकः ॥ ६२ ॥

अर्थ–पीततंडुलिका, कंगु, प्रियंगु, कर्कटी, सितकंगु, मुसटी, रक्तकंगु, शोधिका, चीनाक, काककंगु, श्यामाक, शणकंगुक ॥ ६२ ॥

शाल्यादयः कङ्गुभेदाः कोद्रवः कुरसः स्मृतः ।
कोद्रवः कोरदूषः स्यादुद्दालो वनकोद्रवः ।
प्रियङ्गुः पित्तजिद्वृष्यो भग्नसन्धानकृद्गुरुः ॥ ६३ ॥

अर्थ–शालि आदि ये सब कांगनीके भेद हैं । कोद्रव, कुरस, कोरदूष, उद्दाल, वनकोद्रव ये पांच नाम कोदूंके हैं । कांगनी पित्तको जीतती है, वीर्यको पुष्ट करती है, टूटे हुएको जोड देती है और भारी है ॥ ६३ ॥

श्यामाकः शोषणः शीतो रूक्षः पित्तकफापहः ।

कोद्रवः शीतलो ग्राही विषपित्तकफान् जयेत् ॥ ६४ ॥

अर्थ–श्यामाक शोषता है, शीतल है, रूखा है, पित्तकफको नाशता है । कोदूं शीतल है, मलको रोकता है और विष, पित्त, कफ इन्होंको जीतता है ॥ ६४ ॥

नीवारनामगुणाः ।

निवार उटिका नाडी मुनिव्रीहिर्मुनिप्रियः ।
नीवारः शीतलो ग्राही पित्तघ्नः कफवातकृत् ॥ ६५ ॥

अर्थ–नीवार, उटिका, नाडी, मुनिव्रीहि, मुनिप्रिय ये पांच नाम नीवारके हैं । नीवार शीतल है, मलको बांधता है, पित्तको नाशता है और कफवातको करता है॥६५॥

यावनालनामगुणाः ।

यावनालो देवधान्यं जुह्वोलिर्जुह्वलोऽनलः ।
यावनालः स्वादुशीतो वातलः कफपित्तजित् ॥ ६६ ॥

अर्थ–यावनाल, देवधान्य, जुह्वोलि, जुह्वल, अनल ये पांच नाम यवनाल (ज्वार)-के हैं । यवनाल शीतल है, स्वादु है, वातको करता है और कफपित्तको जीतता है ६६

गवेधुकानामगुणाः ।

गवेधुका कर्षणी स्याद् गोजिह्वाऽऽकर्षिणी मता ।
गवेधुका कटुः स्वाद्वी काश्यर्कृत् कफनाशिनी ॥ ६७ ॥

अर्थ–गवेधुका, कर्षणी, गोजिह्वा, आकर्षिणी ये चार नाम गवेधुकाके हैं । गवेधुका चर्परी है, स्वादु है, माडेपनको करती है और कफको नाशती है ॥ ६७ ॥

अपर्याप्तं व्याधिहतमनार्त्तवमभूमिजम् ।
नवं जन्त्वादिभिर्जुष्टं न धान्यं गुणवन्मतम् ॥ ६८ ॥

अर्थ–सामर्थ्यरहित, रोगसे नष्ट, विना समय और पृथिवीसे अन्य जगहमें उपजा, नया और कीडे आदिसे युत ऐसा अन्न गुण करनेवाला नहीं माना गया है ६८

धान्यं नवमभिष्यन्दि गुरु स्वादु कफप्रदम् ।
वर्षौषितं सर्वधान्यं गौरवं परिमुञ्चति ॥ ६९ ॥

अर्थ–वनमें होनेवाला नया अन्न अभिष्यंदी है, भारी है, स्वादु है, कफको देता है, वर्ष दिनके उपरान्त सब अन्न भारीपनको छोड देते हैं ॥ ६९ ॥

न मुञ्चति तदा वीर्यं क्रमान्मुञ्चन्त्यतः परम् ।
विदाहि गुरु विष्टम्भि विरूढं दृष्टिदूषणम् ॥ ७० ॥

अर्थ–वीर्यवाला अन्न मलको बांधता है, भारी और विष्टंभ है, बोया हुआ अन्न दृष्टिको दूषित करता है ॥ ७० ॥

एतेषु यवगोधूमतिलमाषा नवा हिताः ।
रूढाः पुराणविरसा न तथा गुणकारिणः ॥ ७१ ॥

अर्थ–इन अन्नोंमें जव, गेहूं, तिल, उडद ये नये उत्तम हैं, पुराने और रससे राहित हुए गुणको नहीं करते हैं ॥ ७१ ॥

इति धान्यवर्गो दशमः ।

राधा हरिं चरणयोः पतितं कराभ्यां कोपाज्जघान तमु-
दीक्ष्य पुनर्हसन्तम् । तत्पादयोः समपतच्चकिताभिया-
तामुत्थापयन् जयति कैतवगोपवेषः ॥ १ ॥

अर्थ–पैरोंमें पतित हुए श्रीकृष्णको राधा हाथोंकरके कोपसे मारती भई, फिर हँसते हुए श्रीकृष्णको देख उनके पैरोंमें चकित होकर पडती भईको उठाते हुए चतुर गोपवेषधारी भगवान् सर्वोत्कर्षकरके वर्तता है ॥ १ ॥

आहारनामगुणाः ।

आहारो भोजनं जग्धिर्नित्यशो जीवनं तथा ।
आहारो बलकृत् सद्यः प्रीणनो देहधारकः ।
ओजस्तेजःस्वरोत्साहधृतिस्मृतिमतिप्रदः ॥ २ ॥

अर्थ–आहार, भोजन, जग्धि, नित्यशः जीवन ये चार नाम भोजनके हैं । भोजन तत्काल बल करता है, तृप्त करता है, देहको धारता है और पराक्रम, तेज, स्वर, उत्साह, धैर्य, स्मरण तथा बुद्धिको देता है ॥ २ ॥

भक्तनामगुणाः ।

भक्तमन्धस्तु भिस्साऽहङ्करं दीदिविरोदनः ।
भक्तं वह्निकरं पथ्यं तर्पणं मूत्रलं लघु ॥ ३ ॥

अर्थ–भक्त, अंधस् , भिस्सा, अहंकर, दीदिवि, ओदन ये छः नाम भातके हैं । भात अग्निको करता है, पथ्य है, तृप्ति करता है, मूत्र उपजाता है और हलका है॥३॥

सुधौतं प्रस्तुतं चोष्णं विशदं गुणवन्मतम् ।
अधौतमप्लुतं शीतं गुरु वृष्यं कफप्रदम् ॥ ४ ॥

अर्थ–सुंदर धोया हुआ और अच्छी तरह निचोडा हुआ भात गर्म सुंदर है,

है, गुणवाला माना है । नहीं धोया हुआ और नहीं निचोडा हुआ भात शीतल है, भारी है, वीर्यको पुष्ट करता है और कफ करता है ॥ ४ ॥

भृष्टतण्डुलकं रुच्यं सुगन्धि कफजिल्लघु ।
भक्तं मांसं फलं क्षीरं वैदलाम्लादिसाधितम् ।
स्नेहशाकैर्गुरुतरं वृष्यं बल्यं कफप्रदम् ॥ ५ ॥

अर्थ–भुना हुआ चांवल रुचि करता है, सुगंधित है, कफको जीतता है, हलका है और मांस, फल, दूध, वैदल अर्थात् मूंग, उडद आदि अन्न, खट्टा रस आदि स्नेह, शाक इन्होंकरके साधित किया चांवल बहुत भारी है, वीर्यको पुष्ट करता है, बल करता है और कफको देता है ॥ ५ ॥

रसौदनो गुरुर्वृष्यो बल्यो वातज्वरापहः ।
घोलं भक्तं ग्रहण्यर्शःश्रमघ्नं पाचनं हिमम् ॥ ६ ॥

अर्थ–मांसके रसमें पकाया चांवल भारी है, वीर्यको पुष्ट करता है, बलको करता है और वातज्वरको नाशता है । घोलसंज्ञक भात ग्रहणी, बवासीर, परिश्रम इन्होंको नाशता है तथा पाचन है और शीतल है ॥ ६ ॥

ओदनगुणाः ।

अत्युष्णानां बलहरं शीतमुष्णं च दुर्जरम् ।
अतिक्लिन्नं ग्लानिकरं दुर्जरं तण्डुलान्वितम् ॥ ७ ॥

अर्थ–अत्यंत गर्म प्रकृतिवालोंके बलको हरता है, शीतल, गर्म और देरमें जरनेवाला है, बहुत गला हुआ ग्लानिको करता है तथा किनकोंसे युत हुआ दुःखसे जरता है ॥ ७ ॥

सौमनस्यं बलं पुष्टिमुत्साहं हर्षणं सुखम् ।
स्वादु सञ्जनयेदन्नमामं स्वादु विपर्ययम् ॥ ८ ॥

अर्थ–पका हुआ चांवल मनकी सुंदरता, बल, पुष्टि, उत्साह, आनंद, सुख इन्होंको उपजाता है और स्वादु है । कच्चा चांवल विपरीत स्वादवाला है ॥ ८ ॥

पेयादिलक्षणम् ।

यवागूः षड्गुणे तोये संसिद्धा विदलद्रवा ।
चतुर्गुणे तु संसिद्धा विलेपी घनसिक्थिका ॥ ९ ॥

अर्थ–छः गुने पानीमें सिद्ध की जावे और पतली रहे वह यवागू अर्थात् गुडपाणी होती है और चौगुने पानीमें पकाई, गाढी और किनकोंवाली विलेपी होती है ॥ ९ ॥

पेया सिक्थान्विता तोये चतुर्दशगुणीकृता ।
मण्डश्चतुर्दशगुणे सिद्धस्तोये त्वसिक्थकः ॥ १० ॥

अर्थ–चौदह गुने पानीमें पकाई किनकोंसहित हो वह पेया होती है । चौदहगुने पानीमें पकाया जावे और किनकोंसे रहित हो वह मंड होता है ॥ १० ॥

यवागूगुणाः ।

यवागूर्ग्राहिणी तृष्णाज्वरघ्नी बस्तिशोधनी ॥ ११ ॥

अर्थ–यवागू मलको रोकती है, तृषा और ज्वरको नाशती है, बस्तिको शोधती है ॥ ११ ॥

विलेपीगुणाः ।

विलेपी दीपनी बल्या हृद्या संग्राहिणी लघुः ।
व्रणाक्षिरोगिणां पथ्या तर्पणी तृट्ज्वरापहा ॥ १२ ॥

अर्थ–विलेपी अग्निको जगाती है, बलको करती है, दिलको ताकत देती है, मलको रोकती है, हलकी है, घाव और आंखके रोगवालोंको पथ्य है । यह तृप्त करती है तथा तृषा और ज्वरको हरती है ॥ १२ ॥

पेयागुणाः ।

पेया कुक्षिगदक्लीतिज्वरस्तम्भातिसारजित् ।
रुच्यग्निकृल्लघुर्दोषमलस्वेदानुलोमनी ॥ १३ ॥

अर्थ–पेया कूख-रोग, जी मचलाना, ज्वर, स्तंभ, अतिसार इन्होंको जीतती है, रुचि और अग्निको करती है तथा पित्तज्वर, कफ, परिश्रम इन्होंको नाशती है ॥१३॥

मण्डगुणाः ।

मण्डो ग्राही लघुः शीतो दीपनो धातुसाम्यकृत् ।
स्रोतोमार्दवकृत् पित्तज्वरश्लेष्मश्रमापहः ॥ १४ ॥

अर्थ–मांड मलको रोकता है, हलका है, शीतल है, अग्निको जगाता है, धातुको समान करता है, नाडीके स्रोतोंको कोमल करता है तथा पित्तज्वर, कफ, परिश्रम इन्होंको नाशता है ॥ १४ ॥

याव्यमण्डलाजमण्डगुणाः ।

याव्यमण्डो यवैर्भृष्टैर्लाजमण्डस्तु शालिभिः ।
याव्यमण्डो लघुर्ग्राही शूलानाहत्रिदोषजित् ॥ १५ ॥

अर्थ–भुने हुए जवोंकरके याव्यमंड होता है और भुने हुए शालि चांवलोंकरके

लाजमंड होता है । याव्यमंड हलका है, मलको रोकता है और शूल, अफरा, त्रिदोष इन्होंको जीतता है ॥ १५ ॥

नवज्वरेऽपि पथ्योऽयं पटोलमागधान्वितः ।
लाजमण्डो लघुर्ग्राही सद्यः पाचनदीपनः ॥ १६ ॥

अर्थ–नये ज्वरमेंभी परवल और पीपलसे युत किया याव्यमंड पथ्य है और लाजमंड हलका है, मलको रोकता है, तत्काल पाचन और दीपन है ॥ १६ ॥

अष्टगुणमण्डगुणाः ।

तण्डुलैरर्द्धमुद्गांशैः किञ्चिद्दृष्टैस्तु पाचितैः ।
हिङ्गुसिन्धूत्थधनिकापत्रत्रिकटुसंस्कृतः ॥ १७ ॥

अर्थ–कलुक भुने हुए आधे मूंग और चांवलोंको पकावे, हींग, सेंधानमक, धनियां, तेजपात, सोंठ, मिरच, पीपल ये उसमें मिलावे ॥ १७ ॥

ज्ञेयः सोऽष्टगुणो मण्डो ज्वरदोषत्रयापहः ।
रक्तः क्षुद्बोधकः प्राणदीपनः शीतलो लघुः ॥ १८ ॥

अर्थ–इसे अष्टगुण मंड जानना । यह ज्वर और त्रिदोषको नाशता है, राग अर्थात् प्रीतिको करता है, भूख लगाता है, जीवन है, अग्निको जगाता है तथा शीतल और हलका है ॥ १८ ॥

मुद्गयूषगुणाः ।

यूषः स्मृतो वैदलानामष्टादशगुणेऽम्भसि ।
मुद्गानामुत्तमो यूषो दीपनः शीतलो लघुः ।
व्रणोर्ध्वजन्तुरुग्दाहकफपित्तज्वरास्रजित् ॥ १९ ॥

अर्थ–मूंग आदि अन्न अठारह गुने पानीमें पकाया हुआ यूष कहा जाता है । मूंगोंका यूष उत्तम है, अग्निको जगाता है, शीतल और हलका है, घाव, ऊर्ध्वजंतुरोग, दाह, कफ, पित्तज्वर, रक्त इन्होंको जीतता है ॥ १९ ॥

दाडिमामलकयूषगुणाः ।

दाडिमामलकैर्यूषः पित्तवातहरो लघुः ॥ २० ॥

अर्थ–अनार और आंवलोंका यूष पित्तवातको हरता है तथा हलका है ॥ २० ॥

मुद्गामलकयूषगुणाः ।

मुद्गामलकयूषस्तु भेदनः कफपित्तजित् ।
तृड्दाहशमनः शीतो मूर्च्छाश्रममदापहः ॥ २१ ॥

अर्थ–मूंग आंवलेका यूष भेदन है, कफपित्तको जीतता है, तृषा और दाहको शांत करता है, शीतल है तथा मूर्च्छा, परिश्रम और मद इन्होंको नाशता है ॥२१॥

कुलत्थयूषगुणाः ।

कुलत्थयूषो गुल्मार्शःकफवाताश्मशर्कराः ।
तूनीप्रतूनीमेदांसि निहन्ति त्वग्निकृत्सरः ॥ २२ ॥

अर्थ–कुलत्थयूष अर्थात् कुलथीका यूष गुल्म, बवासीर, कफ, वात, पथरी, शर्करा, तूनी, प्रतूनी और मेदको नाशता है, अग्निको करता है और सर है ॥२२॥

सूप्यमूलकयूषगुणाः ।

सूप्यमूलकजो यूषो गलग्रहकफज्वरान् ।
हन्ति श्वासप्रतिश्यायकाममेदोऽरुचिकृमीन् ॥ २३ ॥

अर्थ–सूप्य और मूलीका यूष गलग्रह, कफ, ज्वर, श्वास, प्रतिश्याय, खांसी, मेद, अरुचि और कृमिको नाशता है ॥ २३ ॥

चणकयूषनामगुणाः ।

चणकैर्विहितो यूषोऽनुष्णस्तुवरको लघुः ।
रक्तपित्तप्रतिश्यायकासपित्तकफापहः ॥ २४ ॥

अर्थ–चनाका यूष गर्म नहीं है, कषैला और हलका है, रक्तपित्त, प्रतिश्याय, खांसी, पित्त, कफ इन्होंको नाशता है ॥ २४ ॥

मकुष्ठनामगुणाः ।

मकुष्ठयूषः संग्राही पित्तश्लेष्मज्वरापहः ।
लघुः सन्तर्पणः पथ्यो हृद्यः पीनसकासजित् ॥ २५ ॥

अर्थ–मकुष्ठयूष अर्थात् मोठका यूष मलको रोकता है, पित्त और कफज्वरको नाशता है, हलका है, तृप्ति करता है और पथ्य है, दिलको ताकत देता है, पीनस और खांसीको जीतता है ॥ २५ ॥

कृताकृतयूषगुणाः ।

यूषः कृताख्यो लवणस्नेहकृद्धारिसाधितः ।
अकृतस्तैर्विना सिद्धः क्रमाद्गुरुलघू च तौ ॥ २६ ॥

अर्थ–नमक और स्नेहसे युत कर सिद्ध किया कृतयूष भारी है और नमक और स्नेहसे रहित किया अकृतयूष हलका है ॥ २६ ॥

यूषसामान्यनामगुणाः ।

यूषा गोरसधान्याम्लफलाम्लादिभिरन्विताः ।
यथोत्तरं गुरुतरा वातघ्ना रुचिकारिणः ॥ २७ ॥

अर्थ–गोरस, कांजी, खट्टा रस आदिसे युत किये यूष उत्तरोत्तर क्रम अर्थात् गोरससे कांजी और कांजीसे खट्टा रस ऐसे बहुत भारी हैं, वातको नाशते हैं और रुचिको करते हैं ॥ २७ ॥

यैरन्नैरौषधैर्यैश्च कृता मण्डादयो बुधैः ।
विचार्य तद्गुणानेतांस्तद्गुणानेव निर्दिशेत् ॥ २८ ॥

अर्थ–जिन अन्न और औषधोंसे वैद्योंने मंड आदि किये हैं इनके गुणोंका विचार कर वेही गुण कहना ॥ २८ ॥

सूप्यनामगुणाः ।

सूप्यं तु सूप्यको भृष्टैः शिम्बीजैर्निस्तुषैः कृतः ॥ २९ ॥

अर्थ–सूप्य, सूप्यक ये दो नाम दालके हैं । तुषसे रहित शिंबी अन्न अर्थात् मूंग, उडद आदिसे किया सूप्य होता है ॥ २९ ॥

सूप्यं विष्टम्भि रूक्षं स्यात् निरम्लं तु विशेषतः ।
निस्तुषं भृष्टसिद्धं तल्लाघवं सुतरां व्रजेत् ॥ ३० ॥

अर्थ–सूप्य विष्टंभ करता है और रूखा है । खटाईसे रहित सूप्य बहुत रूखा है, छिलकासे रहित और भूनके पकाया हुआ बहुत हलका हो जाता है ॥ ३० ॥

कृशरागुणाः ।

क्वचित्समाषैः क्वाप्येवं कृशरा तिलतण्डुलैः ।
कृशरा बलकृद् ग्राह्या सिद्धा तण्डुलवैदलैः ॥ ३१ ॥
कृशरा शुक्रला बल्या गुरुः पित्तकफप्रदा ।
दुर्जरा पुष्टिविष्टम्भमलरुद्वातनाशिनी ॥ ३२ ॥

अर्थ–कहीं तिल, उडद, चांवलोंकरके खिचडी होती है वह कृशरा अर्थात् खिचडी वल करती है और मलको रोकती है । चांवल और शिंबी अन्नकी दालकी कृशरा अर्थात् खिचडी वीर्यको करती है, बलको करती है, भारी है, पित्त और कफको देती है, देरमें जरती है तथा पुष्टि, विष्टंभ, मल इन्होंको करती है और वातको नाशती है ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

क्षिप्रागुणाः ।

क्षिप्रापि तद्गुणा सैषा सुधान्यगुणकारिणी ॥ ३३ ॥

अर्थ–क्षिप्रामेंभी खिचडीके गुण हैं और सुंदर अन्नके समान गुण करती है॥३३॥

क्षीरनामगुणाः ।

क्षीरे च परमान्नं स्यात् पायसं क्षीरतण्डुलैः ।
क्षैरेयी दुर्जरा बल्या धातुपुष्टिप्रदा गुरुः ।
विष्टम्भिनी हरेत् पित्तरक्ततृष्णाग्निमारुतान् ॥ ३४ ॥

अर्थ–क्षीर, परमान्न, पायस, क्षैरेयी ये चार नाम खीरके हैं । दूध चांवलोंसे खीर बनती है । खीर देरमें जरती है, बलको करती है, धातुको पुष्ट करती है, भारी है, विष्टंभवाली है और रक्तपित्त, तृषा, अग्नि, वात इन्होंको हरती है ॥ ३४ ॥

राजखांडवादिगुणाः ।

गुडादिपक्वं क्वथितमाममाम्रफलं पुनः ।
स्नेहैलानागरैर्युक्तो ज्ञातव्यो राजखाण्डवः ॥ ३५ ॥

अर्थ–गुड आदिको पकाके क्वाथ बनाया हुआ और कच्ची इमली, स्नेह, इलायची, सोंठ इन्होंसे युत किया हुआ राजखांडव जानना उचित है ॥ ३५ ॥

सितारुचकसिन्धूत्थैः सवृक्षाम्लपरूषकैः ।
निम्बूफलरसैर्युक्तो रागो राजिकया कृतः ॥ ३६ ॥

अर्थ–मिसरी, काला नमक, सेंधानमक, बिजौरा, फालसा, नींबूका रस, राई इन्होंका राग बनता है ॥ ३६ ॥

खाण्डवा मधुराम्लादिरससंयोगसंभवाः ।
दीपना बृंहणा रुच्यास्तीक्ष्णा हृद्याः श्रमापहाः ॥ ३७ ॥

अर्थ–मीठे खट्टे आदि रसके संयोगसे बने खांडव अग्निको जगाते हैं, धातुको पुष्ट करते हैं, रुचिको उपजाते हैं, तेज हैं, दिलको ताकत देते हैं और परिश्रमको नाशते हैं ॥ ३७ ॥

खंडाम्रखंडामलकगुणाः ।

आम्रामलकलेहाद्या हृद्या बुद्धिबलप्रदाः ।
तर्पणा रोचनाः स्निग्धा मधुरा गुरवस्तथा ॥ ३८ ॥

अर्थ–आम्र और आंवलेके लेह आदि दिलको ताकत देते हैं, बुद्धि और बलको देते हैं, तृप्त करते हैं, रुचि उपजाते हैं तथा चिकने, मीठे और भारी हैं ॥ ३८ ॥

रसालानामगुणाः ।

सशितं दधिमध्वाज्यमरीचैलादिसंस्कृतम् ।
मथितं कान्तमानिन्या कर्पूरपरिवासितम् ॥ ३९ ॥

अर्थ–मिसरी, दही, शहद, घृत, मिरच, इलायची आदिसे युत और चतुर स्त्रीसे माथित और कपूरसे सुगंधित की गई रसाला होती है ॥ ३९ ॥

रसाला शिखरा प्रोक्ता मार्जिका माञ्जिका बुधैः ।
रसाला शुक्रला बल्या रोचनी वातपित्तजित् ॥ ४० ॥

अर्थ–रसाला, शिखरा, मार्जिका, माञ्जिका ये चार नाम रसालाके हैं । रसाला वीर्यको देतीहै, बलको करतीहै, रुचिको उपजाती है और वातपित्तको जीतती है॥४०॥

स्निग्धा गुरुः प्रतिश्यायं विशेषेण विनाशयेत् ॥ ४१ ॥

अर्थ–यह चिकनी और भारी है, विशेषकर प्रतिश्यायको नाशती है ॥ ४१ ॥

पानकगुणाः ।

द्राक्षाम्लिकापरूषादिजलं खण्डादिमिश्रितम् ।
मरीचार्द्रककर्पूरचातुर्जातादिसंस्कृतम् ॥ ४२ ॥

अर्थ–दाख, इमली, फालसा आदिके रसमें खांड आदिसे संयुक्त और मिरच, अदरक, कपूर, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर आदिसे संस्कृत किया हुआ पना होता है ॥ ४२ ॥

पानकं द्विविधं तस्मादम्लानम्लविभेदतः ।
द्राक्षाखर्जूरकाश्मर्यसमधूकपरूषकैः ॥ ४३ ॥

अर्थ–अम्ल और अनम्ल भेदसे पानक दो प्रकारका है । दाख, खजूरिया, कंभारी, महुआ, फालसा इन्होंकरके ॥ ४३ ॥

पञ्चसाराभिधं पानं चन्द्रसूर्याधिवासितम् ।
पानकं मूत्रलं हृद्यं प्रीणनं तु श्रमापहम् । ॥ ४४ ॥

अर्थ–युत और चंद्रमा सूर्यसे अधिवासित पंचसार नामक पानक होता है । पानक मूत्रको करता है, दिलको ताकत देता है, पुष्टि करता है और परिश्रमको नाशता है ॥ ४४ ॥

यथाद्रव्यगुणं तत्तु गुरु लघ्वादि निर्दिशेत् ।
पञ्चसाराभिधं पिण्डतृष्णादाहश्रमापहम् ॥ ४५ ॥

मृद्वीकं श्रमदाहास्रपित्तक्लमतृषापहम् ।
रूक्षाणां कोमलं हृद्यं पाचनं च बलप्रदम् ॥ ४६ ॥

अर्थ–वह पानक जिन द्रव्योंसे बना हो उन द्रव्योंके गुरु लघु आदि गुणयुक्त जानना और वह पंचसार (पानक) पिंड, तृष्णा, दाह तथा श्रमको हरता है । मुनक्का (दाखों) का पानक परिश्रम, दाह, रक्तपित्त, ग्लानि और तृषाको नाशता है, रूखोंको कोमल है, दिलको ताकत देता है, पाचन है और बलको देता है ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

अम्लिकाया रसस्तृष्णाकृमिदाहश्रमापहः ॥ ४७ ॥

अर्थ–इमलीका रस तृषा, कृमि, दाह, परिश्रम इन्होंको नाशता है ॥ ४७ ॥

सदकगुणाः ।

निःस्नेहं दधि निर्मथ्य पचेत् शर्करयान्वितम् ।
सव्योषदाडिमाजाजिः सदकोऽयमुदाहृतः ॥ ४८ ॥

अर्थ–घृतसे रहित दहीको मथ खांड मिला पकाने और सोंठ, मिरच, पीपल, अनार, जीरा इन्होंको मिलानेसे सादक बनता है ॥ ४८ ॥

सदको रोचनः स्वर्यः पित्तानिलहरो गुरुः ।
दीपनस्तर्पणो बल्यः श्रमक्लमतृषापहः ॥ ४९ ॥

अर्थ–सादक रुचिको करता है, स्वरमें हित है, पित्तवातको हरता है, भारी है, अग्निको जगाता है, तृप्ति करता है, बलमें हित है तथा परिश्रम, ग्लानि और तृषाको नाशता है ॥ ४९ ॥

पोलिकागुणाः ।

कुकूलकर्पटद्राक्षाकण्टकारिविषाचिताः ।
मण्डकाद्या यथापूर्वं गुरवो बृंहणा मताः ॥ ५० ॥

अर्थ–तुषकी अग्नि, पुराना कपडा, दाख, कटेली इन्होंमें पकाये हुए मांडे आदि पूर्व पूर्व क्रमसे भारी हैं और धातुको पुष्ट करते हैं ॥ ५० ॥

मण्डकः सूचितः सूक्ष्मः कर्पूरादिषु पाचितः ।
स एव किञ्चिच्छूलस्तु बुधैः पूपालिका मता ॥ ५१ ॥

अर्थ–सुंदर और महीन तथा कपूर आदिमें पकाया हुआ मांडा उत्तम होता है, वही कछुक मोटा हो उसे पंडितोंने पूपालिका कहा है ॥ ५१ ॥

अङ्गारकर्कटी सैव विज्ञेयाङ्गारपाचितः ।

अत्युष्णो मण्डकः पथ्यः शीतः स गुरुरुच्यते ॥ ५२ ॥

अर्थ–अंगारोंपर पकाया हुआ वही अंगारकर्कटी जानना चाहिये । बहुत गर्म मांडा पथ्य है और वही शीतल मांडा भारी है ॥ ५२ ॥

अङ्गारमण्डको ग्राही लघुर्दोषत्रयापहः ।
पोलिका कफकृद् बल्या पित्तला वातनुद् गुरुः ॥ ५३ ॥

अर्थ–अंगारमंडक अर्थात् अंगारोंपर पकाया मांडा मलको रोकता है, हलका है और त्रिदोषको नाशता है । पोली कफको करती है, बलमें हित है, पित्तको करती है, वातको नाशती है और भारी है ॥ ५३ ॥

अङ्गारकर्कटी बल्या बृंहणी शुक्रला लघुः ।
दीपनी कफहृद्रोगपीनसश्वासवातजित् ॥ ५४ ॥

अर्थ–अंगाकडी बलको करती है, धातुको पुष्ट करती है, वीर्यको देती है, हलकी है, अग्निको जगाती है और कफ, हृद्रोग, पीनस, श्वास और वात इन्होंको जीतती है ॥ ५४ ॥

शालिभक्ष्यगुणाः ।

शालिपिष्टकृता भक्ष्या नातिबल्या विदाहिनः ।
अवृष्या गुरवः श्लेष्मकफपित्तप्रकोपनाः ॥ ५५ ॥

अर्थ–शालि चांवलोंकी पीठीके बनाये भक्ष्य बहुत बल नहीं करते हैं, विशेषसे दाहको करते हैं, वीर्यको पुष्ट नहीं करते हैं, भारी हैं तथा कफ और कफपित्तको कुपित करते हैं ॥ ५५ ॥

गोधूमभक्ष्यगुणाः ।

गोधूमविहिता भक्ष्या बल्याः पित्तानिलापहाः ।
वैदला वातला भक्ष्या गुरवस्तुवरा हिमाः ॥ ५६ ॥

अर्थ–गेहूंसे बनाये भक्ष्य बलको करते हैं और पित्तवातको नाशते हैं । वैदल-संज्ञक अन्नके भक्ष्य भारी हैं, कषैले और शीतल हैं ॥ ५६ ॥

माषभक्ष्यगुणाः ।

माषपिष्टकृता भक्ष्या बल्याः पित्तकफप्रदाः ॥ ५७ ॥

अर्थ–उडदकी पीठीसे बनाये भक्ष्य पदार्थ बल करते हैं और पित्तकफको देते हैं ॥ ५७ ॥

गुडयुक्तभक्ष्यगुणाः ।

विचार्यान्नगुणान् भक्ष्यानन्यानपि विनिर्दिशेत् ।
गौडिका गुरवो भक्ष्या वातघ्नाः कफशुक्रलाः ॥ ५८ ॥

अर्थ–अन्नके गुणोंको विचार अन्यभी भक्ष्य करने । गुडके भक्ष्य भारी हैं, वातको नाशते हैं तथा कफ और वीर्यको देते हैं ॥ ५८ ॥

घृतपक्वभक्ष्यगुणाः ।

घृतपाचितभक्ष्यास्तु बल्याः पित्तकफापहाः ॥ ५९ ॥

अर्थ–घृतपाचित भक्ष्य अर्थात् घृतमें पकाये भक्ष्य बल करते हैं तथा पित्त और कफको नाशते हैं ॥ ५९ ॥

तैलपक्वभक्ष्यगुणाः ।

तैलजा दृक्समीरघ्नास्तूष्णाः पित्तास्रदूषणाः ॥ ६० ॥

अर्थ–तैलज अर्थात् तेलमें पकाये भक्ष्य दृष्टि और वातको नाशते हैं, गर्म हैं और रक्तपित्तको दूषित करते हैं ॥ ६० ॥

दुग्धभक्ष्यगुणाः ।

दुग्धलोडितगोधूमशालिपिष्टादिनिर्मिताः ।
वातपित्तहरा भक्ष्या हृद्याः शुक्रबलप्रदाः ॥ ६१ ॥

अर्थ–दूधमें आलोडित किये गेहूं और शालि चांवल आदिकी पीठीसे रचे हुए भक्ष्य वातपित्तको हरते हैं, दिलको ताकत देते हैं तथा वीर्य और बलको देते हैं ॥६१॥

घृतपूरगुणाः ।

विचार्यान्नगुणान् भक्ष्यानन्यानपि विनिर्दिशेत् ।
क्षीरेण मर्दितं चूर्णं गोधूमानां सुगालितम् ॥ ६२ ॥

अर्थ–अन्नके गुणोंको विचार अन्यभी भक्ष्य बना लेने । गेहूंकी मैदाको अच्छी तरह छान दूधसे मर्दित कर ॥ ६२ ॥

विस्तार्य सर्पिषा युक्तं ततः श्वेतविमिश्रितम् ।
घृतपुरोऽयमुद्दिष्टः कर्पूरमरिचान्वितः ॥ ६३ ॥

अर्थ–घृतसे विस्तारित कर पीछे सुफेद खांड और कपूर मिरचसे युत करे यह घृतपूर अर्थात् घेवर कहा गया है ॥ ६३ ॥

समितो मर्दितः क्षीरनारिकेलसितादिभिः ।
अवगाह्य घृते पक्वे घृतपूरोऽपरः स्मृतः ॥ ६४ ॥

अर्थ–मैदाको दूध, नारियल, मिसरी इत्यादिकरके मर्दित कर वेल घृतमें मिलावे यह दूसरा घेवर कहा गया है ॥ ६४ ॥

घृतपूरो गुरुर्वृष्यो हृद्यः पित्तानिलापहः ।
सद्यः प्राणप्रदो बल्यः क्षतजिद् बृंहणः परः ॥ ६५ ॥

अर्थ–घेवर भारी है, वीर्यको पुष्ट करता है, दिलको ताकत देता है, पित्तवातको नाशता है, तत्काल प्राण देता है, बलको करता है और क्षतको जीतता है तथा धातुओंको पुष्ट करता है ॥ ६५ ॥

समितासंयावगुणाः ।

समितां सर्पिषा भृष्टां श्वेतां मरिचमिश्रिताम् ।
एलालवङ्गकर्पूरचूर्णादिपरिसंस्कृताम् ॥ ६६ ॥

अर्थ–मैदाको घृतमें भूनकर उसको उसन ले और टिकिया बनाकर उनमें मिरच, इलायची, लौंग, कपूर इन्होंका चूर्ण और खांड मिलावे तब ॥ ६६ ॥

क्षिप्त्वान्यसमितालम्बपुटेषु सुघृते पचेत् ।
ततः खण्डे न्यसेत् पक्वं संयावोऽयमुदाहृतः ॥ ६७ ॥

अर्थ–सुंदर घृतमें तले । पीछे पकी हुई खांडकी चाशनीमें प्राप्त करे । इसे संयाव कहा है ॥ ६७ ॥

समितां मधुदुग्धेन मर्दयित्वा सुशोभनम् ।
पचेद् घृत्तोत्तरे खण्डे न्यसेत् पक्वे नवे घटे ॥ ६८ ॥

अर्थ–सुंदर मैदाको शहद और दूधमें मर्दित कर घृतमें भून दुगुनी खांड मिला-पकाकर नये घडेमें डाले ॥ ६८ ॥

ततो मरिचचूर्णैलाखण्डचूर्णावचूर्णितम् ।
कुर्यात् कर्पूरसंयुक्तं संयावममृतोपमम् ॥ ६९ ॥

अर्थ–पीछे मिरचोंके चूर्ण, इलायची, मिसरी इन्होंके चूर्णसे युत और कपूरसे धूपित करे । यह संयाव अमृतके समान उपमावाला है ॥ ६९ ॥

खण्डगुणाः ।

मर्दयित्वा तु समितामपूपास्तनवः कृताः ।
पक्त्वा घृतेऽसिते पाके मण्डिता मधुशीर्षिका ॥ ७० ॥

अर्थ–मैदाको घृत और पानीसे मर्दित कर मिहीन पूरी बना घृतमें पका खांडसे गलेफे यह मधुशीर्षिका बनती है ॥ ७० ॥

घृतेन मर्दितो तोयैः समितां मृदु मर्दयेत् ।
मातुलुङ्गत्वचा खण्डिपक्केनार्द्रकपूरितम् ॥ ७१ ॥

अर्थ–मैदाको घृतसे कोमल मर्दित कर मिहीन पूरी बना उसमें बिजौरेकी छाल और अदरक भर ॥ ७१ ॥

विधाय पूपकं वृत्तं गन्धाढ्यं केशरान्वितम् ।
पक्त्वा सर्पिषि खण्डे च मलितो मधुशीर्षकः ॥ ७२ ॥

अर्थ–गोल पूआ बना सुगंध और केशरसे युत कर घृतमें पका खांडकी चासनी गलेफे यह मधुशीर्षक खजला बनता है ॥ ७२ ॥

समितागुणाः ।

समितां गुडतोयेन मेलयित्वा सुगालितम् ।
घृते विस्तार्य विपचेत् सुवृत्तान् मृदुपूपकान् ॥ ७३ ॥

अर्थ–मैदामें गुड और पानी मिला अच्छी तरह साफ कर कोमल और गोल मालपुओंको घृतमें विस्तृत कर पकावे ॥ ७३ ॥

दधिपूपकगुणाः ।

शालिपिष्टं युतं दध्ना मर्दयित्वा घृते पचेत् ।
वेष्टयेत् पक्वखण्डेन सुवृत्तान् दधिपूपकान् ॥ ७४ ॥

अर्थ–शालि चांवलोंकी पीठीको दहीसे मथकर घृतमें पकावे । पीछे खांडकी चासनीमें पकावे ऐसे दहीके मालपुए बनते हैं ॥ ७४ ॥

संयावा मधुशीर्षाढ्याः पूपका दधिसम्भवाः ।
गुरवो बृंहणा हृद्या वृष्याः पित्तानिलापहाः ॥ ७५ ॥

अर्थ–मधुशीर्षिका संयाव और दहीसे युत मालपुए आदि भारी हैं, धातुको पुष्ट करते हैं, दिलको ताकत देते हैं, वीर्यको पुष्ट करते हैं तथा पित्त और वातको नाशते हैं ॥ ७५ ॥

एते संस्कारभेदेन विविधास्तेऽपि तद्गुणाः ॥ ७६ ॥

अर्थ–संस्कार भेदकरके ये बहुत प्रकारवाले हैं और पूर्वोक्त गुणको देते हैं ॥७६॥

विस्यंदगुणाः ।

दधिक्षीरसमे पक्त्वा त्वर्द्धभागावशेषिते ।
आपचेद्रक्तशालीनां तण्डुलान् तिलसंयुतान् ।

प्रियालपनसादीनां बीजमुष्टिं समापचेत् ॥ ७७ ॥

अर्थ–दही और दूध बराबर भाग ले पकावे जब आधा भाग शेष रहे तब लाल शालि चांवल, तिल, पिस्ते और पनस आदिके बीजोंकी मुष्टि मिला पकावे ॥ ७७ ॥

क्षीरतुल्यं घृतं चैव शर्करा चैव तत्समा ।
सिद्धस्त्रिकटुकोपेतः कर्पूरेणाधिवासितः ॥ ७८ ॥

अर्थ–और दूधके समान घृत और उतनीही खांड मिला सोंठ, मिरच, पीपलके चूरणसे युत और कपूरसे अधिवासित करे ॥ ७८ ॥

एष विस्यन्दनो नाम देवलोकेऽपि दुर्लभः ।
यस्मात् पक्केऽपि हि घृतं स्यन्दते सर्वतोमुखम् ॥ ७९ ॥

अर्थ–यह विस्यंदन देवलोकमेंभी दुर्लभ है । जिस कारणसे पके हुएमेंभी चारों तर्फसे घृत झिरता है ॥ ७९ ॥

तस्मात् सूपविधानज्ञैर्विस्यन्दो विधिवत् स्मृतः ।
विस्यन्दो बृंहणो हृद्यः पित्तानिलहरो गुरुः ॥ ८० ॥

अर्थ–उसी कारणसे सूपशास्त्र जाननेवालोंने विधिके समान विस्यंद कहा है । विस्यंद धातुको पुष्ट करता है, दिलको ताकत देता है, पित्त और वातको हरता है और भारी है ॥ ८० ॥

लप्सीगुणाः ।

समितां भर्जयेत् तप्ते घृते श्वेतां ततो न्यसेत् ।
वारिमज्जादिसंयुक्तां पयसा योजयेत् तदा ॥ ८१ ॥

अर्थ–मैदाको गर्म घृतमें मिला भूने पीछे बूरा मिलाके पानी, गिरी और दूध आदिसे युत करे ॥ ८१ ॥

एषैलादियुता तज्ज्ञैर्लप्सिका ललिता मता ।
लप्सिका बृंहणी वृष्या वातपित्तहरा गुरुः ॥ ८२ ॥

अर्थ–पीछे इलायची आदिसे युत करे । वैद्योंने यह सुन्दर लपसी मानी है । लपसी धातु और वीर्यको पुष्ट करती है, वातपित्तको हरती है और भारी है ॥ ८२ ॥

फेनीगुणाः ।

फेनिका पुटिनी शुभ्रा वातपित्तहरा लघुः ।
लक्षणं फेनिकादीनां सूपशास्त्राद्विचारयेत् ॥ ८३ ॥

अर्थ–फेनिका, पुटिनी, शुभ्रा ये तीन नाम फेनीके हैं । फेनी वातपित्तको हरती है और हलकी है । फेनी आदिक लक्षण सूपशास्त्रसे विचारने चाहिये ॥ ८३ ॥

मोदकनामगुणाः ।

मोदका लड्डुकाः प्रोक्तास्ते चानेकविधा मताः ।
तेषामम्लत्वप्राप्तानां न्यसेद्गोधूमगालिताम् ॥ ८४ ॥

अर्थ–मोदक, लड्डुक ये दो नाम लड्डूके हैं । वे अनेक प्रकारके माने गये हैं, खट्टापनको प्राप्त हो जावे तब गेहूंकी मैदा मिलावे ॥ ८४ ॥

दधि क्षीरं मुष्टिजुष्टं समिता माषपिष्टकः ।
सूरणार्द्रककूष्माण्डशालूकामिषमत्स्यकाः ॥ ८५ ॥

अर्थ–दही, दूध, मुठिया, मैदा, उडदकी पीठी, जमीकंद, अदरक, कोहला, शालूक, मांस, मछली ॥ ८५ ॥

इत्यादिभिर्बहुविधाः कल्पास्ते सूपशास्त्रतः ।
द्रव्यं विचार्य मतिमान् तद्गुणानपि निर्दिशेत् ।
मोदका दुर्जरा वृष्या बल्याः पित्तानिलापहाः ॥ ८६ ॥

अर्थ–इत्यादिको मिलानेसे सूपशास्त्रके अनुसार बहुत प्रकारके बनते हैं, बुद्धिमान् वैद्य द्रव्यका विचार कर उस द्रव्यके गुणवाले लड्डुओंकोभी बनावे । लड्डू देरमें जरते हैं, वीर्यको पुष्ट करते हैं, बलको देते हैं और पित्तवातको नाशते हैं ॥ ८६ ॥

माषवटकगुणाः ।

माषमुद्गादिपिष्टोत्थाः कटुका वटिकादयः ।
तत्कारणगुणान् ज्ञात्वा तद्गुणानपि निर्दिशेत् ॥ ८७ ॥

अर्थ–उडद और मूंग आदिकी पीठीसे बनाये गये वडे आदि चर्परे हैं । मूंग उडदके गुणोंको जानके वडाके गुणोंकोभी कहे ॥ ८७ ॥

माषाणां वटको हृद्यो बल्यो वातहरो गुरुः ।
विष्टम्भी घोलवटको विदाही पवनापहः ॥ ८८ ॥

अर्थ–उडदोंका वडा दिलको ताकत देता है, बल करता है, वातको नाशता है और भारी है । घोलवडा विष्टंभवाला है, दाहको करता है और वातको नाशता है ॥ ८८ ॥

शाण्डकवटकगुणाः ।

शाण्डको वटको दृष्टिनाशनो दोषलो गुरुः ॥ ८९ ॥

अर्थ–शांडकवटक अर्थात् कांजीका वडा दृष्टिको नाशता है, दोषको करता है और भारी है ॥ ८९ ॥

तुषाम्बुवटकगुणाः ।

तुषाम्बुवटको रुच्यः पित्तलः कफवातजित् ।
इण्डली शुक्रला रूक्षा विष्टम्भी कफवातकृत् ॥ ९० ॥

अर्थ–तुषांबुवटक अर्थात् जवोंकी कांजीका वडा रुचिको करता है, पित्तको उपजाता है और कफवातको जीतता है । इंडली वीर्यको उपजाती है, रूखी है, विष्टंभ और कफवातको करती है ॥ ९० ॥

सोमालिकागुणाः ।

सोमालिका गुरुर्वृष्या रोचनी पित्तनाशिनी ॥ ९१ ॥

अर्थ–सुहाली भारी है, पुष्टि करती है, रुचिको उपजाती है और पित्तको नाशती है ॥ ९१ ॥

कुंडलिकागुणाः ।

द्विप्रस्थां शुद्धसमितां प्रस्थं गोधूमगालितम् ।
विमर्द्य पयसा स्थाप्यं व्रजेद्यावत्तदम्लताम् ॥ ९२ ॥

अर्थ–एक सौ अठावीस तोलेभर शुद्ध मैदा लेके चौंसठ तोलेभर गेहूंका चून मिला दूधसे मथ जबतक खट्टापन प्राप्त हो तबतक धरे ॥ ९२ ॥

सच्छिद्रे नारिकेलस्य पात्रे निक्षिप्य निर्मले ।
परिभ्राम्य घृते तप्ते मन्दाग्नौ तु विपाचयेत् ॥ ९३ ॥

अर्थ–पीछे नारियलके छिद्रसहित साफ पात्रमें डाल भ्रमाके तपाये हुए घृतमें मन्द अग्निसे पकावे ॥ ९३ ॥

कर्पूरवासिते पक्के विज्ञेया नृपवल्लभा ।
सुपक्वां कङ्कणाकारां सितालेहे विनिक्षिपेत् ॥ ९४ ॥

अर्थ–कपूरसे वासित किये पात्रमें डालके छोडता जावे । इसे नृपवल्लभा जाननी सुन्दर पकी हुई और कंकणके आकारवालीको सुन्दर खांडकी चासनीमें डाले॥९४॥

सा तु कुण्डलिका नाम्ना पुष्टिकान्तिबलप्रदा ।
धातुवृद्धिकरा वृष्या हृद्या चेन्द्रियतर्पणी ॥ ९५ ॥

अर्थ–वह नामसे कुंडलिका पुष्टि, कांति और बलको देती है, धातुको बढाती है, वीर्यको पुष्ट करती है, दिलको ताकत देती है और इन्द्रियोंको तृप्त करती है ॥९५॥

तस्यामम्लत्वमाप्तायां न्यसेद्गोधूमगालिताम् ॥ ९६ ॥

अर्थ–खट्टेपनको प्राप्त हुई उसमें गेहूंकी मैदाभी मिलाई जाती है ॥ ९६ ॥

कुल्माषगुणाः ।

गोधूमाद्यास्तु कुल्माषा अर्द्धस्विन्ना मताः क्वचित् ।
कुल्माषा गुरवो रूक्षा वातला भिन्नवर्चसः ॥ ९७ ॥

अर्थ–गेहूं आदिके कुल्माष आधे सिजाये हुए कहींक माने हैं । कुल्माष भारी हैं, रूखे हैं, वातको करते हैं और मलको भेदते हैं ॥ ९७ ॥

सक्तुगुणाः ।

नवीननिस्तुषोद्भृष्टा यवचूर्णं च सक्तवः ॥ ९८ ॥

अर्थ–नये तुषरहित जव भूनकर पीसे जावें वे सत्तू होते हैं ॥ ९८ ॥

मन्थादिगुणाः ।

सक्तवस्तु घृताभ्यक्ताः शीतवारिविलोडिताः ।
नातिद्रवो नातिसान्द्रो मन्थः सद्भिः प्रकीर्तितः ॥ ९९ ॥

अर्थ–घृतसे भिगोये शीतल पानीसे विलोडित किये सत्तू होते हैं । न बहुत पतला हो और न बहुत करडा हो उसे सत्पुरुषोंने मन्थ कहा है ॥ ९९ ॥

मन्थो बलकरः सद्यः परिणामे बलावहः ।
मोहतृष्णाक्षयच्छर्दिकुष्ठदाहश्रमान् जयेत् ॥ १०० ॥

अर्थ–मन्थ बलको शीघ्र करता है, परिणाममें बलको देता है और मोह, तृषा, क्षय, छर्दि, कुष्ठ, दाह, परिश्रम इन्होंको जीतता है ॥ १०० ॥

द्राक्षा सितेक्षुस्वरसैर्मिश्रा पित्तास्रदाहजित् ।
द्राक्षा मधुयुता बल्या कफश्रममदापहा ।
वर्गत्रयसमायुक्ता दोषवर्चोऽनुलोमतः ॥ १ ॥

अर्थ–मिसरी और ईखके स्वरससे मिली दाख पित्तरक्त और दाहको जीतती है, शहदसे युत हुई दाख बलको करती है और कफ, परिश्रम, मद इन्होंको नाशती है, मिसरी, ईखका रस, शहद इन्होंसे युत हुई दाख दोष और मलको अनुलोम करती है ॥ १ ॥

सक्तुगुणाः ।

सक्तवो यवजाः शीता दीपना लघवः सराः ।
कफपित्तहरा रूक्षा लेखनाः पानतस्तु ते ॥ २ ॥

अर्थ–जवोंका सत्तू शीतल है, अग्निको जगाता है, हलका है, सर है, कफपित्तको हरता है, रूखा और लेखन है । पीनेसे तो ॥ २ ॥

सद्यो बलप्रदाः पथ्या घर्मादिक्रान्तदेहिनः ।
निस्तुषैर्भर्जितैः पिष्टैश्चणकैः सयवैः कृताः ॥ ३ ॥

अर्थ–शीघ्र बलको देता है, घाम आदिसे क्रांत देहवालेको पथ्य है, छिलकोंसे रहित और भुने हुए चने और जवोंसे किये ॥ ३ ॥

सक्तवः शर्करासर्पिर्युक्ता ग्रीष्मेऽतिपूजिताः ।
पिण्डी प्रोक्ता गुरुस्तेषां द्रवत्वाल्लेहिका लघुः ॥ ४ ॥

अर्थ–सत्तू खांड और घृतसे युत किये जावें तो गर्मीके समयमें बहुत पूजित हैं । सत्तुओंकी पिंडी भारी है, द्रवपनेसे लेहिका हलकी है ॥ ४ ॥

न भुक्त्वा न रदे स्थित्वा न निशायां न वा बहून् ।
न जलान्तरितान् तद्धि सक्तूनद्यान्न केवलान् ॥ ५ ॥

अर्थ–भोजन करके नहीं और दांतोंपर स्थित करके नहीं और रात्रिमें नहीं और बहुतसे नहीं और पानीसे अंतरित नहीं और केवल नहीं इस प्रकार सत्तुओंको खावे ॥ ५ ॥

यवोद्भवलाजागुणाः ।

भृष्टशाल्यादिजा लाजा धान्यभृष्टयवोद्भवाः ।
लाजा लघुतराः शीता बल्याः पित्तकफच्छिदः ।
छर्व्यतीसारदाहास्रमेहमेदस्तृषापहाः ॥ ६ ॥

अर्थ–भुने हुए शालि चांवल आदिसे और भुने हुए जवोंसे लाज होती है, लाज अर्थात् खील बहुत हलकी है, शीतल है, बलको करती है, पित्त और कफको काटती है और छर्दि, अतिसार, दाह, रक्त, प्रमेह, तृषा इन्होंको नाशती है ॥ ६ ॥

धान्यागुणाः ।

धान्या विष्टम्भिनी रूक्षा कफमेदोहरा गुरुः ॥ ७ ॥

अर्थ–धानी विष्टंभ करती है, रूखी है, कफ और मेदको हरती है और भारी है ॥ ७ ॥

पृथुकगुणाः ।

पक्वार्द्रा व्रीहयः सम्यक् पीडिताः पृथुका मताः ।
पृथुका गुरवो बल्याः श्लेष्मला वातनाशनाः ॥ ८ ॥

अर्थ–पके हुए गीले चांवल भुनाये जावें वे पृथुक कहे जाते हैं । पृथुक भारी हैं, बलको करते हैं, कफ करते हैं और वातको नाशते हैं ॥ ८ ॥

होलगुणाः ।

शिम्बिधान्यैरर्द्धपक्वैः सुभृष्टैर्होलको मतः ।
होलकोऽल्पानिलो मेदःकफदो पक्वभावतः ॥ ९ ॥

अर्थ–आधा पका हुआ शिंबिसंज्ञक अन्न अच्छी तरह भूना जावे वह होलक कहा जाता है । होला अल्प वातवाला है तथा स्वभावसे मेद और कफको देता है ॥ ९ ॥

लम्बीगुणाः ।

अपक्वभृष्टैर्गोधूमैरुलञ्चो लम्बलम्बिके ।
लम्बी कफप्रदा बल्या लघुः पित्तानिलापहा ॥ ११० ॥

अर्थ–नहीं पके हुए गेहुओंको भूने उसे उलंच, लंब, लंबिका कहते हैं । लंबी कफको देती है, बलको करती है, हलकी है तथा पित्त और वातको नाशती है॥ ११०॥

परिशुष्कगुणाः ।

हिङ्गुपक्के घृते दत्त्वा मांसमालोड्य भर्जितम् ।
मात्रयोष्णाम्बु निक्षिप्य पचेत्सम्यग्विचक्षणः ॥ १११ ॥

अर्थ–हींगसे पके हुए घृतमें भुने हुए मांसको आलोडित कर प्रमाणसे गरम पानी डाल बुद्धिमान् पुरुष अच्छी तरह पकावे ॥ ११ ॥

मरीचार्द्रकसंयुक्तं सुगन्धिद्रव्यवासितम् ।
गतद्रव्यं सुधातुल्यं परिशुष्कं तदुच्यते ॥ १२ ॥

अर्थ–मिरच और अदरक उसमें मिलाकर सुगंधित द्रव्यसे वासित करे । यह अमृतके समान परिशुष्क कहा गया है ॥ १२ ॥

प्रदिग्धगुणाः ।

घनद्रव्योपलिप्तं तत् प्रदिग्धमिति कीर्त्यते ।
प्रदिग्धं वातजिद् बल्यं गुरु शुक्रविवर्द्धनम् ॥ १३ ॥

अर्थ–कडे द्रव्यसे उपलिप्त हुआ प्रदिग्ध मांस होता है । प्रदिग्ध मांस वातको जीतता है, बलको करता है, भारी है, वीर्यको बढाता है ॥ १३ ॥

उल्लिप्तमांसगुणाः ।

रसेन युक्तं सरसं शूल्यं शूलेन संस्कृतम् ।

परिशुष्कं स्थितं स्निग्धं रोचनं तर्पणं गुरु ॥ १४ ॥

अर्थ-रससे युत हुआ सरस मांस होता है और शूलकरके पकाया हुआ शूल्य मांस होता है । परिशुष्क मांस धरा हुआ चिकना है, रुचिको करता है, तृप्ति करता है और भारी है ॥ १४ ॥

बलमेधाग्निमांसौजःशुक्रवृद्धिकरं परम् ।
तदेवोल्लिप्तपिष्टत्वादुल्लिप्तं परिकीर्त्यते ॥ १५ ॥

अर्थ-बल, बुद्धि, अग्नि, मांस, पराक्रम, वीर्य इन्होंको बढाता है । वही उल्लिप्त पिष्टपनसे उल्लिप्त कहा गया है ॥ १५ ॥

शूल्यमांसगुणाः ।

उल्लिप्तं गुरु पथ्यं तत् परिशुष्कसमं गुणैः ।
प्रदिग्धं वातजिद् बल्यं गुरु शुक्रविवर्धनम् ॥ १६ ॥

अर्थ-उल्लिप्त नामवाला मांस भारी है, पथ्य है, गुणोंकरके परिशुष्क मांसके समान है । प्रदिग्ध मांस वातको जीतता है, बलको करता है, भारी है और वीर्यको बढाता है ॥ १६ ॥

सरसं तद्गुणं ज्ञेयं विशेषाल्लघु दीपनम् ।
प्रोतं शूलेन पिशितं सौरभाढ्यम्बुना बहु ॥ १७ ॥

अर्थ-सरस मांसमेंभी येही गुण हैं । विशेषकर हलका है और अग्निको जगाता है । शूलकरके पिरोया हुआ और सुगंधित पानीसे ॥ १७ ॥

लिप्तं विधूमैरङ्गारैः पाचितं शूल्यमुच्यते ।
शूल्यं सर्वोत्तमं मांसं लघु पथ्योत्तमं मतम् ॥ १८ ॥

अर्थ-लिप्त हुआ, धूम्रसे रहित हुए अंगारोंकरके पकाया हुआ शूल्य मांस होता है । शूल्य मांस सब मांसोंमें उत्तम है, हलका है और उत्तम पथ्य माना गया है ॥ १८ ॥

अङ्गारप्रतप्तमांसगुणाः ।

अङ्गारादिषु यत्पक्वं प्रतप्तं तदुदाहृतम् ॥ १९ ॥

अर्थ-अंगार आदिकोंमें जो पकाया जावे उसे प्रतप्त मांस कहा है ॥ १९ ॥

पिष्टमांसगुणाः ।

मांसं दाडिमसिन्धूत्थं सौरभादिसमन्वितम् ।
पिष्ट्वा पूपादिसङ्कल्पपक्वं पिष्टमिति स्मृतम् ॥ १२० ॥

अर्थ–अनार, सेंधानमक, सुगंध आदिसे युत कर पीस पुआदिकी तरह पकाया जावे उसे पिष्टमांस कहा है ॥ १२० ॥

घृतादिसाधितमांसगुणाः ।

भर्जितं स्याद् घृतादौ तु भृष्ट्वा यत्साधितं पुनः ॥ २१ ॥

अर्थ–घृत आदिमें भूनकर जो साधित किया जावे वह भर्जित मांस होता है २१

तन्दुपक्कमांसगुणाः ।

मांसं सौरभसंलिप्तं तन्दुपक्कं मधुप्रभम् ॥ २२ ॥

अर्थ–सुगंधसे लिप्त हुआ और शहदके समान कांतिवाला ऐसा तंदुपक्क मांस होता है ॥ २२ ॥

प्रदिग्धं सरसं पक्कं भर्जितं मृदुपाचितम् ।
प्रतप्तं परिशुष्कं च शूल्यं यच्चान्यदीदृशम् ॥ २३ ॥

अर्थ–प्रदिग्ध, सरस, पक्क, भर्जित, मृदुपाचित, प्रतप्त, परिशुष्क, शूल्य, अन्य इसी प्रकारका ॥ २३ ॥

तैलपक्कमांसगुणाः ।

मांसं तैलेन सिद्धं तद्वीर्योष्णं गुरु पित्तलम् ॥ २४ ॥

अर्थ–मांस तेलकरके सिद्ध किया जावे तो वीर्यमें गर्म है, भारी है और पित्तको करता है ॥ २४ ॥

घृतपक्कं तदेव स्यात् लघु रुच्यमपित्तलम् ।
अत्युष्णं वीर्यबलदं हृद्यं दृष्टिप्रसादनम् ॥ २५ ॥

अर्थ–घृतसे पकाया वही मांस हलका है, रुचिको करता है, पित्तको नहीं करता है, बहुत गर्म है, वीर्य और बलको देता है, दिलको ताकत देता है और दृष्टिको साफ करता है ॥ २५ ॥

तक्रादिपक्कमांसगुणाः ।

गोरसस्नेहधान्याम्लफलाम्लकटुकादिभिः ।
सिद्धं मांसं भवेद्बल्यं रोचनं दीपनं गुरु ॥ २६ ॥

अर्थ–तक्र, स्नेह, कांजी, खट्टारस, चर्परा आदिसे सिद्ध किया मांस बलको करता है, रुचिको करता है, अग्निको जगाता है और भारी है ॥ २६ ॥

सुस्विन्नमांसगुणाः ।

मांसं चातिरसं रूक्षं सुस्विन्नं वातलं गुरु ॥ २७ ॥

अर्थ–अच्छी तरह सिजाया मांस बहुत रसवाला है, रूखा है, वातको करता है और भारी है ॥ २७ ॥

अथ वेसवारगुणाः ।

गतास्थि मांसं सुस्विन्नं पुनर्दृषदि पेषयेत् ।
व्योषादिसंस्कृतं कृत्वा पचेद्भूयो घृतान्वितम् ।
वेसवारोऽयमुद्दिष्टो बल्यो वातहरो गुरुः ॥ २८ ॥

अर्थ–हाड्डियोंसे रहित मांसको अच्छी तरह सिजायकर पत्थरपर पीसे, सोंठ, मिरच, पीपल इत्यादिसे युत कर फिर घृत मिला पकावे, यह वेसवार कहा है । यह बलको करता है, वातको हरता है और भारी है ॥ २८ ॥

सौरभगुणाः ।

स्विन्नमुद्गादिकल्कोऽपि वेसवारोऽपरः स्मृतः ।
हरिद्राव्योषसिन्धूत्थहिङ्गुधान्यकदाडिमैः ।
साजाजिभिर्वेसवारः सौरभोऽयमुदाहृतः ॥ २९ ॥

अर्थ–सिजाया हुआ मूंग आदिका कल्कभी दूसरा वेसवार कहा गया है । हलदी, सोंठ, मिरच, पीपल, सेंधानमक, हींग, धनिया, अनार, जीरा इन्होंसे युत किया वेसवार सौरभ कहा जाता है ॥ २९ ॥

सौरवगुणाः ।

मुद्गादिवेसवारस्तु यथा द्रव्यगुणान् वदेत् ।
पिष्टमांससमुद्भूतः स्मृतो मांसरसो रसः ।
सौरवः सौरसः स्यात्तु यो रसो लवणान्वितः ॥ १३० ॥

अर्थ–मूंग आदिके वेसवारको जैसा द्रव्य हो उसके समान गुणवाला कहना । पिसे हुए मांसके रससे उपजा मांसरस रस, सौरव, सौरस इन तीन नामोंवाला है, परंतु जो रस नमकसे युत हो ॥ १३० ॥

स्वानिष्कगुणाः ।

संयुक्तो वेसवारेण रसः स्वानिष्कमुच्यते ॥ ३१ ॥

अर्थ–वेसवारसे युत हुआ मांसरस स्वानिष्क कहा गया है ॥ ३१ ॥

मांसरसगुणाः ।

रसो ह्यद्यः श्रमश्वासवातपित्तक्षयापहः ।
प्रीणनो व्रणयुक्तानां क्षीणानामल्परेतसाम् ॥ ३२ ॥

अर्थ–मांसका रस दिलको ताकत देता है और परिश्रम, श्वास, वात, पित्त क्षय इन्होंको नाशता है, घावसे युत हुओंको, क्षीणोंको और अल्पवीर्यवालोंको तृप्त करता है ॥ ३२ ॥

विश्लिष्टभग्नसन्धीनां शुद्धानां शुद्धिकाङ्क्षिणाम् ।
शस्यते स्वरहीनानां दृष्ट्यायुः श्रवणार्थिनाम् ॥ ३३ ॥

अर्थ–पृथक् और टूटी हुई संधिवालोंको, शुद्ध हुओंको, शुद्धिकी इच्छावालोंको स्वरसे हीन हुओंको और दृष्टि, आयु, सुनना इनकी इच्छावालोंको उत्तम है ॥३३॥

दाडिमयुक्तमांसरसगुणाः ।

सदाडिमादिर्बलदो दोषघ्नस्तु कृतस्तु सः ॥ ३४ ॥

अर्थ–सदाडिमादि अर्थात् अनार आदिसे युत हुआ मांसका रस बलको देता है, दोषोंको नाशता है ॥ ३४ ॥

सौवीरादिगुणाः ।

सौवीरः प्रीणनः शीतो मुखशोषश्रमापहः ।
दीपनः क्लमवातघ्नः सर्वधातुविवर्द्धनः ॥ ३५ ॥

अर्थ–सौवीर पुष्टि करता है, शीतल है, मुखशोष और परिश्रमको नाशता है, अग्निको जगाता है, ग्लानि और वातको नाशता है तथा सब धातुओंको बढाता है ॥३५॥

स्वानिष्कस्तु गुरुः पथ्यो दीप्ताग्नीनां विशेषतः ।
अल्पमांसादिसंयुक्तो लवणाम्बुविपाचितः ॥ ३६ ॥

अर्थ–स्वानिष्क भारी है, दीप्त अग्निवालोंको विशेष कर पथ्य है । अल्प मांस आदिसे युत और नमक पानीसे पकाया हुआ हो ॥ ३६ ॥

दलिया चणिका ज्ञेया रसाद्या लघवो मताः ।
तक्रादिक्काथसम्भूता क्कथिता कथिता बुधैः ॥ ३७ ॥

अर्थ–उसे दलिया और चनिका जानना । रस आदि हलके माने हैं । तक्र आदिके क्काथसे बनी पंडितोंने क्कथिता कही है ॥ ३७ ॥

क्कथितागुणाः ।

क्कथिता पाचनी हृद्या रुच्या वह्निप्रदा लघुः ।
कफानिलविबन्धघ्नी किञ्चित् पित्तप्रकोपनी ॥ ३८ ॥

अर्थ–क्कथिता पाचनी है, दिलको ताकत देती है, रुचिको करती है, अग्निको

देती है और हलकी है । वह कफ, वात, विबंध इन्होंको नाशती है और पित्तको कछुक कुपित करती है ॥ ३८ ॥

शाकं तक्रादिभिः सम्यक् साधितं कथितं मतम् ।
कथितं दीपनं रुच्यं वातश्लेष्मश्रमापहम् ।
त्यक्त्वा स्वहेतुशाकस्य गुणानेतद्गुणं भवेत् ॥ ३९ ॥

अर्थ–तक्र आदिसे अच्छी तरह साधित किया शाक कथित माना गया है । कथित अग्निको जगाता और रुचिको उपजाता है, वात, कफ, परिश्रम इन्होंको नाशता है । आपही है कारण जिसका ऐसे शाकके गुणोंको त्यागकर इसी गुण-वाला होता है ॥ ३९ ॥

पर्पटगुणाः ।

पर्पटा लघवो रुच्या लघीयान् क्षारपर्पटः ॥ १४० ॥

अर्थ–पर्पट अर्थात् पापड हलका है, रुचिको उपजाता है, खारसहित पापड बहुत हलका है ॥ १४० ॥

पिण्याकनामगुणाः ।

पिण्याकस्तिलकिट्टः स्यात् पललं तिलपिष्टकम् ।
पिण्योको लघुरूक्षश्च विष्टम्भी दृष्टदूषणः ॥ ४१ ॥

अर्थ–पिण्याक, तिलकिट्ट, पलल, तिलपिष्टक ये चार नाम खलके हैं । तिलोंका खल हलका, रूखा और विष्टंभ करता है तथा दृष्टिको दूषित करता है ॥ ४१ ॥

पललगुणाः ।

पललं बृंहणं स्निग्धं कफपित्तकरं गुरु ॥ ४२ ॥

अर्थ–तिलोंकी पीठी धातुको पुष्ट करती है, चिकनी है, कफपित्तको करती है और भारी है ॥ ४२ ॥

द्रव्यकालक्रियायोगदेहादीनि विचार्य तु ।
अन्येषामप्यनुक्तानामेषामपि गुणान् वदेत् ॥ १४३ ॥

अर्थ–औषध, समय, क्रिया, योग, शरीर इत्यादिका विचार कर जो नहीं कहे हैं उन्होंकेभी गुणोंको कहे ॥ १४३ ॥

इति धान्यनामान्नवर्ग एकादशः ।

मुखेन्दुपद्मप्रतिबोधलुब्धं विधुन्तुदालिभ्रममादधानम् ।
लक्ष्मीकपोलप्रतिबिंबिताङ्गं नीलाञ्जनीलं कलयामि तेजः १

अर्थ–मुखरूपी प्रकाशित कुमोदिनीके फूलके खिलनेमें लुब्ध हुआ, राहुओंके समूहको भ्रम देनेवाला और लक्ष्मीजीके कपोलोंपर प्रतिबिंबित अङ्गोंवाला ऐसा नीले कमलके समान नीलरूप तेजका स्मरण करता हूं ॥ १ ॥

हस्तिनामगुणाः ।

हस्ती मतङ्गजो दन्ती मातङ्गोऽनेकपः करी ।
सिन्दूरः कुञ्जरः पद्मी वारणो द्विरदो द्विपः ॥ २ ॥

अर्थ–हस्ती, मतंगज, दन्ती, मातङ्ग, अनेकप, करी, सिंदूर, कुंजर, पद्मी, वारण, द्विरद, द्विप ॥ २ ॥

इभो दन्तावलो नागः कुम्भी स्तम्बेरमो गजः ।
हस्तिनी धेनुका प्रोक्ता करेणुः करिणी च सा ।
हस्ती कफानिलौ हन्यादुष्णपित्तास्रकोपनः ॥ ३ ॥

अर्थ–इभ, दन्तावल, नाग, कुंभी, स्तंबेरम, गज ये अठारह नाम हाथीके हैं । हस्तिनी, धेनुका, करेणु, करिणी ये चार नाम हथिनीके हैं । हाथी कफ-वातको नाशता है, गर्म है और रक्तपित्तको कुपित करता है ॥ ३ ॥

घोटकनामगुणाः ।

घोटकः सैन्धवो वाजी तुरङ्गस्तुरगो हयः ।
तुरङ्गमोऽश्वो गन्धर्वो वाहः सप्तिर्यजुर्जवी ॥ ४ ॥

अर्थ–घोटक, सैंधव, वाजी, तुरंग, तुरग, हय, तुरंगम, अश्व, गंधर्व, वाह, सप्ति, यजुः, जवी ये तेरह नाम घोडेके हैं ॥ ४ ॥

घोटिका वडवा वामी प्रसूताश्वा च वाजिनी ।
घोटकः कटुकः पाके दीपनः कफपित्तकृत् ॥ ५ ॥

अर्थ–घोटिका, वडवा, वामी, प्रसूता, अश्वा, वाजिनी ये छः नाम घोडीके हैं । घोडा पाकमें चर्परा है, अग्निको जगाता है और कफपित्तको करता है ॥ ५ ॥

वातरुद्बृंहणो बल्यश्चक्षुष्यो मधुरो लघुः ॥ ६ ॥

अर्थ–वातको हरता है, धातुको पुष्ट करता है, बलमें हित है, आंखोंमें हित है, मीठा और हलका है ॥ ६ ॥

अश्वतरनामगुणाः ।

तज्ज्ञो घोट्यामश्वतरो शीघ्रवेगोऽङ्गपूजितः ।
बल्यमाश्वतरं मांसं बृंहणं कफपित्तलम् ॥ ७ ॥

अर्थ–घोडीमें अन्य तरहके घोडेसे उपजा अश्वतर, शीघ्रवेग, अंगपूजित इन तीन नामोंवाला खच्चर होता है । खच्चरका मांस बलको करता है, धातुको पुष्ट करता है और कफपित्तको करता है ॥ ७ ॥

उष्ट्रनामगुणाः ।

उष्ट्रः क्रमेलको वक्रग्रीवः शाखाशनो मयः ।
शृङ्खलः करभो दीर्घजङ्घो धूम्रो मरुत्प्रियः ॥ ८ ॥

अर्थ–उष्ट्र, क्रमेलक, वक्रग्रीव, शाखाशन, मय, शृंखल, करभ, दीर्घजंघ, धूम्र, मरुत्प्रिय ये दश नाम ऊंटके हैं ॥ ८ ॥

उष्ट्रमासं लघु स्वादु चक्षुष्यमनिलापहम् ।
उष्ट्रमांसं प्रशमनं मेदःपित्तकफप्रदम् ॥ ९ ॥

अर्थ–ऊंटका मांस हलका है, स्वादु है, आंखोंमें हित है, वातको नाशता है, मेदको शांत करता है और पित्त-कफको देता है ॥ ९ ॥

गर्दभनामगुणाः ।

गर्दभो रासभो भारवाही दूरगमः खरः ।
गार्दभं पित्तलं बल्यं बृंहणं कफपित्तकृत् ।
कटु पाके लघु श्रेष्ठं तस्माद्वन्यखरोद्भवम् ॥ १० ॥

अर्थ–गर्दभ, रासभ, भारवाही, दूरगम, खर ये पांच नाम गधेके हैं । गधेका मांस पित्तको करता है, बलमें हित है, धातुको पुष्ट करता है, कफपित्तको करता है, पाकमें चर्परा और हलका है, इससे वन्य गधेका मांस उत्तम है ॥ १० ॥

महिषनामगुणाः ।

महिषः सौरभः शृङ्गी वाहवैरी घनाघनः ।
कासरो गवलो दंशी लुलायः कालवाहनः ॥ ११ ॥

अर्थ–महिष, सौरभ, शृंगी, वाहवैरी, घनाघन, कासर, गवल, दंशी, लुलाय, कालवाहन ये दश नाम भैंसेके हैं ॥ ११ ॥

माहिषं मधुरं मांसं स्निग्धोष्णं वातनाशनम् ।
निद्रारेतोबलस्तन्यतनुदार्ढ्यकरं गुरु ।
तद्वदारण्यजं विद्याद्विशेषाच्छोषिणे हितम् ॥ १२ ॥

अर्थ–भैंसेका मांस मीठा, चिकना और गर्म है, वातको नाशता है, नींद, वीर्य

बल, दूध, दृढता इन्होंको करता है और भारी है । वनके भैंसेमेंभी येही गुण हैं विशेषकर शोषवालेके अर्थ हित है ॥ १२ ॥

भल्लूकनामगुणाः ।

ऋक्षोऽच्छभल्लौ भल्लूकः खड्गी खड्गश्च गण्डकः ।
ऋक्षः स्निग्धो गुरुर्वृष्यः स्वादुष्णः पवनापहः ॥ १३ ॥

अर्थ–ऋक्ष, अच्छ, भल्ल, भल्लूक, खड्गी, खड्ग, गंडक ये सात नाम रीछके हैं । रीछ चिकना तथा भारी और वीर्यको पुष्ट करनेवाला है, स्वादु और गर्म है तथा वातको नाशता है ॥ १३ ॥

गण्डकगुणाः ।

गण्डको बहुविण्मूत्रे पवित्रोऽनिलनाशनः ॥ १४ ॥

अर्थ–गंडक अर्थात् गैंडा मलमूत्रको बहुत उपजाता है, पवित्र है और वातको नाशता है ॥ १४ ॥

सिंहशार्दूलनामानि ।

सिंहः पञ्चाननो दंष्ट्री मृगेन्द्रः केसरी हरिः ।
शार्दूलः स्यात् पञ्चनखो मृगनाथः सकृत्प्रजः ॥ १५ ॥

अर्थ–सिंह, पंचानन, दंष्ट्री, मृगेंद्र, केसरी, हरि ये छः नाम सिंहके हैं । शार्दूल, पंचनख, मृगनाथ, सकृत्प्रज ये चार नाम शार्दूलके हैं ॥ १५ ॥

सिंहशार्दूलयोर्मांसमुष्णं वाताक्षिरोगजित् ॥ १६ ॥

अर्थ–सिंह और शार्दूलका मांस गर्म है, वात और आंखरोगको नाशता है १६

व्याघ्रनामानि ।

व्याघ्रो मृगारिर्मृगहा व्यालो भीमपराक्रमः ॥ १७ ॥

अर्थ–व्याघ्र, मृगारि, मृगहा, व्याल, भीमपराक्रम ये पांच नाम वघेराके हैं १७

चित्रकनामानि ।

चित्रको वेगवांश्चित्री द्वीपी स्याद्दीर्घदंष्ट्रकः ॥ १८ ॥

अर्थ–चित्रक, वेगवान्, चित्री, द्वीपी, दीर्घदंष्ट्रक ये पांच नाम चीतेके हैं ॥ १८ ॥

वृकनामानि ।

वृकदेहो वृकः कोकस्तरक्षुस्तु मृगादनः ॥ १९ ॥

अर्थ–वृकदेह, वृक ये दो नाम भेडियाके हैं । तरक्षु, मृगादन ये दो नाम तिरखूके है ॥ १९ ॥

कुक्कुरनामानि ।

कुक्कुरः शुनकः श्वा स्यात्कौलेयः सुनकः शुनः ।
सारमयः कृतज्ञश्च भक्षणो मृगदंशकः ॥ २० ॥

अर्थ–कुक्कुर, शुनक, श्वा, कौलेय, सुनक, शुन, सारमेय, कृतज्ञ, भक्षण, मृगदंशक ये दश नाम कुत्तेके हैं ॥ २० ॥

व्याघ्रादिगुणाः ।

व्याघ्रचित्रतरक्षूणां वृकाणां पललं गुरु ।
उष्णं वातहरं स्वर्यं हितमक्षिविकारिणम् ॥ २१ ॥

अर्थ–वघेरा, चीता, तिरखू, भेडिया, कुत्ता इन्होंका मांस भारी, गर्म, वातको हरनेवाला, स्वरमें हित और आंखके रोगवालोंको हित है ॥ २१ ॥

सूकरनामगुणाः ।

सूकरो रोमशः पोत्री कोलो घोणिः किरिः किटिः ।
दंष्ट्री क्रोष्टुस्तूर्ध्वरोमा भूदारश्च वराहकः ॥ २२ ॥

अर्थ–सूकर, रोमश, पोत्री, कोल, घोणि, किरि, किटि, दंष्ट्री, क्रोष्टु, ऊर्ध्वरोमा, भूदार, वराहक ये बारह नाम सूकरके हैं ॥ २२ ॥

सौकरं पिशितं स्वादु बल्यं वातापहं गुरु ।
स्निग्धोष्णं शुक्रलं रुच्यं निद्रास्थूलत्वदार्ढ्यकृत् ॥ २३ ॥

अर्थ–सूकरका मांस स्वादु है, बलमें हित है, वातको नाशता है, भारी है, चिकना और गर्म है, वीर्यको करता है, रुचिको उपजाता है और नींद, बुढापा, दृढपना इन्होंको करता है ॥ २३ ॥

छागनामगुणाः ।

छागी गलस्तनी मण्डा सर्वभक्ष्या त्वजा भृजा ।
वर्कर‌श्छागल‌श्छागो बस्तेयः कालकः पशुः ॥ २४ ॥

अर्थ–छागी, गलस्तनी, मण्डा, सर्वभक्ष्या, अजा, भृजा ये छः नाम बकरीके हैं । वर्कर, छागल, छाग, बस्तेय, कालक, पशु ये छः नाम बकराके हैं ॥ २४ ॥

छागमांसं गुरु स्निग्धं लघु पक्वं त्रिदोषजित् ।
अदाहि बृंहणं नातिशीतं पीनसनाशनम् ।
देहधातुसमानत्वादनभिष्यन्दि बृंहणम् ॥ २५ ॥

अर्थ–बकरेका मांस भारी, चिकना और हलका है, पका हुआ त्रिदोषको नाशत

है, दाह नहीं करता है, धातुको पुष्ट करता है, बहुत शीतल नहीं है, पीनसको नाशता है, देह और धातुके समानपनसे अभिष्यंदि नहीं है और धातुको पुष्ट करता है ॥ २५ ॥

मेषमेदःपुच्छनामगुणाः ।

मेषो भेडी हुडो मेढ्र उरभ्र उरणोऽविकः ।
ऊर्णायुरेडको वृश्चिर्मेदःपुच्छस्तु दुम्बुकः ॥ २६ ॥

अर्थ–मेष, मेडी, हुड, मेढ्र, उरभ्र, उरण, अविक, ऊर्णायु, एडक, वृश्चि, मेदः-पुच्छ, दुंबुक ये बारह नाम भेड और मेंढेके हैं ॥ २६ ॥

मेषमांसं गुरु स्निग्धं बल्यं पित्तकफप्रदम् ।
मेदःपुच्छामिषं वृष्यं कफपित्तकरं गुरु ॥ २७ ॥

अर्थ–मेंढेका मांस भारी है, चिकना है, बलको करता है तथा पित्त और कफको देता है । मेदसहित पुच्छवाले मेंढेका मांस वीर्यको पुष्ट करता है, कफपित्तको करता है और भारी है ॥ २७ ॥

एणनामगुणाः ।

हरिणस्ताम्रवर्णः स्यात् कुरङ्गश्चारुलोचनः ।
सारङ्गो जिनयोनिश्च वातायुश्चपलो मृगः ॥ २८ ॥

अर्थ–हरिण, ताम्रवर्ण ये दो नाम हिरणके हैं और कुरंग, चारुलोचन, सारंग, जिनयोनि, वातायु, चपल, मृग ये सात नाम काले हिरणके हैं ॥ २८ ॥

एणः कृष्णोऽपरः कृष्णकुरङ्गः कृष्णसारकः ।
एणमांसं हिमं रुच्यं ग्राहि दोषत्रयापहम् ॥ २९ ॥

अर्थ–काला वर्णवाला एण होता है और कृष्णकुरंग, कृष्णसार ऐसेभी मृग हैं । मृगका मांस शीतल है, रुचिको उपजाता है, मलको बांधता है और त्रिदोषको नाशता है ॥ २९ ॥

षड्रसं बलदं पथ्यं लघु हृद्यं ज्वरास्रजित् ॥ ३० ॥

अर्थ–यह छः रसवाला है, बलको देता है, पथ्य है, हलका है, दिलको ताकत देता है तथा ज्वर और रक्तको जीतता है ॥ ३० ॥

गोकर्णशम्बरनामगुणाः ।

गोकर्णोऽविकटः शृङ्गी विड्वृद्धोऽन्यस्तु शम्बरः ।
गोकर्णशम्बरौ शीतौ गुरुस्निग्धौ कफप्रदौ ।

रसे पाके च मधुरौ रक्तपित्तविनाशनौ ॥ ३१ ॥

अर्थ–गोकर्ण, अविकट, शृंगी, विड्बद्ध, शंबर ये पांच नाम गोकर्ण और शाबरके हैं । गोकर्ण और शंबर शीतल हैं, भारी और चिकने हैं, कफको देते हैं; रसमें और पाकमें मीठे हैं तथा रक्तपित्तको नाशते हैं ॥ ३१ ॥

गवयनामगुणाः ।

रूक्षो मीलाण्डको नीलो गवयश्चारुदर्शनः ।
गवयो मधुरो वृष्यः स्निग्धोष्णः कफपित्तलः ॥ ३२ ॥

अर्थ–रूक्ष, मीलांडक, नील, गवय, चारुदर्शन ये पांच नाम रोझके हैं । रोझ मीठा है, वीर्यको पुष्ट करता है, चिकना है, गर्म है और कफ-पित्तको करता है॥३२॥

कस्तूरीमुण्डनीमृगनामगुणाः ।

कस्तूरी हरिणी गन्धी मुण्डनी मृगमातृका ।
कस्तूरीहरिणः स्वादुर्बद्धविड् दीपनो लघुः ॥ ३३ ॥

अर्थ–कस्तूरी, हरिणी, गंधी, मुण्डनी, मृगमातृका ये पांच नाम कस्तूरी और मुंडनी मृगके हैं । कस्तूरीमृग स्वादु है, मलको बांधता है, अग्निको जगाता है और हलका है ॥ ३३ ॥

मुण्डनी ज्वरकासास्रक्षयश्वासापहा हिमा ॥ ३४ ॥

अर्थ–मुंडनीमृग ज्वर, खांसी, रक्त, क्षय, श्वास इन्होंको नाशता है और शीतल है ॥ ३४ ॥

कृतमालच्छिक्कारनामगुणाः ।

कृतमालो वर्णचरः पृषतो बिन्दुचित्रकः ।
वातप्रमीर्वातमृगश्छिक्कारः कृष्णपुच्छकः ॥ ३५ ॥

अर्थ–कृतमाल, वर्णचर, पृषत, बिन्दुचित्रक ये चार नाम चीतलके हैं । वातप्रमी, वातमृग, छिक्कार, कृष्णपुच्छक ये चार नाम छिक्कारके हैं ॥ ३५ ॥

कृतमालादिजं मांसं मधुरं ग्राहि दीपनम् ।
हृद्यं शीतं लघु श्वासज्वरदोषत्रयास्रजित् ॥ ३६ ॥

अर्थ–चीतल और छिक्कार मृगका मांस मीठा और मलको रोकनेवाला, अग्निको जगानेवाला, दिलको ताकत देनेवाला, शीतल और हलका है । श्वास, ज्वर, त्रिदोष रक्त इन्होंको जीतता है ॥ ३६ ॥

रुरुमृगनामगुणाः ।

रुरुः शरन्मुक्तमृगो न्यङ्कुर्बहुविषाणकः ।
रुरोर्मांसं गुरु स्वादु वृष्यं पित्तानिलापहम् ।
न्यङ्कुः स्वादुर्लघुर्बल्यो वृष्यो दोषत्रयापहः ॥ ३७ ॥

अर्थ–रुरु, शरन्मुक्तमृग, न्यंकु, बहुविषाणक ये चार नाम रुरु मृगके हैं । रुरुका मांस भारी और स्वादु है, वीर्यको पुष्ट करता है, पित्तवातको नाशता है; न्यंकुमृग स्वादु और हलका है, बलको करता है और त्रिदोषको नाशता है ॥ ३७ ॥

शशनामगुणाः ।

शशः शूली रोमकर्णो लम्बकर्णो बिलेशयः ।
शशः शीतो लघुः स्वादुर्ग्राही पथ्योऽग्निदीपनः ।
सन्निपातज्वरश्वासरक्तपित्तकफापहः ॥ ३८ ॥

अर्थ–शश, शूली, रोमकर्ण, लंबकर्ण, बिलेशय ये पांच नाम शशा (खरगोश) के हैं । शश शीतल, हलका, स्वादु, मलको बांधनेवाला, पथ्य और अग्निको जगानेवाला है; सन्निपात, ज्वर, श्वास, रक्तपित्त, कफ इन्होंको नाशता है ॥ ३८ ॥

काश्मीरदेशे सरसोऽष्टपात्स्यात् उत्साहयुक्तश्चतुरूर्ध्वपादः ।
उष्ट्रप्रमाणः स महाविषाणः ख्यातो वनस्थः स मृगो महाख्यः ॥३९

अर्थ–काश्मीर देशमें आठ पैरोंवाला, उत्साहसे युक्त, ऊपरको चार पैरोंवाला, ऊंटके समान, बहुत बडे सींगवाला और वनमें रहनेवाला ऐसा महामृग होता है ॥ ३९ ॥

शल्लकनामगुणाः ।

शल्लकः शल्ली श्वाविड् मेधा स्यात्सूचिनी खरा ।
शल्लकः श्वासकासास्रशोफदोषत्रयापहः ॥ ४० ॥

अर्थ–शल्लक, शल्ली, श्वाविट्, मेधा, सूचिनी, खरा ये छः नाम शेहके हैं । शेह श्वास, खांसी, रक्त, शोजा, त्रिदोष इन्होंको नाशता है ॥ ४० ॥

मेधा तथैव विज्ञेया विशेषाद् बलवर्द्धनी ॥ ४१ ॥

अर्थ–मेधामेंभी येही गुण हैं, विशेषकर बलको बढाती है ॥ ४१ ॥

बिडालनकुलनामगुणाः ।

बिडालकस्तु मार्जारो विषदंशक आखुभुक् ।
नकुलः पिङ्गलो बभ्रुः सर्पारिः सर्वभक्षकः ॥ ४२ ॥

अर्थ–बिडाल, मार्जार, विषदंशक, आखुभुक् ये चार नाम बिलावके हैं । नकुल, पिंगल, बभ्रु, सर्पारि, सर्वभक्षक ये पांच नाम नौलेके हैं ॥ ४२ ॥

मार्जारो मधुरः स्निग्धो वीर्योष्णः फकवातजित् ।
कृशताश्वासकासघ्नो नकुलोऽपि समो गुणैः ॥ ४३ ॥

अर्थ–बिलावका मांस मीठा, चिकना और वीर्यमें गर्म है, कफवातको जीतता है, माडापन, श्वास, खांसी इन्होंको नाशता है । नौलेमेंभी ये सब गुण हैं ॥ ४३ ॥

वानरनामगुणाः ।

वानरो मर्कटः कीशो वनौकाश्च वलीमुखः ।
हरिः शाखामृगः प्लावी प्लवङ्गः प्लवगः कपिः ।
वानरो पवनश्वासमेदःपाण्डुकृमीन् जयेत् ॥ ४४ ॥

अर्थ–वानर, मर्कट, कीश, वनौकस्, वलीमुख, हरि, शाखामृग, प्लावी, प्लवंग, प्लवग, कपि ये ग्यारह नाम वानरके हैं । वानर वात, श्वास, मेद, पांडु, कृमि इन्होंको जीतता है ॥ ४४ ॥

शृगालनामगुणाः ।

शृगालो जम्बुकः फेरुर्गोमायुः फेरवः शिवः ।
शिवेशा वश्चकः क्रोष्टुर्नेपालः स्वल्पजम्बुकः ।
शृगालो बलदो वृष्यः सर्ववातक्षयापहः ॥ ४५ ॥

अर्थ–शृगाल, जंबुक, फेरु, गोमायु, फेरव, शिव, शिवेश, वश्चक, क्रोष्टु, नेपाल, स्वल्पजंबुक ये ग्यारह नाम गीदडके हैं । गीदड बलको देता है, वीर्यको पुष्ट करता है, सब प्रकारके वात और क्षयको नाशता है ॥ ४५ ॥

मूषकनामगुणाः ।

मूषकः खनकः स्तेयी वृष उन्दुरुराखुकः ।
मूषको बद्धविण्मूत्रो बल्यो वृष्योऽनिलापहः ॥४६ ॥

अर्थ–मूषक, खनक, स्तेयी, वृष, उंदुरु, आखुक ये छः नाम मूषेके हैं । मूषा मलमूत्रको बांधता है, बलमें हित है, वीर्यको पुष्ट करता है और वातको नाशता है ४६

पक्षिनामगुणाः ।

पक्षी विहङ्गमः पत्री शकुन्तिर्विहगः खगः ।
अण्डजो विः पत्ररथः पतत्री शकुनिर्द्विजः ॥ ४७ ॥

अर्थ–पक्षी, विहंगम, पत्री, शकुंति, विहग, खग, अंडज, वि, पत्ररथ, पतत्री, शकुनि, द्विज ये बारह नाम पक्षीके हैं ॥ ४७ ॥

तित्तिरिनामगुणाः।

तित्तिरश्चित्रपक्षः स्यात् कृष्णो गौरः कपिञ्जलः।
तित्तिरिर्वर्णदो ग्राही हिक्कादोषत्रयापहः।
श्वासकासहरः पथ्यस्तस्माद् गौरोऽधिको गुणैः ॥ ४८ ॥

अर्थ–चित्र पंखोंवाला और काला दो प्रकारका तीतर होता है। सफेद वर्णवाला कपिंजल होता है। तीतर वर्णको देता है, मलको रोकता है, हिचकी और त्रिदोषको नाशता है, श्वास और खांसीको हरता है तथा पथ्य है। कपिंजलमें अधिक गुण हैं ॥ ४८ ॥

वर्तिरनामगुणाः।

वर्तिरो वर्तिका चित्रस्ततोऽल्पवर्तिका मता।
वर्त्तिरोऽग्निकरः शीतो ज्वरदोषत्रयापहः ॥ ४९ ॥

अर्थ–वर्तिर, वर्तिका, चित्र, अल्पवर्तिका ये चार नाम बतकके हैं। बतक अग्निको करती है, शीतल है, ज्वर और त्रिदोषको नाशती है ॥ ४९ ॥

लावनामगुणाः।

लावश्चित्रश्चित्रतनुः स चतुर्द्धा मतो बुधैः।
पांशुलो गैरिकोऽन्यस्तु पौण्ड्रको दर्भरस्तथा ॥ ५० ॥

अर्थ–लाव, चित्र, चित्रतनु ये तीन नाम लावा (बटेर) के हैं। पंडितोंने पांशुल, गैरिक, पौंड्रक, दर्भर इन भेदोंसे लावा चार प्रकारका माना है ॥ ५० ॥

लावा हृद्या हिमाः स्निग्धा ग्राहिणो वह्निदीपनाः।
पांशुलः श्लेष्मलस्तेषां वीर्योष्णोऽनिलनाशनः ॥ ५१ ॥

अर्थ–लावा दिलको ताकत देता है, शीतल और चिकना है, मलको रोकता है, अग्निको जगाता है। पांशुल कफको करता है, गर्म वीर्यवाला है और वातको नाशता है ॥ ५१ ॥

गैरिकः कफवातघ्नो रूक्षो वह्निप्रदः परम्।
पौण्ड्रकः पित्तकृत् किञ्चिल्लघुः श्लेष्मानिलापहः ॥ ५२ ॥

अर्थ–गैरिक कफवातको नाशता है, रूखा है, अग्निको बहुत देता है; पौंड्रक पित्तको करता है, कछुक हलका है, कफवातको नाशता है ॥ ५२ ॥

दर्भरो रक्तपित्तघ्नो हृदामयहरो हिमः ॥ ५३ ॥

अर्थ–दर्भर रक्तपित्तको नाशता है, हृदयके रोगको हरता है और शीतल है५३॥

चटकनामगुणाः ।

चटकः कलविङ्कः स्यादन्यो ग्राम्यस्तु पुण्ड्रकः ।
चटकः शीतलः स्निग्धः स्वादुः शुक्रकफप्रदः ।
सन्निपातहरो वेश्मचटकः शुक्रलः परम् ॥ ५४ ॥

अर्थ–चटक, कलविंक, ग्राम्य, पुंड्रक ये चार नाम चिडाके हैं । चिडा शीतल है, चिकना है, स्वादु है और वीर्य तथा कफको देता है, सन्निपातको हरता है । घरमें रहनेवाला चिडा बहुत वीर्य देता है ॥ ५४ ॥

वार्तिकगुणाः ।

वार्तिको मधुरः शीतः स रूक्षः कफपित्तनुत् ॥ ५५ ॥

अर्थ–वार्तिक अर्थात् गांजिण पक्षी मीठा, शीतल और रूखा है, कफ और पित्तको दूर करता है ॥ ५५ ॥

पारावतादिनामगुणाः ।

पारवतः कलरवो मञ्जुघोषो मदोत्कटः ।
कपोतो घुघुकृत् पाण्डुरन्यः काणः कपोतकः ॥ ५६ ॥

अर्थ–पारावत, कलरव, मंजुघोष, मदोत्कट ये चार नाम परेवाके हैं । कपोत, घुघुकृत्, पांडु, काण, कपोतक ये पांच नाम कबूतरके हैं ॥ ५६ ॥

पारावतो गुरुः स्निग्धो रक्तपित्तानिलापहः ।
संग्राही शुक्रलः शीतः कपोतोऽपि समो गुणैः ।
किञ्चिल्लघुः परकामः कपोतः सर्वदोषकृत् ॥ ५७ ॥

अर्थ–परेवा भारी और चिकना है, रक्तपित्त और वातको नाशता है, मलको रोकता है, वीर्यको करता है और शीतल है । कबूतरमेंभी येही गुण हैं । काण कबूतर कछुक हलका है, सब दोषोंको करता है ॥ ५७ ॥

मयूरनामगुणाः ।

मयूरश्चन्द्रको केकी मेघरावो भुजङ्गभुक् ।
शिखी शिखावलो बर्ही शिखण्डी नीलकण्ठकः ॥ ५८ ॥

अर्थ–मयूर, चन्द्रक, केकी, मेघराव, भुजंगभुक्, शिखी, शिखावल, बर्ही, शिखंडी, नीलकंठक ॥ ५८ ॥

शुक्लापाङ्गः कलापी च मेघनादस्तु लासकः ।
मयूरो बृंहणः श्रोत्रशिरोरुग्वातशोषजित् ॥ ५९ ॥

अर्थ–शुक्लापांग, कलापी, मेघनाद, लासक ये चौदह नाम मोरके हैं । मोर धातुको पुष्ट करता है, कानरोग, शिरोरोग, वात, शोष इन्होंको जीतता है ॥ ५९ ॥

उष्णो बलायुर्मेधाग्निकेशदृग्वरवर्णदः ।
सेव्यं मयूरजं मांसं हेमन्ते शिशिरे मधौ ।
न शरद्ग्रीष्मयोः पथ्यं वर्षास्वप्यहिभक्षणात् ॥ ६० ॥

अर्थ–गर्म है, बल, उमर, बुद्धि, अग्नि, बाल, दृष्टि, उत्तम वर्ण इन्होंको देता है । मंगशिर, पौष, माघ, फाल्गुन और चैत्र इन महीनोंमें मोरका मांस सेवना योग्य है । आश्विन, कार्तिक, ज्येष्ठ और आषाढ इन्होंमें पथ्य नहीं है । सर्पको खानेवाला होनेसे श्रावण और भादवामेंभी पथ्य नहीं है ॥ ६० ॥

कुक्कुटनामगुणाः ।

कुक्कुटो विकिरः शौण्डी कालज्ञश्चरणायुधः ।
कृकवाकुस्ताम्रचूडः स्यादन्योऽरण्यकुक्कुटः ॥ ६१ ॥

अर्थ–कुक्कुट, विकिर, शौण्डी, कालज्ञ, चरणायुध, कृकवाकु, ताम्रचूड, अरण्य-कुक्कुट ये आठ नाम मुर्गाके हैं ॥ ६१ ॥

कुक्कुटो बृंहणः स्निग्धो वीर्योष्णोऽनिलजिद्गुरुः ।
चक्षुष्यः शुक्रकफकृद्धन्यो रूक्षः कषायकः ।
पानीयकुक्कुटः स्निग्धो बृंहणः श्लेष्मलो गुरुः ॥ ६२ ॥

अर्थ–मुर्गा धातुको पुष्ट करता है, चिकना है, वीर्यमें गर्म है, वातको जीतता है, भारी है, आंखोंमें हित है तथा वीर्य और कफको करता है । वनका रूखा और कषैला है, पानीका मुर्गा चिकना है, धातुको बढाता है, कफको करता है तथा भारी है ॥ ६२ ॥

शुकनामगुणाः ।

शुको रक्तमुखः कीरो वाग्मी सुन्दरदर्शनः ।
सारिका रसिता दूती सुमतिः प्रियवादिनी ॥ ६३ ॥

अर्थ–शुक, रक्तमुख, कीर, वाग्मी, सुन्दरदर्शन ये पांच नाम तोताके हैं । सारिका, रसिता, दूती, सुमति, प्रियवादिनी ये पांच नाम मैनाके हैं ॥ ६३ ॥

शुकः शीतो लघुर्ग्राही क्षतकासक्षयापहः ।
रूक्षस्तद्वन्मता सारी स्निग्धा बुद्धिबलाग्निकृत् ॥ ६४ ॥

अर्थ–तोता शीतल, हलका और मलको रोकनेवाला है, क्षतकी खांसी और क्षयका नाश करनेवाला और रूखा है । मैनामेंभी येही गुण हैं, विशेषकर मैना चिकनी है तथा बुद्धि, बल और अग्निको करती है ॥ ६४ ॥

कोकिलनामगुणाः ।

कोकिलः कलकण्ठः स्यात् परपुष्टो वनप्रियः ।
पिकः परभृताहारी ताम्राक्षो मधुदूतकः ।
कोकिलो दीपनो ग्राही चक्षुष्यः क्षयकासजित् ॥ ६५ ॥

अर्थ–कोकिल, कलकण्ठ, परपुष्ट, वनप्रिय, पिक, परभृताहारी, ताम्राक्ष, मधुदूतक ये आठ नाम कोयलके हैं । कोयल अग्निको जगाती है, मलको रोकती है, आंखोंमें हित है, क्षय और खांसीको जीतती है ॥ ६५ ॥

काकनामानि ।

काको ध्वाङ्क्षो गूढकामी बलिपुष्टः सकृत्प्रजः ।
वायसो बलिभुक्काणः करटश्चतुरो द्विजः ॥ ६६ ॥

अर्थ–काक, ध्वांक्ष, गूढकामी, बलिपुष्ट, सकृत्प्रज, वायस, बलिभुक्, काण, करट, चतुर, द्विज ये ग्यारह नाम कागके हैं ॥ ६६ ॥

भासनामानि ।

भासः सिखावाभ्रसतो गृध्राकारो रजःप्रजः ॥ ६७ ॥

अर्थ–भास, सिखावाभ्रसत, गृध्राकार, रजःप्रज ये चार नाम भासके हैं ॥६७॥

काकभासमांसगुणाः ।

काकभासभवं मांसं चक्षुष्यं दीपनं लघु ।
आयुष्यं बृंहणं बल्यं क्षतदोषक्षयापहम् ॥ ६८ ॥

अर्थ–काक और भास (सफेद चील) का मांस आंखोंमें हित है, अग्निको जगाता है, हलका है, आयुमें हित है, धातुको पुष्ट करता है, बलमें हित है, क्षतदोष और क्षयको नाशता है ॥ ६८ ॥

गृध्रनामगुणाः ।

गृध्रः सुदृष्टः शकुनिर्वक्रदृष्टिश्च दूरदृक् ।
गृध्रस्य काकवन्मांसं विशेषान्नेत्ररोगजित् ॥ ६९ ॥

अर्थ–गृध्र, सुदृष्ट, शकुनि, वक्रदृष्टि, दूरदृक् ये पांच नाम गीधके हैं । गीधके मांसमें काकके मांसके सब गुण हैं, विशेषकर आंखरोगको जीतता है ॥ ६९ ॥

हंसनामगुणाः ।

हंसा श्वेतगरुत्मानसौकारक्तौ पदानहौ ।
राजहंसः स्मृतः कृष्णैर्धार्त्तराष्ट्रोऽथ मालिकः ॥ ७० ॥

अर्थ–हंस, श्वेतगरुत, मानसौक, आरक्त, पद, आनह ये छः नाम हंसके हैं । काले पंखोंवाला राजहंस होता है । उसके धार्तराष्ट्र और मालिक ये दो नाम हैं ७०

मलिनैः कलहंसस्तु पीतैः कादम्ब उच्यते ।
कारण्डवः प्लवो मद्गुर्वरटा हंसयोषितः ॥ ७१ ॥

अर्थ–मलवाले पंखोंकरके कलहंस होता है, पीले पंखोंकरके कादम्ब हंस होता है । कारंडव, प्लव, मद्गु, वरटा ये चार नाम हंसनियोंके हैं ॥ ७१ ॥

हंसः स्निग्धो गुरुर्वृष्यो वीर्योष्णः स्वरवर्णकृत् ।
वातास्रपित्तशमनो बृंहणो बलवह्निदः ॥ ७२ ॥

अर्थ–हंस चिकना है, भारी है, वीर्यको पुष्ट करता है, गर्म वीर्यवाला है, स्वर और वर्णको करता है, वात और रक्तपित्तको नाशता है, धातुको पुष्ट करता है तथा बल और अग्निको देता है ॥ ७२ ॥

चक्रवाकनामानि ।

सारसो लक्ष्मणो रक्तमूर्द्धा स्यात् पुष्कराह्वयः ।
चक्रवाकः पत्ररथश्चक्रश्चक्री सुकार्मुकः ॥ ७३ ॥
रथाङ्गनामा कोकोऽथ कङ्कः स्याल्लोहपृष्ठकः ॥ ७४ ॥

अर्थ–सारस, लक्ष्मण, रक्तमूर्द्धा, पुष्कराह्वय ये चार नाम सारसके हैं । चक्रवाक, पत्ररथ, चक्र, चक्री, सुकार्मुक, रथांगनामा, कोक, कंक, लोहपृष्ठक ये नौ नाम चक्रवाकके हैं ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

बकनामानि ।

बको बकोटो धवलो बलाका बिसकण्ठिका ॥ ७५ ॥

अर्थ–बक, बकोट, धवल, बलाका, बिसकण्ठिका ये पांच नाम बगुलाके हैं ७५

आडिनामानि ।

आडिः शिरारिरातिश्च विचित्रजलचारिणी ॥ ७६ ॥

अर्थ–आडि, शिरारि, आति, विचित्रजलचारिणी ये चार नाम आडिके हैं ७६

चक्रादिमांसगुणाः ।

चक्रकङ्कवकोटादिमांसं स्निग्धं हिमं गुरु ।
मधुरं सृष्टविण्मूत्रं वातपित्तास्रनाशनम् ॥ ७७ ॥

अर्थ–सारस, चकवा आदि सबोंका मांस चिकना, शीतल, भारी और मीठा है, मल मूत्रको उपजाता है तथा वात और पित्तरक्तको नाशता है ॥ ७७ ॥

कृङ्कणनामगुणाः ।

कारेडुकः ककरेडुः करकः कृङ्कणस्तथा ।
कृङ्कणो बृंहणो बल्यो वातपित्तहरो लघुः ॥ ७८ ॥

अर्थ–कारेडुक, ककरेडु, करक, कृंकण ये चार नाम करेटूके हैं । करेटू धातुको पुष्ट करता है, बलमें हित है, वातपित्तको हरनेवाला और हलका है ॥ ७८ ॥

खञ्जरीटनामानि ।

खञ्जरीटः खञ्जनकश्चाषनामा किकीदिविः ॥ ७९ ॥

अर्थ–खंजरीट, खंजनक, चाषनामा, किकीदिवि ये चार नाम खंजनके हैं ॥७९॥

चातकनामानि ।

चातकस्तु घनरवः सारङ्गस्तोकको भ्रमः ॥ ८० ॥

अर्थ–चातक, घनरव, सारंग, तोकक, भ्रम ये पांच नाम पपैयाके हैं ॥ ८० ॥

भरद्वाजादिनामगुणाः ।

भरद्वाजः ककराटो व्याघ्राटोऽहिकुटिः परः ।
खञ्जरीटो भरद्वाजश्चाषः श्लेष्मानिलापहः ॥ ८१ ॥

अर्थ–भरद्वाज, ककराट, व्याघ्राट, अहिकुटि, पर ये पांच नाम भरद्वाजके हैं । खंजन और चाषका मांस कफवातको नाशता है ॥ ८१ ॥

वातलोऽनिलपित्तघ्नो भरद्वाजः कफास्रजित् ॥ ८२ ॥

अर्थ–भरद्वाज वातको करता है, वातपित्तको नाशता है और कफरक्तको जीतता है ॥ ८२ ॥

श्येननामगुणाः ।

श्येनः समादनः पत्री चीरिश्चिल्ली चिरिल्लिका ।
श्येनचीरीभवं मांसं प्रायो दोषकरं गुरु ॥ ८३ ॥

अर्थ–श्येन, समादन, पत्री ये तीन नाम शिकराके हैं । चीरि, चिल्ली, चिरिल्लिका ये तीन नाम चीलके हैं । शिकरा और चीलका मांस विशेषकर दोष करनेवाला और भारी है ॥ ८३ ॥

उलूकनामगुणाः।

उलूकः कौशिकः काकवैरी घूको निशाचरः।
उलूकपललं भ्रान्तिकरं वातप्रकोपदम् ॥ ८४ ॥

अर्थ–उलूक, कौशिक, काकवैरी, घूक, निशाचर ये पांच नाम उल्लूके हैं। उल्लूका मांस भ्रमकारक और वातको कुपित करनेवाला है ॥ ८४ ॥

चकोरनामगुणाः।

चकोरश्चन्द्रिकापायी जीवंजीवः सुलोचनः।
चकोरो बृंहणो बल्यः स्निग्धोष्णो वातनाशनः ॥ ८५ ॥

अर्थ–चकोर, चंद्रिकापायी, जीवंजीव, सुलोचन ये चार नाम चकोरके हैं। चकोर धातुको पुष्ट करता है, बलमें हित है, चिकना और गर्म है तथा वातको नाशता है ॥ ८५ ॥

क्रौंचादिनामगुणाः।

क्रौञ्चकः पेचकोऽन्यस्तु पुच्छाधोभागलोहितः।
वक्रोशः कुररोऽथान्यः कोयष्टिष्टिट्टिभस्तथा ॥ ८६ ॥

अर्थ–क्रौंचक (ढेक), पेचक, पुच्छाधोभागलोहित, वक्रोश, कुरुर, कोयष्टि, टिट्टिभ ये नाम कुंज आदिके हैं ॥ ८६ ॥

क्रौञ्चः पित्तानिलहरः पेचकः कफवातजित्।
कुररः क्रौञ्चवत् ज्ञेयः टिट्टिभोऽल्पमरुत्करः ॥ ८७ ॥

अर्थ–कुंज पित्तवातको हरता है, पेचक कफवातको जीतता है, कुररमें कुंजके समान गुण हैं और टिट्टिभ अल्प वातको करता है ॥ ८७ ॥

रोहितादिमत्स्यनामगुणाः।

मत्स्यो झषस्तिमिर्मीनः कण्ठी वैसारिणो द्रवः।
पृथुरोमाभिसारः स्याद्विसारः शकुली तथा ॥ ८८ ॥

अर्थ–मत्स्य, झष, तिमि, मीन, कंठी, वैसारिण, द्रव, पृथुरोमा, अभिसार, विसार, शकुली ॥ ८८ ॥

रक्तोदरो रक्तमुखो रोहितो मत्स्यपुङ्गवः।
सहस्रदंष्ट्रः पाठीनः कृष्णवर्णो महाशिराः ॥ ८९ ॥

अर्थ–रक्तोदर, रक्तमुख, रोहित, मत्स्यपुंगव, सहस्रदंष्ट्र, पाठीन, कृष्णवर्ण, महाशिरा ये उन्नीस नाम मछलीके हैं ॥ ८९ ॥

शफरः क्षुद्रमत्स्यः स्यात् प्रोष्ठी तु शफरी स्मृता ।
नलमीनश्चिलिचिमस्तिमिः ख्यातः समुद्रजः ॥ ९० ॥

अर्थ–शफर, क्षुद्रमत्स्य, प्रोष्ठी, शफरी ये चार नाम सफरीके हैं । नलमीन चिलिचिम, तिमि, समुद्रज ये चार सब मछलीके भेद हैं ॥ ९० ॥

मत्स्या बलप्रदा वृष्या गुरवः कफपित्तलाः ।
उष्णाभिष्यन्दिनः स्निग्धा बृंहणाः पवनापहाः ॥ ९१ ॥

अर्थ–मछली बलको देती है, वीर्यको पुष्ट करती है, भारी है, कफपित्तको करती है, गर्म और अभिष्यंदी है, चिकनी और धातुको पुष्ट करनेवाली है तथा वातको नाशती है ॥ ९१ ॥

नादेया बृंहणा मत्स्या गुरवोऽनिलनाशनाः ।
कौप्या वृष्याः कफाष्ठीलामूत्रकुष्ठविबन्धदाः ॥ ९२ ॥

अर्थ–नदीकी मछली धातुको पुष्ट करती है, भारी है और वातको नाशती है । कुएकी मछली वीर्यको पुष्ट करती है और कफ, अष्ठीला, मूत्र, कुष्ठ, विबंध इन्हों-को देती है ॥ ९२ ॥

तडागा गुरवो वृष्याः शीतला बलमूत्रदाः ।
तडागवन्निर्झरजा बलायुर्मतिदृक्कराः ॥ ९३ ॥

अर्थ–तलावकी मछली भारी है, वीर्यको पुष्ट करती है, शीतल है तथा बल और मूत्रको देती है । झिरनाकी मछली तलावकी मछलीके समान गुणोंवाली है और बल, आयु, दृष्टि इन्होंको करती है ॥ ९३ ॥

सरोजा मधुराः स्निग्धा बल्या वातनिबर्हणाः ।
सामुद्रा गुरवो नातिपित्तलाः पवनापहाः ॥ ९४ ॥

अर्थ–सरोवरकी मछली मीठी, चिकनी और बलमें हित है, वातको दूर करती है । समुद्रकी मछली भारी है, बहुत पित्तको नहीं करती है, वातको नाशती है ९४

तत्रापि लवणाम्भोजा ग्राहिणो दृष्टिनाशनाः ।
ह्रदोद्भवा बलकरा न तु स्वच्छजलोद्भवाः ॥ ९५ ॥

अर्थ–इन्होंमेंभी खारे पानीमें उपजी मछली रोकती और दृष्टिको नाशती है । कुंडकी मछली बलको करती है । साफ पानीमें उपजी मछली बलको नहीं करती है ॥ ९५ ॥

हेमन्ते कूपजा मत्स्याः शिशिरे सारसा हिताः ।
मधुग्रीष्माम्बुकालेषु नदीचुङ्गीतडागजाः ॥ ९६ ॥

अर्थ–मंगशिर, पौषमें कुएकी मछली हित है, माघ और फागनमें सरोवरकी मछली हित है, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, भाद्रपद इन महीनोंमें नदी, झिरना, तलाव इन्होंकी मछली हित है ॥ ९६ ॥

शरत्सु नैर्झराः सर्वे वर्षोत्थाः सर्वदोषदाः ।
रोहितः प्रवरस्तेषु नातिपित्तकरो लघुः ।
कषायानुरसो बल्यः पाठीनः श्लेष्मलो गुरुः ॥ ९७ ॥

अर्थ–आश्विन और कार्तिकमें झिरनाकी सब मछलियां हित हैं और वर्षाके पानीकी मछली सब दोषोंको देती है । सब मछलियोंमें रोहित मछली उत्तम है क्योंकि बहुत पित्तको नहीं करती है, हलकी है, कषैलेके अनुसार रसवाली और बलमें हित है, पाठीन मछली कफको करती है और भारी है ॥ ९७ ॥

क्षुद्रमत्स्यमत्स्याण्डगुणाः ।

क्षुद्रमत्स्याः स्वादुरसा दोषत्रयनिबर्हणाः ।
सूक्ष्माः परं पुंस्त्वकरा रुच्याः कासानिलापहाः ॥ ९८ ॥

अर्थ–क्षुद्रमत्स्य अर्थात् छोटी मछलियां स्वादु रसवाली और त्रिदोषको दूर करती हैं । बहुत छोटी मछलियां पुरुषपनको करती हैं, रुचिको उपजाती हैं तथा खांसी और वातको नाशती हैं ॥ ९८ ॥

त्रिदोषकृच्चिमिचिममत्स्यो बल्यः परं मतः ।
मत्स्यगर्भः परं वृष्यः स्निग्धः स्थैर्यकरो गुरुः ।
कफमेदःप्रदो बल्यो ग्लानिकृन्मेहनाशनः ॥ ९९ ॥

अर्थ–चिमचिम मछली त्रिदोषको करती है, बहुत बलको करती है । मछलीका गर्भ वीर्यको बहुत पुष्ट करता है, चिकना है, स्थिरताको करता है, भारी है, कफ और मेदको देता है, बलमें हित है, ग्लानिको करता है और प्रमेहको नाशता है ॥ ९९ ॥

शिशुमारनामगुणाः ।

शिशुमारो हृतेस्तुल्यो मकरस्तिमिदंष्ट्रकः ।
शिशुमारो गुरुर्वृष्यः कफकृद्वातनाशनः ।
बृंहणो बलदः स्निग्धस्तद्वन्मकरमादिशेत् ॥ १०० ॥

अर्थ–शिशुमार, दतितुल्य, मकर, तिमिदंष्ट्रक ये चार नाम शिशुमार मछलीके हैं । शिशुमार मछली भारी है, वीर्यको पुष्ट करती है, कफको करती है, वातको नाशती है, धातुको पुष्ट करती है तथा बलको देनेवाली और चिकनी है । मकरमेंभी येही गुण हैं ॥ १०० ॥

कच्छपनामगुणाः ।

कच्छपो गूढपात् कूर्मः कमठो दृढपृष्ठकः ।
कच्छपो बलदः स्निग्धो वातजित् पुंस्त्वकारकः ॥ १ ॥

अर्थ–कच्छप, गूढपात, कूर्म, कमठ, दृढपुच्छक ये पांच नाम कछुआके हैं । कछुआ बलको देता है, चिकना है, वातको जीतता है और पुरुषपनको करता है ॥१॥

मण्डूकनामगुणाः ।

मण्डूकः प्लवगो भेको वर्षाभूर्दर्दुरो हरिः ।
मण्डूकः श्लेष्मलो नातिपित्तलो बलकारकः ॥ २ ॥

अर्थ–मण्डूक, प्लवग, भेक, वर्षाभू, दर्दुर, हरि ये छः नाम मींडकके हैं । मींडक कफको करता है, बहुत पित्तको नहीं करता है और बलको करता है ॥ २ ॥

कर्कटनामगुणाः ।

कर्कटः कुरुचिल्लः स्यात् कुलीरः षोडशाम्बिकः ।
कर्कटो बृंहणो वृष्यः शीतलोऽसृग्दरापहः ॥ ३ ॥

अर्थ–कर्कट, कुरुचिल्ल, कुलीर, षोडशाम्बिक ये चार नाम ककेराके हैं । ककेरा धातु और वीर्यको पुष्ट करता है, शीतल है और पैरा रोगको नाशता है ॥ ३ ॥

सर्पनामानि ।

सर्पो भुजङ्गो भुजगः फणी भोगी भुजङ्गमः ।
कुण्डली कञ्चुकी चक्री पन्नगः पवनाशनः ॥ ४ ॥

अर्थ–सर्प, भुजंग, भुजग, फणी, भोगी, भुजंगम, कुंडली, कंचुकी, चक्री, पन्नग, पवनाशन ॥ ४ ॥

गूढपादुरगो नागो जिह्मगश्च सरीसृपः ।
चक्षुःश्रवा दीर्घपृष्ठो व्याल आशीविषस्त्वहिः ॥ ५ ॥

अर्थ–गूढपात, उरग, नाग, जिह्मग, सरीसृप, चक्षुःश्रवा, दीर्घपृष्ठ, व्याल, आशीविष, अहि ॥ ५ ॥

दर्वीकरो विषधरो दन्दशूको बिलेशयः ।

कुम्भीनसः पृदाकुः स्याद्दंष्ट्री काकोदरो विषी ॥ ६ ॥

अर्थ–दर्वीकर, विषधर, दन्दशूक, बिलेशय, कुम्भीनस, पृदाकु, दंष्ट्री, काकोदर, विषी ये तीस नाम सांपके हैं ॥ ६ ॥

डिण्डिभनामानि।

डिण्डिभो राजिलः प्रोक्तोऽजगरो वाहसः शयुः।
जलसर्पो गलार्दः स्यात् तिलित्स्यो गोनसः स्मृतः ॥ ७ ॥

अर्थ–डिण्डिभ, राजिल, अजगर, वाहस, शयु, जलसर्प, गलार्द, तिलित्स्य, गोनस ये नव नाम डिंडिभ आदि सांपके हैं ॥ ७ ॥

सर्पमांसगुणाः।

सर्पाणां स्नेहनं मांसं चक्षुष्यं बृंहणं गुरु।
दूषीविषकृमिहरं मेधाग्निबलवर्द्धनम् ॥ ८ ॥

अर्थ–सांपोंका मांस चिकना, आंखोंमें हित, धातुपुष्टिकर, भारी और दूषीविषको हरनेवाला है, बुद्धि, अग्नि, बल इन्होंको बढाता है ॥ ८ ॥

गोधानामगुणाः।

गोधा घोरफटा पञ्चनखरा जनिपस्तथा।
कृष्णसर्पेण गोधेयो गोधेरः सुमहागुणः।
गोधाग्निजननी बल्या वृष्या पित्तानिलापहा ॥ ९ ॥

अर्थ–गोधा, घोरफटा, पञ्चनखरा, जनिप ये चार नाम गोहके हैं। काले सांपके सकाशसे गोहमें उपजा गोहरा होता है, उसके गोधेय, गोधेर ये दो नाम हैं। गोहका मांस बहुत गुणवाला है, अग्निको जगाता है, बलको करता है, वीर्यको पुष्ट करता है तथा पित्त और वातको नाशता है ॥ ९ ॥

सद्योहतमांसगुणाः।

सद्योहतं भजेन्मांसं व्याधिवारिविषे मृतम्।
वयस्थमकृशं बल्यमन्यथा परिवर्जयेत् ॥ ११० ॥

अर्थ–सद्योहत मांस अर्थात् तत्काल मारा हुआ, मोटा और अच्छी अवस्थावाला ऐसे जीवके मांसको सेवे तो बलमें हित है और रोग, पानी, विष इन्होंमें मरे जीवका मांस वर्जित है ॥ ११० ॥

च्युतगर्भागर्भगुणाः।

वृद्धानां दोषलं मांसं बालानां बलदं गुरु।

च्युतगर्भा गुरुर्योषिद्गर्भा गर्भवती तथा ॥ ११ ॥

अर्थ–बूढे जीवोंका मांस दोषको करता है, बालकोंका मांस बलको देता है, भारी है, झिरे हुए गर्भवाली और गर्भवाली स्त्री भारी है ॥ ११ ॥

स्वयंमृतमांसगुणाः ।

स्वयंमृतमबल्यं स्यादतिसारकरं गुरु ॥ १२ ॥

अर्थ–स्वयंमृत अर्थात् आपसे मरे हुए जीवका मांस बलसे रहित है, अतिसारको करता है और भारी है ॥ १२ ॥

अखाद्यमांसगुणाः ।

विषाम्बुरुङ्मृतं मृत्युदोषत्रयरुगावहम् ॥ १३ ॥

अर्थ–विष, पानी, रोग इन्होंसे मरे जीवका मांस मृत्यु, त्रिदोष, रोग इन्होंको करता है ॥ १३ ॥

विहगेषु पुमान् श्रेष्ठः स्त्रीचतुष्पादजातिषु ।
पश्चार्द्धं लघु पुंसां स्यात् स्त्रीणां पूर्वार्द्धमादिशेत् ॥ १४ ॥

अर्थ–पक्षियोंमें पुरुष पक्षी और चौपायोंमें स्त्रीजाति पशु श्रेष्ठ है । पुरुषोंका पिछला आधा भाग हलका होता है, स्त्रियोंका पूर्वार्द्ध हलका होता है ॥ १४ ॥

तुल्यजातौ स्थूलदेहो महादेहेषु पूजितः ।
अल्पदेहेषु शस्यन्ते तथैव स्थूलदेहिनः ॥ १५ ॥

अर्थ–बडे शरीरवालोंमें समान जातिविषै स्थूल शरीरवाला पूजित है । छोटे शरीरवालोंमें मोटे शरीरवाले उत्तम हैं ॥ १५ ॥

चेष्टावतां परं मांसमलसेभ्यो लघु स्मृतम् ।
देहमध्यं गुरु प्रायः सर्वेषां प्राणिनां मतम् ॥ १६ ॥

अर्थ–अलसवालोंसे चेष्टावालोंका मांस बहुत हलका है । विशेषकर सब प्राणियोंके मध्यभाग भारी है ॥ १६ ॥

पक्ष्मोत्क्षेपाद्विहङ्गानां तदेव समुच्यते ।
गुरूण्यङ्गानि सर्वेषां गलग्रीवं च पक्षिणाम् ॥ १७ ॥

अर्थ–पक्षियोंके पंखके उत्क्षेपसे शरीरका मध्यभाग समान होता है । पक्षियोंके सब अंग और गला नाड भारी हैं ॥ १७ ॥

ये मृगा विहगास्तोयदूरावासप्रचारकाः ।
ते नाभिष्यन्दिनः सर्वे विपरीता अतोऽन्यथा ॥ १८ ॥

अर्थ–जो मृग और पक्षी पानीसे दूर रहते हैं वे सब अभिष्यंदी नहीं हैं, इनसे विपरीत अभिष्यंदी हैं ॥ १८ ॥

जलानूपभवाः सर्वे जलानूपचराश्च ये ।
गुरुभक्ष्या गुरुतरं तेषां मांसमुदाहृतम् ॥ १९ ॥

अर्थ–पानी और अनूप देशमें उपजे हुए तथा पानी और अनूप देशमें विचरनेवाले जो जीव हैं इन्होंका मांस बहुत भारी है ॥ १९ ॥

धन्वोत्पत्तिप्रचाराणां लघु स्याल्लघुभोजिनाम् ।
उरुस्कन्धोदरं मूर्द्धा पाणिपादौ कटी तथा ।
पृष्ठत्वग्यकृदन्त्राणि गुरूणि हि यथोत्तरम् ॥ १२० ॥

अर्थ–बागड देशमें उपजे और विचरनेवाले और हलका भोजन करनेवाले जीवका मांस हलका है, जांघ, कंधा, पेट, माथा, हाथ, पैर, कटी, पीठ, खाल, यकृत्, आंत ये सब उत्तरोत्तर क्रमसे अर्थात् जांघसे कंधा और कंधासे पेट इस प्रकार भारी हैं ॥ १२० ॥

इति मांसवर्गो द्वादशः ।

गोपालबालैः सह मल्लविद्याविनोददक्षं धृतकाकपक्षम् ।
उपास्महे वाङ्मनसातिदूरं महः परं नीलमचिन्तनीयम् ॥ १ ॥

अर्थ–गोपालोंके बालकोंके साथ मल्लविद्याके आनंदमें चतुर, काकपक्ष अर्थात् पट्टोंको धारण करनेवाले, वाणी और मनसे बहुत दूर और चिन्तवनमें नहीं आनेवाले ऐसे परम नील तेजकी उपासना करता हूं ॥ १ ॥

वातेऽनुपानं स्निग्धोष्णं रूक्षोष्णं श्लेष्मणि स्मृतम् ।
पित्ते स्निग्धं हितं स्नेहपाने तोयमशीतलम् ॥ २ ॥

अर्थ–वातमें चिकना और गर्म अनुपान हित है, कफमें रूखा और गर्म अनुपान हित है और पित्तमें चिकना अनुपान हित है । स्नेहके पीनेमें शीतल न हो ऐसा पानीका अनुपान हित है ॥ २ ॥

भल्लातकः स्नेहमूर्च्छाव्याप्तानां शीतलं जलम् ।
शालिमुद्गादिभक्ष्याणां यूषो मांसरसस्तथा ॥ ३ ॥

अर्थ–भिलावेके स्नेहसे प्राप्त हुई मूर्च्छावालोंको शीतल पानी तथा शालिचांवल और मूंग आदि भक्ष्योंका यूष और मांसका रस हित है ॥ ३ ॥

माषादिभोजिनां मस्तु धान्याम्लं दधि वा स्मृतम् ।
मद्यं शोषिविषार्त्तानामल्पाग्नीनां च शस्यते ॥ ४ ॥

अर्थ–उडद आदि भोजन करनेवालोंको दहीका पानी, कांजी अथवा दहीका अनुपान हित कहा है । शोषवाले, विषसे पीडित और मंदाग्निवालेको मदिरा हित है ॥ ४ ॥

क्लान्तानामुपवासाध्वभारस्त्रीसुरतादिभिः ।
पयः सुधासमं प्रोक्तं क्षीणानां रक्तपित्तिनाम् ॥ ५ ॥

अर्थ–व्रत, मार्ग, बोझ, स्त्रीसंग इत्यादिसे पीडित हुओंको, क्षीणोंको और रक्तपित्तवालोंको दूध अमृतके समान कहा है ॥ ५ ॥

असात्म्यं दोषलं शीतमतिमात्रमथो गुरु ।
उक्तानुपानतो भुक्तं सुखमन्नं प्रजीर्यते ॥ ६ ॥

अर्थ–प्रकृतिके अयोग्य, दोषको करनेवाले, शीतल, बहुत ज्यादह और भारी ऐसे अन्न भोजन किये जावें तो उक्त अनुपानसे सुखपूर्वक जरते हैं ॥ ६ ॥

तदादौ कर्षयेत् पीतं स्थापयेन्मध्यसेवितम् ।
पश्चात् पीतं बृंहयति तत्समीक्ष्य प्रयोजयेत् ॥ ७ ॥

अर्थ–आदिमें पान किया मनुष्यको माडा करता है, मध्यमें सेवित किया मनुष्यको स्थापित करता है और पीछे पान किया मनुष्यको पुष्ट करता है । इस प्रकार देखकर अनुपान प्रयुक्त करना ॥ ७ ॥

न पिबेच्छ्वासकासार्शोजन्तुरोगक्षतातुरः ।
पीत्वाभिभाष्याध्ययननिद्रां न त्वरया भजेत् ॥ ८ ॥

अर्थ–श्वास, खांसी, बवासीर, कृमिरोग, क्षत इन्होंसे पीडित हुआ रोगी पीवे नहीं । पीकरके बहुत बोलना, पठन, नींद इन्होंको वेगसे नहीं सेवे ॥ ८ ॥

तत्कफानिलपित्तेषु चैकद्वित्रिपलोन्मितम् ।
वारि शस्यमुषःकाले दृष्टिकारि रसायनम् ॥ ९ ॥

अर्थ–कफ, वात, पित्त इन्होंमें क्रमसे एक दो तीन पल अर्थात् चार तोले पानीको प्रभातमें पीवे । वह दृष्टिको करता है और बुढापेको दूर करता है ॥ ९ ॥

वलीपलितवैस्वर्यपीनसश्वासशोषजित् ।
पानीयप्रसृतीरष्टौ यः पिबेदरुणोदये ॥ १० ॥

अर्थ–जो मनुष्य ६४ तोले भर पानीको प्रभातमें पीवे वह शरीरमें वली पडना, बालोंका सफेद होना, स्वरका बिगडना, पीनस, श्वास, शोष इन्होंको जीतता है १०

धान्येषु मांसे सकलेषु चैवं शाकेषु चानुक्तमिह प्रमादात् ।
आस्वादितो भूतगुणैर्गृहीत्वा तदादिशेद् द्रव्यमनल्पबुद्धिः ११

अर्थ–अन्नोंमें मांसोंमें और संपूर्ण शाकोंमें जो प्रमादसे नहीं कहे हैं उन्होंकोभी स्वादुसे और पृथ्वी आदि पांच महाभूतोंके गुणोंको ग्रहण कर बुद्धिमान् कहे ॥ ११ ॥

षष्टिका यवगोधूमा लोहिता याश्च शालयः ।
मुद्गाढकीमसूराश्च धान्येषु प्रवराः स्मृताः ॥ १२ ॥

अर्थ–साठी चांवल, जव, गेहूं, लाल शालि चांवल, मूंग, अहर और मसूर ये अन्नोंमें उत्तम कहे गये हैं ॥ १२ ॥

स जराव्याधिनिर्मुक्तो जीवेद्वर्षशतं सुखी ।
भुक्त्वोपविशतस्तुन्दी बलमुत्तानशायिनः ॥ १३ ॥

अर्थ–इन अन्नोंको सेवनेवाला मनुष्य बुढापा और रोगसे अलग होके सुखी हुआ सौ (१००) वर्ष पर्यंत जीता है, भोजनकरके बैठनेवालेका पेट मोटा हो जाता है, भोजन करके सीधा शयन करनेवालेको बल उपजाता है ॥ १३ ॥

आयुर्वामकटिस्थस्य मृत्युर्धावति धावतः ।
रात्रौ जागरणं रूक्षं स्निग्धं प्रस्वपनं दिवा ॥ १४ ॥

अर्थ–भोजन करके वामी कटिके अनुसार स्थित होनेवालेकी आयु बढती है । भोजन करके भागनेवालेकी मृत्यु होती है । जिन्होंको रात्रिमें जागना रूखा है, दिनमें सोना चिकना है ॥ १४ ॥

न तेषां स्वपतां दोषो जाग्रतां चोपजायते ।
भोजनानन्तरं निद्रा वातघ्नी कफपुष्टिकृत् ॥ १५ ॥

अर्थ–उन्होंको सोनेमें और जागनेमें दोष नहीं है । भोजनके पीछे नींद वातको नाशती है, कफ और पुष्टिको करती है ॥ १५ ॥

कफमेदोविषार्त्तानां रात्रौ जागरणं हितम् ।
दिवास्वप्नश्च तृट्शूलहिक्काजीर्णातिसारिणः ॥ १६ ॥

अर्थ–कफ, मेद और विष इन्होंसे पीडित हुओंको रात्रिमें जागना हित है । तृषा, शूल, हिचकी, अजीर्ण, अतिसार इन रोगवालोंको दिनका सोना हित है ॥ १६ ॥

दन्तधावनमुद्दिष्टमास्यवैशद्यकारकम् ।
प्रसेकारुचिदौर्गन्ध्यमलपित्तकफापहम् ॥ १७ ॥

अर्थ–दंतधावन अर्थात् दंतुअन करना मुखमें सुंदरता करता है और प्रसेक, अरुचि, दुर्गंधि, मल, पित्त, कफ इन्होंको नाशता है ॥ १७ ॥

मदातुरः कृशः श्रान्तो दन्ततालवोष्ठरोगवान् ।
हिक्काच्छर्दिशिरःपीडामूर्छाशोषी न तच्चरेत् ॥ १८ ॥

अर्थ–मदरोगी, दुबला, श्रान्त हुआ, दंतरोगी, तालुरोगी, ओष्ठरोगी, हिचकीरोगी, छर्दिरोगी, शिरमें पीडावाला, मूर्छारोगी और शोषरोगी दंतुअन नहीं करे ॥ १८ ॥

मुखप्रक्षालनं शीतपयसा रक्तपित्तजित् ।
मुखस्य पिडिकाशोषनीलिकाव्यङ्गनाशनम् ।
पादप्रक्षालनं दृष्टिकरं वृष्यं श्रमापहम् ॥ १९ ॥

अर्थ–शीतल पानीसे मुखका धोना रक्तपित्तको जीतता है, मुखकी फुनसियां, शोष, नीलिका और व्यंगको नाशता है । पैरोंका धोना दृष्टिको करता है, धातुको पुष्ट करता है और परिश्रमको नाशता है ॥ १९ ॥

पादाभ्यङ्गः सदा वृष्यो बलोत्साहविवर्द्धनः ।
निद्रासुखकरः सुप्तिश्रमनेत्ररुगापहः ॥ २० ॥

अर्थ–पैरोंपे मालिश करना सब कालमें पुष्टिकर्ता है, बल और उत्साहको बढाता है, नींद और सुखको करता है तथा सुप्ति, परिश्रम, आंखरोग इन्होंको नाशता है ॥ २० ॥

स्नेहगण्डूषकरणं मुखशोषद्विजामयान् ।
स्वरघातौष्ठपारुष्यरक्तवातान् विनाशयेत् ॥ २१ ॥

अर्थ–स्नेहसे कुल्ला करना मुखशोष, दंतरोग, स्वरघात, ओष्ठका करडापन और रक्तवात इन्होंको नाशता है ॥ २१ ॥

सुखोष्णदकगण्डूषः कफारुचिमलापहः ॥ २२ ॥

अर्थ–योग्य गर्म किया पानीका कुल्ला कफ, अरुचि और मल इन्होंको नाशता है ॥ २२ ॥

विषमूर्च्छामदार्त्तानां शोषिणां रक्तपित्तिनाम् ।
कुपितानामलक्ष्मीणां रूक्षाणां न प्रशस्यते ॥ २३ ॥

अर्थ–विष, मूर्च्छा और मदसे पीडित हुओंको, शोषवालोंको, रक्तपित्तवालोंको, कोपवालोंको, दरिद्रोंको और रूखोंको कुल्ला अच्छा नहीं है ॥ २३ ॥

अञ्जनं नेत्रनैर्मल्यं दृष्टिकारि रुगापहम् ।
रात्रौ जागरितः श्रान्तश्छर्दितो भुक्तवांस्तथा ।
ज्वरातुरः शिरःस्नातः कदाचिन्न तदाचरेत् ॥ २४ ॥

अर्थ–अंजन आंखोंको साफ करता है, दृष्टिको करता है, रोगको नाशता है । रात्रिमें जागा हुआ, परिश्रमवाला, छर्दिवाला, भोजन किये हुए, ज्वरसे पीडित और शिरको धोये हुए कभीभी अंजनको नहीं आंजे ॥ २४ ॥

व्यायामः कर्मसामर्थ्यस्थैर्यदोषक्षयाग्निकृत् ।
स सदा गुणमाधत्ते बलिनां स्निग्धभोजिनाम् ॥ २५ ॥

अर्थ–कसरत करना, कर्ममें ताकत, स्थिरपना, दोषका नाश और अग्निको करता है, बलवालोंको और चिकने भोजनवालोंको सब कालमें गुण देता है ॥ २५ ॥

व्यायामदृढचित्तानां व्याधिर्नास्ति कदाचन ॥ २६ ॥

अर्थ–कसरतसे दृढ हुए चित्तवालोंको कभीभी रोग नहीं होता है ॥ २६ ॥

विरुद्धं वा विदग्धं वा भुक्तं शीघ्रं च पच्यते ।
भवन्ति शीघ्रं वै तस्य वलीशिथिलताजराः ॥ २७ ॥

अर्थ–विरुद्ध अथवा जला हुआ भोजन किया जावे तो शीघ्र पचता है और शरीरमें वली, शिथिलपन, बुढापा येभी निश्चयसे शीघ्र होते हैं ॥ २७ ॥

वसन्ते शीतसमये सुतरां स मतो हितः ।
अन्यदापि स कर्त्तव्यः शक्त्यर्द्धेन बलाबलम् ॥ २८ ॥

अर्थ–चैत्र, वैशाख और शीतलकालमें कसरत करना बहुत हित है, अन्य कालमेंभी अपनी आधी सामर्थ्यकरके बल और अबलके अनुसार कसरत करना ॥२८॥

तनुं समीक्ष्य वा स्वेदी कण्ठे ग्रीवाललाटयोः ।
भुक्तवान् कृतसंयोगः कासी श्वासी क्षयी कृशः ॥ २९ ॥

अर्थ–शरीरको देखकर अथवा कंठ, नाड, मस्तक इन्होंपै पसीना आ जानेवाला, भोजन किया हुआ, स्त्रीसंग किया हुआ, खांसीवाला, श्वासवाला, क्षयवाला और कृश शरीरवाला ॥ २९ ॥

रक्तपित्ती क्षयी शोषी न तं कुर्यात् विचक्षणः ।

अतिव्यायामतः कासो ज्वरश्छर्दिश्च जायते ॥ ३० ॥

अर्थ–रक्तपित्तवाला, क्षयवाला और शोषवाला कसरत न करे । बहुत कसरतसे खांसी, ज्वर और छर्दि ये उपजते हैं ॥ ३० ॥

मर्दनं श्रमवातघ्नं निद्रापुष्टिबलप्रदम् ।
केशश्मश्रुनखानां च कल्पनं शुचिरूपकृत् ॥ ३१ ॥

अर्थ–मर्दन अर्थात् दाबना परिश्रम और वातको नाशता है, नींद, पुष्टि और बलको देता है, बाल, डाढी और नखोंका काटना सुंदर रूपको करता है ॥ ३१ ॥

अभ्यङ्गो वातरोगघ्नो धातुसाम्यं बलं सुखम् ।
निद्रावर्णमृदुत्वानि कुरुते दृष्टिपुष्टिकृत् ॥ ३२ ॥

अर्थ–तेल आदिसे मालिश करना वातरोगको नाशता है, धातुकी समता, बल, सुख, नींद, वर्ण, कोमलपन, दृष्टि और पुष्टि इन्होंको करता है ॥ ३२ ॥

केशप्रसाधनी केश्या रजोजन्तुमलापहा ।
शिरोऽभ्यङ्गः शिरस्तृप्तिकेशदाढ्यक्षिपुष्टिकृत् ॥ ३३ ॥

अर्थ–कंघा और कंघईसे बालोंका वाहन बालोंको बढाता है, धूलि, जूं और मलको नाशता है । शिरमें तेल आदिकी मालिश शिरकी तृप्ति, बालोंकी दृढता और आंखोंकी पुष्टि इन्होंको करती है ॥ ३३ ॥

उच्चैःश्रवणबाधिर्यमलमन्याहनुग्रहान् ।
कदापि कर्णरोगाणां कुरुते कर्णपूरणम् ॥ ३४ ॥

अर्थ–वह ऊंचा सुनना, बहिरापन, मल, मन्याग्रह, हनुग्रह इन्होंको नाशती है । कानरोगवालोंके कानमें तेल आदि पूरण करना ॥ ३४ ॥

सिक्तस्याद्भिर्यथा मूले तरूणां पल्लवादयः ।
वर्द्धन्ते हि तथा नृणां स्नेहसिक्तस्य धातवः ॥ ३५ ॥

अर्थ–जैसे वृक्षोंकी जडमें पानी सींचनेसे पत्ते आदि बढते हैं, तैसे स्नेहसे सींचे हुए मनुष्यके धातु बढते हैं ॥ ३५ ॥

स्नेहावगाहनं वातशमनं धातुपुष्टिदम् ।
मात्राभिस्त्रिचतुःपञ्चषट्सप्ताष्टभिरात्रजेत् ॥ ३६ ॥

अर्थ–स्नेहमें गोता मारना वातको नाशता और धातुओंको पुष्ट करता है । तीन, चार, पांच, छः, सात और आठ इन मात्राओंसे गोता मारना ॥ ३६ ॥

रसरक्तमांसमेदोमज्जाधातून् यथाक्रमम् ।
वान्तो नवज्वरोऽजीर्णी विरिक्तः केवलामरुक् ।
निरूहतर्पणं यच्च स्नेहाभ्यङ्गादि वर्जयेत् ॥ ३७ ॥

अर्थ–रस, रक्त, मांस, मेद और मज्जा इन धातुओंको क्रमके अनुसार वांति किया हुआ, नया ज्वरवाला, अजीर्णवाला, जुलाब लिया हुआ और केवल आमरोगवाला निरूह, तर्पण और स्नेहको और अभ्यंग आदिको सेवन न करे ॥ ३७ ॥

पानादिगुणाः ।

उद्वर्त्तनं वातहरं भ्राजकानलदीपनम् ।
गात्रस्थिरत्वसुखितात्वक्प्रसादमृदुत्वकृत् ॥ ३८ ॥

अर्थ–उवटना मलना वातको हरता है, भ्राजक अग्निको प्रकाशता है, अंगोंके स्थिरपन, सुखपन, खालके स्वच्छपन और कोमलपनको करता है ॥ ३८ ॥

स्नानादिगुणाः ।

स्नानं वातश्रमालक्ष्मीपामाकण्डूमलापहम् ।
हृद्यं कासकरं वह्निसर्वेन्द्रियविबोधनम् ॥ ३९ ॥

अर्थ–स्नान करना वात, परिश्रम, दरिद्र, पामा, खाज और मल इन्होंको नाशता है, दिलको ताकत देता है, खांसीको हरता है तथा अग्नि और सब इंद्रियोंको बोधित करता है ॥ ३९ ॥

न तदुष्णेन शिरसो योज्यं नेत्राहितं यतः ।
कफवातप्रकोपे तु भेषजार्थं तदाचरेत् ॥ ४० ॥

अर्थ–गर्म पानीकरके शिरको नहीं भिगोना, क्योंकि आंखोंमें हितकारक नहीं है; कफ और वातके प्रकोपमें औषधके अर्थ देवे ॥ ४० ॥

तच्चातिसारज्वरितकर्णशूलानिलार्त्तिषु ।
आध्मानारोचकाजीर्णभुक्तवत्सु च गर्हितम् ॥ ४१ ॥

अर्थ–अतिसार, ज्वर, कर्णशूल, वातरोग, आध्मान, अरोचक, अजीर्ण इन रोगवालोंको और भोजन किये पीछे स्नान करना निंदित है ॥ ४१ ॥

अनुलेपतृषामूर्च्छादौर्गन्ध्यश्रमवातजित् ।
सौभाग्यतेजस्त्वग्वर्णप्रीत्योजोबलवर्द्धनम् ॥ ४२ ॥

अर्थ–अनुलेप अर्थात् चंदन आदिका लगाना तृषा, मूर्च्छा, दुर्गंधता, परिश्रम

और वातको जीतता है और सौभाग्य, तेज, त्वचाका वर्ण, प्रीति, पराक्रम, बल इन्होंको बढाता है ॥ ४२ ॥

कुसुमाम्बररत्नानां धारणं कान्तिकारणम् ।
पापरक्षोग्रहहरं कामोजःश्रीविवर्द्धनम् ।
पादत्र्या धारणं नेत्र्यमायुष्यं पादरोगनुत् ॥ ४३ ॥

अर्थ–फूल, कपडा, रत्न इन्होंको धारण करना कान्तिको करता है, पाप, रक्षोदोष, ग्रहदोष इन्होंको हरता है और काम, पराक्रम, शोभा इन्होंको बढाता है । जूतियोंका पहनना आंखोंमें हित है, आयुको बढाता है और पादरोगको दूर करता है ॥ ४३ ॥

उष्णीषगुणाः ।

उष्णीषं शुचिदं केश्यं रजोवातातपापहम् ॥ ४४ ॥

अर्थ–पगडीका बांधना शुद्धिको देता है, बालोंको हित है और धूलि, वात, घाम इन्होंको नाशता है ॥ ४४ ॥

व्यजनगुणाः ।

छत्रधारणमोजस्यं चक्षुष्यं हिमघर्मजित् ।
बालव्यजनमोजस्यं मक्षिकादिनिवारणम् ।
व्यजनस्यानिलः शोषमूर्च्छास्वेदश्रमापहः ॥ ४५ ॥

अर्थ–छत्रीका लगाना बलको करता है, आंखोंमें हित है, शीत और घामको जीतता है । छोटी पंखी बलको करती है, माखी आदिको दूर करती है, वीजनेकी पवन शोष, मूर्च्छा, पसीना और परिश्रमको नाशती है ॥ ४५ ॥

यष्टिधारणगुणाः ।

यष्टिधारणमुत्साहस्थैर्याविष्टम्भवीर्यकृत् ।
रक्षःसर्पादिभयजिद् विशेषात् स्थविरे मतम् ॥ ४६ ॥

अर्थ–लठ्ठी धारण उत्साह, स्थिरता, अविष्टंभ, वीर्य इन्होंको करता है, राक्षस और सांप आदिके भयको जीतता है, विशेषकर बुढापेमें हित है ॥ ४६ ॥

अङ्गास्थौल्यरुचिश्लेष्मसौकुमार्यसुखप्रदम् ।
यत्त्वचङ्क्रमणं नापि देहपीडाकरं भवेत् ।
तदायुर्बलमेधाग्निप्रदमिन्द्रियबोधनम् ॥ ४७ ॥

अर्थ–अंगोंको मोटा नहीं करता है, रुचिको उपजाता है और कफ, सुकुमार-

पन, सुख इन्होंको देता है । जहांतक शरीरको पीडा नहीं होवे तहांतक चलना फिरना आयु, बल, बुद्धि, अग्नि इन्होंको देता है और इंद्रियोंको जगाता है ॥ ४७ ॥

शय्यादिगुणाः ।

त्रिदोषशमनी शय्या तौली वातकफापहा ।
सुखशय्यासमं निद्रापुष्टीन्द्रियबलप्रदा ॥ ४८ ॥

अर्थ–शय्या अर्थात् पलंग त्रिदोषको शांत करता है, सौडिया बिछौना वातकफको नाशता है, सुखशय्यामेंभी येही गुण हैं । विशेषकर नींद, पुष्टि और इंद्रियबलको देती है ॥ ४८ ॥

आतपः स्वेदमूर्च्छास्रतृष्णादाहश्रमक्लमान् ।
कुरुते पित्तवैवर्ण्यस्वेदान् छायां व्यपोहति ॥ ४९ ॥

अर्थ–घाम, पसीना, मूर्च्छा, रक्त, तृषा, दाह, परिश्रम और ग्लानिको करती है । पित्त, वर्णका बिगडना और पसीना इन्होंको दूर छाया करती है ॥ ४९ ॥

अग्निः शीतानिलस्तम्भकफवेपथुनाशनः ।
रक्तपित्तप्रदूषी स्यादामाभिष्यन्दपाचनः ॥ ५० ॥

अर्थ–अग्नि शीत, वात, स्तंभ, कफ और कंपको नाशती है, रक्तपित्तको दूषित करती है, आमको गलाती और पकाती है ॥ ५० ॥

धूमः पित्तानिलौ कुर्यादवश्यायः कफानिलौ ।
ज्योत्स्ना शीतानिलस्तम्भप्रदा तृट्पित्तदाहजित् ॥ ५१ ॥

अर्थ–धुंआ पित्त और वातको करता है । धूमर ओस कफ और वातको करती है । चांदनी शीतल है, वात और स्तंभको देती है तथा तृषा, पित्त, दाह इन्होंको जीतती है ॥ ५१ ॥

तमो भयावहं मोहकफपित्तक्लमप्रदम् ।
वृष्टिर्वृष्या हिमा निद्राभिष्यन्दालस्यकारिणी ॥ ५२ ॥

अर्थ–अंधेरा भय, मोह, कफ, पित्त, ग्लानि इन्होंको देता है । वर्षा पुष्टि करती है, शीतल है और नींद, अभिष्यंद, आलस्य इन्होंको करती है ॥ ५२ ॥

प्रवातं रूक्षवैवर्ण्यस्तम्भकृद्दाहपित्तनुत् ।
स्वेदमूर्च्छापिपासाघ्नमप्रवातमतोऽन्यथा ॥ ५३ ॥

अर्थ–बहुत पवन रूखेपन, विवर्णता और स्तंभको करती है, दाह और पित्तको

दूर करती है, पसीना, मूर्च्छा और तृषाको नाशती है। इससे विपरीत पवन विपरीत फल देती है ॥ ५३ ॥

सुखं प्रवातं सेवेत ग्रीष्मे शरदि चान्तरा।
निवातमायुषे सेव्यमारोग्याय च सर्वदा ॥ ५४ ॥

अर्थ–ज्येष्ठ, आषाढ, आश्विन और कार्तिक इन महीनोंके विना सुखपूर्वक बहुत पवनको सेवे। आयु और आरोग्यके वास्ते निरंतर पवनका सेवन करे ॥५४॥

सद्यो मांसं नवं चान्नं बाला स्त्री क्षीरभोजनम्।
घृतमुष्णोदकस्नानं सद्यः प्राणकराणि षट् ॥ ५५ ॥

अर्थ–तत्कालका मांस, नया अन्न, बाला अर्थात् सोलह वर्षकी स्त्री, दूध भोजन, घृत और गर्म पानीसे न्हाना ये छहों तत्काल प्राणको करते हैं ॥ ५५ ॥

पूतिमांसं स्त्रियो वृद्धा बालार्कस्तरुणं दधि।
प्रभाते मैथुनं निद्रा सद्यः प्राणहराणि षट् ॥ ५६ ॥

अर्थ–दुर्गंधवाला मांस, बूढी स्त्री, कन्याकी राशिका अथवा प्रभातका सूर्य, तरुण दही, प्रभातमें स्त्रीसंग और नींद ये छहों प्राणको शीघ्र हरते हैं ॥ ५६ ॥

अन्नादष्टगुणं पिष्टं पिष्टादष्टगुणं पयः।
पयसोऽष्टगुणं मांसं मांसादष्टगुणं घृतम् ॥ ५७ ॥

अर्थ–अन्नसे आठगुना चून और चूनसे आठगुना दूध और दूधसे आठगुना मांस और मांससे आठगुना घृत गुणकारक है ॥ ५७ ॥

घृतादष्टगुणं तैलमभ्यङ्गे न तु भोजने।
लङ्घनं कफमेदोघ्नमामज्वरहरं लघु ॥ ५८ ॥

अर्थ–घृतसे आठगुना तेल मालिशमें गुण है, भोजनमें नहीं। लंघन करना कफ और मेदको नाशता है, आमज्वरको हरता है और हलका है ॥ ५८ ॥

पाचनं दीपनं वातहरं शूलातिसारजित्।
तन्न युक्तं नवे बाले गर्भिण्यां स्थविरे कृशे ॥ ५९ ॥

अर्थ–यह पाचन है, अग्निको जगाता है, वातको हरता है, शूल और अतिसारको जीतता है, नवीन रोगी, बालक, गर्भिणी, बूढा और दुर्बल मनुष्य इन्होंमें ५९

शोककामभयक्रोधमार्गश्रमचिरज्वरे।
पूर्वानिलो गुरुः स्वादुः सिग्धः पित्तास्रवर्द्धनः ॥ ६० ॥

अर्थ–और शोक, काम, भय, क्रोध, मार्गगमन, परिश्रम इन्होंसे उपजे रोगमें तथा पुराने ज्वरमें लंघन करना हित नहीं है । पूर्व दिशाका पवन भारी है, स्वादु है, चिकना है, पित्तरक्तको बढाता है ॥ ६० ॥

रोगकृद् विषजुष्टानां क्षतव्रणविलासिनाम् ।
विदाही वातलः श्रान्तकफशोफवतां हितः ॥ ६१ ॥

अर्थ–और रोगको करता है, विषसे युत हुओंको क्षत और घाववालोंको बुरा है, दाहको करता और वातको उपजाता है, शांत हुआ कफ और शोजावालोंको हित है ॥ ६१ ॥

दक्षिणः पवनः स्वादू रक्तपित्तहरो लघुः ।
अविदाहप्रदो बल्यः चक्षुष्यो न च वातलः ॥ ६२ ॥

अर्थ–दक्षिणका पवन स्वादु है, रक्तपित्तको हरता है, हलका है, दाहको नहीं करता है, बलको करता है, आंखोंमें हित है और वातको नहीं करता है ॥ ६२ ॥

पश्चिमः पवनो रूक्षस्तीक्ष्णः स्नेहबलापहः ।
विशदः शोषणो नृणां कफमेदोहरो लघुः ॥ ६३ ॥

अर्थ–पश्चिमका पवन रूखा है, तेज है, स्नेह और बलको नाशता है, दिलको ताकत देता है, शोषता है, मनुष्योंके कफ और मेदको हरता है और हलका है ॥६३॥

उत्तरो मारुतः शीतः स्निग्धदोषप्रकोपकृत् ।
क्लेदनः प्रकृतिस्थानां बलदो मधुरो मृदुः ॥ ६४ ॥

अर्थ–उत्तरका पवन शीतल है, स्निग्ध दोष और प्रकोपको करता है, गीला करता है, प्रकृतिमें स्थित हुओंको बल देता है, मीठा और कोमल है ॥ ६४ ॥

क्षयक्षीणविषार्त्तानां विशेषाद् गुणकारकः ।
रसो मधुरकः शीतो धातुस्तन्यबलप्रदः ॥ ६५ ॥

अर्थ–क्षयक्षीण और विषसे पीडित हुओंको विशेषसे गुण करता है । मीठा रस शीतल है, धातु और स्तनके दूध और बलको बढाता है ॥ ६५ ॥

चक्षुष्यो वातपित्तघ्नः कुर्याद् स्थौल्यकफकृमीन् ।
सोऽतियुक्तो ज्वरश्वासगलगण्डार्बुदादिकृत् ॥ ६६ ॥

अर्थ–आंखोंमें हित और वातपित्तको नाशता है । मुटापा, कफ और कृमि इन्होंको करता है । वह बहुत प्रयुक्त किया ज्वर, श्वास, गलगण्ड और अर्बुद आदिको करता है ॥ ६६ ॥

रसोऽम्लः पाचनो रुच्यः पित्तश्लेष्मकरो लघुः ।
लेखनोष्णो बहिः शीतः क्लमदः पवनापहः ॥ ६७ ॥

अर्थ–खट्टा रस पाचन है, रुचि उपजाता है, पित्तकफको करता है, हलका है, लेखन और गर्म है, बाहिर शीतल है, ग्लानिको देता है, वातको नाशता है ॥ ६७॥

सोऽतियुक्तः परं देहे रक्तपित्तादिरोगकृत् ।
कटुकः पित्तलः श्लेष्मकृमिकण्डूविषापहः ॥ ६८ ॥

अर्थ–बहुत प्रयुक्त किया खट्टा रस देहमें रक्तपित्त आदि रोगोंको करता है, चर्परा रस पित्तको करता है, कफ, कृमि, खाज और विषको नाशता है ॥ ६८ ॥

वमनं श्लेष्मपित्तघ्नं विरेको रक्तपित्तहा ।
बस्तिर्वातहरा ज्ञेया स्वेदे मान्द्येऽपकारकः ॥ ६९ ॥

अर्थ–वमन कफपित्तको नाशता है, जुलाब रक्तपित्तको नाशता है, बस्ति वातको हरनेवाली जाननी, स्वेदमें और मांद्यमें अपकारक है ॥ ६९ ॥

आग्नेयो वातलस्तन्यमेदःस्थौल्यहरो गुरुः ।
सोऽतियुक्तो भ्रमास्थौल्यतालुशोषातिदाहदः ॥ ७० ॥

अर्थ–गर्म रस वातको करता है, दूध, मेद और मुटापेको हरनेवाला और भारी है । बहुत युक्त किया गर्म रस भ्रम, दुर्बलपन, तालुशोष और बहुत दाह इन्होंको देता है ॥ ७० ॥

तिक्तः शीतस्तृषामूर्च्छाज्वरपित्तकफान् जयेत् ।
वातलोऽग्निकरः स्तन्यशोधनः शोषणो लघुः ॥ ७१ ॥

अर्थ–कडुवा रस शीतल है, तृषा, मूर्च्छा, ज्वर, पित्त और कफ इन्होंको जीतता है, वातको करता है, अग्निको उपजाता और दूधको शोधता है, शोषता है और हलका है ॥ ७१ ॥

सोऽतियुक्तः शिरःशूलमन्यास्तम्भभ्रमार्तिकृत् ।
लवणः शोधनो रुच्यः पाचनः कफपित्तदः ॥ ७२ ॥

अर्थ–बहुत युक्त किया कडुवा रस शिरमें शूल, मन्यास्तंभ और भ्रमको करता है । सलौना रस शोषता है, रुचिको उपजाता है, पाचन है, कफ और पित्तको देता है ॥ ७२ ॥

पुंस्त्ववातहरः कायः कायशैथिल्यकारकः ।

सोऽतियुक्तोऽक्षिपाकास्रपित्तकोष्ठाक्षितापकृत् ॥ ७३ ॥

अर्थ–पुरुषपन और वातको हरता है, शरीरमें शिथिलता करता है। बहुत युक्त किया सलोना रस आंखका पक जाना, रक्तपित्त, कोष्ठ और आंखमें दाह करता है७३

कषायो रोपणो ग्राही शोषणो वातकोपनः ।
सोऽतियुक्तो ग्रहाध्मानहृत्पीडाक्षेपणादिकृत् ॥ ७४ ॥

अर्थ–कषैला रस घावपै अंकुर लाता है, मलको रोकता है, शोषता है और वातको कुपित करता है। बहुत युक्त किया कषैला रस ग्रहरोग, आध्मान, हृदयमें पीडा और आक्षेप आदि इन्होंको करता है ॥ ७४ ॥

प्रसन्नदृष्टिर्दृढदन्तकेशः शशाङ्कवक्त्रः पलितैर्विहीनः ।
पिकाभकण्ठः कमलास्यगन्धो तस्योपसेवी भवतीह मर्त्यः॥७५॥

अर्थ–मनुष्य वमनके सेवनसे साफ दृष्टिवाला, दृढ रूप, दंत और बालोंवाला, चन्द्रमाके समान मुखवाला, श्वेतबालोंसे वर्जित, कोयलके समान कण्ठवाला और कमलके समान मुखमें गंधवाला होता है ॥ ७५ ॥

कासोपलेपः स्वरभेदनिद्रा तथास्यदौर्गन्ध्यविषोपसर्गः ।
कफप्रसेको ग्रहणीप्रदोषा भवन्ति जन्तोर्वमितेन नूनम् ॥७६॥

अर्थ–खांसी, मुखमें कफका लिपटना, स्वरभेद, नींद, मुखमें दुर्गंध और विषके उपद्रव, कफका पडना, ग्रहणीके दोष ये सब मनुष्यके वमनसे होते हैं ॥ ७६ ॥

बुद्धेः प्रसादं बलमिन्द्रियाणां पातुः स्थिरत्वं बलमग्निदीप्तिम् ।
चिराच्च पाकं वयसः करोति विरेचनं सम्यगुपास्यमानम्॥७७॥

अर्थ–अच्छी रीतिसे सेवन किया रेचक पीनेवालेकी बुद्धिका प्रसाद, इंद्रियोंका बल, स्थिरता, बल, अग्निको जगाना और बहुत कालसे आयुका पाक इन्होंको करता है ॥ ७७ ॥

बस्तिर्वाते च पित्ते च कफे रक्ते च शस्यते ।
संसर्गे सन्निपाते च बस्तिरेव हितः सदा ॥ ७८ ॥

अर्थ–वात, पित्त, कफ, रक्त इन्होंमें बस्तिकर्म उत्तम है। दो दोषोंके मिलनेमें और सन्निपातमें बस्तिकर्मही सब कालमें हित है ॥ ७८ ॥

मूले निषिक्तो हि यथा द्रुमः स्यान्नालच्छदः कोमलपल्लवाग्रः ।
काले बृहत्पुष्पफलप्रदश्च तथा नरः स्यादनुवासनेन ॥ ७९ ॥

अर्थ–जडमें पानी सींचनेसे जैसे नाल, पत्ते और कोमल पत्तोंवाला वृक्ष होके समयपर बहुत पुष्प और फलोंको देता है तैसेही अनुवासन बस्तिसे मनुष्य सब सुंदर अंगोंवाला हो जाता है ॥ ७९ ॥

पञ्चकर्मरक्तमोक्षगुणाः ।

त्वग्दोषा ग्रन्थयः शोफा रोगाः शोणितसम्भवाः ।
रक्तमोक्षणशीलानां न भवन्ति कदाचन ॥ ८० ॥

अर्थ–चर्मके दोष, ग्रंथि, शोजा इत्यादि दूषित रक्तसे होनेवाले रोग दूषित रक्त निकलनेवालेको नहीं होते हैं ॥ ८० ॥

संहर्षाद् कुपिता भवन्ति हि मला वर्षासु वातादयः
क्लिन्नत्वाद्वपुषोऽनले कृशतरे वैद्येन देयं ततः ।
अन्नं दीपनपाचनं च मलहृत् क्लेदापहोष्णद्रवं
रूक्षं नातिकषायतिक्तकटुकं स्निग्धं च किञ्चिद्रसैः ॥ ८१ ॥

अर्थ–संहर्षसे वात आदि दोष वर्षाऋतुमें कुपित होते हैं । गीलेपनसे शरीरकी अग्नि बहुत मंद हो जावे तब वैद्यको दीपन पाचन अन्न देना उचित है कि जो मलको हरता है, क्लेदको हरनेवाला गर्म रस रूखा और कषैला कडुवा और चर्परा नहीं हो और कछुक रसोंकरके चिकना हो वह उत्तम है ॥ ८१ ॥

दिव्यं चौद्गन्यमथाम्बु तप्तशिशिरं सक्षौद्रमल्पं पिबेत्
गच्छन्त्योषधयो विदाहमधिकं तारुण्ययोगात्तदा ।
व्यायामार्कमरीचिमैथुनसुखावश्यायवर्जं ततो
भूबाष्पाम्बुभुजङ्गदंशमशकैर्वर्जं शयीतालये ॥ ८२ ॥

अर्थ–आकाशसे वर्षा हुआ तथा चोवाके पानीको गर्म करके पीछे शीतल कर उनमें शहद डाल थोडा पीवे, अजवायनके योगसे औषधि बहुत दाहको करती है । पीछे कसरत, सूर्यके किरण, स्त्रीसंग, सुख, ओस इन्होंको वर्जित करे । पीछे पृथ्वीकी भाफ, पानी, सांप, डांस, मच्छर इन्होंसे वर्जित किये स्थानमें सोवे ॥ ८२ ॥

शीते यत्र न वातवृष्टिरधिका साङ्गारयाने गृहे
निर्वाते क्षितिपः शयीत मधुरं किञ्चिच्च पीत्वासवम् ।
काश्मीरागुरुलेपभूषिततनुर्नागाङ्गनाभिर्व्रजेत्
यत्नाच्च व्यजनावगाहनरतिं स्वापं दिवा च त्यजेत् ॥ ८३ ॥

अर्थ–शीतकालमें जहां पवन और वर्षा बहुत नहीं सेवे, जहां अंगीठी बनी हुई हो और जहां पवन नहीं लगे ऐसे स्थानमें राजा कछुक मीठे आसवको पीके सोवे । केशर, अगर, इन्होंके लेपसे शरीरको भूषित कर सुंदर स्त्रियोंके संगको प्राप्त हो । जतनसे वीजन और गोता मारके न्हाना, स्त्रीसंग और दिनमें सोना इन्होंको त्यागे ॥ ८३ ॥

सेव्याः स्वादुकषायतिक्तविशदा वर्षे त्यजेज्जाङ्गलं
द्राक्षाक्षीरसितेक्षुशालिमधुरा गोधूममुद्गादयः ।
नैर्मल्यादखिलं जलं लघुतरं वासः स्रजश्चन्दनं
सेवेतेन्दुकरान् प्रदोषसमये गाहेत साब्जं सरः ॥ ८४ ॥

अर्थ–श्रावण भाद्रपदमें स्वादु, कषैला और सुंदर ऐसे रस सेवन करे और जांगल देशके द्रव्यको त्यागे । दाख, दूध, मिशरी, ईख, शालिचांवल, मीठे पदार्थ, गेहूं और मूंग आदिको सेवे । आश्विन कार्तिकमें निर्मलपनसे सब तरहके पानी, बहुत हलके वस्त्र, माला, चंदन इन्होंको सेवे और प्रदोष समयमें चन्द्रमाके किरणोंको सेवे और कमलवाले तलावोंमें गोता मारके स्नान करे ॥ ८४ ॥

वर्षासूपचितं विरेचविधिना पित्तं हरेद्बुद्धिमान्
युक्तो रक्तविमोक्षणेन हविषस्तिक्तस्य पानं तथा ।
रात्रौ जागरणं व्यवायमधिकं घर्मं तुषारं दधि
क्षाराम्लोष्णविदाहि तीक्ष्णकटुकं निद्रां दिवा च त्यजेत् ॥८५॥

अर्थ–श्रावण भाद्रपदमें संचित हुए पित्तको जुलाबकी विधि करके बुद्धिमान् निकासे और रक्तको निकलवावे । घृत और कडुवे रसको पीवे, रात्रिमें जागना, बहुत स्त्रीसंग, घाम, जाडा, दही, खारा, खट्टा, गर्म, बहुत दाहकारक, तेज, कडुवा और दिनमें नींद लेना इन्होंको त्यागे ॥ ८५ ॥

हेमन्ते लवणाम्लतिक्तकटुकक्षारोत्कटं बृंहणं
सर्पिस्तैलसमेतमुष्णमशनं तीक्ष्णानि पानानि च ।
सेवेतागुरुरूषिताऽम्बु शिशिरं गाहेत तैलप्लुतः
कौशेयास्तरणे शयीत शयने साङ्गारधाने गृहे ॥ ८६ ॥

अर्थ–मंगशिर पौषमें सलोना, खट्टा, कडुवा, चर्परा, खारा, उत्कट, पुष्ट, घृत, तेलसहित गर्म भोजन और तीक्ष्ण पान इन्होंको सेवे और अगरका लेप और

तेलकी मालिश कर शीतल पानीमें गोता मारके स्नान करे और रेशमी वस्त्रसे युत हुए पलंगपर आगकी अंगीठीसे युत हुए स्थानमें सोवे ॥ ८६ ॥

श्यामां पीनपयोधरोरुजघनामाश्लिष्य धन्योऽङ्गनां
बाह्लीकागुरुलेपभूषिततनुं धूपैर्वरैर्धूपितम् ।
कामं मैथुनमप्यतर्पितवपुः सेवेत बल्यै रसैः
कर्त्तव्यः शिशिरेऽयमेव नितरां शीताधिकत्वाद्विधिः ॥ ८७ ॥

अर्थ–सांवले रंगकी और पुष्ट कुच और जांघोंवाली स्त्रीसे मिलके सोवे । केशर और अगरका लेप करे और सुंदर धूपोंसे धूप लेके स्त्रीसंग करे और बलकारक रसोंको सेवे । माघ फागनमेंभी बहुत शीत होनेसे यही विधि करनी उचित है ॥ ८७ ॥

तीक्ष्णक्षारकषायरूक्षकटुकं कोष्णं वसन्तेऽशनं
तन्मद्यं मधुमुद्गजाङ्गलयवप्रायं हितं चान्द्रवम् ।
व्यायामं विपिनं च कोकिलकलालापाकुलं कामिनी
स्नानोद्वर्त्तनचन्दनानि नृपतिः सेवेत रम्याः स्रजः ॥ ८८ ॥

अर्थ–चैत्र वैशाखमें तेज, खारा, कषैला, रूखा, चर्परा और गर्म भोजन करना, शहद, मूंग, जांगल देशके जव जिसमें विशेष करके हों वह मदिरा, कसरत, कोयलोंके शब्दोंसे युत बगीचे और सुंदर स्त्री और स्नान, उवटना, चंदन और रमणीक माला इन्होंको राजा सेवन करे ॥ ८८ ॥

हेमन्ते निचितः प्रकुप्यति कफो भानोः करैरावृत-
स्तस्मात् तीक्ष्णशिरोविरेकवमनैर्गण्डूषधूपादिभिः ।
तं प्राज्ञो विजयेत विश्वजलदक्काथैरथोष्णाम्बुभिः
शीतस्निग्धगुरुह्रवाम्लमधुरं निद्रां दिवा च त्यजेत् ॥ ८९ ॥

अर्थ–मंगशिर आदि महीनोंमें संचित हुआ कफ सूर्यके किरणोंसे आवृत होके कुपित होता है, तिस कारणसे तेज शिरोविरेचन अर्थात् शिरका जुलाब, वमन, कुल्ला और धूप आदि करके सोंठ और नागरमोथाके क्काथोंकरके तथा गर्म पानी करके जीते । शीतल, चिकना, भारी, पतला, खट्टा और मीठा रस और दिनमें नींद इन्होंको त्याग दे ॥ ८९ ॥

ग्रीष्मे शीतगृहान् सरांसि सरितो वापीर्वनानि स्रजो
हारान् शीतलतालवृन्तपवनान् सेवेत निद्रां दिवा ।

वासांस्यच्छलघून्यनुष्णमधुरं चान्नं ससर्पिर्द्रवं
मन्थक्षीरसुपानकानि च सितादिग्धान्यसीतान्यपि ॥ ९० ॥

अर्थ–ज्येष्ठ आषाढमें शीतल स्नान सरोवर, नदी, बावडी, माला, हार, शीतल ताडके वीजनेका पवन और दिनमें नींद इन्होंको सेवे । सुंदर और हलके वस्त्र नहीं गर्म हो और मीठा हो ऐसे घृतसहित पतला अन्न, मन्थ, मिसरी आदिसे युत दूध और सुंदर पानक इन्होंको सेवे ॥ ९० ॥

शुभ्रे हर्म्यतले शयीत शयने प्रत्यग्रपुष्पाञ्चिते
वातैश्चन्दनचन्द्रचर्चिततनुः संस्पृश्यमानः सुखैः ।
व्यायामं परिशोषिमैथुनरतिं घर्मं तथोष्णं रसा-
नाग्नेयान् परितस्त्यजेन्मतिमतो वैद्यस्य वाक्ये रतः ॥९१ ॥

अर्थ–कलीकी कूंचीसे स्वच्छ किये स्थानके तखानमें खिले हुए सुंदर फूलोंसे रचित किये पलंगपर सुखरूप पवनसे स्पर्शित होके और चन्दनका लेप शरीरपर करके सोवे । कसरत, शोषकारक द्रव्य, स्त्रीसंगमें मन, घाम, गर्म पदार्थ, अग्निको उपजानेवाले रस इन सबको सब प्रकारसे त्यागे और बुद्धिमान् वैद्यके वाक्यमें रहे ॥ ९१ ॥

टीकान्वये महति भूमिभुजां विशुद्धे
काछेति नाम नगरं जयति प्रसिद्धम् ।
यद्वेधसा विहितमादरतः स्वसृष्टे-
रुत्कृष्टतातिशयपुञ्जदिदृक्षयैव ॥ ९२ ॥

अर्थ–राजाओंके महान् और विशेषकरके शुद्ध टीक वंशमें जो ब्रह्माने अपनी सृष्टिकी उत्कृष्टताके अतिशय समूहको देखनेकी इच्छा करके रचा हुआ काछ इस नामसे प्रसिद्ध हुआ सर्वोत्कर्षतासे वर्तता है ॥ ९२ ॥

तत्र श्रीरत्नपालः समजनिजनतानन्दवृन्दैककन्दः
कुन्देन्दुः स्वच्छकीर्तिः परमददलनोद्दानदीक्षैकदक्षः ।
यस्याकर्ण्य प्रभूतं प्रथितगुणगणं कर्णसाफल्यभाजो
दैवं निन्दन्ति लोका नयनविफलताखेदमावेदयन्तः ॥ ९३ ॥

अर्थ–उसमें मनुष्योंके समूहका आनंदगणका एक कन्दरूप कुंदके फूल और चन्द्रमाके समान कीर्तिवाला शत्रुके मदको दलनकी बडी दीक्षामें प्रधान चतुर और जिसके विख्यात गुणोंके समूहको सुनकर कानसे सुननेवाले आंखसे नहीं

देखनेके खेदसे कहते हुए संसारके मनुष्य दैवको निंदित करते हैं ऐसा श्रीरत्नपाल राजा सम्यक् प्रकारसे जन्मता भया ॥ ९३ ॥

जननयनसुधांशुस्तस्य शुद्धस्तनूजो जगति भरणपाले
क्षोणिपालो बभूव । सकलसकलवाञ्छासिद्धिहेतोर्विधाता
सुरतरुवरचक्रे यत्करच्छद्मनैव ॥ ९४ ॥

अर्थ—उस श्रीयुत रत्नपालका मनुष्योंके आंखोंमें चन्द्रमारूप, शुद्ध पुत्र संसारमें राजा होता भया, जिसके हाथका मिष करके सबोंकी सम्पूर्ण इच्छाकी सिद्धिके कारणसे कल्पवृक्षके चक्रमें विधाता हुआ ॥ ९४ ॥

हरिश्चन्द्रस्तस्मात् समजनि जनानन्दजननो
हरिश्चन्द्रो लोके परद्रवपरीतापज्वलनः ।
परं विश्वामित्रेष्वहितमयमाधत्त मतिमान्
विशिष्टो नैतस्माज्जगति महितोऽन्यः सुकृतिनः ॥ ९५ ॥

अर्थ—उससे मनुष्यके आनंद उपजानेवाला और संसारमें शत्रुके द्रवरूप परितापको प्रकाश करनेवाला हरिश्चंद्र और यह बुद्धिमान् विश्वामित्रोंमें अहितको करता भया और इस सुकृतिसे विशिष्ट जगत्में नहीं हुआ ऐसा हरिश्चन्द्र होता हुआ ॥ ९५ ॥

तस्मादभूदद्भुतकृत्यमान्यः साधारणो भूमिपतिर्वदान्यः ।
दारिद्र्यमुन्मूल्य पुनः स्ववैरिष्वस्थापि कामं कृपयैव येन॥९६॥

अर्थ—उस हरिश्चन्द्रसे अद्भुत कृत्योंमें मान्यरूप और साधारण और उदार चित्तवाला और दरिद्रको काटकर अपने शत्रुओंमें कृपा करके फिर स्थित होता भया ऐसा राजा हुआ ॥ ९६ ॥

कामो धर्ममहेशमान्य उदयो नास्तं प्रयातः क्वचित्
नो दाने विरतः सुतप्ततनुमनःसन्तापहृच्छूरता ।
सच्चक्रातिविचित्रमित्रसुखिताबुद्धिप्रदा चन्द्रदा
चातुर्येण महेन्द्रता कविमनाः किञ्चिन्न यस्याद्भुतम् ॥ ९७ ॥

अर्थ—कामरूप, महाधर्मराज और महादेवके समान हुआ उदयवाला और कहींभी अस्त नहीं हुआ और बहुत दान करनेवाला और प्यारेके शरीर और मनके संतापको दूर करनेवाली शूरवरिता और मित्रोंको विचित्र सुख देनेवाली और

वृद्धिको देनेवाली और प्रकाश देनेवाली स्वच्छता और चतुरताकरके महेंद्रता ये सब उसमें हुई और कवियोंमें मानवाला हुआ, जिसके ये सब बात अद्भुत नहीं हुई ॥ ९७ ॥

अजनि सहजपालस्तस्य पूर्वस्तनूजः
सकलगुणनिधानं शास्त्रधर्मैकवेत्ता ।
प्रथितपुरुषरत्नं यं समालोक्य लोका
बहुविधिषु विधातुः कान्ततां मन्यते स्म ॥ ९८ ॥

अर्थ—उसके ज्येष्ठ पुत्र सहजपाल जन्मता भया, सब गुणोंका खजाना, शास्त्र और धर्मको एक जाननेवाला और विख्यात पुरुषरत्न हुआ । जिसको अच्छी तरह देखकर बहुत विधियोंमें ब्रह्माकी चतुराईको मानते भये ॥ ९८ ॥

यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्लस्तेन श्रीमदनृपेण
निर्मितेऽत्र । ग्रन्थेऽस्मिन् मदनविनोदनाम्नि पूर्णो वर्गो-
ऽयं गुणगणमिश्रमिश्रकोऽयम् ॥ ९९ ॥

अर्थ—राजाओंमें बहुत प्रधान कटारमल्ल हुआ उसी मदन राजाके रचित किये इस मदनविनोद नामक ग्रंथमें गुणोंके समूहसे मिला हुआ यह मिश्रकवर्ग समाप्त हुआ ॥ ९९ ॥

इति रोहतकप्रदेशान्तर्गत-वेरीग्रामनिवासि-गौडवंशावतंस-बुध-शिवसहाय-पुत्र-रविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचित-मदनविनोदभाषाटीका समाप्ता ।

वस्वब्धिनवभूम्यब्दे माघे मासे तथा सिते ।
रविदत्तकृता टीका त्रयोदश्यां समाप्तिगा ॥ १ ॥

इति मदनपालनिघण्टुः समाप्तः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण—मुंबई.

वैद्यकग्रन्थाः ।

नाम.			की.रु.आ.ट.म.रु.आ.
५८१ अष्टाङ्गहृदय (वाग्भट) भाषाटीका अत्युत्तम वैद्यकग्रन्थ सम्पूर्ण बारीक नवा छापा	(१)		८–० १–०
५८२ अमृतसागर हिन्दी भाषामें	क		२–८ ०–८
५८३ अनुपानदर्पण भाषाटीका सहित	क		०–१० ०–२
५८४ अर्कप्रकाश भाषाटीका रावणकृत (सब औषधियोंके गुण व अर्क निकालनेकी क्रिया)	क		०–१४ ०–२
५८५ अंजननिदान भाषाटीका अन्वय सहित.	क		०–८ ०–१
५८६ आयुर्वेद सुषेण भा०टी०	खे		०–१४ ०–३
५८७ आदिशास्त्र भा०टी०सहित (कोकशास्त्र)	क		०–१० ०–१
५८८ आजीर्णतिमिरभास्कर भाषाटीका–अजीर्ण रोगके विषयमें चुनचुनकर ग्रंथोक्त औषधीका संग्रह है	क		०–५ ०–१
५८९ आयुर्वेदचिन्तामणि अर्थात् मिश्रनिघंटु–(चरक, सुश्रुत, वाग्भट, भावप्रकाश, राजनिघण्टु, अत्रि संहिता, राजवल्लभ और वैद्यक निघंटु इत्यादि अनेक ग्रंथोंसे संग्रहित और अनुवादित.)	क		१–१२ ०–३
५९० औषधीकल्पलता इसमें औषधियोंके कल्पविधी श्री			०–८ ०–१
५९१ उपदंशतिमीर (गर्मी) नाशक भाषामें	क		०–३ ०–॥

नाम.			की.रु.आ.ट.म.रु.आ.
५९२ कूष्मुद्गराख्यसटीक....	(१)		०–२ ०–॥
५९३ कूष्मुद्गर भा०टी०	क		०–२ ०–॥
५९४ कुमारतंत्र रावणकृत भाषाटीका	खे		०–८ ०–१
५९५ चय्याचंद्रोदय भाषाटीका व्यंजन बनानेका ग्रंथ.	क		१–८ ०–२
५९६ चरकसंहिता मूल और भाषाटीका....	मथुरा		८–० १–०
५९७ चरकसंहिता भा. टी. दत्तराम चौबेकृत	म		६–० ०–१२
५९८ चिकित्साधातुसार भाषा	क		०–५ ०–१
५९९ चिकित्सा चक्रवर्तीभाषा	द.चौ		१–० ०–२
६०० चिकित्साखण्ड भाषाटीका प्रथमभाग	(१)		४–० ०–८
६०१ चिकित्साक्रमकल्पवल्ली संस्कृत काशिनाथकृत			३–८ ०–८
६०२ ज्वरतिमिरनाशक भाषाटीका सर्व प्रकारके ज्वरोंकी अच्छी २ अनुभवी दवाओंका संग्रह	क		१–० ०–२
६०३ डाक्टरी चिकित्सासार भाषा	*		०–१० ०–१
६०४ मिजान तिब्ब सर्वांग चिकित्सा	म		१–४ ०–४

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना–गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापाखाना, कल्याण–मुंबई.